

भूमिका ।

सहृदय वंधुगण । आज मैं आप के करकमलोंमें यह तीसचौबीसीपूजा पाठ उपास्थित करता हूं । इस ग्रंथ के रचयिता जैनसमाज के सुपरिचित काशीवासी कविवर वृंदावनदासजी हैं । जिनके रचित वृंदावनविलास, वर्तमान चौबीसी पाठ आदि अनेक ग्रंथ प्रचालित हैं इनका जीवनचरित "जैनग्रंथ रत्नाकरकार्यालय मुम्बई" द्वारा मुद्रित वृंदावनविलासमें छप चुका है इसलिये इस संक्षिप्त भूमिका में फिर से इनका जीवन चरित देना उचित नहीं समझा । इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं कि जो कार्य लोकोहित की दृष्टि से किया जाता है उस में अधिक सफलता प्राप्त हुये बिना नहीं रहती । इससे कार्यकर्ता का अविनाशी यश तो संसार में फैलता ही है पर लोकोपकार भी अपार होता है । जैन साहित्य की रचना भी लोकोपकार जानकर ही हुई है । अमृतचंद सूरिने पचाध्यायी के प्रारंभ में बहुत ही ठीक कहा है—

अचान्तरद्देतुर्धन्यपि भावः कवेर्विशुद्धतरः ।

न्तोस्तथापि हेतुः साध्वी सर्वोपकारिणी बुद्धिः ॥

अर्थात् यद्यपि कवि (ग्रंथकार) के विशुद्धतर भाष ही किसी ग्रंथ की रचना के लिये प्रधान कारण हैं तो भी संपूर्ण प्राणियों के लिये हितकर विचार ग्रंथकार के परिणामों को अत्यंत विशुद्ध बनाने में कारण हैं, अर्थात् परोपकार करने वाली बुद्धि ही परिणाम संबंधी विशुद्धी की जननी है " लोकोपकार से प्रेरित होकर ही हमारे पूज्यपाद प्रात. स्मरणीय ऋषि महर्षियों ने और प्रौढ़ प्रतिभाशाली कवियों ने जैन साहित्य को सर्वोच्च सुन्दर बनाया, पर दुःख का विषय है कि हमारे उन आचार्यों की कृतिआ का जितना आदर और प्रचार होना चाहिये था, जैन समाजकी असावधानता और अदूरदर्शिता से उतना नहीं हुआ, हमारा बड़ा भारी संस्कृत साहित्य हमारे देखते २ नष्टप्राय, तथा लुप्तप्राय हो गया और होता चला जाता है और आगे भी यदि जिन वाणी माता के पुत्र इस ओर पूर्णतया लक्ष न देंगे तो एक दिन वह उपस्थित होगा जबकि उसका नामो-निशान भी सुनने में न आवेगा । पर खुसी की बात है कि कुछ दिन से समाज का ध्यान ग्रंथ प्रकाशन की ओर भी आकर्षित हुआ है, दो एक संस्था भी इस ओर अग्रसर हुई हैं और कितने ही कार्यालयों ने भी इस ओर दृष्टि डाली है हम इन संस्था और कार्यालयों की स्थायी सफलता के अभिलाषी हैं ।

जो ग्रंथ आज आप के सामने है वह एक पूजा पाठ है और छंदोबद्ध है तथा हिन्दी भाषा में है । कुछ लोग भाषा के ग्रंथों को अनादर की दृष्टि से देखते हैं, पर हमारी समझ में उनके विचार भ्रममूलक ही कहना चाहिये । क्योंकि-

“भाव अनोखे चाहिये भाषा कोऊ होय”

वास्तव में तो कविता का महत्व कोई भाषा पर निर्भर नहीं है बल्कि भाव पर ही अधिक निर्भर है भाषा की रचना अच्छी होने पर भी यदि उसमें उत्तम भाव नहीं है तो वह अनुपादेय होती है पर भावपूर्ण रचना किसी भाषा में क्यों न हो सहृदय पाठकों के लिये अवश्य ही वह रोचक होती है। इस ग्रंथ के विषय में भी यही बात युक्तियुक्त है, इसकी कविता ललित और सरस है। इस में शब्दों की सुंदरता के साथ २ भाव संकलन का समावेश कविता की सजीवता का परिचायक है।

इस ग्रंथ में जीवादित्वों तथा मोक्षमार्ग का मुख्यतया विचार नहीं किया गया है पर ग्रंथकारने इस ग्रंथ में भक्तिमार्ग, और उपासनामार्ग तथा अर्चना फल को सचित्र अंकित कर दिया है। आप इस ग्रंथ के किसी छंद को पढ़ जाइये आप के परिणामों में अवश्य ही एक अनिर्वचनीय फरक हो जायगा।

“देव पूजा” गृहस्थों के छह आवश्यक कर्मों में से प्रथम कर्तव्य है पर समय के परिवर्तन से दूसरे २ कर्तव्यों की तरह हमारा नित्य नैमित्तिक क्रिया-काण्ड भी अस्त प्राय हो गया है। यह बात हमारे लिये कितनी लज्जाजनक है कि जिन जिनेन्द्र भगवान की पूजा के लिये अतुलविभूतियुक्त देवेन्द्र भी हमें शह उत्सुक रहते हैं उन्हीं जिनेन्द्र भगवान की पूजा और प्रक्षाल करने के लिये

ती.चौ.

४

पुजारियों को रक्खना पड़ता है। इससे बढ़कर हमारी शिथिलता का क्या उदाहरण हो सका है।

नित्य नियमादि पूजा पाठ तो सब जगह मिलते हैं और वे मुद्रित भी हो चुके हैं पर ऐसे २ पूजा पाठ प्रायः सब जगह नहीं पाये जाते हैं इसलिये इनके प्राप्त करने में थड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं इन्हीं सब बातों को सोचकर भाई दुलीचंदजी ने इसे मुद्रित कराकर इसकी आवश्यकता की पूर्ति की। ग्रंथ का संपादन मैंने भरसक सावधानता पूर्वक किया है, इसके संबंध में मैं इतना और कह देना आवश्यक समझता हूँ कि "इसका संपादन उसी पुस्तक पर से किया गया है जिसे कविवर ने स्वयं अपने हाथ से लिखी थी"। तो भी इसमें प्रमादवश या दृष्टिदोषसे कोई दोष रह गया हो तो विश्व पाठक मुझे क्षमा करेंगे। क्योंकि—

गच्छतस्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः

हसन्ति दुर्जनास्तत्र क्षमो दधति सज्जनाः ।

३१-१-१७

बनारस

जैनसमाज का दास—

मुन्नालाल जैन

मालधोन [सागर]

भू.

४



नम सिद्धेभ्यः

काशी निवासी कविघर बृदावनदासजी कृत-

तीसचौवीसी पूजा ।



प्रथम मंगलाचरण ।

दोहा-सिद्धसदन सुखददन जिन, मदनकदन अभिराम ।
विघ्नहरन मंगलकरन, तुम पद सदा प्रणाम ॥१॥
गैत आगत वैरतत सकल, तीर्थकर जगदीश ।
भरतैरावत पचं गिरि, नमों सातसै बीस ॥२॥

अथ मूलश्लोक अनुसार मंगलम् ।

दोहा-भवभयते भयभीत है, शरणगही प्रभु आय ।

उदाशीन हौ भोगते, यह लखि परसौ पाय ॥३॥

अथ नामावलिस्तोत्र लिख्यते ।

(छद तामरस तथा चण्डी तथा नयमालिनी मात्रा १६) यथा—
 तीर्थंकर जिनधीश नमस्ते । जिन विभु शुद्ध मतीश नमस्ते ।
 अकलंको महबोध नमस्ते । जिह्वा केवली शोध नमस्ते ॥१॥
 महानाद महनन्द नमस्ते । विदु उत्तम चिदुनद नमस्ते ।
 स्वज्ञ स्वयं प्रभु विष्णु नमस्ते । विद्या ब्रह्म महिष्णु नमस्ते ॥२॥
 कामोमेश अनत नमस्ते । शुभ शकर सुगतत नमस्ते ।
 भीम अर्द्धनारीश नमस्ते । अंतकजीति धनीश नमस्ते ॥३॥
 कर्त्ता हर्त्ता कर्म नमस्ते । स्वयं ज्योति जिन परम नमस्ते ।
 केवलदृग केवली नमस्ते । ईशभूत वंचली नमस्ते ॥४॥
 मृत्युंजय मुखचार नमस्ते । वेदज्ञानि श्रुतिपार नमस्ते ।

ती.चौ.

३

वेदकार शुचिधीश नमस्ते । हरि बृहस्पति सदीश नमस्ते ॥५॥
चन्द्रकलाधर ज्येष्ठ नमस्ते । ईशानो वृषभेष्ठ नमस्ते ।
द्वादशात्म श्रीमान नमस्ते । विधुःसुधी जिनवान नमस्ते ।
जै कोविद श्रीकंठ नमस्ते । आत्मभू निरगथ नमस्ते ।
रज्यभूव श्रेष्ठाय नमस्ते । जै जै जै जैदाय नमस्ते ॥७॥
कमलाशन ध्येभूव नमस्ते । गौतमिस्त माधूव नमस्ते ॥
स्वामिबास वसुलांछ नमस्ते । सुग निरंजन निःकांछ नमस्ते ॥
निरअम्बर निररेक नमस्ते । निकल त्रिमल शांतिक नमस्ते ।
भववर्जित सुमतीय नमस्ते । चेतन चिद्रूपीय नमस्ते ॥
महोत्तामचेता सु नमस्ते । विदमान्यो नेता सु नमस्ते
निगुण अकरता धीर नमस्ते । मत्सर मनमथचीर -

१ सुख देने वाले । २ भूतकाल सम्बन्धी । ३ भक्ति
कालके । ५ महाबोध । ६ कर्मोंका जीतने वाला ।
जीतने वाली । ९ वासल्य युक्त ।

पृ.

शोद्धिभर्तृ वृषकर्तृ नमस्ते । धर्मचक्रि वृषभर्तृ नमस्ते ।
 बीतराग निरहार नमस्ते । मूलमागकर्तार नमस्ते ॥११॥
 त्रिधाज्ञान सिद्धांत नमस्ते । शुभयः स्याद्वादांत नमस्ते ।
 विधिवेत्ता वादीश नमस्ते । द्वैताद्वैत मुनीश नमस्ते ॥१२॥
 सुनयोवर बोधक्ष नमस्ते । दो प्रमाण नय वक्ष नमस्ते ।
 ऐकांतिक मतदार नमस्ते । सकल पाप परिहार नमस्ते ॥१३॥
 वत्ता-जो नर तिरकालं नामविशालं यह शत आठ मुपाठ करै ।
 सो जिन पदसारं लहि अविकारं शुक्त भुक्त जुत मुक्त वरै ॥१४॥

इति पठित्वा प्रणामं कृत्वा मंडलायामे मध्यभागे स्थापितकमलास्योपरि-
 पुष्पाञ्जलिं क्षपेत् ।

अथ प्रथमजम्बूद्वीपे पूर्वापरविदेहे सीमंधर-
 जुगमंधर-बाहु-सुबाहु-चतुर्विद्यमान-
 तीर्थकरपूजा प्रारभ्यते ।

दोहा-सुर सुरपति पूजत सदा, विहरमान जिनचार ।

आदि मेरु सुविदेह में, थापों भव भय डार ॥१॥

ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्राग्रतरत अवतरत सर्वोपद् ।

ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्र सम सन्निहिताः भवत भवत वपद् ।

तोटक छंद--

जल उज्जल निर्मल गंध मई । प्रभु अग्र समग्र सुधार दई ॥

गिरिआदिय विद्य विदेहनिमें । जजिहों जिनचारिसु गेहनिमें ॥१॥

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जल निर्वपामि [इति स्वाहा] ॥ १ ॥

हरिचंदन केदलिनंदनलै । पद पूजनतैं दुख दंद टलै ॥गिरि०॥२॥

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थकरेभ्यो भवतापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीयुगमंधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २ ॥

सीतोदा दच्छिन गिरि आद । बाहुधरै मृगलच्छन पाद ।
विजया मातु पिता सुग्रीव । जजौं सुसीमा नगर अतीव ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सीतोदा उत्तर गिरि आद । श्री सुबाहु कपिलच्छ अवाद ।
निशिदिलराय सुनंदामात । जजौं अजोध्या जगविख्यात ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुबाहुस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ४ ॥

पूरन अर्घ्य बनायो रुष्ट । जजौं चरन चहुंजिनगुन पुष्ट ।
मिटै बिघ्न दुख दारिद दुष्ट । प्रगटै परम शर्म शिव सुष्ट ॥

ॐ ह्रीं सीमधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

अथ जयमाला-

छदरथोद्धता (वर्ण ११)

तीरथेश गुणधेश देवही । इंद चंद गन इंद सेवही ॥

वर्तमान सुविदेह वासकी । आदिमेरु जयमाल तासकी ॥१॥

छंद पद्मजी (लघ्वत मात्रा (१६))

जय श्रीमंधर जुगमंधरेश । जय बाहु सुबाहु तीरथेश ॥
 गिरि प्रथम पुन्व पच्छिम बिदेह । ता माहि विराजतु हैं अवेह ॥२॥
 धनु पंच शतक तन उच्च सुच । धिति कोटि पुन्वकी है समुच ।
 हैं केवलज्ञान विराजमान । जुतसमवशरन रचना महान ॥३॥
 सुरनर खग पूजत चरन आन । गुन गान करत बहुभगत ठान ।
 जहैं बानी खिरत त्रिकाल सार । भवि सुनत लहत आनंद अपार ॥४॥
 जहैं जिन गुनमें मुनि होय मग्न । शिवसम्पति लैकरि कर्मभग्न ।
 शिव नगर डगर नित चलत जत्र । हैं सकल शलाके पुरुष तत्र ॥५॥
 उतकृष्ट काल चौथो सदीव । जहैं वरततु है आनंद अतीव ।
 प्रभु करत विहार जहाँ पुनीत । जुत समवशरन चवघाति जीत ॥६॥
 गनधर आदिक चवसंघजुक्त । सो धन्यक्षेत्र वैदेह शुक्त ।
 मैं जाचतु हौं तुमसों दयाल । भव सागरतें मोकों निकाल ॥७॥

ती. चौ.

१०

मति ढीलकरो करुनानिधान । यह अरज हमारी सुनहु कान ।
संसार कष्ट चकचूर चूर । आनंद अनूपम पूर पूर ॥८॥

घत्ताछद—

जय श्री जिननायक, गुनगनछायक, बिन्निबिनायक, हौ सबही ।
“वृंदावन” ध्यावत, नितगुनगावत, वांछितपावतु है अबही ॥

ॐ ही सीमधर-युगमधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थकरेभ्यो महार्घ निर्वपामि ।

दोहा—प्रथम सुदर्शन मेरुके, विहरमान जिनचार ।

जो पूजै सो सकल सुख, लहै अनेक प्रकार ॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिक्षपेत्)

इति प्रथममेरु पूजा समाप्ता ॥१॥

अथ जम्बूदीपजरतदेवस्थवर्त्तमानचतुर्विंशति ।

पूजा प्रारब्धते ।

पृ.

१०

ती. चौ

११

छंद लोलतरंग (वर्ण ११)

श्रीवृषभादि जिनेसुर सारं । चोविस राजतु हैं अविकारं ।
थापतु हों पदपूजन हेता । दुःख विनाशि सवै सुख देता ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रावतर अत्रतर सवौपद् ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव
भव वपद् स्वाहा ।

अष्टक ।

छंद लोलतरंग-(वर्ण ११)

नीरग हीर भरी हिमभारी । धार करों त्रयताप निवारी ।
आदि गिरिंद जिनिंद जितवा । वर्त्तत भर्त्त करों तसु सेवा ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥ १ ॥
चन्दन केशर कदली नंदा लैघसिपूजिनशै दुखदंदा ॥आदि०॥२॥

११

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥ २ ॥

तंदुल मंदुल पुंजधरीजै । सुंदर सार अखै सुख लीजै ॥ आदि० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥ ३ ॥

केतुकि आदि प्रसून चढ़ावो । शूलनिमूल सुशील बढ़ावों आ० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥ ४ ॥

नेवज सुंदर अर्पण कीजे । हे प्रभु मोहि निराकुल दीजे ॥ आदि० ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिचतुर्विंशति-जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

दीप उदोत करुं तुम आगै । नाशिविमोह सुबोध सु जागै ॥ आदि० ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥ ६ ॥

धूप हुताशन माहिं उखेवों । कर्मजराय निजातम बेवों ॥ आदि० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥ ७ ॥

१ उज्ज्वल । २ फूल । ३ जिसमें आकुलता नहीं ऐसा मोक्ष ।

ती. चौ

१३

भेटधरों फल प्रांसुकलाई । द्यो शिवनग्रतनी ठकुराई ॥ आदि० ॥

ॐ ह्री श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥ ८ ॥

अर्घ वनायचढ़ावहुं स्वामी । वेगकरो हमकों शिवगामी । आदि० ॥ ९ ॥

ॐ ह्री श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ निर्वपामि ॥ ९ ॥

प्रत्येक अर्घ ।

रूपचौपाई ॥ मात्रा १६ ॥

नाभिनंद वृषलच्छन धारी । कनक वरन कौशेल अवतारी ।

पांच शतक धनु तुंगशरीरा । जजौं भरत वरतत यह धीरा ॥ १॥

ॐ ह्री श्री वृषभाय अर्घ निर्वपामि ॥ १ ॥

विजय मातु सुत सुवरन वरना । तनुधनु साढ़चार शतधरना ।

वंश इक्ष्वाकु अजित गज चरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ॥ २ ॥

ॐ ह्री श्री अजिताय अर्घ निर्वपामि ॥ २ ॥

श्रावस्ती दिदरथके नंदा । चार शतक धनु कनक अमंदा ।

पृ.

१३

संभव वाजि चिह्न पद्म धरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ३
ॐ ह्रीं श्री संभवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सिद्धार्थ सुत कौशलधनी । कपिलच्छन अभिनंदन तनी ॥
वंशीक्षाकु कनक तनु वरना । जजौं भरत यह भवभय हरना ॥४॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ४ ॥

वंश इक्षाकु मेघस्थनंदन । कोकचिह्न तन कनक अमंदन ।
सुमति तीनशत तनुधनु धरना । जजौं भरत यह त्रिभुवन शरना ॥५॥
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

धारन पिता सुक्षीमा माता । कौशांबी छवि पद्म विख्याता ।
धनुषतुग ढाईसौ वरना । जजौं भरत यह भवसरतरना ॥६॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ६ ॥

१ अनुभवन करों, जानो । २ जीव जन्तु राहित-शुद्ध । ३ अजोध्या ।

ती. चौ.

१५

सुपरतिष्ठ 'पृथिवीदे' माय । हरति वरन दो सौ धनुकाय ॥

जिनसुपास काशी अवतरना । जजौं भरत यह अघअरि हरना । ७।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घ्य ॥ ७ ॥

मातु लक्ष्मना पितु महसेन । चंद चंद तन दुति सुखदेन ॥

डेढ़ शतक धनु तनु शशि चरना । जजौं भरत यह भवतप हरना ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनाय अर्घ्य निर्वपामि ॥ ८ ॥

नृप सुग्रीव रमासुत सुन्दर । कुंदवरन तन विनत पुरंदर ॥

पुष्पदंत तनु धनु शत वरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्ताय अर्घ्य ॥ ९ ॥

राजभद्रपुर दिठरथ नंदन । नवेचाप तन दुति अभिनंदन ॥

शीतल चिन्ह कलप तरु चरना । जजौं भरत कह दारिद दरना ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलाय अर्घ्य ॥ १० ॥

पू.

१५

ती.चौ.

१६

विष्णुतात विष्णुश्रीमाता । तनकन चाप असी विख्याता ॥
श्रेय सिंघपुर पातक हरना । जजौं भरत यह विपत विदरना ॥११॥

ॐ ह्री श्रीश्रेयांशनाथाय अर्घ्य ॥११॥

चंपापुर वसुपूज नरेसुर । वासुपूज जिन जजत सुरेसुर ॥

सत्तर धनुतनु मानिक वरना । जजौं भरत यह आतम तरना ॥१२॥

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यनाथाय अर्घ्य ॥१२॥

नगर कंपिला सौर्य नरेश । कनक काय धनु साठ धरेश ॥

विमल बराह चिहन पग धरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ॥१३॥

ॐ ह्री श्रीविमलाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

सिंहसेन नृप सुव्रत माय । नगर अजोध्या सुवरन काय ॥

धनु पंचास अनंत सुख धरना । जजौं भरत यह भवदधि तरना ॥१४॥

ॐ ह्री श्रीअनंतनाथाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१४॥

पू

१६

ती.चौ.

१७

भानुपिता सुप्रभदे मात । स्तनपुरी जांवेनद गात ॥

धनु पैताल धरम तनु धरना । जजौ भरत यह तारन तरना ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

विश्वसेन ऐरादे मात । जनमें शांति नागपुर ख्यात ।

चालिस धनु तन त्रय पद धरना । जजौ भरत यह आनंद भरना ॥

ॐ ह्रीं श्रीगातिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

शूरसेन सुत मित्रा माय । छाग चिन्ह धनु पैतिस काय ।

कुंथ हस्तनापुर कनवरना । जजौ भरत यह त्रिभुवन शरना ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तात सुदरसन प्रभवति माता । हस्तनाग कुरुवंश विख्याता ।

तीसचाप तन अर अरिहरना । जजौ भरत यह आनंद भरना ॥१८॥

१ सोना । २ हस्तनागपुर ।

५

१७

ती. चौ.

१८

ॐ ह्री श्री अरहनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

पद्मावति तिय कुभ नरेसुर । मिथुलेसुर श्रीमल्लिजिनेसुर ।

धनुपचीस तन हाँक वरना । जजौँ भरत यह मनमलहरना ॥१९॥

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि १९॥

राजग्रह वप्रासुत सुन्दर । श्रीमुनिसुव्रत धरम धुरंधर ।

वीसचाप कच्छप पग धरना । जजौँ भगत यह आनँद भरना ॥२०॥

ॐ ह्री श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

मिथुल नगर विजयारथ नंदा । नमि सुहेम तन आनँद कंदा ।

कमल चिह्न पंद्रह धनुवरना । जजौँ भरत यह आनँद भरना ॥२१॥

ॐ ह्री श्री नमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

समुदविजय शिवदेवी नंदन । नेमि नीलतन शंख सुछंदन ॥

तनधनु दश द्वावति वरना । जजौँ भरत यह तारन तरना ॥२२॥

पू.

१८

ती.चौ.

१९

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

विश्वसेन वामादे जननी । तनुदुति हरित हाथ नव गननी ॥

काशी पार्श्वनाथ अवतरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

सिद्धारथ त्रिशलादे माता । कुडनग्र हरि चिह्न विख्याता ॥

सातहाथ तन सनमति धरना । जजौं भरत यह तारन तरना ॥२४॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा--वृषभादिक चौबीस जिन, वरतमान यहि थान ।

पूजौं पूरन अरघसौं, देत विमल कल्याण ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।

जयमाला ।

दोहा--गुन अनंत भगवंत तुव, को करि सकै बखान ।

१ तथिंकर, चक्रवर्ती और कामदेव । २ हस्तनागपुर । ३-४ सोना ।

पू.

१९

ती.चौ.

२२

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर संवौपट् ।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितभव
भव वपट् स्वाहा ॥

अष्टक ।

मोतीदाम छंद—

लिया भर झारिय निर्मल नीर । करौं त्रयधार हरो भवपीर ॥
सुदर्शन भर्त्तनें गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो, जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामि ।

सुगंध घँसाय पवित्र अपार । चढ़ाय हरो भवताप विकार ॥
सुदर्शन भर्त्तने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥२॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनभ्यो सुगन्धं ॥२॥

पू०

२१

अखंडित तंदुल पुंज धरंत । सवै दुख दरिद्र चूरिकरंत ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥३॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षत ॥३॥

प्रसून सुरद्रुम आदिअनेक । चढ़ाय हरों सरमूल तितेक ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पुष्पं ॥४॥

छहोंरस पूरित नेवज लाय । चढ़ावत रोग छुधा नाशिजाय ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

प्रकाशित दीप धरों द्विग लेय । प्रभूमोहि ज्ञानसु केवल देय ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं ॥६॥

सुखेवत धूप सुगंधित पर्प । ततच्छन दुष्ट जैरे वसुकर्म ॥

सुदर्शन भर्त्तने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं ॥७॥

अदोषितलेफलसुंदरएव । धरोढिगद्यौशिवहे जिनदेवलं सुदर्शन०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरताती तचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं ॥८॥

चढ़ावतअर्घप्रमोदसमेत । अनर्घ पदस्थततच्छनदेत सुदर्शन०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतानीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

पादता छंद-(मात्रा १४)

निखान जिनेसुर ध्यावों । निखान सुथानक पावों ॥

यह जंबूभारत सुंदर । निततीत जजंति पुरंदर ॥

ॐ ह्रीं श्रीनिर्गणाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१॥

भवसागर तारन हारे । जिन सागर पर्म उदारे । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसागराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

नित साधु सुध्यावतजाकों । जिन साधु नमों नित ताकों । यह

ॐ ह्रीं श्री महासाधवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

मल वजित श्री विमलेश । नित दायक सौख्य असेशा । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

शुद्धाभ विशुद्ध सरूपी । मति शुद्ध करें शिव भूपी । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धाभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

जुग श्रीधर श्रीधर स्वामी । भवि श्रीकरतार नमामी । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

सब जीव मित्रता दाता । जिन दत्तनाथ विख्याता । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीदत्तनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

१ अतीत-भूतकाल सम्बन्धी ।

ती. चौ

२६

अमलप्रभ नाम जिनेशा । मल नाश कियोजुअसेशा । यह० ॥

ॐ ही श्री अमलप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

जग जंतु अनंत उधारे । प्रभु उद्धरनाथ हमारे । यह० ॥

ॐ ही श्री उद्धराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

कर्मेधन भस्म करैया । जिन अग्निनाथ सुखदैया । यह० ॥

ॐ ही श्री अग्निनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

वरछायक संजम दाता ! जिन संजमनाथ विख्याता । यह० ॥

ॐ ही श्री संयमाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

सुर पुष्पांजलि पद देवै । जिन पुष्पांजलिकों सेवै ॥ यह० ॥

ॐ ही पुष्पाजलिने अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

नाना गुन गन भंडारी । शिव गुणा अधिपति भौतारी । यह० ॥

ॐ ही शिवगुणाधिपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

पू.

२६

अरि चुरे जुत उतसाहा । शिवधाम लहे उतसाहा । यह०॥

ॐ ह्रीं उत्साहाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

जिन ज्ञान विज्ञान बताई । जिन ज्ञाननेत्र सुखदाई । यह० ॥

ॐ ह्रीं ज्ञाननेत्रायार्घं निर्वपामि ॥१५॥

जुत परमैश्वर्य विराजे । परमेशुर श्री जिनराजे । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री परमेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विमलेशुरकों उर ध्यावों । गुन निर्मल आतम पावों । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

गुन सकल जथारथ धारी । जय श्री जथार्थ भव तारी । यह०॥

ॐ ह्रीं श्री यथार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

जसरास लोकमेंह छायो । सुजशोधर देव कहायो । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

ती.चौ.

२८

कलिकर्म कलंकनि चूरे । जिनकृष्ण स्वच्छगुनपूरे । यह० ॥

ॐ ही श्रीकृष्णाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

वर केवल सन्मति दाता । जिन ज्ञानमती जगताता । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमतिज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

सुविशुद्धमती जिननामी । सुविशुद्धिद दायक स्वामी । यह० ॥

ॐ ही श्रीविशुद्धमतये अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

श्री भद्रनाम जिन जनों । गुनसारथीक उर आनों । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री भदाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

शुभ शांति करै जगमाहीं । जिन शांति सुशान्ति दाहीं । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

सोम-मेरु सुदर्शन सार, भरततीत चौबीस जिन ।

जजौ भरत भरतार, पूरन आनंद दीजिये ॥

१ चारों प्रकार के देव ।

पू.

२८

ॐ ही श्री भरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि ।

जयमाला ।

लोलतरंग छंद-

श्रीमततीत जिनेसुर देवा । सेवतु हैं सुर चारिउ भेवा ॥
जम्बुव भारततीत विशाला । तासतनी जयमाल रसाळा ॥१॥

तोटक छन्द-

निरवानकरं निरवान जिनं । सुख सागर सागर नाम गिनं ॥
न्ति साधुनतं जिन साधुमहा । विमलप्रभ भाव पुनीत लहा ॥२॥
जिन शुद्धअभा भवदाघ हर । जिन श्रीधर नित्य सुश्रीयकर ॥
जिनदत्त सदा शुभ कर्म करैं । अमल प्रभ कर्म कलक हरैं ॥३॥
जगजंतु उधारन उद्धरनं । अरि इंधन अग्नि जिनं शरन ॥
जिन संजम संजम दायक हैं । पुहपांजलिजी शिवलायक हैं ॥४॥
शिवराज गणाधिप सुंदर हैं । उतसाह नमत पुरंदर हैं ॥
जिन ज्ञान सुनैन अमंदित हैं । परमेशुर सत सुर बंदित हैं ॥५॥

। चंदन केदलीनिंदन सीर । घासिकर जजत हस्त भवपीर ॥
हरो भव पीर । जै जै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

शुक्त मुक्त जनु तंदुल हीर । पुंज धरत दारिद्र दुख चीर ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुमन धरेत । समर सूत निरमूलन हेत ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नव्य गव्य रसरंजित सार । जजत चरन प्रभु आकुलटार ।
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

दीपकं जोत उदोत करंत । आरति करत मोहतम श्रंत ॥
हरो भव पीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

खेवों धूप उडै यह धूम । करत भरम जरि उडै सुधूम ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

प्राशुक फल कल वर्जित लाय । हरत विघन जिनचरन चढ़ाय ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥८॥

परम पुनीत धरो ढिग अर्घ । वेग देहु पद मोहि अनर्घ ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

ती.चौ.

२४

प्रत्येक अर्घ ।

मोतीदाम छद (वर्ण १०)

समन्वित पद्म उभै परकार । महावर पद्म जिनेगुर सार ॥
अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह भान ॥
ॐ ह्रीं महापद्माय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सवै सुर सेवत सूरजिनिद । अतत्त्वच्छपातमकों दिन इंद ॥
अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह भान ॥
ॐ ह्रीं सूर्ये अर्घं निर्वपामि ॥२॥

प्रभा भुवि मंडित सुप्रभ देव । प्रबोधक भव्य भजो वसु भेव ॥
अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह भान ॥
ॐ ह्रीं सुप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

१ अतत्त्वरूपी गानिके अं१कारकां । २ सूर्य ।

पृ.

३४

स्वयंप्रभ देव स्वयं मतिवंत । स्वयं सरवज्ञ स्वयं भगवंत ॥
अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह भान ॥

ॐ स्वयंप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

छद तोटक (प्रस्तार० ॥५॥५॥५॥५॥ एवं वर्ण १२)

सखायुध आयुध ज्ञान धरें । अरि कर्म ततच्छून चूरि करें ॥
यह जंबुव भारत आगत है । तिनकों जजतें मन पागत है ॥

ॐ ह्रीं सर्वायुधाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

जगदेव जगत्रय नायक हैं । त्रिजगद्गुरुजी सब लायक हैं ॥यह०

ॐ ह्रीं जगदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

विसदोदय देव प्रनाम करों । विसदोदय दायक ध्यान धरों ॥यह०

ॐ ह्रीं उदयदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

रविकोटि प्रभा जहँला जतु है । सुप्रभा जिनको छवि छाजतु है ॥यह०

ॐ ह्रीं प्रभादेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

उदकेस जिनेश देयाकित हैं। सुमतेस महेस निशांकित हैं॥यह०

ॐ ह्रीं उदकाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

जिन प्रश्न सुकीरत ध्यान धरों। सब संशय भर्म प्रहारकरों॥यह०॥

ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

जमुकीरतसार जगत्त उदै। उदये वरकीरत नाम लहै॥यह०

ॐ ह्रीं उदयकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥११॥

जय वर्तत जास त्रिलोक त्रिषे। जयवर्त जिनेश नमामि शिषे॥यह०

ॐ ह्रीं जयकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद रथोद्धता (प्रस्तार० ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।ऽ वर्ण ११) यथा—

ज्ञान केवल प्रकाश के सही। पूर्ण बुद्धि भवितारि हैं यही ॥

१ इस पूजा में ११ वें तीर्थकर उदयकीर्ति है सो संस्कृत पाठमें यह नाम है।
इसके बदले में संस्कृत पाठमें १६ वें तीर्थकर निर्मलजी अधिकार हैं।

ती. चौ.

३७

पूजि हों सुजिन होनहार हैं । जंबु भारत विषैं उदार हैं ॥

ॐ ही पूर्णबुद्धाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

निःकषाय विषयादि तीत हैं । निःकषाय निरद्वंद मीत हैं ॥ पूजिहों०

ॐ ही निःकषायाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१४॥

कर्म भर्म मल छै अशेष हैं । सो जिनेश विमले सुभेस हैं ॥ पूजिहों०

ॐ ही विमलप्रभाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१५॥

जासकौ अतुलहै प्रभावना । सो जिनंद बहुलेश ध्यावना ॥ पूजिहों०

ॐ ही बहुलाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१६॥

है विचित्र त्रय गुहा जास के । चित्रगुप्त नमि पादतासके ॥ पूजिहों०

ॐ चित्रगुप्ताय अर्घ्य निर्वपामि ॥१७॥

है समाधि सुखगुप्त सारजी । सो समाधि जिन गुप्त धारजी ॥ पूजिहों०

ॐ ही समाधिगुप्ताय अर्घ्य निर्वपामि ॥१८॥

श्री स्वयंभुव प्रनाम में करों । तासके सुगुन दामही धरों ॥ पूजि हों०

ॐ ही श्री स्वयंभुवे अर्घ्य निर्वपामि ॥१९॥

पृ.

३७

ती चौ.

४०

जिनके कल्याणक माहि आय । सुर चतुर निकायक जजै पाय ॥६॥
मैं वदतु हों मन वचन काय । पूजों पद आठो दरवलाय ॥
तुम भगत करों नाटक मचाय । द्रिम द्रिम द्रिम द्रिम मादल बजाय ॥
तुम तारन तरन हरन कलेश । जै जै जै जै जै जै जिनेश ॥
भव सकट दूर करो दयाल । “वृंदावन” वंदतु हैं त्रिकाल ॥७॥

वृत्ता उद-

जै मेरु सुदर्शन, आनंदवर्पन, भरत अनागत देववरा ।
जिननाथ नमामिय, चित्तधरामिय, ज्यों शिवपामिय विघ्नहरा ॥

ॐ ह्रीं जंबूभरतभावीजिनसमूहेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

सोरठा-जो पूजै मनलाय, जंबूभरत भविष्य जिन ।

सो भवि सुरपुर पाय, अमल अचल शिवपुरलहै ॥१॥

इत्याशीर्वादः ।

इति जंबूद्वीपभरतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ॥३॥

पू.

४०

अथ जंबूद्वीपैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिन पूजा लिख्यते ।

वसंततिलका छंद-(वर्ण १४)

जंबू सुउत्तरविपे वरक्षेत्र छाजे । ऐरावतख्यतित वर्त्तत श्रीसमाजे ।
श्रीबालचन्द्र जिन आदि समस्त देवा ।

थापों यहां त्रिविध नाथ करों सु सेवा ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्रावतरत अवरत सर्वौषद् ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठःठः ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत वषद्

अथाष्टक ।

नाराच छंद-(वर्ण २६)

सुजान्हवीय वारि हेमभारिमें भरों सही ।

त्रिधार देत हों प्रभू हरो त्रिरोग सो गही ।

जजामि जंबू उत्तरे जिनेश वर्त्तमान जी ।

सुरेश औगनेश जामु धारत सुध्यानजी ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥
कपूर देवतारु चंदनादि गंध पावने ।

चढ़ावते समस्त पाप तापकों नशावते । जजामि० ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥
अखड शाल थालमें उजाल जोतवंत हैं ।

धरंत पुंज कर्म कुज भर्मको हरंत हैं । जजामि ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥
सरोज केतुकी चमेली पुष्प भांति भांतिके ।

गूँथाय पूजियों सुदेव दाम पांति पांति के ॥ जजामि० ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो पुष्प निर्वपामि ॥४॥

स्थाल मोदकादि सद्यसार सुष्ट मिष्ट हैं ।

निरोगता प्रकाश हेतु पूज सिष्ट इष्ट हैं ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

अमोल दीपकों उदोत तास आरती करों ।

समस्त कर्म भर्म नाश ज्ञान भान विस्तरेण । जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीप निर्वपामि स्वाहा ॥६॥

दशांग धूप अग्नि माहि खेय हों हुलासों ।

सुधूम धूमकै मनो नचै मचै सुवाससों ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुपक्क और पुनीत आम्रकाम्रकादि ल्याइयो ।

चढ़ाय वीतराग मोक्ष थान हेतु पाइयो ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामि ॥८॥

जजामि जंबू उत्तरे जिनेश वर्त्तमान जी ।

सुरेश औगनेश जामु धारत सुध्यानजी ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥

कपूर देवतारु चंदनादि गंध पावने ।

चढ़ावते समस्त पाप तापकों नशावते । जजामि० ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

अखड शाल थालमें उजाल जोतवंत हैं ।

धरंत पुंज कर्म कुज भर्मको हरंत हैं । जजामि ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥

सरोज केतुकी चमेली पुष्प भांति भांतिके ।

गूँथाय पूजियो सुदेव दाम पांति पांति के ॥ जजामि० ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो पुष्प निर्वपामि ॥४॥

रशाल मोदकादि सद्यसार सुष्ट मिष्ट हैं ।

निरोगता प्रकाश हेतु पूज सिष्ट इष्ट हैं ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

अमोल दीपकों उदोत तास आरती करों ।

समस्त कर्म भर्म नाश ज्ञान भान विस्तर्गें । जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि स्वाहा ॥६॥

दशांग धूप अग्नि माहि खेय हों हुलासों ।

सुधूम घूमकै मनो नचै मचै सुवाससों ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुपक और पुनीत आम्रकाम्रकादि ल्याइयो ।

चढ़ाय वीतराग मोक्ष थान हेतु पाइयो ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामि ॥८॥

जलादि अष्ट सुष्ट पुष्ट द्रव्य अर्घ में धरा ।

तुम्हें चढ़ाय नाथजी अनर्घ थान विस्तरा ॥ जजामि० ।

ॐ ही जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ निर्वपामि ॥९॥

प्रत्येकार्घ ।

दोहा--बाल चंद्र समसुख बढ़त. बालचंद्र जिन जोय ।

जंबू ऐरावत विषैं, वरतमान जजि सोय ॥

ॐ ही बालचन्द्राय अर्घ निर्वपामि ॥१॥

सुव्रत सुव्रत देत नित, सेवत सुव्रत लोय ।

जंबू ऐरावत विषैं, वरतमान जजि सोय ॥

ॐ ही सुव्रताय अर्घ निर्वपामि ॥२॥

करम काठ कों अग्नि सम, अग्निसेन जिनचंद्र ।

जजों जंबु ऐरावते वरतमान सुख कंद ॥

ॐ ही अग्निसेनाय अर्घ निर्वपामि ॥३॥

त्रिभुवन में आनंद करन, नंद सेन सुखदेन ।
जंवैरावत वरत जजि, कवि कुल काम दधेन ॥

ॐ ही नंदसेनाय अर्घ्य निर्वपामि ॥४॥

भव्यनि कों श्री देतवर, सुख सागर श्रीदत्त ।
नमों जंबु ऐरावतें, जजों सु जै वरदत्त ॥

ॐ ही श्रीदत्ताय अर्घ्य निर्वपामि ॥५॥

व्रतधारक नित नमत जिहिं, ऐसे व्रतधर देव ।
वरतत जंवैरावतें, करों तास पद सेव ॥

ॐ ही व्रतधराय अर्घ्य निर्वपामि ॥६॥

शोम सोम सम सुख सदन, शोमचंद जिन चंद ।
जजों जंबु ऐरावतें, वरतमान गुन कंद ॥

ॐ ही शोमचन्द्राय अर्घ्य निर्वपामि ॥७॥

धारें दीरघ दृष्टिवर, धृत दीरघ जिन देव ।

जंबैरावत वस्तते, जजों ध्यान धरि एव ॥

ॐ ह्रीं धृतदीर्घाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

शत पुष्पक जिनवर जजों, शत पुष्पनि करिबीर ।

जंबैरावत वस्तते, हरत मदन सर पीर ॥

ॐ ह्रीं शतपुष्पाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

सुख अनंत भोगत सदा, शिवशत नाम जिनेश ।

जंबैरावत संत जजि, सेवत शेष महेश ॥

ॐ ह्रीं शिवशतये अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

श्रेय मार्ग उपदेशियो, जिन श्रियांश श्रीजुक्त ।

१ सस्कृत पृजामें 'शतपुष्पक' नाम लिखा है तसको कविने 'शतपुष्प' नाम समझ कर ऐसाही दोहे में गूथा है । खपुस्तक में भी ऐसाही पाठ है ।

ती.चौ.

४७

जंवैरावत संत जाजि, दीजे भुक्त सुमुक्त ॥

ॐ ही श्रेयांशाय अर्घ निर्वपामि ॥११॥

श्रुति जलतें मल कर्म ध्वै, श्रुति जल भरा पवित्र ।

जंवैरावत संत जाजि, जै जिन त्रिभुवन मित्र ॥

ॐ ही श्रुतिजलाय अर्घ निर्वपामि ॥१२॥

बल अनंत संजुक्त श्री, सिंहसेन सुखदेन ।

जंवैरावत वरत जाजि, दारिद्र्य दुरित रहेन ॥

ॐ ही सिंहसेनाय अर्घ निर्वपामि ॥१३॥

कीन क्रोध उपशांत जिन, लीन शांत उपशांत ।

जंवैरावत सत जाजि, मिटत सकल भवभ्रांत ॥

ॐ ही उपशांताय अर्घ निर्वपामि १४॥

१ सस्कृत पूजा के स्वयंजल तथा स्वयंज्वल पाठ लिखा है कविने उसको श्रुतिजल नाम रक्खा है ।

पू

४७

तीन गुप्त जुतजे धेरें, गुप्ताशन निज ध्यान ।
जंबैरावत संत जजि, गुप्ताशन भगवान ॥

ॐ ह्रीं गुप्ताशनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

वीरज विसद अनंत करि, डारे कर्म निवीर्य ।
जंबैरावत संत जजि, जै अनंत वरवीर्य ॥

ॐ ह्रीं अनंतवीर्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

निजनिधि भव्यनि देतु हैं, आपु निकट सु बुलाय ।
जंबैरावत संत जजि, पार्श्वनाथ जिनराय ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

श्री जिनवर अभिधान नित, भोगत परम निधान ।
जंबैरावत संत जजि, नमों जोर जुगपान ॥

ॐ ह्रीं अभिधानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

मरुत देव सेवत सदा, श्री मरुदेव जिनैश ।
जैवैरावत संत जजि, मेढत कुमति कलेश ॥

ॐ ह्रीं मरुदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

शोभा विमल विभूति जुग, धौरे श्रीधर सार ।
जैवैरावत संत जजि, तार तार अवतार ॥

ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

इंद चंद नागेंद जस, गावत सुरस सुकंठ ।
जैवैरावत संत जजि, जै जिन श्याम सुकंठ ।

ॐ ह्रीं श्यामकटाय अर्घं निर्वपामि २१॥

विघन सघन वन दहन कौं, अग्नि अग्निप्रभु पुष्ट ।
जैवैरावत संत जजि, द्यौ शिव संपति सुष्ट ॥

ॐ ह्रीं अग्निप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

दाहक करम कबंधके अग्निदत्त जिनराज ।

जैबैरावत संत जाजि, यह शिव सहज इलाज ॥

ॐ ह्रीं अग्निदत्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २३ ॥

वीर धीर सेवत चरन, वीर सेन जिनचंद ।

जैबैरावत संत जजि, हों सकल दुखदंद ॥

ॐ ह्रीं वीरसेनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २४ ॥

छंद चौपाई--(मात्रा १५)

प्रथम मेरु ऐरावत सुन्दर । वरतमान जिन जगत पुरंदर ॥

चौविस जिनवर धरम धुरंधर । जजों ध्यान अपने उर मंदर ॥

ॐ ह्रीं जम्बूत्तरैरावते वर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामि ॥ २५ ॥

जयमाला ।

छंद वृत्तानंद (मात्रा २३)

जै सदगुण जुक्ता, भवभय मुक्ता, आनंद मुक्ता, शुक्त वरा ।

ती. चौ

५१

दारिद्र तम खंडा, भानु प्रंचडा, जे ब्रह्ममंडा, मंड करा ॥ १ ॥

छंद पाद्यों--(मात्रा १६ लघ्वंत)

जै वालचंद सुव्रंत व्रतेन, जै अग्निसेन अरु नन्दिसेन ।
श्रीदत्त जयति व्रतधर उदार । श्री शोमचन्द्र धृत दीर्घसार ॥ २ ॥
शतपुष्प शिवसन श्रियांशदेव । श्रुति जल जै सिंह सुसेन एव ।
उपशाति सुगुप्तासन जिनिद । सुअनंतवीर्य प्रभु पार्श्वचद ॥ ३ ॥
अभिधान मरुत श्रीधर दयाल । जिनश्यामकंठ अग्निनि प्रभाल ॥
जै अग्नि दत्त जै वीरसेन । तव गुन अनंत कवि कह सकेन ॥ ४ ॥
शुचि बुद्धि सिंधु सिद्धांत पार । दुति मारतइ परचडहार ॥
तनस्वेदरहित निरमल लसत । शृकसेतवरन समचतुर वंत ॥ ५ ॥
संस्थान प्रथम अति रूपवान । तन शौरभ शुभ लच्छन प्रमान ।
अतिबल प्रियवच भापतमहेश । दुरभिक्ष हरन नभगतजिनेश ॥ ६ ॥

१ यहा पर कविवर ने अपनेवनाये हुए छंद में 'शतपुष्पक' 'नामको' भी
बिगाड़ कर शतपुष्प लिख दिया है । कपुस्तक में भी शतपुष्प ऐसाही पाठ है ।

पृ.

५१

जियवाधा विनुनित सुख लहंत । तरु फल फूलित शंका हरत ॥
 मुख चारसरव विद्या अधीश । उनमेष रहित दृग जय जगदीश ७
 नख केश वृद्धितें रहित सुष्ट । धुनि मागधि सब जिय प्रीति पुष्ट ॥
 दिग शोभित भूतल मुकरजेम । मारुत सुगंध दायक सुखेम ॥८॥
 गंधोदवृष्टि सुर रचत पद्म । फल भार शालि नुतशर्म सद्म ॥
 निरमल अकाश सुरजय उचार । कवला अहार वर्जित निहार ॥९॥
 वृषचक्र दिपै मंगल सुदर्ब । वसुप्रातिहार्यनव लब्ध सर्व ॥
 इत्यादि अनंत सुगुन निधान । “ वृन्दावन ” वंदत जोरि पान ॥१०॥

वक्ता--जै दीनदयाला, गुन मनिमाला, ऐरावतथित दीप यही ।
 सुर नर मुनि वंदत, पाप निकंदत, दीजे मोकूं मुक्त मही ॥

ॐ ह्रीं-जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥११॥

आर्याछंद--जो पूजै मानलाई, जंबू ऐरावते सुथित भाई ।

चौबीसों जिनराई, सो पावै भुक्ति मुक्ति ठकुराई ॥१२॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्री जंबूद्वीपैरावतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथ जम्बूद्वीप ऐरावतातीतचतुर्विं- शतिजिनपूजा प्रारम्भ्यते ।

इन्द्रवज्रा—

नागेन्द्र के उत्तर भाग सोहे । ऐरावत क्षेत्र सुनेत्र मोहे ॥
तामें अतीतं जिनराज राजें । थापों तिन्हें मुक्ति समाज काजें ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्रावतरत अत्रतरत संयौपद् ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठःठः ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत
भवत वपद् स्वाहा ।

अथाष्टक ।

वा-रमनीय जल दमनीय मल कमनीय कल शमनीय है ।

नीय दुख पमनीय सुष अमनीय रुष गमनीय है ॥

जै तीत त्रिभुवन मीत सुरगिर सीत ऐरावीत है ।

धरि प्रीति ताहि जजीत परम पुनीत धरमलहीत है ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

भवताप, विकल कलाप, रुज संताप, आपु विनाशिया ।

मोकों करो, निजसम, जगतमें, जजहु गंध सुवासिया ॥ जै तीत० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चदनं निर्वपामि ॥ २ ॥

अति सेत द्रग छवि देत मलय समेत तंदुल लेत है ।

धरि पुंज हरि कलि कुंज जगजसगुंज शिव भुंजेत हैं । जै तीत० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥ ३ ॥

जगशूल मनमथ धूलकों निरमूल तुम सम कूलये ।

यह फूललै सुखमूल पूजों भूल मेढि अतूलये ॥ जै तीत० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

प्राशुक सुरस मृदु नयन मन रंजित विभंजित हे कुधा ।
नैवेद्य सों निखेदतें निखेद पद पावत बुधा । जैतीत त्रिभुवन० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

तमखंड दुति ब्रह्मंड मांडि अखंड दीप समंडिया ।
परचंड मोह विहंडि केवल मारतंड उमंडिया । जैतीत० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध धूप अनूप लै शिव भूप सनमुख खेय हों ।
दहि करम भरम मरम जनित निज, परम धरम सुवेय हों ॥ जैतीत० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

फल सकल अकल ललित मलित मल दलित दालिद दीनता ।
मुख फलित कलित अचलित पद उछलित शिव अमलीनता । जै० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

आनंद कंद जिनंद चंद अमंद वंदन कीजिये ।

वसु दरव छंद सुछंद दै निरफंद थानक लीजिये । जैतीत० ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

छंद चौपाई—(मात्रा १५)

कल्याणक पांचो जिन पाय । पंच रूप सो जिन सुखदाय ।

जंबू ऐरावत गत मोख । जजों मोहि समकित रस पोख ॥

ॐ ह्रीं पचरूपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

नाना जन सेवें जसु पाय । श्रीजिनधर सो मोहि सहाय । जंबू० ।

ॐ ह्रीं जिनधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

शमता धरें धरासमधीर । सांप्रतीक सो गुन गंभीर ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं सांप्रतीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

दुर्जय जीति फुरी सदवीर्य । सो जिन उर्जयंत जुत धीर्य ॥ जंबू० ।

ॐ ही उर्जयंताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

छायक नवों लब्धि लाहि जेह । अधिछायक जिनवर हैं तेह ॥ जंबू॥

ॐ ही अधिछायकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

जगदानंद देत अविकार । अभिनंदन जिन जगदाधार ॥ जंबू० ।

ॐ ही अभिनंदनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

रतन तीनके ईश महान । सो रतनेश नाम भगवान ॥ जंबू० ।

ॐ ही रतनेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

शिव रामाके ईसुर जेह । रामेसुर जिन कहियत तेह ॥ जंबू० ।

ॐ ही रामेश्वराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

पांचों तन जिनकीनो भंग । अंगोत्थित जिन सो शिवसंग ॥ जंबू० ।

ॐ ही अंगोत्थिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

धरमविधान बतायो सार । सो विन्याश देव अविकार ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं विन्यासाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

रागद्वेषहत पोखें धर्म । सो अरोष जिन द्यौ शिवशर्म ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं अरोपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

नाना विधि विधान शिवभाष । सो सुविधान नाम अभिलाष ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं सुविधानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

अपुनरभव दिढ्वृत्तवताय । सो जिन विप्रदत्त सुखदाय ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं विप्रदत्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

काम कुमति करि हरिसम धीर । श्रीकुमार जिनवर वरवीर ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं कुमाराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

प्रगट गुरुगुण गिरि समजान । सो जिन सर्वशैल उरआन ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं सर्वशैलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

अतिशय परम मुनिन कहदेत । सो परभंजन जिन भवसेत ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं प्रभंजनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

जसु जसरास भख्यो जगमेव । सो सौभाज्ञ शुभाकृत देव ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं शौभाज्ञाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

कुमति छपातम मर्दन कीन । नाथ दिवाकर परम प्रवीन ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं दिवाकराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

विमलव्रतनि के सागरसार । श्रीव्रतविंदु भवोदधि तारा ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं व्रतविंदवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

सिद्ध करत भविजन के काज । सिद्ध सुकर्ता श्रीमहाराज ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं सिद्धकर्त्रे अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

महाज्ञान प्रकट्यौ ननधीर । सो जिनवर हैं ज्ञान शरीर ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं ज्ञानशरीराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

१ । संस्कृत पृजामें 'दिनकर' नाम है । कविवरकी कविता में दिनकर शब्द आया नहीं इसलिये 'दिवाकर' नाम रख दिया है । (२) संस्कृत पाठमें 'सिद्धिकर' नाम है । कविवरने, सिद्धसुकर्ता नाम बनाया है ।

वांछितार्थ सुख दायक जोय । कलपद्रुम जिनवर हैं सोय ॥ जंबू० ।

ॐ ही कलद्रुमाय अर्घ्य निर्वपामि ॥२२॥

जसु तीरथ सार्थक फलदेत । सो तीरथ फल सुगुननिकेत ॥ जंबू० ।

ॐ ही तीर्थफलाय अर्घ्य निर्वपामि ॥२३॥

जामु प्रभा जग रमत सुहात । सो वीरमम रक्षक ख्यात ॥ जंबू० ।

ॐ ही वीरमप्रभाय अर्घ्य निर्वपामि २४॥॥

मोदकछद प्रस्तार (॥॥॥॥ वरन २१)

पूरन अर्घ्य बनाय मनोहर । पूजत हों प्रभुजी भय भौहर ॥

१ मूलमें तीर्थनाथ नाम है कविवरने अपनी कविता में 'तीर्थफल' नाम बना दिया । २ कविवरके हाथकी लिखी प्रतिके छंदमें तो 'सो वीरम मम' ऐसा लिखा है और मंत्रमें वीरमप्रभ लिखा है और संस्कृत मूलमें चौईसवें तीर्थका नाम 'फलेश' लिखा है । इस कारण हमने मंत्रमें फलेशाय बनाया है ।

ती.चौ.
६१

मेरु सुदर्शन को ऐरावत । तीत जजैं शिव संपति पावत ॥

ॐ ह्रीं जम्बैरावतातीतचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो महार्घ ।

अथ जयमाला ।

षष्ठाछंद—भवविपति विमुक्ता, शिवपद जुक्ता भुक्ता शुक्ताशर्म वरा ।

मद मदन बिहंडन, दारिद खंडन, अन्नद मंडन पर्मापरा ॥१॥

मोतीदाम छंद--

नमों जिन पंचसरूप महान । जिनंधर आतम ज्ञान बखान ॥

नमों नित सांप्रतिकाय अमद । सदाजय उज्जययंत सुखंद ॥२॥

अधिष्ठभिनंदन रत्न सुईश । रमेशुर जैति अंगोज्झित धीश ॥

नमों विनयांश अरोप जिनेश । नमों सुविधान सुविप्रदतेश ॥३॥

कुमार नमों सब शैल प्रभंज । नमों सब भाग दिवाकर कंज ॥

सदा व्रतविदु करों परनाथ । करै सब सिद्ध जथा पदनाम ॥४॥

नमो जिन ज्ञानशरीर अनंत । सदा कलपद्रुम शर्मकरंत ॥

पू.

६१

नमों नित तीर्थफली भगवंत । सदा विरमप्रभ विघ्न हरंत ॥५॥
 विशुद्ध बुधार्णव वर्द्धनचंद । विवेक सरोज प्रमोद दिनद ॥
 सुरेश नरेश खगेश फनेश । गनेशनम धरि प्रीति अशेष ॥६॥
 किये जगजंत अनंत उधार । बखानत जासु लहै नहिं पार ।
 दयावृष तत्त्व बखान जिनेश । कियो शिवमंदिर माहि प्रवेश ॥७॥
 अनंत गुनाकर एक सरूप । नमों नित चित्त विषै शिवभूष ॥
 बुलाय प्रभु हमकों निजपास । तुरंत मिलै शिव सम्पत्ति रास ॥८॥
 घतानद-जैजै जिनस्वामी, त्रिभुवन नामी पंच सुरूपादिक निपुन ।
 जंबू ऐरावत, तीत कहावत, गुन अनंत मुनिवृंद शुन ॥

ॐ ही जंबूद्वीपैरावतातीतजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥९॥

शोरठा-जो पूजै मनलाय, जंबैरावततीत जिन ।

सो सुरनर पदपाय, अनुक्रम शिव तियकों वरै ॥ इत्याशीः ।

इति श्री जम्बूऐरावतातीतपूजा समाप्ता ।

अथ जंबूऐरावतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

अडिल-प्रथममेरु उत्तर ऐरावत जानिये ।

होनहार चौविस जिनेसुर मानिये ॥

थापों इत चित लाय सुपूजन कारने ।

हे प्रभु तिष्ठो आय भवोदधि तारने ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्राग्रतरत अवतरत संवोपद् ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत
भवत वपद् ।

अथाष्टक ।

रेखता-

अमल जल धारिकें भारी । धार त्रय देत आविकारी ॥

प्रभू सुनके अरज म्हारी । करम मल भेटि दुखकारी ॥

प्रथम गिरि उत्तरें जानों । सुखद एरावेतें मानों ॥

भविष्यत सार चौवीशी । जजों जिन ज्ञानमें दीशी ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥

केदली नंदघासि चंदन । करों जिन चंद पद बंदन ॥

हरो दुखदंद भौ फंदन । करो आनंद जग बंदन ॥ प्र० भ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

अखंडी शालिशित डंडी । सुमंडी पुंज दुति चंडी ॥

विहंडी विघ्न की मंडी । उमंडी शौख्य ब्रह्मंडी ॥ प्र० भ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान निर्वपामि ॥३॥

सुमन मन घ्रानको रजै । सुमनमथ जंगकों भंजै ॥

धरत दिग पुंज अलिगुंजै । सुजस सुखशील भविभुंजै ॥ प्र० भ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

तुरत नैवेद्य लेनकिं । मधुररस पूरिते घीके ॥

करन निरवेद पदवीके । धरें उरध्यान श्रीजीके ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

सुजग मग दीप उजियारा । प्रभू तनमें लखे सारा ॥

मनो यह ध्यान शिखि धारा । दहत वसुकर्म कंतारा ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशंगी गंध बहुरंगी । वरंगी बन्दिमें चंगी ।

उखेयें धूम मिसि नाचै । दहत अरि कर्मकों माचै ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

विघ्न तरु निघ्न के करता । समरचों मुक्त तीभरता ॥

परम फल पकरस गरता । नयन मनमोद आदरता ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

ती. चौ.

६६

दरवलै अष्ट परकारा । अरघ तसु सुष्ट करधारा ।
करो भवभाव निरवारा । शरन जगराज में धारा ॥
प्रथम गिरि उत्तरे जानों । सुखद ऐरावते मानों ।
भविष्यत सार चौबीसी । जजों जिन ज्ञानमें दीसी ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्राछद—

सिद्धार्थदेवं सव सिद्धकर्ता । सिद्धप्रियं सर्व समृद्ध भर्ता ।
जबू महैरावत होनहार । पूजों चतुर्विंशति देव सार ॥

ॐ ही सिद्धार्थाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

अंतर्वह्निः सर्वकलंक चूरे । श्रीदेवदेवं विमलेश पूरे ॥ जंबू०॥

ॐ ह्रीं विमलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

पू.

६६

कर्मारिकों जीति विजैसु पायो । जै घोषनामा जगमें कहायो ॥ जंबू० ॥

ॐ ह्रीं जयघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

आनंद सेन धृत परम शर्म । जगद्गुरुवीतित कर्मभमं ॥ जंबू० ॥

ॐ ह्रीं आनंदसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीस्वर्ग संमंगल देव मोहे । उत्पत्ति में मंगल स्वर्ग होहे ॥ जंबू० ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गमंगलाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

वज्रेश जाको नित नाम ध्यावैं । जिनेश सो वज्रधरं कहावैं ॥ जंबू० ॥

ॐ ह्रीं वज्रधराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

निर्वाणको मार्ग जिन्हों प्रकाशे । निर्वाण सो मार समस्त नाशे ॥ जंबू० ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

१ सस्कृत मूल पाठमें चौथे तथ्यिकरका नाम 'नदिसेन' है कविवरने उसकी जगह 'आनदसेन' नाम रक्खा है ।

सुकोशलेसं सुगुनं अनन्ते । आभ्यन्तरे कोशविप्रे धरते ॥ जंबू० ॥

ॐ ह्रीं सुकोशलाय अर्थं निर्वर्णामि ॥२०॥

अनन्त संसार जिन्हों विनाशे । अनन्तस्वामी गुननन्तराशे । जंबू० ॥

ॐ ह्रीं अनन्ताय अर्थं निर्वर्णामि ॥२१॥

अष्टादशों दोषनिवार डारे । मोई जिनेसं विमलं हमारे ॥ जम्बू० ॥

ॐ ह्रीं विमलाय अर्थं निर्वर्णामि ॥२२॥

नमो सदा अमृतसेन स्वामी । विज्ञान वागनिधि पारगामी ॥ जम्बू० ॥

ॐ ह्रीं अमृतसेनाय अर्थं निर्वर्णामि ॥२३॥

ध्यान अग्नि में कर्म सुकाठ जारे । श्री अग्निदंत भविवृन्दतारे जंबू० ॥

ॐ ह्रीं अग्निदत्ताय अर्थं निर्वर्णामि ॥२४॥

उद तन्मतिना —

जंबूसुरादिअइरावतक्षेत्रगजें । तामें भविष्यत जिनेश जितेविराजे ॥

पूजोंतिन्हें भगतभाव हिए धराई । पूर्णार्घसों तुरित भुक्त सुमुक्तदाई
ॐ ह्रीं जवृद्धीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥२५॥

जयमाला ।

घटाछद—

जयविपतविहंडित, शिवमगमंडित, अतिथअखंडित, शुद्धमती ।
निजनिधि वरदायक, सब विधिलायक, जै निज नायक, बुद्धपती ॥१॥

तोटक छद—

जय सिद्ध सुअर्थ जिनदर्वरा । विमलं जयघोष अदोष करा ॥
जय नद सुसेन अनंत मती । जय स्वर्ग सुमगल बाल जती ॥२॥
जय वज्रधरं निरवान महा । जयधर्म धुजी सिद्धसेनकहा ॥
महसेन नमों रवि मिश्रपदं । सतसेन सुचंद जिनंद सदं ॥३॥
महचंद श्रुतांजन नायक हैं । मम देव सुसेन सहायक हैं ॥
जय सुव्रत नौमि जिनिद सदा । प्रणमामि सुपार्ष्व प्रमोद ददा ॥४॥

जयवत सुकोगलदेव ममं । सु अनन नमो विमल प्रशमं ॥
 सुगदामृतसेन जिनिंद नमो । जय अग्निसुदत्त कलंक दमो ॥५॥
 तुम मगल मूरत देव वरा । नित सेवत शक्र मुचक वरा ॥
 गुन जागद नारद गान करे । भय वागद पारद पाय परे ॥६॥
 गिरि आदय रावत भाविय है । जस गात गानद पाविय है ॥
 शरनागत पालन जानि सही । भवि "वृंद" गरी चरनागजही ॥७॥
 पण-जयजय सुप्रसाधन. भव भयवाधन, नित आगधन, साधगन
 ब्रह्मादिकमेवत, नित गुनमेवत, आनंदलेखन, मुक्त मनं ॥ पूर्णा ॥

वदा ग्योदता (वर्ग २३)

होनहार जिनराज मेवई । जेवु उत्तम यरावतें जई ॥
 मो समस्तसुख भांगि के यहां । परम शर्म भविलेनु हैं उहां ॥८॥

इत्यर्थापवादः ।

इति श्री जन्मदातासुते भर्ताचरितानिनिनराजा मनासा ॥

अथ धातुकीद्वीपपूर्वविजयमेरुसम्बन्धिविदेहस्थ-
चतुर्विहरमानजिनपूजालिख्यते ।

छंद सुदरी-

दुतिय द्वीप सुपूरव मेरुके । विहरमान जु चार सुटेर के ॥
तिनाहिं थापतु पूजन कारने । प्रभु हमें भव सागर तारने ॥

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेरुविदेहस्थितविहरमानचत्वारः जिना अत्रावतरत
अवतरत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेरुविदेहस्थितविहरमानचत्वारः जिना अत्र तिष्ठत
तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेरुविदेहस्थितविहरमान चत्वारः जिनाः अत्रमम सन्नि-
हिता भवत भवत वषट् ।

अथाष्टक ।

(चाल दानतरायजी कृत नंदीश्वराष्टक की अनेक रागों में) यथा-
छीरोदधि सो सुराय, नित प्रति सेव करै ।

प्रभुमो पे सो न सोहाय, लाजनि पाँय परे ॥
संजातक आदि जिनद, चारों सुखकारी ।

गिरि विजय विदेह सुछंद पूजन नरनारी ॥

ॐ श्रीं धातुर्गातिजयमेवन्तारः रिदेहस्य रिहमानजिनाः मजातस्यं प्रभकृपि-
भाननजनंतरीर्गार्गरेभ्यो जठ निर्गामि ॥ १ ॥

सुरपति अति प्रीति बढाय, दिव्य सुगंध धेर ।

हमचंदन चग्न चढाय, भव आताप हरे । संजातक० ॥

ॐ श्रीं धातुर्गातिजयमेवन्तुर्गिदेहस्य रिहमानजिनसंजातस्यं प्रभकृपिभा-
ननजनंतरीर्गार्गरेभ्यो चन्दनं निर्गामि ॥ २ ॥

मित वासित वासमतीय, हामित मेत कलं ।

सुखगामित पुज भगीव, नाशित पापमलं ॥ मजातक० ॥

ॐ श्रीं धातुर्गातिजयमेवन्तुर्गिदेहस्य रिहमानजिनसंजातस्यं प्रभकृपिभा-
ननजनंतरीर्गार्गरेभ्यो कन्दनं निर्गामि ॥ ३ ॥

वृंदार इंद मंदार सुमन चढ़ावत हैं ।

हम फूलनि पूजि उदार, शील बढ़ावत हैं ॥ संजातक०

ॐ ही धातुकीविजयमेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंप्रभक्तपिभान-
नअनंतवीर्यतीर्थकरेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥ ४ ॥

सुरनायक अमृत रास पास धराय जजैं ।

हम नेवज मिष्ट सुवास, पूजहिं दुख भजैं ॥ संजातक० ।

ॐ ही धातुकीविजयमेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंप्रभक्तपिभान-
नअनंतवीर्यतीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

मनि दीप शचीपति लेय, आरति भक्त करै ।

यह दीप धरों उमगेय, संशय भाव हरै ॥ संजातक० ।

ॐ ही धातुकीविजय मेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंप्रभक्तपिभान-
नअनंतवीर्यतीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥ ६ ॥

दिवगंय मुशे अशेष, खेवत भाव धेरं ।

हम धूप उखेय महेश, ज्यो अरि कर्म जेरं ॥ मंजातक० ।

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेवचतुर्विदेस्यपिदरमानजिनमंजातस्वयंप्रभरूपिभा-
ननमनंतवीर्यवीर्यकरेभ्यो नमं निर्णामि ॥ ७ ॥

फल पर सुगोपम सार, वासव आनि धरे ।

हम पुजत फल भगिथार, विघन समूह टरे ॥ सजातक० ।

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेवचतुर्विदेस्यपिदरमानजिनमंजातस्वयंप्रभरूपि-
माननमनंतवीर्यवीर्यकरेभ्यो फल निर्णामि ॥ ८ ॥

वसु दख अनुग्रम आन, इंद चढावत हैं ।

हम अख जजे धरि ध्यान शर्म चढावत हैं ॥ संजातक० ।

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेवचतुर्विदेस्यपिदरमानजिन मंजातस्वयंप्रभरूपिभा-
ननमनंतवीर्यवीर्यकरेभ्यो नमं निर्णामि ॥ ९ ॥

प्रत्येकार्घ्य ।

शोरठा--संजातक रवि अंक, सीतोत्तर अलकापुरी ।

देवसेन सुनिशंक, जजों देव सेना.तनुज ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखडपूर्वविजयमेरुसीतोत्तरानेकशोभाविराजमानपदस्वडमडल-
मडितअलकापुरी तत्र विरहमानभगवान श्रीसंजातकाय अर्घ्य निर्वपामि ।

दोहा--शसि लच्छन पग स्वयं प्रभु, सीता दच्छिन ख्यात ।

मित्रभूत विजयानगर, जजों सुमंगल मात ॥

ॐ ह्री धातुकीविजयमेरुसीतादच्छिणानेकशोभाविराजमानविजयानगरस्थ-
श्रीस्वयंप्रभाय अर्घ्य निर्वपामि ॥२॥

पद्धड़ी छंद—

रिपभानन हरि पग में सुहात । कीरत नृप वीर सुसेन मात ॥

सीतोदा दच्छिन में प्रमान । जजि नगर सुशीमा गुन निधान ॥

ॐ ह्रीं धातुहोत्रं विजयमस्मीतोदादशिनमुगीमानगर अनेकशोभाविरा-
जमानविष्णुमान श्री रिंगभाननाय अये निर्वेषामि ।

नौमेधराय सुत मंगल जननी । श्री अनंत वीरजगजतननी ॥
सीतोदा उत्तर उर धरनी । जजो अजोया भवसर तरनी ॥

ॐ ह्रीं धातुहोत्रं विजयमस्मीतोदाउत्तरायोभ्यानगरस्थ विष्णुमानजिनश्री अ-
नंतरीयाय अये निर्वेषामि ॥४॥

ॐ लोचनं रंग--

श्रीमत तरिथनाय नमामी, मेरु विजे सुविदेह महामी ।
चारिउ संघ समोशून माहीं पूजत पूरन आनंद पाहीं ॥

ॐ ह्रीं धातुहोत्रं विजयमेरुननुविभ्रतिविदेहम्यविष्णुमानजिनमंजातमयंयभुक्त-
विमाननअनंतरीयायैतार्थकरेभ्यो मदाये निर्वेषामि ॥५॥

अथ जयमाला ।

पद्म-जे जे जिन सुंदर, गुनगनमंदर, जजतपुंदर थमधग ।

संशयमतवर्जन, शिवमगशर्जन, नितधुनिगर्जन, मेघवरा ॥१॥

कामिनीमोहन छंद-

जयति जिनचंद आनंद अमृत करन ।

जयति जिनभानु भवि कमल मोदति करन ॥

जयति जिनमेघ कल्याण वारिद भरन ।

जयति जिन समवशृततिथि अमित दुति धरन ॥१॥

जयति जिन परम वृष तत्त्व उद्धित करन ।

जयति जिन दिव्य लक्ष्मी लसित शित चरन ॥

हरत भवि शोकतर सुमन नभते परत ।

दिव्य वानी सुनत भविक भवसर तरत ॥ २ ॥

चमर जहँ अमर ढारत सुसिंघाशनं ।

देहकी क्रांति भवशांति प्रतिभाशनं ॥

कुन्दुभीनाद शिर छत्र अनुपम लसत ।

ज्ञान दृग शर्म वीरज अनते वसत ॥ ३ ॥

गुन अगम आपुके कौन बरनन करै ।

इंद गनइंद लज्जित सुपांयन परै ॥

विचित्र विधि विद्युत तुव भगतमें माचही ।

ततवता अतवता येगत गच नाचही ॥ ४ ॥

अनननन अनननन नूपुरे वाजहीं ।

किनिनिनिनि किनिनिनिनि किकिनी द्वाजहीं ॥

साग्रदि समाग्रदि सांगी धुनि करत है ।

दिम सुदिम विविधिविधि सुरज आदरत है ॥ ५ ॥

ताड कंसाल कसाल बीनादि है ।

सतसुर सहित वाजे सुखद लय मिलै ॥

करत गुनगान अमलान भगवानके ।

केइ ब्रत धरत ध्रावक अमर धानके ॥ ६ ॥

केइ मुनि होत केइ मोपपुर जात हैं ।

आपुके निरुद अदभुत यनीवात हैं ॥

धन्य तुमदेव धनी धान सोहै सही ।

नमत तुमकौ मिलत परम पदकी मही ॥ ७ ॥

षष्ठा-जैजिनगुनमडित, अमल अखंडित, नितनुतपंडित, प्रीतिधैरं ।

चारों सुखदायक, विघन विनायक, दास सहायक, पापहरें ॥

ॐ ही धातुकीविजयमेरुचतुर्विदेहस्थविरहमानजिनसंजातस्वयंप्रभक्तपिभा-
ननअनंतवीर्यतीर्थकरेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद सवैया तथा कवित्त—(मात्रा ३१)

विजय मेरुके शुभ विदेह में, चारों तीर्थकर अविकार ।

समवसरन रचना जुत राजत, कवहुंक करत जिनेश बिहार ॥

तिनके पदपंकज कों पूजे जो प्राणी गुनमाल उचार ।

समकित सहित भोग इंद्री, सुख अति इन्द्री सुखलहै अपार ॥८॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजयमेरुसम्बन्धीचतुर्विहरमानजिनपूजा समाप्ताः ।

अथ विजयमेरुत्तरतवर्त्तमानचतुर्विंशति- जिन पूजा प्रारब्धते ।

पादना उद्द- (माता १४)

दति धातुकी दीप प्रमानों । गिरि विजय सुदृच्छित मानों ।
जिन वरतमान नववीमं । इत थापतु हों जगदीशं ॥

ॐ श्रीं विजयमेरुत्तरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिना अरुत्तरत अरुत्तरत मंत्रौपद ।

ॐ श्रीं विजयमेरुत्तरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिना अरु निष्ठत निष्ठत डः डः ।

ॐ श्रीं विजयमेरुत्तरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिना अर मम मन्निहिता भवत
नरा राद ।

अथाष्टक ।

शिवीश्वरिण नरा मुन्दगी छद-

निगमनी गहीर सुद्धायजी । रुग्न धार कलंक नशायजी ।
विजय दन्दिन भागत वृजिये । नग्नमान जिनेमुर पुजिये ॥

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥२॥
कदलि नंदन चंदन वावनं । भजि जिनंद सुदंद नशावनं ॥ वि० ।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनभ्यश्चन्दन निर्वपामि ॥१॥
शितनिशेश हिमामिय तन्दुलं । धरत पुंज अमंदन दंदलं ॥ वि० ।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान निर्वपामि ॥३॥
समरशूल निमूलन कारनें । सुमन शौरभि ले करि धारनें ॥ वि० ।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥
रुजछुधा तुमनें चकचूरिया । धरत हौं चरु लै रस पूरिया ॥ वि० ।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥
तुवविमोहविनाशक मैं लखा । जजति दीप निजानंदकों चखा ॥ वि० ।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥
अगर चंदन धूप सुधूमकै । हवत कर्म उडै जरि घूमकै । वि० ।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

पयस पावन आनि फलावली । दिग्धरो मोहिता उतावली ॥वि०

३॥ विद्यामेकमस्तार्जुनचतुर्विंशतिजिज्ञेभ्यः फलं निरपेक्षम् ॥॥॥

अथ मे तुम सन्मुख लेत हों । भवसमुद्र जलंजलि देत हों ॥ वि०

ॐ विनयमेव भगवत्तमानचतुर्विंशतिविंशोऽपि निर्यामि ॥९॥

प्रत्येकार्थं ।

नामन उद- तुगादि देव भ्याइये मदेव शीज नाइये ।

अनादि भूल भाव त्याग आपु शुद्ध पाइये ॥

दुतीयदीप पुर्वमेव भर्तवर्त्तमान हं ।

जजों जल्लादि सों निन्हें सुमुक्त मुक्तदान हैं ॥

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

मिद्वानं सुद्ध साधियो मिद्वानं देवते मही ।

प्रमिष्ट मिष्ट देनहें अनंत धर्मकी गद्दी ॥ दुतीय० ॥

॥०॥ श्री विष्णोय नमः निरंताय ॥२॥

महेशनाथनें अशेष वस्तुकों विलोकिया ।

तिसी प्रकार भासियो गनिंद इंद धोकिया ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं महेशनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

सदैव हैं सहाय परम शर्म मार्ग जानको ।

मुनिंद वृंदकर्त्त हैं सुपरम अर्थ ध्यानको ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं परमार्थाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

नरेश और सुरेश श्रीगनेश जाहि ध्यावहीं ।

वरं सुसेनके जुकीर्त्त किन्नरिंद गावहीं ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं वरसेनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

सुभव्यकों भवाब्धितें उधारकों सुधीर हैं ।

जिनेश श्रीसमुद्धर नमों नमों सुवीर हैं ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं समुद्धराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

१ सस्कृत पुजामें पाचवें भगवानका 'वरसेन' नाम नहीं है 'समुद्धर' है ।
किंतु अठारवे तीर्थकर 'त्रिमुष्टि' है तो कविवरने ग्रहण नहीं किया है ।

नंद ओ सुंद नाग इंद चंद मेवहीं ।

जिनेश भृशेग्यहों अशेष शर्म येवहीं ॥ दुतीय० ।

ॐ ॥ भृशनाथाय नमो निर्तामि ॥ ३॥

सुबोध भानुनें त्रिलोक को प्रकाश कृते हैं ।

उदात्तनाथ जी सुमर्म कर्म भर्म हर्ते हैं ॥ दुतीय० ।

ॐ ॥ उदात्तनाथाय नमो निर्तामि ॥ ४॥

विशुद्धमार आर्जवादिकों धरें विगजही ।

नमामि निज आर्जवं ममस्त दुःख भाजहीं ॥ दुतीय० ।

ॐ ॥ अर्जवादाय नमो निर्तामि ॥ ५॥

विनाशि मान भे अंभे कीं हरें क्लेशजी ।

अंभे जिनेश कीं जपें मिले सुमुक्त वेशजी । दुतीय० ।

ॐ ॥ विनाशाय नमो निर्तामि ॥ ६॥

अकंप रूपराजही अनंत शक्ति साजही ।

जिनेश अप्रकंप कौं जजें दरिद्र भाजही ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं अप्रकपाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

शरीर पद्मवर्ण है सुपद्म सद्मकर्ण है ।

सुपद्मनाथ सेवतें सुहोत पद्म वर्ण है ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं पद्मस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

सुभव्य पद्मराशिकों दिनंद श्रीजिनंद हैं ।

सुपद्म नंदि वंदनैं अमंद पद्म कंद है ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं पद्मनंदिने अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

गनेश वृंदकौं महा सु प्रीय आपु लागते ।

प्रियंकर प्रभू भजें कलेश दूर भागते ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं प्रियकराय-अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

पुनीत पुन्य जामके जपें तुरंत होत हैं ।

सुकृत्तनाथ देव तीनलोकमें उद्योत हैं ॥ दुतीय० ।

ॐ नमो सुकृत्तनाथाय जपे निर्वापि ॥१५॥

सगम्न दुख चुरियो सुभद्र भू प्ररियो ।

सुभद्र देवको नमों तुमी कलंक चुरियो ॥ दुतीय० ।

ॐ नमो सुभद्राया जपे निर्वापि ॥१६॥

मुनीश चंदजी अमंद नंद रूप हैं महा ।

त्रिलोक जीवहो अनंद कंद देत हैं कहां ॥ दुतीय० ।

ॐ नमो मुनीश्वराय जपे निर्वापि ॥१७॥

१. सुकृत्तनाथ ॥ 'सुकृत्तनाथ' नाम है दक्षिणमें उरुखी नदी 'सुभद्रा' नाम है ।

सुपंच मुष्टि केशसीसतें उपाखियो वरं ।

सुपंच मुष्टि देव सेव केवल प्रभाधरं ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं पंचमुष्टये अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

सुगंग की छटा समान स्वच्छ कीर्त जासकौ ।

सुगांगयेय सेय आश पूरते सुदासकौ ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं गांगयिकेनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

चहूं प्रकार संग जासके गुनं अराधहीं ।

गणं सु नाथ देव शोभनीक सार साधहीं ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं गणाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

समस्त अंग सुंदराकृती सुदीप्तकौ धरै ।

जु सर्व अंगदेवजी मुपाप पुंजकौ हरै ॥ दुतीय० ।

१ संस्कृत पूजामें गांगिक वा 'गांगिकनाथ' नाम है । २ संस्कृत पूजामें गणनाथ नाम है ।

ॐ श्री गणेशाय नमः निर्णयि ॥२१॥

पुनीत पूर्ण ब्रह्मके पदस्थ में विराज ही ।

सु ब्रह्मइंद नाथदेव बुद्ध सुद्ध साजही ॥ दुतीय० ।

ॐ श्री गणेशाय नमः निर्णयि ॥२२॥

सनेंद्र जासकों नमें समस्त दुसकों दमें ।

जिनद इंददत्त भुक्ति मुक्तशुक्त श्री हमें ॥ दुतीय० ।

ॐ श्री गणेशाय नमः निर्णयि ॥२३॥

जिनेश पूजनीक नें दया विधान भाषिया ।

दया सुनाथ नेवतें सुकर्म भर्म नाशिया ॥ दुतीय० ।

ॐ श्री गणेशाय नमः निर्णयि ॥२४॥

जीतदं-भातु दीप गिरविजे वषान । भक्तवेत्र वस्तन भगवान ॥

पुत्रो चरन जोर जुगपान । पुस्त अख अमल गुनस्तान ॥

१. गणेशाय नमः निर्णयि श्री गणेश 'गिरविजे' नाम है ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

जयमाला ।

घत्ता-सतसंपतिजुक्ता, विपनिविमुक्ता, आनंदभुक्ता, मुक्तावरा ।

चौवीसजिनंदा, गुननिधिचदा, नमत सुरिंदा, भरत भरा ॥१॥

तोटकनामछंद--

जयवंत जुगादि जिनेश सदा । भृम भजन देव सिद्धांत वंदा ॥

सु महेश कलेश अशेष हरे । परमारथ आत्म शर्म भरे ॥२॥

वरसेन जगज्जन तारत हैं । सु समुद्धर भौ दुख टारत हैं ॥

जिन भूधर अष्टम भूमि पती । जयवत उदोत उदोत मती ॥३॥

नित आर्ज्जव आर्ज्जव भाव धरे । भयनाश अभै जिनराज करे

अप्रकप निष्कप दशा करि है । जिन पद्म सुसङ्ग रमाभरि हैं ॥४॥

जिन पद्म सुनंद अमंद कला । सुप्रियकर कर्म कलंक दला ॥

सुकृतारथ साम सुभाव करे । नित भद्र समुद्र सुभद्र भरे ॥५॥

मुनिचद्र भवातप चूरत हैं । जिन पंचसु मुष्टि अकूरत हैं ॥

ॐ श्री धातुकीर्तिपुत्रियमेकभक्तभूतननुविशतिजिना अत्र निष्ठत निष्ठ-
न ३: ३: ।

ॐ श्री धातुकीर्तिपुत्रियमेकभक्तभूतननुविशतिजिना अत्र मम सन्निहिता
पारा नरा ११८ ।

अथाष्टक ।

(पाठ निष्ठाष्टक सानतरायपि ११८म दो वरगम हन)

रुनक रकाथी के विषे, मति भृंग भग जलसार ।

धार करे निहु भाव मों, मम कर्म कलंक निवार ॥

तीन जिनेसुर पुजिये, गिरि विजय सुभास्त जाय ।

मन प्रभ आदिक मद्रा, जिहि पूजत सु सु गाय ॥ नीत०

ॐ श्री धातुकीर्तिपुत्रियमेकभक्तभूतननुविशतिजिनेश्वरे नमः ॥ १॥

चंदन यमि केशर नीर मों, भवताप विनाशन हेत ।

जिनर नम्र चढाड्ये, प्रभु अजर अमर पद देत । नीत०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दन निर्वपामि॥२॥

तंदुल शित सुन्दर शोभने, मुकता फल शशि समलेय ।

पुंज धस्त उच्छाह सों, प्रभु मोहि अखय पद देय ॥ तीत० ।

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽक्षतान्निर्वपामि॥३॥

कमल केतुकी आदि दे, बहु फूल सुवास उदार ।

तुम पद पद्म चढ़ाय हों, मम समरशूल निरवार ॥ तीत० ॥ ४ ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि॥४॥

षट रस करि पूरन सार है, नेवज इन्द्री वलकार ।

तासों तुम पद पूजि हों, मम छुधा रोग निरवार ॥ तीत० ।

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि॥५॥

दीपक दुति उदित है महा, घट पट परकाशनहार ।

तासु आरती मैं करों, मम तिमिर मोह निरवार ॥ तीत० ।

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि॥६॥

कृष्णागर अगर कपुष्पा, वग्गंध हवों तुम पाम ।

कर्म जेरें मम कर्म, तमु धूम उड़ै परगास ॥ तीन जिने० ।

ॐ धार्याऽर्पितयमेवमस्तनतुर्गतिजिनेभ्यो नम निर्त्तामि ॥७॥

शुतु फलकल वर्जित सोहने, दृग मनको अति सुखदाय ।

नामों तुम पद पुजि हों, मम विघन सघन नजिजाय ॥ तीन०

ॐ धार्याऽर्पितयमेवमस्तनतुर्गतिजिनेभ्यः फलं निर्त्तामि ॥८॥

यह आठों दग्ध सैवागिके, नमि आठों अंग उदार ।

अष्टम छिति मोहि दीजिये, तुम आठों गुनगनधार ॥ तीन० ।

ॐ धार्याऽर्पितयमेवमस्तनतुर्गतिजिनेभ्यो नम निर्त्तामि ॥९॥

प्रत्येकायि ।

वामर उं ॥ (ते ११॥)

मन तीन की प्रभा अनुप जाम में लवे ।

मो जिनेश भक्तप्रभास्य मो हिये वसे ॥

धातु दीप पूर्व मेरु भर्त्त भूत जानियो ।

तासुको पदाब्ज पूज कर्म भर्म भानियो ॥

ॐ ह्रीं रत्नप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

वीतराग भाव जास में प्रशस्त शोभितं ।

सो अमित्त देव चित्त मो करो अच्छोभितं ॥ धातु०

ॐ ह्रीं अमितेय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

संभवेशने अशेष भौ कलेश भानियो ।

आत्म संपदा सुहेत पर्म धर्म जानियो ॥ धातु०

ॐ ह्रीं संभत्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

सर्व ही कलंक पंकते अटंक हैं महा ।

निःकलंकनाथ सेवतें कलंक कों दहा ॥ धातु०

ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

१ सस्कृत पुजामें 'अमितनाथ' नाम है ।

कोटचंद जोति जास जोति तें लजात हे ।

चद्रस्यामि देवसो त्रिलोक में विख्यात हे ॥ धातु०

ॐ श्री चद्रस्यामिने नमो नित्यामि ॥५॥

सर्व जीवकों पुर्नात पुन्य लाभ देत हैं ।

देवसो शुभंकर प्रमोद वृंद हेत हैं ॥ धातु०

ॐ श्री शुभंकराय नमो नित्यामि ॥६॥

साम्भूततत्त्व सर्व जाम ज्ञानमें लसे ।

तत्त्वनाथ देव सो त्रिलोक भर्मकों नसे ॥ धातु०

ॐ श्री तत्त्वनाथाय नमो नित्यामि ॥७॥

नव अंग सुन्दरं दृष्टि दुष्य दान्कं ।

स्वामि सुन्दरं नमामि सो समुद्र तारकं ॥ धातु०

ॐ श्री सुन्दराय नमो नित्यामि ॥८॥

कर्म सर्प दर्प हरि देव सो पुरंदर ।

जास पाद पद्मकों जजैं भजैं पुरंदर ॥ धातु० ।

ॐ ह्रीं पुरंदराय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

जासकों सुरेश औ नरेश वृंद सेवहीं ।

मैं जपों सदैव सो जिनेश स्वामि देवहीं ॥ धातु० ।

ॐ ह्रीं स्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

देह दीप्तवान मान लक्ष्मी निधान हैं ।

देवदत्त देवनिष्ठ भुक्ति मुक्ति दान हैं ॥ धातु० ।

ॐ ह्रीं देवदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

आठ काठ जारिकें सुमुक्ति वास देत हैं ।

वासवं सु दत्त दास वासवं सचेत हैं ॥ धातु० ।

ॐ ह्रीं वासवदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

पदही कर्णत छंद-

जै रत्नप्रम जै प्रमित देव । जै संभव जै अकलंक देव ॥
 जैचंद जयति शुभ कर पुर्नात । जै तत्पनाथ सुंदर सुमीत ॥२॥
 जै देव पुरंदर जयति स्वामि । जै देवदत्त वासव नमामि ॥
 जै श्रेय विश्वतप तेजान । प्रति यो रक्त निद्रास्थ महान ॥३॥
 जै अमलनाथ सजम सुनेन । देवदत्त प्रवर जय विश्वमेन ॥
 जै मेननंद ग्रैनेग्रनाथ । पतीत जिनेसुर मुक्त साथ ॥४॥
 हे मिश्रान गुन अमल युक्त । ज्ञायक समक्षित जिनि परम श्रुक्त ॥
 जिनि ज्ञान दरम सुख है अनंत । वीरज अवगाहन सकलान्त ॥५॥
 अति गृहित अज्पावाय भार । वर अगुरु लव अनुपम उदार ॥
 इत्यादि अमल गुन हैं अनंत । गनार मे कहत न लहत देत ॥६॥
 मननर आहुति निहणल लमत । जहै एक रूप आत्म रमत ॥

१. 'महामहोपाध्याय' दायदी नत हस्त दिया है । (२) 'महामहोपाध्याय'
 किंकिरी श्री गुरु महोपाध्याय दाय दिया है ।

सो जगत नाथ करुना निधान । मम उरमें अब कीजै सुधान ॥७॥
 संसार दुख चक चूरचूर । समता शिव मंगल पूरपूर ॥
 यह विघ्न महीरुह खंडखंड । आनंद अनूपम मंडमंड ॥८॥
 तुम से दाता लखि जगत राज । क्यों जांचो लघु संसार काज ॥
 शिवराज हेत मोहि देह देह । तजिकै विलंब सुधि लेहलेह ॥९॥
 वत्ता-जै जिन जैवता, सुगुन अनंता, ध्यावत संता, मोद भरा ।
 “वृंदावन” वंदत मन आनंदत, जै जै जै शिव रमनिवर ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ ।

दोहा-जो पूजै जिन दरब विधि, भाव सहित लबलाय ।
 विजय भरत अतीत सो, सुरशिव सम्पत्ति पाय ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथ विजयमेरुनरतन्नाथीचतुर्विंशति जिनपूजा ।

उद गार्हपत्यविधिः -

शोभा नागर भानु दीप लविगे नाके दिशा पूर्व हे ।

नामं मेरु विजे विगजत महा मौवर्णभा कुर्वहे ॥

नाकी दन्दिन्न क्षेत्र भाग्न विषं भावी चतुर्विंशती ।

थापो मिद्ध मुनाय आदिक यदां श्रीसम्पदाके पती ॥

ॐ ह्रीं पातुर्हीतिजमेरुनरतन्नाथीचतुर्विंशतिना अत्रात्त अत्रात्त मरीच

ॐ ह्रीं भाग्नविजमेरुनरतन्नाथीचतुर्विंशतिना अत्र निष्टत निष्टत नः नः ।

ॐ ह्रीं पातुर्हीतिजमेरुनरतन्नाथीचतुर्विंशतिना अत्र मग मनिदिता भवत
मत्त मत्त ।

अष्टक ।

नं के वं गंगाजल भग कनकयोगी, जोगम सकल मित्याय ।

जनम जगन्मृत मेरुन कारन, भाग्नमे गुनगाय ॥

दूजेमेरु के जजि, भरत भविष्यत ध्याय । दूजे मेरुके० ।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि
केसर चंदन कदली नंदन, दाह निकंदन लाय ।

विघन ताप नाशनके कारण, जजों चरन उमगाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि॥२॥

सोम समान सुखद शुचि सुंदर, तंदुल मंदुल लाय ।

अखै संपदा कारन पूजा, वीतराग तुमपाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽक्षतान्निर्वपामि

सुमन सुवरन सुगधित पावन, सुवरन थार भराय ।

समर शूल निरमूलन कारन, तुम पद पदम चढ़ाय ॥ दूजे० ॥४॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्पंनिर्वपामि

नाना विधि पकवान वनावों, देखत मन ललचाय ।

छुधारोग निखारन कारन, भेट करों शिरनाय ॥ दूजे मेरुके० ।

ॐ ह्रीं धातुर्हीरीपतिपमेकभक्तभारीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैरेक्षनिर्गामी॥१॥
 केवलभातु प्रकाश चराचर, तुम देखत जिनगय ।
 दीप धरो दिग नेह सहित दुत, ज्यों उर निमिर नशाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीरीपतिपमेकभक्तभारीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्गामि॥२॥
 कर्म काट तुम ध्यान आगिन में, समम कस्यो जगगय ।
 रमविधि गंध सुगंधों यातें, ज्यों वसुकरम जराय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीरीपतिपमेकभक्तभारीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो ह्य निर्गामि॥३॥
 आतम ज्ञान अनिद्रिय आनंद, अतुल सुफल तुमपाय ।
 पूजो पाशुक फल्यों तुमपद, ज्यों शिव फल सुलहाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीरीपतिपमेकभक्तभारीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो कर्म निर्गामि॥४॥
 आठ दस्य नर लेय मनोहर, अग्य सजे उमगाय ।
 राजन द्विम द्विम द्विम मृदंग गत, पूजत प्रीति वयाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीरीपतिपमेकभक्तभारीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्प निर्गामि॥५॥

प्रत्येकअर्घ ।

छद लोलतरंग

पू

सिद्ध वधूवर सिद्धसुनाथं । सिद्ध करैं सुविशुद्ध सनाथं ॥
पूजत हौं तिनकौं नुत शीशं । भाविय भर्त्त दुतीय गिरीशं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सम्यक् सार सवै गुनधामी । श्रीगुन सम्यक् देव नमामी ॥ पू.हौं०

ॐ ह्रीं सम्यग्गुणाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नाथ जिनिंद सदानंद धारी । सो प्रभुजी सुधि लेहु हमारी ॥ पू.हो०

ॐ ह्रीं जिनेद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

शुद्धचिदात्म रूप विराजैं । सम्पतिनाथ सदासुख साजैं ॥ पू.हौं०

ॐ ह्रीं संपन्नाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

१ सस्कृत पूजाम 'संपन्नाथ' नाम लिखा है ।

ऊरुध मय्य अधोपनि सेवें । म्यामिय सर्व जिनाधिप वेवें ॥ पू. हा०

ॐ श्रीं मय्यमिनि नमो निर्यामि ॥१॥

जो परतल लखें सब लोकं । सो मुनि नाथ हि देत दों धोकं ॥ पू० ।

ॐ श्रीं मुनिनाथाय नमो निर्यामि ॥२॥

इष्ट विजिष्टिन पुष्टि चेटा । मो सुविजिष्ट मठेष्टि चेटा ॥ पू० ।

ॐ श्रीं विजिष्टाय नमो निर्यामि ॥३॥

जागु समान नहीं जग कोई । मो जिन अद्रिन नामक कोई ॥ पू० ।

ॐ श्रीं जगदीशनाथाय नमो निर्यामि ॥४॥

ब्रह्मरूप प्रकाश विराजें । ब्रह्म सुशानि भजें भ्रमभाजें ॥ पू० ।

ॐ श्रीं ब्रह्मनाथाय नमो निर्यामि ॥५॥

१. श्री. हा. पू. ११०. २. श्री. विजिष्टाय नमो निर्यामि ॥३॥ ३. श्री. जगदीशनाथाय नमो निर्यामि ॥४॥ ४. श्री. ब्रह्मनाथाय नमो निर्यामि ॥५॥

ती. चौ

१११

उत्तम पर्व उदोतक स्वामी । पूर्व जिनेश नमों शिवगामी ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

देव अकामुक कों नितवंदो । वांछित आनंद पाय अनंदो ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं अकामुकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

शुक्ल सुध्यान वलें अरि चूरे । ध्यान सुनाथ जगद्गुरु पूरे ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं ध्याननाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

कल्प जिनेश समस्त प्रकारें । आत्म को अविकल्प विचारें ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं कल्पजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

बंध सतावन आश्रव द्वारें । संवर रोकत संवर धारें ॥ पू० हो०

ॐ ह्रीं संवराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

स्वच्छ जिनेसुर स्वच्छ स्वरूपं । स्वच्छजती जपि हैं शिव भूपं ॥

पूजत हों तिनकों नुत शीशं । भाविय भर्त दुतीय गिरीशं ॥

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

पू.

१११

आनंदनाथ अनंत सुखी हैं । पूज्य ब्रह्म सुमोक्ष सुखी हैं ॥ पूजत हों ॥

ॐ श्री आनंदनाथाय नमः निर्दिशामि ॥१३॥

उद्यत जासु प्रभा रविते हैं । देव स्वीप्रभ सुप्रभ से हैं ॥ पूजत हों ॥

ॐ श्री रविप्रभाय नमः निर्दिशामि ॥१४॥

चंद्रसूरी प्रभेन प्रभभासी । चंद्रप्रभं चिन्मूसति धारी ॥ पूजत हों ॥

ॐ श्री चंद्रप्रभाय नमः निर्दिशामि ॥१५॥

आनंद कंद निदानंद वंदो । देव सुतंद जनानंद कंदो ॥ पूजत हों ॥

ॐ श्री सुतंदाय नमः निर्दिशामि ॥१६॥

नीतिद्वय लोक सुनि धुनि जा सो दिव सुकर्ण नमो पद नाको ॥ पूजत हों ॥

ॐ श्री सुकर्णाय नमः निर्दिशामि ॥१७॥

नीत्य रूप उदे जह मोहे । देव सुकर्म जिनेसु मोहे ॥ पूजत हों ॥

ॐ श्री सुकर्मणे नमः निर्दिशामि ॥१८॥

नो ममता पद मुक्त भये हैं । नो अमर्ष शिव मुक्त नये हैं ॥ पूजत हों ॥

ॐ श्री अमर्षाय नमः निर्दिशामि ॥१९॥

पारसनाथ शिवालय स्वामी।भव्यनिकों भवपार लगामी।पूजतहों०

ॐ ह्री पार्श्वनाथाय अर्घ्य निर्वपामि ॥२३॥

शास्वत आनंद कंद धरैया।शास्वतनाथ कलंक हरैया॥पूजतहों०।

ॐ ह्री शास्वताय अर्घ्य निर्वपामि ॥२४॥

सुदरी तथा दुतिविलवित छंद ।

दतिय दीपसु पूख भारते । जिन भविष्यत सद्गुण धारते ॥

जजहु पूरन अर्घ्य चढ़ायजी । हमहिं आनंद कंद वढ़ायजी ॥

ॐ ह्री धातुकीक्रीपविजयमेरुभात्रीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्य ।

जयमाला ।

धत्ता-जै जिन रमनीयं गुन कमननीयं अघदमनीयं पूजपदं ।

१ संस्कृत पूजामें “स्वस्थस्थाख्याजिन ध्येयं स्वास्थ्यसेवकयोगिभिः” ऐसा पाठ है जिसपर से भगवान का नाम ‘स्वस्थ, ऐसा निकलता है परंतु कविवरने न मालूम ‘स्वच्छनाथ’ कहासे ग्रहण करके लिख दिया है ।

जे शिव गमनीयं व्रत जमनीयं जुन सुमुनीयं नौमिरादं ॥१॥

उद नयमाश्रिनी नया नदी नया तागरा (मात्रा १२)

सिद्धनाथ भगवान नमस्ते । सम्यक् गुण अमलान नमस्ते ॥
 जै जिनिंद गुन लाल नमस्ते । श्रीमन्नरु मलान नमस्ते ॥२॥
 सर्व स्थापि गुनराज नमस्ते । मुनि नायक शिवराज नमस्ते ॥
 जै निशिष्ट रर उष्ट नमस्ते । अश्रितोर हित शिष्ट नमस्ते ॥३॥
 नलजांत भगवत नमस्ते । परनाथ सर अन नमस्ते ॥
 जैति अशानुक गौर नमस्ते । गाननाथ ररवीर नमस्ते ॥४॥
 कल्प मोनन भान नमस्ते । सरर सेयर वान नमस्ते ॥
 सान्छना । निरुक्त नमस्ते । आरु केद अरुक्त नमस्ते ॥५॥
 श्री शिवराज अशिराज नमस्ते । वन्द्यमम दुग भान नमस्ते ॥
 जै सुनर मुनारुद नमस्ते । श्री सुकणी निरुक्त नमस्ते ॥६॥
 जै सुकर्म शुभराज नमस्ते । सर सेजन अमनाथ नमस्ते ॥
 गान्धेनाथ सुगदाय नमस्ते । शास्त्रत मदा मदाय नमस्ते ॥७॥

ती.चौ.

११५

विजय भरतभावीय नमस्ते । चौविस शिवतिय पीय नमस्ते ॥
हरिहर नुतनित पाय नमस्ते । अमल अचल पददाय नमस्ते ॥८॥

पंच कल्याणक ईश नमस्ते । गुन अनंत जगदीश नमस्ते ॥
तारन तरन उदार नमस्ते । भविक "वृद्ध" आधार नमस्ते ॥९॥

वत्ता--जै जिन गुनदामं, अति अभिरामं जैजित कामं, काम ददं ।
जै मुनिगन रंजन, भूमतम भंजन, शिवसर मंजन, ज्ञानसदं ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥१०॥

शोरठा--दख भाव विधि लाय, विजय भरतभावी जिन ।

जोजन जजन कराय, सो नर सुरशिव सुखलैहै ॥११॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजयधातुद्वीपभरतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

पृ.

११५

अथ श्रीधातुकी दीपपूर्वविजयमेरुपरावतदेवस्थ
वर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

शेष-द्वितीय दीप गिरि विजयके, ऐरावतके मांदि ।

वर्तमान चौबीस जिन, थापों ही हुल्लाहाहि ॥

ॐ श्री विजयमेरुजगत्पूजार्चमानजिना अत्र नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमोऽर्पय ।

ॐ श्री विजयमेरुजगत्पूजार्चमानचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत उ उ ।

ॐ श्री विजयमेरुजगत्पूजार्चमानचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता
भारा भारा पद दृष्टा ।

अथाष्टकं ।

श्री गुरु-मुनो जिनगज अरज मेरी ।

विजयमेरु उन्नत ऐरावत वर्तमान हेरी ॥ टेक० ॥

उज्जल जल शमताम्य समले, थार तीनदेरी ।

जन्म मरन मल्लवेगि हगे प्रभु, कगे न अरदेरी ॥ मुनो० ।

ॐ ही विजयमेरु उत्तरैरावतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥
 कदली नंदन चंदन घँसि करि, प्राशुक जल सेरी ।
 भवतप हरन चरन परवारों, परमशांति देरी ॥ सुनो जिनराय० चरुं ॥
 तदुल शशि सम शित अखंड शुभ, सौरभ अविधेरी ।
 पुंज धरत दुख दंद हरत, आनंद कंद देरी ॥ सुनो० ॥ तंदुल ॥
 समर सुभटनर अमर सकल जन, जेर करत घेरी ।
 ताहिकियौ निरमूल जजें हों, फूल ललित लेरी ॥ सुनो० ॥ पुष्पं ॥
 निरआकुल सुख अमल अतिंद्री अनुपम तुम पेरी ।
 चरुचढ़ाय जुग चरन जजौं ज्यों, टै व्याधि मेरी ॥ सुनो० ॥ चरुं ॥
 केवल भानु प्रकाश चराचर, तुम निरखत हेरी ।
 दीपक सों तुम करो आरती, तिमिर मोह खेरी ॥ सुनो० ॥ दीपं ॥
 करमकाठ तुम ध्यान अग्निनिमें दहनकीन हेरी ।

धर मुगं व उलेय जज्ञों पद, जगहि अरि सेवेगी ॥ मुनो० ॥ १० ॥

मोग मदाफल अमल अनूपम तुम मुभोगनेगी ॥

नाम ग्रामके हेत जज्ञों पद, प्राशुरु फललेगी ॥ मुनो० ॥ ११ ॥

तुम अनर्ग समता रम गजी, अविनाशी हेगी ।

हम पूजन पद अग्य थार भर, दोगे जगत फेरी ॥

मुनो जिन राज अरज मेरी ।

विजे मेरु उच्च गेगवन वनमान हेगी ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥

मोग्य पद-मुक्त धामों जाय, देव अपाश्रित वमतु हैं ।

जज्ञों चरन मनलाय, निज योगवन संत जिन ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

उदरंत जिनगाय, पुण्यत्ताप मद हस्तु हैं ।

जजों चरन लवलाय विजयैरावत संत जिन ॥२॥

ॐ ही पुष्पदताय अर्घ निर्वपामि ।

इंद्र जजत नित जाहि, अरिहंता अरिहंत सो ।

नित प्रति पूजों ताहि, विजयैरावत संत जिन ॥३॥

ॐ ही अरिहतायार्घ निर्वपामि ।

चारित रुचिर धराय, देव सुचारित चित हरन ।

पूजत सुरपाति पाय विजयैरावत संत जिन ॥४॥

ॐ ही सुचारित्राय अर्घ निर्वपामि ।

शुद्धध्यान सुखदाय, शुद्धानंदधरें सदा ।

जंजत सकल मुराराय, विजयैरावत संत जिन ॥५॥

ॐ ही शुद्धानंदाय अर्घ निर्वपामि ।

मोद अमंद धराय नंदग मोदत जगत सब ।

जजत पियत विनशाय, विजयैगवत संत जिन ॥६॥

ॐ ह्रीं नमः शाय भवे निर्माणि ।

पद्माकर जिनराय पद्माकर तसुदास घर ।

पूजत पिपति पत्न्याय, विजयैगवत संतजिन ॥७॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय भवे निर्माणि ।

उदयनंद जिनराय, आनंद मिथु वदावही ।

जजतें दुगिन नशाय, विजयैगवत संत जिन ॥८॥

ॐ ह्रीं उदयनंदाय भवे निर्माणि ।

रत्नम इंदु जिनराय, रत्नम इंदुनम दुति घर ।

पूजत दागिद जाय, विजयैगवत संत जिन ॥९॥

ॐ ह्रीं रत्नमंदाय भवे निर्माणि ।

श्रीरूपाल शिवराय, भजत मिलन चिंतिन अग्य ।

ती.चौ.

१२१

पूजत वांछित दाय विजयैरावत संत जिन ॥१०॥

ॐ ही कृपालाय अर्घ्य निर्वपामि ।

लोकालोक लखाय, प्रोष्ठिल केवलज्ञान में ।

जजत जगत सुखदाय, विजयैरावत संत जिन ॥११॥

ॐ ही प्रीष्ठिलायार्घ्य निर्वपामि ।

प्रगट सिद्ध पददाय, सिद्धेसुर सिवतिय रमन ।

पूजत गनफन पाय, विजयैरावत संतजिन ॥१२॥

ॐ ही सिद्धेसुराय अर्घ्य निर्वपामि ।

वचपियूष सरशाय अमृत इंदु जिनराय तें ।

जजत परम पद, पाय विजयैरावत संत जिन ॥१३॥

ॐ हीं अमृतइंदुजिनाय अर्घ्य निर्वपामि ।

स्वामिनाथ जिनराय सुगत देत शिव हेत नित ।

पू.

१२१

पूजत मनवचक्राय, विजयेगवत संत जिन ॥१४॥

ॐ श्री ग्यामिने नमो निवेदामि ।

भेनिल्यांग जगराय शिवसाधन हेतु हैं ।

पूजत वांछित दाय विजयेगवत संत जिन ॥१५॥

ॐ श्री भेनिल्यांग जगो निवेदामि ।

नम्य अग्य नुभदाय, श्री मन्वाय सुगुननिध ।

पूजत हों शिखाय विजयेगवत संत जिन ॥१६॥

ॐ श्री मन्वाय जगो निवेदामि ।

आनद धन सपाय मेघनंद जिन विजय धुज ।

पूजत भूजत भवभाय विजयेगवत संत जिन ॥१७॥

ॐ श्री मेघनंदाय जगो निवेदामि ।

संदकेश जिनगय केशल्योचि आनंद धर ।

पूजत पाप पलाय विजयेगवत संत जिन ॥१८॥

ॐ श्री संदकेशाय जगो निवेदामि ।

ती. चौ.

१२३

हरिहर प्रीत उपाय हरि जिन पदपंकज जजत ।
पूजत विघन विलाय विजयैरावत संत जिन ॥१९॥

ॐ ह्रीं हरिजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

जै अधिष्ट जिनराय शिष्ट इष्ट दातार वर ।
पूजत अरघ चढाय विजयैरावत संत जिन ॥२०॥

ॐ ह्रीं अधिष्ठाय अर्घं निर्वपामि ।

शांतिक सब सुखदाय जोगारूढ निपुनमती ।
जजों जुगल तमुपाय विजयैरावत संत जिन ॥२१॥

ॐ ह्रीं शांतिकाय अर्घं निर्वपामि ।

आनंद संपति दाय नंद स्वामि भवि वृंदकों ।
पूजत पाप पलाय विजयैरावत संत जिन ॥२२॥

ॐ ह्रीं नंदस्वामिने अर्घं निर्वपामि ।

पू.

१२३

श्री. श्री.

१२४

त्रिभुवनपति शिरनाय कुंद पार्श्व नित सेवहीं ।

जजन चगन उमगाय विजयेरावत संत जिन ॥ २३ ॥

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।

रुचि उर अधिक उपाय, देव विगेचनकों भजों ।

विघन हरन सुपदाय, विजयेरावत संत जिन ॥ २४ ॥

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।

नमो भगवते—

सजे वसुधै पुनीतपुनीत । वजे सब साज सुनीत सुनीत ।

जजों उर आनंद पाय सुपाय । विजेगिर उत्तर भाय सुधाय ॥ २५ ॥

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।

अथ जयमान्य ।

संस्कृत (भाग ३२)

जैजै जिनेश अनुगम दिनेश भूगतम निवेश नाशन अजेश ।

सेवत सुरेश वेवत गनेश महिमा महेश कारन कलेश ॥
गुन अतुल भेश मुनि भजत शेश शिववल्लभेश हरि अरि प्रवेश ।
हम शरन देश आये जगेश-भवसिंधुते समुद्धर रमेश ॥१॥

चौपाई छंद—

जै जिनराय अपश्चिम स्वामी । पुष्पदंत जैजै शिवगामी ॥
जै अरिहंत सत जन ध्यावै । देव सु चारित चित हरषावै ॥२॥
सिद्धानंद सुखंद जिनिंदा । जैजै नंदग आनंद कंदा ॥
जै पदमेश परमपद दाता । उदै नंद जै जगविख्याता ॥३॥
जै रुक्मेदु इंदु दुतिधारी । जै कृपाल करुना विस्तारी ॥
प्रेष्ठिलदेव परम वैरागी । जै सिद्धेश्वर शमता पागी ॥४॥
अमृतदेव ज्ञानामृत पूरे । जै स्वामी जिहि भव भै चूरे ॥
भेनिलांग अनंग मद गंजन । जै सरवारथ जन मन रंजन ॥५॥
मेघनंद आनंद जल पूरन । नंदकेश जिन अमृतम चूरन ।
जै हरि देव जजत हरि पादं । जै अधिष्ठ जिन कृतमरजाद ॥६॥

जैजै शान्ति शान्ति करैया । नंद म्यामी मम रिपन करैया ॥
 कुंद पार्थ जस शशि समलोक । देव विरोचन मोचन जोरुं ॥७॥
 न नउरीश ईश सुखसागर । वरनमान जस जगत उजागर ॥
 सुषिरन सुरनर हिसर नागर । गावन जस नाचन रससागर ॥८॥
 द्विम द्विम द्विम द्विम मांदल पाजै । द्रम द्रम द्रम नुँकु पग छाजै ।
 कटकिकिनी कितिनितिनितिकुजै । पग नृपूर क्षितिनितिनिति गुंजै ॥९॥
 पट पट पट पाटन पुनि है है । धुँगुन धुंगन गत धेई धेई मो है ॥
 दट दट भर पट नाट नटनै । मधुर मधुर सुर सुजस रटनै ॥१०॥
 डन समान गुन भगत करै हैं । भर भर जनिन कटक करै हैं ॥
 दम दंदन पद गुन कर जोरी । दरो प्रन भर बाग मारी ॥११॥
 न न जै गुनगुंदर भक्त धुंधर भजन गुंदर भगतभग ।

हम जगत गुंदर मम उरंदर भक्तमंदर भानुपग ।

भुजंगप्रयात छंद ।

जजै उत्तरैरावतें वर्तमानं । विजै मेरुके जे सुधी बुद्धिवानं ।
लहै ते इहां सौख्य इन्द्रीजनीत । अतिंद्रि लहै फेरि होवें निचीतं ।
इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजैमेरुऐरावतवर्तमान चौबीशीपूजा समाप्ता ।

अथ विजैमेरुऐरावतातीत पूजा लिख्यते ।

स्थापना छंद नंदि श्वराष्टक भाषाका--

गिरि विजय मुर उत्तर सार ऐरावत सो है ।

तित तीत जिनेश उदार सुरनर मन मोहै ॥

थापौं उर प्रीत लगाय पूजन हेत सही ।

प्रभु आपु विराजा आय दायक मुक्तिमही ॥१॥

ॐ ही धातुकी द्वीप-विजयमेरु ऐरावतातीत जिन-अत्रावतर अवतर संमौ-
पद आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं धातुह्रीं गिरविजयमेकं गेरावतातीन जिन । अत्र तिष्ठतिष्ठताऽऽऽ न्यापनं
ॐ ह्रीं धातुह्रीं गिर विजयमेकं गेरावतातीन जिन अत्र मम सखितिनो भव
मा तद स्थाण ।

अष्टाष्टक ।

वेदं दंष्टक नावा ३२ ।

सुरसरितवार प्राशुक अपार भरि हेम भार धारा निकार ।
हे जग अधार जिनवर उधार सुधिल सवार मल कर्म टार ॥
गिर विजे धार उत्तर सिंगार तित तीन चारि अरु बीस सार ।
पुत्रों निहार प्रभु मो अवार मंसार सार्वे तार तार ॥

ॐ ह्रीं धातुह्रीं गिरविजयमेकं गेरावतातीन जिनमेकं अत्र निर्णयामि ।
कर पूमार शीतल निहार चन्दन उदार घमिलेत मार ।
पुत्रों प्रवार जिनगुन अगार भवताप हार सुगद अपार ॥ गि०
ॐ ह्रीं धातुह्रीं गिरविजयमेकं गेरावतातीन जिनमेकं अत्र निर्णयामि ।
अनन मिलत इतन प्रतन अभिलन अत्र सुपपशकार ।

तसु पुंजरक्ष सुखभुजस्वक्ष कलिकुंजनक्ष शिवगक्षसार ॥ गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुल ।

यह मदनशूल सच जगतभूल कारक अकूल तुमकिय निमूल ।
ताते सुफूल धरिहों अधूल प्रभुदे अतूल शुभ शीलभूल ॥ गि०

ॐ हों धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प ।

खाजे रसाल मोदक विशाल भरि कनक थाल प्राशुक मुहाल ।
सो हेदयाल तुमनिकट हाल धरि नमतभाल आकुलनिकाल गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि

दाहक अमंद दीपत सुखंद सो जजि जिनिंद जगवंद चंद ।
भ्रमतमनिकंद केवलदिनंद प्रगटै अफंद सुखवंद नंद ॥ गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप ।

दशगंध आन सौरभ अमान खेवत प्रमान वसुकरम हान ।
दिशिदिशि उड़ान मनु मेघजान निरततसयान केकीमुजान ॥ गि०

九、

● ● ●

१० ॥ पातुहि श्रीमद्विष्णुसंज्ञासामर्थ्यात्तुर्गिनिजिनेभ्यो वृषं निर्दिशामि ।

फल पतु मिष्ट मवाशिष्ट इष्ट मौलि वशिष्ट पूजो जगिष्ट ।

हनि अग्नेः जिव दे सुपुष्टहेविजद् शिद् दायक अभिष्टागि॥

ॐ श्री गणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः ।

जलकल मित्याय वसु अंगनाय वाजनवजाय सुख मुजगगाय।

मन्त्र श्रीजिनाय मनवचनकाय वन्दितल्लहाय भवभय नशाय ।

गिरि विजयशाल उत्तम सिंगा नितर्वात चाअरु वीसमार ॥

पञ्चो निहार प्रभुमो अवार संसारऽपाम्नें तार तार ॥

* जं पा ह्योर्गोतिर्ज्ञेययोगात्तान्ननु गिति जिनेभ्योऽप्य निवृत्तापि

अथ प्रत्येकार्थे ।

पुस्तकालय नं. १३

समस्ततोऽपि महागिरिं ज्ञातो । भद्रं वज्रं वज्रजितं मानो ।

द्वितीय दीप निर्गिरिजय सुन्दरोपनिषत् अतीत जिन पत्रो॥१॥

ती.चौ.

१३१

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

उदय विशुद्ध सदा जिन धारे । उदयदत्त जिनवर अविकारे ॥ दु० ऐ०

ॐ ह्रीं उदयदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सूरवीरवर सूर्य जिनंदा । भजों भविक मोदनगन चंदा । दु० ऐ० ।

ॐ ह्रीं सूर्याय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुरुषोत्तम नित सेवत जाकों । पुरपोत्तम जिनसदन सुधाको । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

भविकवृद्धकों शरण सहार्ई । शरणस्वामि त्रिभुवन के राई । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं शरणाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

भवि समोध दायक शिवधामं । श्री अवबोध करें परनामं । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं अवबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

परम पराक्रम क्रांति धरैया । निर्घटकजिन विपति हरैया । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं निर्घटकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

पू.

१३१

अगम पराक्रम जामें मोहै । सो विक्रमजिन जनमन मोहै ॥ दु० ॥

ॐ श्री विष्णवे नमः ॥२॥

हगिहर इंद चंद पद वंदें । सो हरिंद केवल अभिनंदें ॥ दु० ॥

ॐ श्री हरीं नमः ॥३॥

मनि शिवपथ पंथी पायेयं । पश्चिमिजिन मुनिगन ज्येयां दु० ॥

ॐ श्री परमेश्वर नमः ॥४॥

भविजनकों पद दे निग्यानं । जिन निखान मूर भगवानां दु० ॥

ॐ श्री नारायण नमः ॥५॥

दोनों धर्मबुगधर स्वामी । धर्महेतु पद परम नमामी ॥ दु० ॥

ॐ श्री परमेश्वर नमः ॥६॥

चतुर्गनन चंद्रोद बलान । देव चतुर्मुख मंजय माने ॥ दु० ॥

ॐ श्री चतुर्मुख नमः ॥७॥

इंद नरिंद चंद पद वंदें । गुरुनइंद जन बुंद अनंदें ॥ दु० ॥

ॐ ह्रीं सुकृतेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

श्रुतिअंबुद्धि भविजन श्रुतिद्वारे । देव श्रुतंबुद्धिअंबुद्धि तारे ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं श्रुतांबुद्ध्याये अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

आदितसम तनविमल दिपै है । विमलादितजिन करम खिपै है ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं विमलादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

देव देवपति नमत अनेकं । देवदेवजिन नमों चिदेकं ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं देवदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

धरनी धर धरनेंद्र सुरेंद्र । सेवत नित धरनेंद्र जिनेंद्र ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं धरनेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

भविजन भव जलतें उद्धारे । तीरथ नाथ नमों अविकारे ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं तीर्थनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

परमानंद निरंतर भोगी । उद्यानंद शुद्ध उपयोगी ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं उद्यानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सखाग्र्य पद मिद्ध प्रदाना । सखाग्र्य जिन त्रिभुवन ताता ॥दु०॥

ॐ ह्रीं नमोऽस्तुते अरे निर्गतानि ॥२१॥

धर्मिक कह धनधान्य बढ़ावै । धार्मिक जिन जन मुक्त बढ़ावै ॥दु०॥

ॐ ह्रीं धार्मिक जने निर्गतानि ॥२२॥

गग क्षेत्र कह भवि शिर नापे । क्षेत्रम्बामि सो प्रीत बढ़ावै ॥दु०॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रम्बामिने अरे निर्गतानि ॥२३॥

इंद्र चंद्र दिन इंद्र भोजे हैं । जिन दृग्निंद्र सुमोक्ष सजे हैं ।

इतियही गिरि विजय मृदुजो । ऐगवन अतीत जिन पूजो ॥

ॐ ह्रीं गिरिजय जने निर्गतानि ॥२४॥

ऐग-पुमन अग्न वनाय वर पूजो उग्रवर ध्यान ।

विजयैगवन तीत जिन नमो जोगि जुग पान ॥२५॥

ॐ ह्रीं विजयैगवन तीत जिन नमो जोगि जुग पान ॥२५॥

ती. चौ.

१३५

अथ जयमाला ।

घत्तानंद छंद ।

पू.

अविचल थल जुक्ता, शिवसुख भुक्ता, उक्तिनिरुक्ता, मुक्तिधरा ।
भूमतम शतखंडा, आनंदमंडा, जै जै जै शिव रमानि वरा ॥१॥

कामिनी मोहन छंद—

जयति वज्रेश वज्रेश पूजत चरन ।

जय उदय दत्त सुख उदय भविजन करन ॥

जयति जिनसूर्य भविजलज के सूर है ।

जयति पुरुषोत्तमं जानरस पूर है ॥२॥

शरन स्वामी त्रिजगजीव कों शरन हैं ।

देव अवबोध बुधि विसद विस्तरन हैं ॥

जयति विक्रम करम शत्रु तुम चूरियौ ।

जयति निरघंट तुम सामरस पूरियौ ॥३॥

जजत हरिहृद हरिहृद पद आइकैं ।

१३५

भजत परश्वरितहि विबुधगन ध्यायकैं ॥
 देत निरवान निरवान निज दामकौ ।
 रमके हेत जिन परि भवि मासकौ ॥४॥
 चतुरमुख देव नित चतुर मुख सेवते ।
 सकृत् जिनराज गुन सकृत् जन सेवते ॥
 देव हतिमिथु भविमिथुनै नारही ।
 रिमर आदिन्य मग मुकत विम्वारही ॥५॥
 देव प्रभकौ चतुरभेय मूर सेवते ।
 देव भगनेष्ट गुन सुमुन मन सेवते ॥
 नाथ नारथ जगत जायते कारिगौ ।
 उदय आनंद पानंद मोहि नारिगौ ॥६॥
 जगति सर्वार्थे सर्वार्थ दातार हौ ।
 धार्मिकं देव जिन परम आधार हौ ॥
 देव स्वामी मुकत ऐश्व दायक महा ।

देव हरिचंद पद शरन हमने गहा ॥७॥
 ए चतुर बीस जगदीश नित वंदिये ।
 विजय ऐरावतें तीन अभिनंदियै ॥
 तरन तारन हरनै करम जगजन्त कै ।
 गुन अमल अचल अनुपम लसै संतकै ॥८॥
 ज्ञान द्विग शर्म धीरज विशद लसत हैं ।
 सो परमदेव मो मन सदा वसत है ॥
 अरज कर जोरि जुग करहुं सुन लीजिये ।
 धरम के नदकौं परम मुख दीजिये ॥९॥
 गता-जैजै करुनाकर मोह तिमरहर ज्ञानदिवाकर उदयकरा ।
 संशयतम भंजन मुनिमन कंजन रंजन जै जै विघन हरा ।
 अघाशीर्वादः । चावैले छद ।
 जो पूजे जिनराय पाय जुग दरव भाव विधि मोदधरे ।
 धातु दीप गिरि विजयैरावत तीत जगत जन भीत हरे ॥

सो पावे धन धान्य पुत्र प्रिय मित्र कलत्र प्रवीन वरे ।
सुगति होय नरूपति हकें भगवत्क धरि मुक्त वरे ॥

श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥ श्रीमहादेवाय नमः ॥ श्रीमहेश्वराय नमः ॥ श्रीमहामाताय नमः ॥ श्रीमहापिताय नमः ॥ श्रीमहादेवाय नमः ॥ श्रीमहेश्वराय नमः ॥ श्रीमहामाताय नमः ॥ श्रीमहापिताय नमः ॥

अथ श्रीविष्णुविशतिजिन पूजा प्रारभ्यते
नमोऽस्तुते श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

वर धातुकी दीप विजाल फुव मेरु कहा ।

तिन पैगवन सुरमाल गोमा देत महा ।

तहं भारी जिन चौराज मव विधि ल्याक हो ।

धातु हो मो जगदीश दाम महायक हो ॥

१ श्री विष्णुदेवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥ श्रीमहादेवाय नमः ॥ श्रीमहेश्वराय नमः ॥ श्रीमहामाताय नमः ॥ श्रीमहापिताय नमः ॥

२ श्री विष्णुदेवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥ श्रीमहादेवाय नमः ॥ श्रीमहेश्वराय नमः ॥ श्रीमहामाताय नमः ॥ श्रीमहापिताय नमः ॥

३ श्री विष्णुदेवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥ श्रीमहादेवाय नमः ॥ श्रीमहेश्वराय नमः ॥ श्रीमहामाताय नमः ॥ श्रीमहापिताय नमः ॥

अथाष्टकं ।

चाल सुन्दरी छन्द ।

पृ

परम पावन वारि सुधारिये । जजत हों मलकर्म निवारिये ।
दुतिय दीप विजै अइरावते । जिन भविष्य जजों मनभावते ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

कदलिनंदन चंदन लेइयै । जजतु हों भवताप उछेइयै । दु० ।

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं ।

सुरभि तंदुल मंदुल लाइयै । निकट धारि अखै पद पाइये ॥ दु० ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुलं निर्वपामि ।

समरशूल निमूलन कारने । सुभग फूल धरों मदटारने ॥ दु०

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

चरुशाल मनोहर लैधरों । सकल आकुलकल्मषकों हगें ।
दुतिय दीप विजैऐरावते । जिन भविष्य जजों मनभावते ॥

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेभ्यो नमः निर्वाणम् ।
तिभिरनाशक दीपक भारती कृत ह्ये प्रभु सन्मुख आगती॥दु०

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेभ्यो दीप निर्वाणम् ।
अगर आदि दशंग सुधूपजी । हवत कर्म जे सु विस्फुपजी॥दु०

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेभ्यो नमः निर्वाणम् ।
फल सु पक मनोग रमाल ह्ये । जजन वाञ्छित देत विशाल ह्ये ॥दु०।

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेभ्यो नमः निर्वाणम् ।
जल फलादिकको मजि अर्थ हे । जजन आनंद होत अनर्थ हे॥

दुतिय दीप विजे एगवते । जिन भविष्य जजो मन भावते ॥
ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेभ्यो नमः निर्वाणम् ।

अथ प्रत्येकार्थ ।

नैवमर्षि १५ ।

वीर जिनगत आनन गोभं, गग वितीत तिन्हें नित धोकं ।

धातु वज्रै गिरि उत्तर जाई । भवियदेव जजौं शिरनाई ॥

ॐ ह्री वीरनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

देव विजै अरि जीत विराजै । सुंदर श्री उर अंतर छाजै ॥ धा०

ॐ ह्रीं विजयाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

सत्यप्रभू बच सत्य वखानैं । सत्य प्रभाजुत भौतम भानैं ॥ धा०

ॐ ह्री सत्यप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

विष्टर जासु मृगेन्द्र लसै है । देव मृगेन्द्र कुकर्म नशै है ॥ धा०

ॐ ह्रीं मृगेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

चिंतित लाभ सुदेत जिनिदा । देव सुचिंतमनी सुखकदा ॥ धा०

ॐ ह्री चिंतामणिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

शोक समूह विनाश करै हैं । आनंद थोक अशोक भरै हैं ॥ धा०

ॐ ह्री अशोकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

कर्म गयंग मृगेन्द्र समानं । सो द्विमृगेन्द्र नमों भगवानं ॥ धा०

ॐ श्री विष्णवे नमः ॥७॥

नष्ट कियो अरि अष्ट प्रकाश । श्री उपवाजिक परम उदास ॥धा०

ॐ श्री उपवाजिकाय नमः ॥८॥

चंद्रसमान सु आनन सो हैं । पद्मसुचंद्र जगज्जन मो है ॥धा०

ॐ श्री पद्मसुचंद्राय नमः ॥९॥

भक्तक मोदनि इंदु समान । बोधक इंदु नमों धरि ध्यान ॥धा०

ॐ श्री बोधक इंदु नमः ॥१०॥

११ वीं श्लोक—

चिता उतपलकों हैं पाला । चिता हिम श्री जिनगुनमाला ।

धानु विजै गिरि उत्तर आई । भावियेद्व जज्ञों जिग्नाई ॥११॥

ॐ श्री चिता उतपलकाय नमः ॥११॥

माहम उर उन्माद धरें हैं । उन्मादक जिन मुक्तवरे हैं ॥धानु विजै०

ॐ श्री उन्मादक जिन मुक्तवरे ॥१२॥

शिव सुख सहित अपासिक देवा । चतुनिकाय करें सुरसेवा ॥ धा०

ॐ ह्री अपासकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

करम ज्वाल कँहँ मेघसमाना । जै जलदेव जगत मनमाना ॥ धा०

ॐ ह्री जलदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

अरिको धातन जाकौं लागै । नारिकदेव भजें भय भागै ॥ धा०

ॐ ह्री नारिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

शांति सुधारस मेघ जिनिंदा । जै अनिंद्य जिन आनंदकंदा । धा०

ॐ ह्री अनिंद्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

नाग इंद्र आदिक सुर सेवै । नाग इंद्र जिन मेटि कुंटवै ॥ धा०

ॐ ह्री नागेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

नीलोत्पल सम श्याम विराजै । नीलोत्पल जिन समता साजै ॥ धा०

ॐ ह्री नीलोत्पलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

मेरु समान अकंप सरूप । अप्रकंप करुणा रसे कूपं ॥ धा०

नी.नी.

६४६

ॐ श्री भगवताय नमः निर्वाणाय ॥१६॥

हित कारज में पूजन स्वामी । नमों पुणेहित जिन शिवगामी ॥धा०

ॐ श्री पुणेहिताय नमः निर्वाणाय ॥२०॥

पापताप भव भेदन हारे । भिंदकनाथ नमों अतिकारे ॥धा०

ॐ श्री भिंदकनाथ नमः निर्वाणाय ॥२१॥

सदा भगतके पास विगजें । पार्थनाथ भजतें भय भाजें ॥धा०

ॐ श्री पार्थनाथाय नमः निर्वाणाय ॥२२॥

चव प्रवृत्त तज निर्वच स्वामी । दिव्य ध्वनि उपदेशक नामी ॥धा०

ॐ श्री निर्वचस्वामी नमः निर्वाणाय ॥२३॥

गेष दोष तजि मग प्रकाशे । नाथ विशेष मोक्ष सुखगशे ॥

धातु विजे गिरि उत्त । जाई । भानिय देव जजों शिगनाई ॥२४॥

ॐ श्री शिगनाथाय नमः निर्वाणाय ॥२४॥

ॐ—आठ दरपके अग्रमों पजों चमन जिनेश ।

१४४

विजयैरावत भावि तव नाशत सकल कलेश ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।

अथ जयमालं ।

धत्ता—परपरनति चूरन समता पूरन जै जिनराज अनंतगुनी ।

नित सुरजश जंपत अंत कुकंपत सेवत संपत होत धनी॥१॥

चौपाई छंद ।

वीर जिनेश नमैं धरि धीरं । विजै देत नित विजै गहीरं ॥

सत्य पद्म जिन सत्य प्रभावी । सदा मृगेन्द्र सुरेन्द्र जजावी ॥२॥

चिन्तामनि चितचितित पूरैं । सदा अशोक शोक चक चूरैं ॥

मृगपति सदा नमैं दुमृगेन्द्रं । उपवाशिक जै जैति जिनेदं ॥३॥

पद्मचद मुनि कैरव चदा । बोधकेदु भवि कमल दिनदा ॥

चिंताहिम मम आरति नाशैं । उत्साहक उत्साह प्रकाशैं ॥४॥

हे अपाशि जिन हरि भवपाशी । सदा देवजल जिनअधिनाशी॥

नारक गति नारक जिन भंजै । जगत पूज अनिद मनरंजै ॥५॥

नाम इह नामिदृदि ध्याये । नीलोत्पल जिन दुति दरजाये ॥
 अमरक पद देत अकषो । शिव हित हिये पुगेहित जेषो ॥६॥
 भेदक कर्म भजो जिन भिदक । पार्थनाथ जिन मन आनदक ॥
 निबोधा गुनवचन अंगोत्तर । ओविरोंप जिय पांग करेतर ॥७॥
 न नखीश भविष्यत स्वामी । विजयमरु गेरावन नामी ॥
 गनवर असनि पान पर ध्याये । गुनसागरको पार न पाये ॥८॥
 निनमो अगल करों कर जोरी । हरो मय भयबाधा मोरी ॥
 आठ कर्म मोहि धेरि रहे हैं । इन मग दुःख अनंत महे हैं ॥९॥
 मो दुःख दूति करो जिन स्वामी । बारबार पदपदम नमामी ॥
 गती अगल दिण पर भारी । कुशासनको मयदधि तारी ॥१०॥
 पना-जै जै जिनभाने, भूगतमहाने, भविकुमलाने, मोदकरे ।

शिवमग परराजक, जै जमनाजक, केवल्योथ अगाधधरा । नदारे
 गोविंद पद ।

भक्तिज जिनेश गेरावन थान । विज गिरिके सुजने धरिथान ।

मिले मनवञ्छित आनंद ताहि । अनुक्रम सौ शिवधाम लहाहि ॥

इत्याशीवांदः

इति श्रीविजैदेरुऐरावतभावीचौवीशीपूजा समाप्ता ।

—*o*—

अथ श्रीधातुकीदीप अचलमेरु संबंधी पूजा ।

(प्रथम चारि विदेहनिके चारि विरहमान पूजा प्रारम्भे)

हुतविलवित तथ्य सुन्दरी छंद ।

दुतिय दीप सुधातुकि सोहनों, अचलमेरु तहा मनमोहनों ।

तसु विदेहनिमें जिन चार हैं, तिनहिं थापत आपत टार हैं ॥

ॐ ही अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर
चंद्रानन अत्रावतर अवतर सवौपद आह्वानन ।

ॐ ही अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र धर
चंद्रानन अत्र तिष्ठ ठ.ठः स्थापन ।

ॐ श्रीं नमोऽस्तुतेऽस्मिन्निवापिदमान निन सुगम विद्यालक्ष्मीं यत्र यत्र
चंद्रानन तत्र मम तन्निश्चिंतो भव भव यद् व्यादाः ।

अथवा एक चाल टप्पा श्री ।

प्रभु पूजों हो चरना । त्रितिय मेरु सुविदेह में ॥ प्रभू ० ॥ ॥ टिका ॥
उज्जल जल भरि कनक भृगमें धाग मनमुख करना ।

जनम गन मल धोव तुरित भव, सागर पार उतरना ।

प्रभू पूजों हो चरना । तृतीय मेरु सुविदेह में ॥ प्रभू पूजो हो ० ॥

ॐ श्रीं नमोऽस्तुतेऽस्मिन्निवापिदमान निन सुगम-विद्या लक्ष्मीं यत्र यत्र
चंद्रानन तन्निश्चिंतो भव भव यद् व्यादाः ।

हेमर चंदन केदली नंदन कुंकुम धमिकर धरना ।

जगत जिनेश्वर चरन कमल जुग भवाताप पहिरना ॥ प्रभू ॥

ॐ श्रीं नमोऽस्तुतेऽस्मिन्निवापिदमान निन सुगम-विद्या लक्ष्मीं यत्र यत्र
चंद्रानन तन्निश्चिंतो भव भव यद् व्यादाः ।

तंदुल अमल निशाकर से शुभ सुवरन थारी भरना ।

पुंज धरत जिनराज चरन द्विग तुरंत अखे सुख वरना॥प्रभू॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-
धर चद्राननाय तदुलं निर्वपामि ।

कमल केतुकी वेलि चमेली सुमन सुमन सम वरना ।

समरशूल निरमूल करनकों जजों जगत गुरु चरना ॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशाल कीर्ति वज्र-
धर चद्राननाय पुंजं निर्वपामि ।

नव्य गव्य पक्वान विविध मनमोदन मोदक करना ।

अंजुलि मंजुलि जोर जजन पद क्षुधारोग निरवरना ॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-
धर चद्राननाय चरुं निर्वपामि ।

दीपक जोत उद्योत होत तम खोत धूम विनु धरना ।

नामों जजन जगतिरवि तुमपद तिमिर मोह खंफना ॥प्रभु॥

ॐ ह्रीं अन्त्येकदिग्गन्धितदिग्मानजिन यन्मभ-विशालकीर्ति वत्त-
धर चदाननाय दीप निर्णामि ।

धूप दण्डग सुगन्धित लेकर सेवत सनमुख करना ।

आठकाठ अरिफूर जेरें मो धूम घूम विस्तारना ॥प्रभु॥

ॐ ह्रीं अन्त्येकदिग्गन्धितदिग्मानजिन यन्मभ-विशालकीर्ति वत्त-
धर चदाननाय धूप निर्णामि ।

आम्र कामरु अनार मार फल भार ललित शुचि वरना ।

तासों जजन विघन परि हरिकान्तुगति मुक्तफल धरना ॥प्रभु॥

ॐ ह्रीं अन्त्येकदिग्गन्धितदिग्मानजिन यन्मभ-विशालकीर्ति वत्त-
धर चदाननाय फल निर्णामि ।

जलफल सरुल मिलाय मनोहर अरव कान्त गुन वरना ।

पूजत चम्पत जुगल जिनपरकें पूजन बंझित करना ॥

प्रभु पूजों हो चरना, तृतीय मरुसों विदेहे में । प्रभू पूजोहो॥
 ॐ ह्रीं अचलमेखविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-
 धर चंद्रानमाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

चाल नंदीश्वराष्टक की

सूरप्रभ मूरज चिन्ह शिवमगं दर्शावें ।

भद्रातें जनम जु लिन्ह विजयपुरी गावें ॥

नृप नागराज महाराज सीतोत्तर जानो ।

तृतियाचल अचल समान पूजत सुखमानो ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपपश्चिममेखद्वंद्वमंडलमंडितविदेहक्षेत्रस्थ चक्रवर्त्त्यादि
 सेवित समवशरणादिविभूतिसयुक्त श्रीसूरप्रभाय अर्घ्यं ।

सीता दिग दक्खिन मान अचलाचल सोहै ।

सुविशाल कीर्त भगवान चंद विहन मोहै ।

नर पुंडरीक पुर जान गय विजापति हैं ।

विजया जननी सुखमान पूजत जापति हैं ॥

ॐ ह्रीं धातृसीतीप पश्चिममंगलीतादक्षिणे पदमाश्रमं मृगमडिनचक्राद्यादि
नेत्रमन्त्रमाश्रयादिभिर्भक्तिगजमानविधायकान्तो अर्च ॥२॥

जिन वज्र धौंश महेश जंगल निहल गजे ।

मीनोदा दक्षिण देश अचलाचल आज्ञ ॥

नगरीय सुशीमा मानु सरस्वति मनमो है ।

पदमाश्रय नृप मम आनु पूजत सुख हो है ॥

ॐ ह्रीं धातृसीतीपवनयोग्यमीनोदादक्षिणभागे सुशीमानगरमंदिना
पद्माश्रमं मृगमडिनचक्राद्यादिभिर्भक्तिगजमानविधायकान्तो अर्च ॥३॥

चंद्रानन आनन चंद्र वृषभ भुजा धारी ।

पदमावति मान अमंद अचलाचल भारी ॥

सीतोदा उत्तर धाम पुंडरीक नीमें ।

बल्मीक पिता अभिराम पदमावति जी में ।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपअचलमेरुसीतोदाउत्तरभागे पट्स्वडमंडलमंडितचक्रवर्त्यादि-
सेव्यमानसमवशरणादिशोभाविराजमानविहरमानश्रीचंद्राननाय अर्घ्य॥४॥

चहुसंग सहित वृषभाप, करत विहार सही ।

गनधर सेवत अभिलाष, पावत मोष मही ॥

पद पूरन अरघ चढ़ाय सेवत हौं स्वामी ।

मोहि आतमज्ञान बढ़ाय कीजे शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपअचलमेरुविदेहसस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ विशाल
कीर्ति वज्रधर चंद्राननाय पूर्णार्घ्य ॥

अथ जैमालं ॥

वत्ता-जै चारि जिनंदा आनंदकंदा विहरमानं दुखदंद हरा

समवश्रुत स्वामी त्रिभुवन नामी विश्रामी सुविदेह वरा ।

मोतीदान छंद—

ती.ती.
१५४

५.

नमो जिन सूर प्रभु अभिगम । जगज्जन कंजनिहों दिनस्वामि ।
 विनाक सुकीर्त जग सरवज । गनेन्द्र जपे गुन गावन तज ॥२॥
 मग जग यज्ञ नरेज जिनेश । कुरुष कुलानल वज्र समेश ।
 जगो जिननंद सु आनंद कंद । सुमन्यकमोद प्रमोदन चंद ॥ ३ ॥
 ममरश्चुत मजुत राजत एव । रिबुत अनूप लजै स्वयमेव ॥
 सुरेश मदा पद सेगत आन । गनेश करे जह तर ववान ॥४॥
 नरेज अशेष नमो कर्णोष । अनेक सुभज्य सुनें पुनि मार ।
 अनादि मित्रात मित्राग नुसंत । रहे केर कंरल जान अनंत ॥५॥
 केर पूत आवकहो गति सुष्ट । लखे सुरसंपति पूरन पुष्ट ॥
 केर सुरसुंदर भक्ति करंत । बजारत मान समाज लखत ॥६॥
 नये केर भार बसाय पुनीत । यजे पग नृपा अदनुत रीत ॥
 जनासनमंजननं जनजोष । करे कदाहिं किनि किनिमिनि शौरा ॥७॥
 नवा नववा अनवा बितवा । नये गत पुतल पुतल पददाय ॥

१५४

ती. चौ.

१५५

द्रिम द्रिमि द्रिमिनाद करै मिरदंग । सुरान्वित चग उपंग अभग ॥८॥

तनननतान महानभनंत । इनादि समाज सजत महंत ॥

समौ श्रुत माहि वन्यौ सुख साज । वनै नहि भाषत सो सख आज ६

हमें यह आश लगी जगदीश । मिलै कव दर्शन हे गुनईश ।

बुलाय समीप सुनों तुम वैन । लहौं निज आतम ज्ञान सुचैन १०

घचा-जै जै गुन छायक त्रिभुवननायक विघनविनायक बोधमहा

बंदतगननायक नितसुखदायक अव सब लायक-शरणगहा

ॐ ह्रीं अचजमेरुविदेहस्थितविहरमानजिनेंद्रेभ्यो महार्थनिर्वपामी ।

कवित—

सूरप्रभ सु विशालकीर्त जिन वज्र धरेश अगम गुनधाम ।

चंद्रानन ये चार तीर्थपति अचल विदेहनि में विसराम ॥

कबहुक करहिं विहार कवहुं थित समवशस्त शोभित अभिराम

तिनहिं जजत मनवंछित सुखलाहि मुकत होहि तिहि करो प्रनाम

गालि अगंडित उज्जली हो, शशिसम वृत्ति दमकाय ।

पुंज धरत तुम चरन द्विग हो, देह अघेपद गय ॥ सदा ॥

ॐ श्रीं नमःस्येकभक्तार्त्तमानचतुर्गिरिनिजिनेन्द्रेणो तंदुष्टं निर्त्तामि ॥३॥

बेल चमेली केतकी हो, सुमन सुमन समलाय ।

तार्ते तुम पद पूजने हो, समर शूल नशिजाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्रीं नमःस्येकभक्तार्त्तमानचतुर्गिरिनिजिनेन्द्रेण पुण्य निर्त्तामि ॥४॥

ताजे ताजे साजके हो, मोहन मोदक लाय ।

नामों तुम पद पूजने हो, क्षुधागेग नशि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्रीं नमःस्येकभक्तार्त्तमानचतुर्गिरिनिजिनेन्द्रेणो नेत्रेण निर्त्तामि ॥५॥

दीपगजोति सुहायनी हो जगमगात सुरदाय ।

तासों आगनी कल ही हो, तिमिर मोह निशि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्रीं नमःस्येकभक्तार्त्तमानचतुर्गिरिनिजिनेन्द्रेणो शीघ्र निर्त्तामि ॥६॥

कृष्णागर आदिक दशों हों, गंध सुगंधित लाय ।

धूप उखेवों चरन ढिग हो, अष्ट करम जरि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

मधुर रसीले पावने हो, श्रीफल सुंदर लाय ।

तासों तुम पूजा करत हो सुकत महाफल पाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल चंदन को आदि दे हों आठों द्रव मिलाय ।

सो ले तुम आगे धरों हों संकट कोट नशाय ॥

सदा श्रीजिनवरका, पूजा करों सुखदाय ।

अचलमेरु दन्तिन दिशा हो भरतक्षेत्र दर्शाय ।

वरतमान चौबीस जिनको पूजत सुरपत पाय ॥ सदा श्रीजिन०

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्थ ।

चौपाई ३८—

जगदानंद कंद सुख वृंदा । विश्वचंद जिन आनन चंदा ॥

अचल मेरु भारत सुखदाई । वस्तमान पूजो जश गाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो नित्यामि ॥१॥

मकल धरम मारग परगाजे । कपिल देव जमता सुख गजे ।

अचल मेरु भारत सुखदाई । वस्तमान पूजो यश गाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो नित्यामि ॥२॥

वृषदागरु वृषभेसुर स्वामी । सुभग जील संजुत शिवगामी । अ०

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो नित्यामि ॥३॥

आनमजोनि माहि सब व्यापा प्रियदग्जन जिन विगतकलापा अ०

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो नित्यामि ॥४॥

विषय अंग अनंग मदगंजन । व्यावो भविक मोद मन रंजन अ०

ती.चौ.

१६१

ॐ हा चारित्र्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥
चारित रुचिर पात्र अभिरामी । चारित नाथ जिनेस नमामी । अ०

ॐ ही प्रशमस्यामिने अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥
शमदमप्रशमसहित नितराजै । प्रशमस्वामि जमजीति विराजै । अ०

ॐ ही प्रभादित्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥
प्रभादित्य पद तिहुँ जग वंदै । आदत प्रभा जीति आनंदें । अ०

उद पाइता मात्रा १४ ।

जिन मुजकेश पद ध्यावो । मन वांछित आनंद पावो ।
तृतियाचल भारत माहीं । पद पूजो वस्तु आहीं ॥९॥
ॐ ही मुंजकेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

तपसों तन दीपत जाको । जिन पीतवास कहि ताको ॥१०॥
ॐ ही पीतवासाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

१६१

नर ईश सुभासु ईशं । नमने नु सुभासिप शशिं ॥ तृतीया० ॥

० श्री सुभासिप शशिं निरुति ॥२॥

दृग्मा सुदया कमि भीनों । जिन दयानाथ अपत्नीनों ॥ तृ० ॥

० श्री दयानाथ अपत्नीनों निरुति ॥२॥

सु महमगमि सम काया । सु महमगमि जिनमया ॥ तृ० ॥

० श्री महमगमि सम काया निरुति ॥२॥

वसुहर्म गयंद मृगिंद । जिन मृगिंदनाम सु जिनिंद ॥ तृ० ॥

० श्री वसुहर्म गयंद मृगिंद निरुति ॥२॥

हर पेशवत हर मोहे । जिन भवतपो मन मोहे ॥ तृतीया० ॥

० श्री पेशवत हर मोहे निरुति ॥२॥

जिन बाहु जयो मुनिगजा । जिनहे अभीनमव हाजा ॥ तृ० ॥

० श्री बाहु जयो मुनिगजा निरुति ॥२॥

नमदभुन लनी धर्म । श्रीमाल भवोदधि नर्म ॥ तृतीया० ॥

ती. चौ.
१६३

ॐ ह्रीं श्रीमालाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तिहुँ जोग हनेसु अजोगी । निज जोगे सुधारस भोगी ॥तृ॥

ॐ ह्रीं अयोगाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

सु अजोगनाथ पद सेवो । सब जोग समग्री लेवो ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं अजोगनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

करिकों हरि जेम विदारें । तिमि काम रिपु मद मोरें ॥तृ०॥

ॐ ह्रीं कामरिपवे अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सब दंभारंभ हरे हैं । शिव हेतारंभ करे हैं ॥तृतीयाचल०॥

ॐ ह्रीं आरभाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जिन धर्मचक्र रथ नेमं । जिन नेम करैं सब खेमं ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

तिहुँ ज्ञान गर्भतें धारी । जिन गर्भ ज्ञान अविकारी ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं गर्भनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

भरभर गगनकुल जलम लोहि । भरभर मर्मगत निरहृद मोहि १
 सवभर तुम भागन तरंगधोय । भरभर अनुभव विकल्पनिरोध २
 सवभर तावित जन शीलदान । भरभर तुम भगति मिलो मशान ३
 सवभर अगतागम संग लोय । सवभर समाधि जुन मरनजोय ।
 यह जाणव हीमो गौदयाल । हरि विपन हरो मगद रजा ४ ॥ १५ ॥

जो जे हृदनावन मोहनपतहन सकल भव्यजन नोपफरा ।
 नदन 'बृंशवन' श्रीन नौ मन हो जिन संपति नदन भग ॥

जो जे हृदनावन मोहनपतहन सकल भव्यजन नोपफरा ।

जो जे मनलाय, अनल भग्न नमन चरन ।

नो मन वंदित पाव अजगद पदहो लहे ॥

॥ १५ ॥

॥ १५ ॥

— १५ —

अथाचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिपूजा प्रारब्धते ।

तोटकछन्द-

तृतीयाचल भारतभूत जिनं । चौवीश महामुख सिंधु गिनं ।
तिहु थापतु हों इत जोरि करं । प्रभु आय विराजहु पापहरं ॥

ॐ ह्रीं अचलभरतातीतजिन-अत्रायतर अत्र संवोपद् आत्मानर्न स्वाहाः ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतजिन-अत्र मसे संनिहितो भवभव वपद् स्वाहाः ।

चाल प्रभू पूजें रे भाई ।

तुम पद पूजें शिरनाई । जासों पातक जात पलाई ।

अचलमेरु दक्षिण दिशा हो भरततीत जिनराई ॥ तुम० ॥ टेका ॥

हिमवन गिरिगत गंगाजल वर, सुवरन भृंग भराई ।

तासों पूजत चरन कमल जुग, तृषा रोग मिटि जाई । तुमपद० ॥

ॐ श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमो नमः ॥१॥

कदलीनंदन चंदन वावन कुंकुम मंच घमाई ।

विषन ताप निरगन्त कामन पूजो पद पुनगाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमो नमः ॥२॥

नंदलु आलविशाल नेनि जुम गमक दमक दग्गाई ।

पुंज भान तुम नमन कमल दिग लहन अगेवद गई ॥ तुम० ॥

ॐ श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमो नमः ॥३॥

नमन सुमन नम सुमन थार मर सुमन नमन सुगादाई ।

नामि तुमपद पदम जजो जिमि समगल नजिजाई ॥ तुम० ॥

ॐ श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमो नमः ॥४॥

नदय गदय मनमोदन मोदक नाने नाजे लाई ।

मो पुन निरुद यो जिमनायक देह निगकुलाई । तुम० ॥

ती. चौ.

१६९

ॐ ह्री अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥२॥

घृत पूरित अथवा कपूरमनि दीपक जोति लगाई ।

आरति करत हरत सब आरत आतम जोति जगाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥३॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन देवदारु सब लाई ।

धूप उखेवतु हों तुम आगे ज्यों वसुकरम जराई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्य शृपं निर्वपामि ॥४॥

आम्रकाम्रक अनार सार फल प्राशुक पक धराई ।

पूजों तुम पदप्रीत लाइके ज्यों वांछित पदथाई ॥ तुमपद०॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फल निर्वपामि ॥५॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर अरघ कियौ उमगाई ।

नाचिराचि शिरनाई समरचों ज्यों अनर्घ पदपाई ।

पू.

१६६

तुम पद पुजो शिखाई जामों पातक जान पलाई ।

अनलमेरु दक्षिण दिशा हो, भगवतीत जिनगई । तुमपदपूजो०

ॐ हो पातकमरणापापपुनितिनं हो अरे निर्तामि ।

अथ प्रत्येकार्थ ।

जात गरी माएक—

वृषभेश धों वृषमार जानन वस्तु सवे ।

तुनियाचल भग्न धार तीत जजामि अवे ॥१॥

ॐ हो वृषभेश धों निर्तामि ।

प्रिय मित्र सकल जगमीन त्रिभवनकों प्यारे ।

तुनियाचल भग्न अतीत पूजन भवतारे ॥२॥

ॐ हो मित्राणां धों निर्तामि ।

तिन शान्तिनाथ जिनगय शान्ति कों सबही ।

ती चौ.

१७१

तृतियाचल भरत जिनाय तीत जजों अवही ॥३॥

ॐ ही शान्तिनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन सुमति सुमति दरशाय सुमतिनकों प्यारे ॥

तृतियाचल भारत ध्याय तीत जजों सारे ॥४॥

ॐ हीं सुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

मनमथ मद मंथनहार आदि जिनेश कहा ।

तृतियाचल भरत उदार भूत जजामि महा ॥५॥

ॐ हीं आदिजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

अतिव्यक्त जगोत्तम रीत तीरथ व्यक्त करें ।

तृतियाचल भारततीत पूजत पाप टरें ॥६॥

ॐ हीं अतिव्यक्ताय अर्घं निर्वपामि ।

जिन कलासेन भगवान सकल कलाधारी ।

पू

१७१

गिर अचल भग्न गनवान पुत्रन नग्नार्ग ॥७॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

जिन कर्म पमि मग देव अघमद नृगि द्यो ।

नृनियानल भग्न जुमेव नीन पुनीन भयो ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

मुनिनायक गुह्य प्रवृत्त गिह रु गिह कर्म ।

नृनियानल भग्न समुल नीन जजामि वें ॥८॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

भग भाग प्रवृत्त निर्वृत्त देव प्रवृत्त क्रिया ।

नृनियानल भग्न अमृत नीन भगपि दिया ॥९॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

मोक्षम भो निज भो मोक्षमेष भो ।

ती.चौ.

१७३

तृतियाचल भारत पर्म तीत जिनेश जजै ॥११॥

ॐ ही सौधर्माय अर्घं निर्वपामि ।

तमभानन आनन सार देव तमोदीपं ।

तृतियाचल भरत अधार तीत जजामीपं ॥१२॥

ॐ ही तमोदीप्ताय अर्घं निर्वपामि ।

जिन वज्र भजै वज्रेश वज्र शरीर धरें ।

तृतियाचल भरत महेश तीत जजामि वरें ॥१३॥

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

सुप्रवृद्धनाथ जिन स्वामि सेवत शुद्धमती ।

तृतियाचल भरत जजामि तीत अभीत जती ॥१४॥

ॐ ह्रीं प्रवृद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

निरबंध प्रबंध जिनंद कीर्त प्रबंध कहा ।

पू.

१७३

तृनियानल भग्न मुह्यंद नति जजामि महा ॥१५॥

ॐ श्री गणेशाय नमः नित्यं ।

केवल शुद्धिमान अतीत गति पंकज पोष्ये ।

तृनियानल भग्न अतीत पूजत दुल सोम्ये ॥१६॥

ॐ श्री गणेशाय नमः नित्यं ।

जिन सुमुख भविक आनंद दायक गुणगावों ।

तृनियानल भग्न मुह्यंद नीत जजों यावों ॥१७॥

ॐ श्री गणेशाय नमः नित्यं ।

पद्मोपम देव पुनीत उपमा नीत मही ।

तृनियानल भग्न अतीत पूजत ज्ञान मही ॥१८॥

ॐ श्री गणेशाय नमः नित्यं ।

सोपादि पर्वीण विनाश हीन अक्रोश जिन ।

तृतियाचल भरत जजास तीत निचीत गिनं ॥११॥

ॐ ह्रीं अकोषाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन निष्ठित देव उदार पूजत इष्ट मिलें ।

गज भरत तृतीय गिरि सार संकट कोट टलें ॥१२॥

ॐ ह्रीं निष्ठिताय अर्घं निर्वपामि ।

मृगनाभि शरीर सुगंध पावन सुखकारी ।

तृतियाचल भरत अवंध तीत जजों भारी ॥१३॥

ॐ ह्रीं मृगनाभये अर्घं निर्वपामि ।

देवेंद्र जिनेंद्र मुनेंद्र इंद्र भजें सारे ।

तृतियाचल भरत महेन्द्र तीत जजों प्यारे ॥१४॥

ॐ ह्रीं देवेंद्राय अर्घं निर्वपामि ।

मुनिवृंद पदस्थित देव सेवत गुनगाई ।

तृतियाचल भारत ऐव तीत जजों भाई ॥१५॥

ॐ श्री गणेशाय नमः निर्दिष्टम् ।

शिवनाथ नमो धरि प्रीत दायक मुक्तमही ।

तृनिवाचल भगवन्तं पूजन शर्मा लही ॥२४॥

ॐ श्री गणेशाय नमः निर्दिष्टम् ।

देव-पुत्र अम्य सज्जोय के नमो नमन धरि प्रीत ।

अचल भक्त गन जगन्पति हृन् विद्यन जड़रीत ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः निर्दिष्टम् ।

नमः शिवाय ।

ॐ श्री जिन गुरुनाथ सुजन उजागर निवन्तनागर सेवकः ।

त्रैलोक्य उद्धारक भवद्विनाशक भविक "बुद्ध" तुव शान्तये ॥

ॐ नमः शिवाय -

नमः शिवाय श्रीगुरुनाथ नमः । शिवनाथ भवै धिय तुष्ट लक्ष्मी ।

शिवशान्ति प्रदायि प्रसिद्ध करै । सुमतेन भवैय कुवृद्धि रई ॥२५॥

जिन आदि अनादि विवाद हैं । अतिव्यक्त चिदातमव्यक्त करें।
 प्रणमामि कलाधर सेन जिन । जित कर्म जिनं अमलीन गिनं ॥३॥
 भवि बोधक देव प्रबुद्ध सही । परिवृत्त करै भवि मुक्तमही ।
 सब धर्म निजातम धर्म धरें । तम दीपित कर्म कलंक हरे ॥४॥
 प्रभुवज्र सबै दुख चूर करें । सुप्रबुद्ध महारिपु कुद्ध हरे ।
 निरवध प्रवध प्रनाम करो । सुअतीत जपों भवसिधु तरों ॥५॥
 सुमुखेश महेश दयाधर हैं । सुपलोपम मोह विथाहर है ।
 विनुकोप अकोप सु शत्रुहरैं । जिन निष्ठित दृष्टित पुष्टकरैं ॥६॥
 मृगनाभ अनंत गुनाकर हैं । नित देव सुइंद सुधाधर हैं ।
 अति उच्च पदस्थ पदस्थ करें । शिवनाथ प्रमोद प्रसस्त भरैं ॥७॥
 चउवीश घेई जगदीश महा । तृतियाचल भारततीत कहा ॥
 गुनसार अनंत धरें नित हैं । द्रगज्ञान सुवीरज सजुत हैं ॥८॥
 सुख सूत्रम ना लघुना गुरुता । अवगाह अबाध सदा पुरता ॥
 निररूप सरूप चिदातम हैं । भवव्याधि व्यतीत शुचातम हैं ॥९॥

॥ अथ भातम ज्ञोति प्रकाशनु है । अममोह सुखामद नाशनु है ॥
 निरदोष अलोभ अलोभ मोह । अमलीन अनीन अदीन भवे ॥
 अननं अमन अत्य अकलं । अमद अमद अदल अत है ।
 इन भातं अनंत भवं गुण है । निर निरनु निर मशामुन है ॥ ११ ॥
 तुमलो करजार नही निरयो । भातमाग मों शिवाय पयो ।
 निरभातम ज्ञोति उदोत कर । दुषदारिद निर ममूह कर ॥ १२ ॥
 ज्ञे ज्ञे ज्ञितस्वापी शिवपुष्पापी सुवज्जनापी देवमहा ।
 "वृंदावन" भावन शीम नवावन वांछित अर्थ प्रवच्छ लहा ॥
 ॥ १३ ॥ अथ भातम ज्ञोति प्रकाशनु है । अममोह सुखामद नाशनु है ॥

॥ १४ ॥ ज्ञोत अनल अनीन भग्नानि ज्ञे सुगमी ।
 दम भात विधि गहिन सु तो नर है वडभागी ।
 वद भर सुख धनधान्य सकल मनवांछित पाई ।
 सुगति होई पुनान चक्रानि है शिव गदि ॥

ती.चौ.
१७६

इत्याशीर्वादः ।

इति श्री अचलभरतातीतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथाचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशति जिन पूजा ।

अडिल छद ।

दुतिय दीप सुविशाल धातुकी सोहनों ।

पश्चिम अचल सुमेरु भरतमन मोहनों ।

होनहार चौवीश जिनेसुर सारजी ।

थापो पूजन हेत प्रभू सुपधारजी ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्राग्रतर अग्रतर संवौपद् आदानन ।

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भवभव वपद् स्वाहा ।

त्रिमंगी अपनाशक छद ।

हिमवनगत गंगा जलभरि भृगा सुचि सरवंगा सुखकारी ।

पू.

१७९

तुम पदतर स्वामी धार दृगमी तुषा नमामि अतिभागी ॥
 गिरि अचलविगजे अति ह्यविद्याजे भक्तममाजे मुपमाजे ।
 तित भाषियदेवं चवविश एवं कृतपद मेवं दृष्ट भाजे ॥

ॐ ॥ तत्त्वभक्त्याभाषाचारिणिरिति-शे जयं निर्मासि ॥ ११ ॥

चमि वाचनचदन कदली नंदन द्वाहनिकद जीतवरं ।
 कमि जुगपदचंदन हे जितनचदन हसि भवकंदन भवकरं । गि० नि० ॥

ॐ ॥ तत्त्वभक्त्याभाषाचारिणिरिति-शे जयं निर्मासि ॥ १२ ॥

नंदुल मुनि मडित शमि ह्यविमडित पुनउमडित मनहारी ।
 दृगदित चित्तडित पुनगनमडित शशिह्यविमडित हितभागी गि० नि० ॥

ॐ ॥ तत्त्वभक्त्याभाषाचारिणिरिति-शे जयं निर्मासि ॥ १३ ॥

ममाल नशावन तुम पद पावन जील्य वदवन जानिसरी ।
 पद हल्यमुदावन दिगमन भावन चमनचटावन आनिगरी ॥ गि० नि० ॥

ती.चौ.

१८१

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पठरम करिजित क्षुधाविभांजिन चरु दुखगजित मृदुसो हे ।
तुमपद पूजत जगजशकूजत शिववर हूजत मन मोहे । गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामी ॥५॥

दीपगतमखडन दुतिदिगमडन सत्रव्रह्ममंडन मोदकरा ।
सो तुम दिगवारों श्रुति विस्तारों भूमतमटारों बोधकरा ॥ गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो द्वीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध बनाई तुम दिगलाई हे जिनराई जशगाई ।
खेवों उमगाई हरप बढ़ाई करम जराई शिखराई ॥ गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो वृषं निर्वपामि ॥७॥

फल पक्वमुहावन मनललचावन विघननशावन लै आयौ ।
तुम पदतर धारत दारिदहारित सुखविसतारत उमगायौ ॥ गि०ति० ॥

पू.

१८१

श्री. १०
१२२

ॐ श्री भक्त्यभेदभक्त्यभेदार्थाचार्यसिद्धिनिर्णयः कृत निर्णयः ॥८॥

जलफल समभाजे राजतवाजे विविध समभाजे जुतराजे ।

तुम सेवनराजे हे महाभाजे भगतकाजे शिवभाजे ॥

गिरि अचल विगजे अति ह्रस्वि ह्राजे भाग्यसमाजे सुखभाजे ।

नित भाविगदेवं चवविज पदं कृतपद मेवं दुर्लभाजे ॥

ॐ श्री भक्त्यभेदभक्त्यभेदार्थाचार्यसिद्धिनिर्णयः कृत निर्णयः ॥९॥

अथ प्रत्येकाये ।

भक्त्यभेदभक्त्यभेदार्थाचार्यसिद्धिनिर्णयः कृत निर्णयः ॥१०॥

उच्छिन्न शिवपद दाय, अचल भक्तभार्या जजो ॥११॥

ॐ श्री भक्त्यभेदभक्त्यभेदार्थाचार्यसिद्धिनिर्णयः कृत निर्णयः ॥१२॥

चक्रदत्त जितदेव, भक्ति चक्र रत्न मत्त ।

शक्रदत्त रुद्र मेर, अचल भक्त भार्या चजो ॥१३॥

ती. चौ.

१८३

ॐ ह्रीं चक्रहस्ताय अर्घं निर्वपामि ।

बहुनृप सेवत पाय, द्वेप रहित कृतनाथ जिन ।

मोपर होहु सहाय, अचल भरत भावी जजों ॥३॥

ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

पद्मेश्वर जिनचंद चंदवदन छवि देत नित ।

हरत सकल दुखदद अचल भरत भावी जजों ॥४॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

मनहर मूरत जास, देवसु मूरत जगत हित ।

जस कीरतकी राश अचल भरत भावी जजों ॥५॥

ॐ ह्रीं सुमूर्तये अर्घं निर्वपामि ॥५॥

मुक्तक्रांत जिन स्याम, मुक्त रमनिवर मुक्त कर ।

नमों क्रांति सुखधाम, अचल भरत भावी जजों ॥६॥

पृ.

१८३

ती.चौ.

१८४

ॐ ह्रीं मुक्तिकान्ताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

केशसमूह उपाग. व्रतधारं निःकेश जिन ।

सो मो पतित उधार, अचल भक्त भावी जजों ॥७॥

ॐ ह्रीं निःकेशाय अर्घं निर्वपामि ।

देव प्रशस्तिक सार, देत प्रशस्त महान सुख ।

मम दुखदं निवार, अचल भक्त भावी जजों ॥८॥

ॐ ह्रीं प्रशस्तिकाय अर्घं निर्वपामि ।

निराहार जिनसार कमलाहार वितीत नित ।

सो मम विघ्न निवार, अचल भक्त भावी जजों ॥९॥

ॐ ह्रीं निराहाराय अर्घं निर्वपामि ।

भजों अमूरत देव विमल जांति चिद्रूपवन ।

कस्त गच्छीपाति सेव. अचल भक्त भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं अमृतया अर्घ्यं निर्वपामि ।

चार वरग नित जाहि सेवित सो द्विजराज जिन ।

नमों जोरकर ताहि अचल भरत भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं द्विजनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

श्रेयनाथ भगवान्, श्रेयकरै पातक हरे ।

देत सकल सुखखान अचल भरत भावी जजों ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रेयनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

छंदनाराच ।

रुजादि दोष नाशिकें निजात्म शुद्ध भाशियो ।

प्रबोधि भव्य वृंदकों अरुज्जकर्म नाशियो ॥

नमामि पाद पंकजं सुहृद् जासकों भजे ।

तृतीय मेरु भारते भविष्यतं जिनं जजे ॥१३॥

ती. चौ.

१८६

ॐ ह्रीं अरुजाय अर्घ्यं निर्वहामि ।

समस्त देव सेवही सदैव देवनाथकों ।

भवाब्धि हूवते गहो जिनेश वेगि हाथकों । न०तृ० ॥१४॥

ॐ ह्रीं देवनाथाय अर्घ्यं निर्वहामि ।

समस्त दीनपै दया धेरं दयाधिके जिन ।

निजातम स्वभाव में विगजने सदा तिनं । न०तृ० ॥१५॥

ॐ ह्रीं दयाधिकाय अर्घ्यं निर्वहामि ।

सुपुष्पनाथ नायकं सुपर्म धर्म दायकं ।

सु पुष्पचाप घायकं प्रशस्तशील लायकं । न०तृ० ॥१६॥

ॐ ह्रीं पुष्पनाथाय अर्घ्यं निर्वहामि ।

नरेश ओ सुरेश वृंद जाहि नित्य सेवही ।

नेगुनाथ देवमा भवाब्धि नाव सेवही न०तृ० ॥१७॥

ती.चौ.

१८७

ॐ ह्रीं नरेशाय अर्घं निर्वपामि ।

समस्त जीवपे दया धरें सदा विराजहीं ।

प्रती सुभूतकों भजें अशेष क्लेश भाजहीं ॥ न० तृ० ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं प्रतिभूताय अर्घं निर्वपामि ।

दिविंद भाव निंदचंद विंतरेंद ध्यावही ।

सुनाग इंद देव सेवते सुशर्म पावही । न० तृ० ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं नागेशाय अर्घं निर्वपामि ।

महा तपोदिके धनी तपोधिकं अराधही ।

नमों सदा तिन्हें समस्त पर्म शर्म साधही । न० तृ० ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं तपोधिकाय अर्घं निर्वपामि ।

दशोंदिशा विषें सुव्याप्त कीर्त जास है गह्यौ ।

दशाननाख्य देव सेवते सुबोधको गह्यौ । न० तृ० ॥ २१ ॥

पृ.

१८७

ती चौ.

१८८

ॐ ह्रीं दशाननाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

उभे प्रकारको तपादि तासके धनी सही ।

अरण्यनाथको नमामि देत मुक्तकी मही । न० तृ० ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं अरण्यनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

अनंगके दशों अनीनको विनाश कीन है ।

दशा सुनीकको नमों सदैव सो प्रवीन है । न० तृ० ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं दशानीनाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

सदा अच्छोम राजही पुनीत भाव साजही ।

जिनेंद्र शाखिकं भजें दग्दि दुख भाजही ।

नमामि पादपंकजं सुगेंद्र जासको भजें ।

तृतीयमेक भास्ते भविष्यतं जिन जजें ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं भास्त्रिनाय कर्णं निर्वपामि ।

पृ.

१८८

ती.चौ.

१८९

स्थोद्वता-अष्टद्रव्य सब छाजिकें वरं, नाचिराच गुनगायहीधरं ।
पूजिहो अचल भारते महा, होनहार चवगीश जे कहा॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णाग्रैर्विर्वापामि ।

अथ जयमाला ।

पत्ता-जै जिन कलपद्रुम दयावेलि तुम सुमन सुजसगम कंतवरा ।
फल शिवसुरमंडित विपति विहंडित वांछितार्थपद पुष्टकरा॥

पादद्वितीय छंद—

जै रक्तकेश आनंद भेश । जै चक्रहस्त नुत शक्रशेष ॥
कृतनाथ कृतारथ करत भव्व । परमेश्वर पूरत ज्ञान सव्व ॥१॥
जय देव सु मूरत मदनभग । जय मुक्तकांत शिवकांत संग ॥
निकेश केश तजि व्रतवराय । जय जय प्रशस्तपद परमदाय ॥३॥
जय निराहार अविकार बुद्ध । जय जय अमूर्त जिन सुगुन शुद्ध
द्विजनाथ मोहि दुखतें निकार । श्रेयो गति मो दै श्रेयसार ॥४॥

पू.

१८९

जय अरुज हरो मम गेग पथ । जय दयानाथ मुनि वेगि लेन ॥
 प्रणमामि दयाधिक दयाधीश । जे गुणनाथ गुननिधि जगीश ॥५॥
 नरनाथ नमैं नरनाथ पाय । प्रतिभूत गहन गुनगन जिनाय ॥
 नागेंद्र देव नागेंद्रराज । नित देव तपोनिध सुखसमाज ॥६॥
 जय जैति दशानन सुजशराज । आरण्यरुके सुर असुर दाम ॥
 नित नमो दशानिक निगुन देव । शास्त्रिक जिनवर पद करो मेध ॥
 ए धातुदीप गिरि अचल नाम । नित भक्त भविष्यत सुगुन धाम
 मुनिमडल नित चित धरत ध्यान । सुरनखगणजत चरन आन ॥८॥
 ये तारन तरन दरन कलेश । निरदोष मोक्षपोषक मलेश ।
 शिष्यजन जनमन परुज दिनद । सुगमागर वर्जन मदग चंद ॥९॥
 "वृंदावन" मेवत जुगलपाय । जिमि विवनमनन तनछिन चिलाय ।
 अरु जग्न गरी प्रभु प्रीत पाय । भवसागरतें मोक्षां निहार ॥१०॥
 जैजै जिननाथक मवविधिलायक द्वायकभाव अनंतपती
 भवतापनशायक शांति वदायक तुम गुन नित चित जपत जती

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभायीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो मन्त्रार्थं निर्वपामि ।
 आर्या छ०-जो पूजे मनलाई, तृतियाचल भारतेश सुखदाई ।
 भायी त्रिभुवनराई, सो पावै भुक्त मुक्तभुकराई ॥
 इत्याशीर्वादः ।

इति अचलमेरुभरतभायीचतुर्विंशतिजिनपूजा संपूर्णा ।

अथाचलमेरुऐरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन पूजा ।

रोडक उद—

दुतियदीप अभिराम अचल पश्चिम छवि छजे ।

ताकी उत्तर माहि क्षेत्र ऐवरावत गजे ॥

वर्तमान चौवीश तहां त्रिभुवन के नायक ।

थापतु हों करजोर इहां आवो वरदायक ॥

ॐ ह्रीं अचलऐरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रायतरअवतर संग्रौपद् आह्वाननं

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठं ठं स्थापन ।

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशति जिन—अत्र मम मन्निष्ठितो भव
भव ममद् म्वादा ।

(चाल पोटेश नारण चानतराहृत पूजा ताके अष्टकी)

मकल सुखदान, पूजां चरनकमल अमलान । सकल सुख० ।

अचलाचलत ऐरावतस्थान, वरतमान जनकंजन भान । स० टेक॥

मुनिमनमम जलतुज्ज्वल आन, धारकस्त मन्मुखदुखहान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्णामि ॥१॥

चदन केदलिनंदनमान, घसि लशि शशि सम ममतादान । म० ।

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदन निर्णामि ॥२॥

तंदुलमंदुलत उज्जल भान, पुजविगुंजत शिवपददान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुलं निर्णामि ॥३॥

सुमन मल्ल आति गुजत आन, धरत हस्त उर मदन वितान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नेवज तुरितपुरितरसथान, जजतभजत आकुल कलकान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

दीपक जोत दिपत दुतिवान, जजततुरित उरतिमिरनसान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगरदहतवसुकरम दहान धूम धूम यह तास उडान । स० अ०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

फलकलदलनचलन शिवथान, तुमढिगधारत विघनविलान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जलफलसकल विमल शुभ आन, अरघ जजत करि अनुभो पान ।

सकल सुखदान, पूजों चरन कमल अमलान । सकलसुख०

अचलाचल ऐरावत थान, वरतमान जनकंजन भान । स०॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

नौपाई ३८—

माधित नाम जिनेश नमामी । जिनको व्यावत हैं शिवगामी ॥
धातु अचल ऐरावत यानों । वरतमान पूजों धरि न्यानों ॥१॥

ॐ नौ माधिताय नमः निर्वायामि ॥१॥

जिनस्वामी त्रिभुवन आधार । सेवन संघ चार परकार ॥धा० व०

ॐ नौ जिनस्वामिने नमः निर्वायामि ॥२॥

स्ममितिन्द्रिय जिनद मितिन्द्रीय । नमित इंद्रजे अतिइंद्रीय ॥धा० व०

ॐ नौ स्ममितिन्द्राय नमः निर्वायामि ॥३॥

अन्यानंद जिनदभिगम । आनंदमदिर शिवपुरधाम । धा० व०

ॐ नौ अन्यानन्दाय नमः निर्वायामि ॥४॥

पुष्पकोटपुष्पकजिन ईश । फुल्लित कमलनयननिशिदीश । धा० व०

ॐ नौ पुष्पकोटपुष्पकाय नमः निर्वायामि ॥५॥

ती.चौ.
१९५

त्रिभुवन मंडनमुंडन सहा । मुंडक नाम नमों निरमल्ल । धा० व०

ॐ ह्रीं मुंडकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

प्रहतहते कंदर्प प्रचंड । सेवत सुरनरनाग रमंड । धा० व० ।

ॐ ह्रीं प्रहताय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

मदनसिंघ प्रणमों करजोर । वेगि प्रभु भवसंकल तोर । धा० व०

ॐ ह्रीं मदनसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

इंद्र समूह नमैं पदकंज । हसमिंद्र जिन भो भै भंज । धा० व०

ॐ ह्रीं हंसमिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

इंद्रचंद्र दिग सेवत पाय । चंद्र पार्श्वजिन गुनसमुदाय । धा० व०

ॐ ह्रीं चंद्राचार्याय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

भाविकअब्जबोधकजिमभान । अब्जबोधजिन सुगुननिधान । धा०

ॐ ह्रीं अब्जबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

प.

१९५

जिनको रूप रुचिर दर्शात । जिनवल्लभ सो जगविख्यात । धा०
ॐ श्री जिनवल्लभाय नमः निर्वाणाय ॥१२॥

उद गोतोदाम ।

विभूति अनूप लणे जुगजास । विभूत जिनेश नमों सुखराज ।
तृतीय गुराचल उत्तर ध्यान । जजों ऐरावत वर्तसु मान ॥१३॥
ॐ श्री विभूताय नमः निर्वाणाय ।

कुक्षुणजिनेश सुखामृतकुंड नयें जिनकों नित वासवकुंड ॥ तृ०
ॐ श्री कुक्षुणाय नमः निर्वाणाय ॥१४॥

सुवर्ण शरीर लामे सुखदाय । सुवर्णशरीर नमों जिनगाय ॥ तृ०
ॐ श्री सुवर्णशरीराय नमः निर्वाणाय ॥१५॥

महा जगमें जयवंत मरूप । नमों हरिनाम सुधारम कृप ॥ तृ०
ॐ श्री हरिनामाय नमः निर्वाणाय ॥१६॥

नमैन्नित प्रीतधरं भवि जाहि । नमो प्रियमित्र धगे उर ताहि । तृ० ।
ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

निजातम धर्म समस्त धरेय । सुधर्म जिनेसुर कर्म हरेय । तृ० ।
ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

प्रिया रतनेश जिनेश नमाम । रमाशिव संग क्रियौ विसराम । तृ० ।
ॐ ह्रीं प्रियारत्नाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

सवैसुर आनंद धारि नमंत । सुनादित नाथ नमों भगवंत । तृ० ।
ॐ ह्रीं नंदनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

अखड पदस्त लियौ जिनगज । नमों अमुनीक सवै सुखसाजा । तृ० ।
ॐ ह्रीं अवानीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

सुपर्व जिनेशानि गर्व लशेय । सदा समद्रिष्टिय चित्तधरेय । तृ० ।
ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

अथाचलमेरु ऐरावतेऽतीत जिन पूजा प्रारब्धते ।

स्थापना—(चाल नदीधराष्टक की)

दुतिदीप अचल गिरराज ऐरावत जानों ।

तित तीत नमों जिनराय चौविश युति ठानों ॥

थापों त्रिविधा करजोर हे त्रिभुवन स्वामी ।

इत आय हरो दुःख घोर कीजै शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्रावतर अवतर सर्वोपद् आवाहन

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठाठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्रममसन्निहितोभवभवपदस्वाहा

अथाष्टक—(प्रभु पूजेरे भाई)

नित पूजेरे भाई मुकतरमन जिनराजकों नित० ।

अचलमेरु उत्तर ऐरावततीत सकल सुखदाई ।

सुरसुग्देश पद पूजत जाके तनमन प्रीत उपाई । नि० ॥टेक॥

मोहमहामल धोय प्रभु तुम छायक समकत पाई ।

जान्हवीय जलमों हम पूजें । छायक सम्यक दाई ॥ नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीहीपाचरमेन्पेरास्तातीनजिनेभ्यो जल निर्वापामि ॥१॥

ज्ञाना वरनी नाश प्रभु तुम ज्ञान अनंत उपाई ।

चंदन सो पद पूजों जातें ज्ञान अनंत लदाई ॥ नि०अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीहीपाचरमेन्पेरास्तातीनजिनेभ्यो सुगंधं निर्वापामि ॥२॥

दग्ध आवरन नशिनाय तुम दग्ध अनंत जगाई ।

तदुल अमल लेय पद पूजों ज्यों अनंत दिग याई ॥ नि०अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीहीपाचरमेन्पेरास्तातीनजिनेभ्योऽन्नं निर्वापामि ॥३॥

अंतगय अरि चूर प्रभु तुम बल अनंत उपजाई ।

फल धों तुम चरन कमल दिग यों अनंत प्रभुताई ॥ नि०अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपरावतातीतजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

क्षुधावेदनी नाशि लियौ तुम निरआकुल ठकुराई ।

चरु चढाय पूजों पदपकज ज्यों अत्राध पदपाई ॥नि०अचल०

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपरावतातीतजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

आयुकरम अवगाहन गुन मम रोकि रह्यो जिनराई ।

दीप चढाय जजों प्रभु तुमको जिमि सों गुन उदय कराई ॥नि०

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपरावतातीतजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

नाम करम सूछिम गुन ढकिरें जग बहु नाच नचाई ।

धूप दहों तुम चरनन आगे सो गुन प्रकट कराई ॥नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपरावतातीतजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

गोत अगुरुलघु गुन मम रोक्यौ बहु विधि जग भरमाई ।

फलसों पूजत यह फल पावों अजर अमर ठकुराई ॥नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल ललित लेकर में भगत भाव उमगाई ।
जगत तुम त्रिभुवन के नायक मनवांछित सुखपाई ॥
नित पूजेरे भाई, मुक्त रमनि जिनराजकों । नित पूजो रे०
अचलमेरु उत्तर ऐरावत तीत सकल सुखदाई ॥
सुर सुमेश पद पूजत जाके तनमन प्रीत लगाई ॥ नित पू० ।
ॐ श्री गानुकीर्त्तयानम्येन्प्रेमपतातीतजिनेन्द्रोऽयं निर्त्तामि ॥८॥

अथ प्रत्येकार्थ ।

शेदा—सुगगिर सम गुरु जगतगुरु श्रीसुमेर जिनराय ।
अचलैरावत तीत पद पूजों मन वचकाय ॥१॥
ॐ ॥ सुमेर्येऽयं निर्त्तामि ।

जिनकृत जिनकृत मोद जग मुक्त रमनिपति न्याय ॥ अ०
ॐ श्री जिनकृताय नमः निर्त्तामि ॥२॥

कैटभनाथ जपों सदा मनवांछित उपजाय ॥ अचलै०॥३॥

ॐ ह्रीं कैटभनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

श्री प्रशस्त जिनचंद कों पूजत पाप पलाय ॥ अचलै०॥४॥

ॐ ह्रीं प्रशस्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

निरदै जिन अरि दमन किय दया धुरंधरं राय ॥ अचलै०॥५॥

ॐ ह्रीं निर्दयाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

निजकुल कमल दिनंद हैं श्रीकुलकर जिनराय ॥ अ० ॥६॥

ॐ ह्रीं कुलकराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

वर्धमान गुन वृद्धजुत उदय अपूरव पाय ॥ अचलै० ॥७॥

ॐ ह्रीं वर्द्धमानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

अमृत इंद्र गुनवृंद प्रभु अमृत इंद्र पदपाय ॥ अचलै० ॥८॥

ॐ ह्रीं अमृतेंद्रवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

संख्यानंद जिनंद नित आनंद अमित कराय ॥ अच०॥९॥

ती.नौ.

२०६

ॐ ह्रीं मय्यानंदाय नमः निर्वाणामि ॥०॥

कल्पद्रुम सम देत सुख कल्पकृत जिनराय ॥ अच० ॥१०॥

ॐ ह्रीं कल्पकृताय नमः निर्वाणामि ॥१०॥

मेवत हरि नित तासको श्रीहरिनाथ जिनाय ॥ अच० ॥१२॥

ॐ ह्रीं हरिनाथाय नमः निर्वाणामि ॥११॥

बहु स्वामी त्रिभुवन तिलक सेवत त्रिभुवन पाय ॥ अ० ॥१३॥

ॐ ह्रीं बहुस्वामिने नमः निर्वाणामि ॥१३॥

उद मारम्भत प्रन्तार ॥॥॥॥॥॥॥ भात वर्ण १०

भद्र जिनेसु भद्र भेरं । आनंद अयुधि वृद्ध करं ।

भेम्बृतीय पेरवत हे । तीन जजें सुख पावत हे ॥१४॥

ॐ ह्रीं भद्रदेवाय नमः निर्वाणामि ॥१४॥

श्रीप्रविषात जिनेश वरा कर्म कुलाचल भेद कर ॥ मे०ती

ॐ श्रीं प्रविषाताय नमः निर्वाणामि ॥१५॥

पूरन ब्रह्म विचार जती । ब्रह्म सुचारिय शुद्धमती ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचारित्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

मुक्तसती जुत केलि करें । नाथ वियोखित दुःख हें ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं वियोपिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

शाक्षियरूप त्रिलोक लखें । नाथ अशाक्षिक शर्म चखें ॥ मे० ॥

ॐ ह्रीं अशाक्षिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

चास्ति सैन प्रनाम करें ज्यों जिन चास्ति भार धरा ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं चारित्रसेनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

जो परणामिक भाव यहै सो परणामिक देव कहै ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं परिणामिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

शाश्वत आनंद देत हमें शाश्वतनाथ कलंक दमें ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं शाश्वतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

श्रीनिधिनाथ प्रनाम करें ज्यों निधि सार सुधाम भरें ॥ मे० ॥

ॐ श्रीं निगिनाथाय नमो निगिनामि ॥२२॥

कौशिकनाथ दयाल महा दारिद्र दुःख कुकर्म दहा ॥ भे०ती०

ॐ श्रीं कौशिकनाथ नमो निगिनामि ॥२३॥

श्रीधरमेश जिनेश नमो आनंदकंद समस्त पमो ।

मेरुतृतीय पंगवत हे तीत जेजे सुखपावत हे ॥२४॥

ॐ श्रीं धर्मेशाय नमो निगिनामि ॥२४॥

मोतीमान छंद ।

तृतीय सुगचल उत्तर जान । अतीत जिनेश महागुनग्वान ।

जजां पद पूरण अर्थ चहाय । कलेश अणेष सवे नशिजाय ॥

ॐ श्रीं धातुकीदीपाचलमेग्येरापनातीनजिनेभ्यो नमो निगिनामि ।

जयमानं ।

पगा जेजे करुनावन रीचर वानतन मेवकजन आनंद करा ।

जेजे जयदायक सब विधित्तायक कर्मकलंक अशेष हरा ॥२५॥

ती.चौ.

२०९

जै जै सुमेरु थिर मेरु जेम । जै जै कृत जिनकृत सुकृत छेम ।
 जै कैटभ अघकानन हुताश । जै जै प्रशस्त भवि भरत आश ॥२॥
 जै निर्दय जिन जुग दयाईश । जै जै कुलकर नुत सकल ईश ॥
 जै वर्द्धमान गुन वृद्ध सुष्ट । जै अमितिद्रिय आनंद पुष्ट ॥३॥
 जै सख्यानंद अनंत ज्ञान । जै कलपकृत कृत सुख निधान ॥
 हरिसेवत नित हरिनाथ देव । बहुस्वामि सकल सुर करतसेव ॥४॥
 जै भार्गव भवतप दमन सूर । जै भद्रदेव भवि भद्रपूर ॥
 प्रविपातन जिन दारिद्र हर्ण । जिन ब्रह्मचारि चारित्र भर्ण ॥५॥
 जै जैति वियोषित शिव रमेश । जै जैति अशाक्षिक भवतरेश ॥
 जै चारितसेन दयाल धीर । परिनामक जिनवर हरत पीर ॥६॥
 शाश्वतजिन शाश्वत थान देत । निधिनाथ निधान करत निकेत ॥
 कौशिक जिन कौशिकराज देहि । धरमेश तुरित भवतार देहि ॥७॥
 ए भूत चतुरविशति जिनेश । गिरि अचलैरावत सुगुन भेश ॥

पृ

२०९

तिन पद जुगसारं जो जजै प्रीतलाई ।

सुरनर सुखसार भोगि सो मुक्ति जाई ॥

इत्याशीर्वाद -

इति श्रीअचलमेरुऐरावतातीत चौवीसी पूजा संपूर्णा ।

अथ अचलमेरुऐरावतजावीजिन पूजा प्रारब्धते

लक्ष्मीधरा उद ।

मेरुतीजोमहाशोभनीकं लसे । क्षेत्रऐरावते उत्तरे सो वसे ॥
तासमें भावतव्यं जिनेसं कही । यापिहों अत्र आवो प्रभूजीसही

ॐ ह्रीं अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्रावतर अत्रतर संवौपट् आदानन ।

ॐ ह्रीं अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं अचलैरावतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वपट् स्वाहा ।

छद सारगी न्वनि सब गुरु वर्ण ।

गंगा भंगा पानी चंगा भारी धारी आनी है ।

धारा तीनों ताकी दीनों तीनों तापं हानी है ॥
तीजो मेरं ताके हेरं ऐरावतें राजें हैं ।

भावी देवं कीजै सेवं जो आनंदे साजें हैं ॥

ॐ ह्रीं धातुक्षिपीपाचयमेक्षणेरावनभाविजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

कुंकूमाद्यै गंधं सारं करपूगेधं लै आयो ।

अंबुत्कृष्टा घृषा सुष्टा दुष्टा तापं कूं घायो ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुक्षिपीपाचयमेक्षणेरावनभाविजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ॥२॥

शाला द्याला शुद्धं बुद्धं मुक्ता के से शुक्ता हैं ।

सो ले साग पुंजे धाग भो भै सो हो मुक्ता है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुक्षिपीपाचयमेक्षणेरावनभाविजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥३॥

नेना घाना कौ आमोदे गेंमे फूले आना है ।

१ जल जग नृपु । २ स्वयं जल मे अच्छा तरा ।

ती चौ.

२१३

तासों स्वामी सेवों आमी कामों वाना हाना है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्य पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

फेनी श्रेनी खाजे ताजे साजे मिष्टा पुष्टा है ।

सो लै थारी आगे धारी वाधा नष्टा दुष्टा है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥५॥

वी को दीयौ ऐसो लीयो जासौ भातें नाशा है ।

तासों पूजै ऐसो हूजै तीनों लोकं भाशा है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

गंधा धारं धूपोदारं खेवों वन्ही माही है ।

कूरं कर्म होवे चूरं धूमा घूमोडाही है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

पुंगी नारंगी जंवीरा एला केला लाए हैं ।

पृ.

२१३

ती. नो

२१४

तासो सेवों आपा वेवों साता "वृंदो" पाये हैं ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुनिर्दोषाचलमेतन्मृगातभाविजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

आठों द्रव्यों सेती पूजों आच्छे वाजे वाजे हे ।

नाचों राचों शर्ण आवो मोक्ष स्थानं पाजे हैं ॥

तीजो मेरं ताके हेरं ऐगवते राजे हैं ।

भावी देवा कीजे मेवा सो आनंदे साजे हैं ॥

ॐ ह्रीं धातुनिर्दोषाचलमेतन्मृगातभाविजिनेभ्यो ऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

लोलतंग उद—

श्री गवि इंदं जिनंद नमाभी । म्वेदविवर्जित अर्जित स्वामी ।

मेरु नृनीय ऐगवत यानों । भाविय देव जजों धरिध्यानो ॥१॥

ॐ ह्रीं गवीन्द्रेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

५

२१४

ती. चौ.

२१५

निर्मल काय जसे सुखदाई । श्री सुकुमालक मोहि सहाई । में०

ॐ ही सुकुमालिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

प्रश्रितवंत नमो भगवता । क्षीर समान सुरक्त धरंता । में० भा०

ॐ ही प्रश्रितस्तेष्वर्घं निर्वपामि ॥३॥

श्रीकुलरत्न जिनेसुर मानों । चारिउ थान समान प्रमानों । में०॥४॥

ॐ ही कुलरत्नाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धर्म जिनेसुर आनंदकारी । आदि शरीर लसे अविकारी । में०॥५॥

ॐ ही धर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोम जिनंद अमंद प्रतापी । सुंदररूप सुधारस वापी । में०॥६॥

ॐ ही शोमजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

श्रीवरुणेंद्र जिनिद नमामी । सौरभकाय धेरं अभिरामी । में०॥७॥

ॐ ही वरुणेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

श्रीअभिनंदन आनंददाता । साष्ट सहस्र सुलक्षणगाता । में० ॥८॥

५.

२१५

ती. नौ.
२१६

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्थ निर्वपामि ॥८॥

श्रीसखेश नमों वर ज्ञानी । अप्रमितं वल जामु वखानी । में०॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वनाथाय अर्थ निर्वपामि ॥९॥

नेन महाप्रिय हे हितकारी । नाथ मुदिष्ट नमों भवतागी॥मे०॥१०॥

ॐ ह्रीं मुदिष्टनाथाय अर्थ निर्वपामि ॥१०॥

छंद तोटक—

जमु अर्थ सुमागधवेन खिरे । जिन शिष्ट नमों भवसिंधुतिरे ॥
तृतियाचलको ऐगवत हे । भवतव्य जजें सुखपावत हे ॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टजिनाय अर्थ निर्वपामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुखन्नाय अर्थ निर्वपामि ॥१२॥

फत्तफत्त सर्व गितुके निर्वसे । जह शोमशशी प्रभुजी हुक्कजे ॥तृ०

ॐ ह्रीं शोमचद्राय अर्थ निर्वपामि ॥१३॥

पृ.

२१६

जितदण्डवत्प्रकाशं धीं । जहं क्षेम अधीश्वर निवासं कौं ॥ तं ॥
 ॐ ह्रीं क्षेमधारीय अर्घं निर्वाणाय ॥ १४ ॥

नित आनन्दं अंबुधिं वृद्धं कौं । सु सदविक्रमाय दधिदं हरे ॥ तं ॥
 ॐ ह्रीं सदविक्रमाय अर्घं निर्वाणाय ॥ १५ ॥

अनुकूलं वयाम् पुनीतं वहे । जहं श्रीजिनराज जयंत अहं ॥ तं ॥
 ॐ ह्रीं जयराज अर्घं निर्वाणाय ॥ १६ ॥

वैष्ण कटक धूलिं विनोदितं हरे । जिनराज तमोदिय मोचिंत हरे ॥ तं ॥
 ॐ ह्रीं तमोदियवन्द्य अर्घं निर्वाणाय ॥ १७ ॥

जलशय्यं समेतं पुनीतं हरे । जिन निर्मल सो मम पाप हरे ॥ तं ॥
 ॐ ह्रीं निर्मल अर्घं निर्वाणाय ॥ १८ ॥

नमस् कनकंजनं पूं चलयही । कृतं पापसं विनमस्यै दलयही ॥ तं ॥
 ॐ ह्रीं कनकपाशाय अर्घं निर्वाणाय ॥ १९ ॥

फलमाम् सुवैद्यं धाम् नये । जिनशोषप्रलम्भमात्रं मये ॥ तं ॥

ती.चौ.

२१६

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्घ्यं निर्मिषामि ॥८॥

श्रीसखेश नमो वरज्ञानी । अप्रमितं बलं जामुवखानी । मे० ॥१॥

ॐ ह्रीं मर्वनाथाय अर्घ्यं निर्मिषामि ॥९॥

नैन महाप्रिय है हितकारी । नाथ मुदिष्ट नमो भवतारी ॥ मे० ॥१०॥

ॐ ह्रीं मुदिष्टनाथाय अर्घ्यं निर्मिषामि ॥१०॥

उद तोटक—

जमु अर्घ्य सुमागधवेन खिरे । जिन शिष्ट नमो भवसिंधुतिरे ॥

तृतियाचलको ऐरावत है । भवतव्य जजें सुखपावत है ॥ ११॥

ॐ ह्रीं शिष्टाजिनाय अर्घ्यं निर्मिषामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्घ्यं निर्मिषामि ॥१२॥

फलफूल सवै रितुके निबंसे । जह शोमशशी प्रभुजी हुलशे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं शोमचंद्राय अर्घ्यं निर्मिषामि ॥१३॥

पृ.

२१६

ती.चौ.

२१७

छितदर्पनतुल्य प्रकाश धरें । जहँ क्षेत्र अधीश निवास करें ॥तृ०

ॐ ही क्षेत्राधीशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करे । सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥तृ०

ॐ हीं सदंतिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

अनुकूल वयार पुनीत वहै । जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तृ०

ॐ ही जयताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

तृण कटक धूलि विनाशित है । जिनराज तमोरिपु मोचित है ॥तृ०

ॐ ही तमोरिपवेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

जलगंध समेत पुनीत परै । जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तृ०

ॐ ही निर्मलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पैं चलही । कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तृ०

ॐ हीं कृतपार्श्वाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

फलभार सबै थल धान्य नये । जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तृ०

पृ.

२१८

ती.चौ.

२१८

ॐ ह्रीं गोधराभाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥२०॥

नमनिर्मल ओ दिगसुन्दर हे । बहुनद नमंत पुन्दर हे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं गङ्गाभाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥२१॥

सुखेस्त हैं भविजीयनिकों । जिनदिष्ट सुधावत्र पीवनकों । तृ०

ॐ ह्रीं दिष्टस्वामिने ऽर्घ्यं निर्वापामि ॥२२॥

वृषचक्र धर अरिचक्र हैं । जिन कुंकुम आभ सुवर्ण करें ॥ तृ०

ॐ ह्रीं कुकुमाभाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥२३॥

वसु मंगल द्रव्य पुनीत धरें । जिनवक्ष सु ईश कलेश हरे ॥

तृतीयाचलको ऐरावत हे । भवतव्य जजें सुख पावत हे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावताय अर्घ्यं निर्वापामि ॥२४॥

यह पूरन अर्घ्य लियो कर्म में । पद पूजन हों प्रभुको घरमे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं भार्याचतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घ्यं पूर्णार्घ्यं निर्वापामि स्वाहा ।

पत्ता-जै जै जै मंडित पूरन पंडित विघ्न विहंडित ज्ञानधरा ।
सेवक प्रणरक्षक त्रिभुवन लक्षक लक्ष अमंडित देतवरा ॥

(उद तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी)

जै रवींद्र जितंद नमस्ते । सुकुमालिक जगवंद नमस्ते ॥
प्रश्रीवंत महंत नमस्ते । जै कुलरत्न भवंत नमस्ते ॥ ७ ॥
धर्मनाथ कृत शर्म नमस्ते । शोमनाथ पद पर्म नमस्ते ॥
वरुणनाथ दुग्धहरण नमस्ते । अभिनंदन सुखकरन नमस्ते ॥ ३ ॥
सर्वनाथ निर्दोष नमस्ते । जिन सुदिष्ट कृतमोख नमस्ते ।
शिष्टनाथ कृत उष्ट नमस्ते । जै सुवन्द्य धुनि मिष्ट नमस्ते ॥ ४ ॥
शोमचंद निरुलंक नमस्ते । क्षेत्राधीश निशक नमस्ते ॥
जै सदंतक जिनेश नमस्ते । जै जयन वयमेश नमस्ते ॥ ५ ॥
देव तमोरिषु पाय नमस्ते । निर्मल जिन सुखदाय नमस्ते ॥
जै कृतपारशनाथ नमस्ते । बोध लाभ शिव साथ नमस्ते ॥ ६ ॥

जै बहुनंद अमंद नमस्ते । द्रिष्ट स्वामि सुखकंद नमस्ते ॥
 कुंकुमाभ निरफद नमस्ते । जै वक्षेश अदंद नमस्ते ॥७॥
 ए भावी चौबीश नमस्ते । अचलैरावत धीश नमस्ते ॥
 सेवन इंद समस्त नमस्ते । जानन जुगपत वस्तु नमस्ते ॥८॥
 विघ्नमहीधर विज्जु नमस्ते । जै ऊरधिगति रिज्जु नमस्ते ॥
 मुक्तिरमनि सह शिज्जु नमस्ते । त्रिभुवन आनंद किज्जु नमस्ते
 ध्यावत सज्जन सत नमस्ते । पावतु है भव अत नमस्ते ॥
 गुन अनत अविकार नमस्ते । तारन तरन उदार नमस्ते ॥१०॥
 सकल कलेश निरवार नमस्ते । दारिद दुख परिहार नमस्ते ॥
 वांछित पद दातार नमस्ते । "वृंदावन" विस्तार नमस्ते ॥११॥
 वचा-जै जै जिननायक, विघ्नविनायक सबसुखदायक देववरा ।
 हम शरनें आये शीशनवाये गुनगन गाये सेवकरा ॥१२॥
 ॐ ह्रीं धातुकिंद्रीपाचलमेरुपेरानतभाविजिनेभ्यो महार्घं नैर्ऋयामि ।

ती चौ.

२२१

जो दख अरु वरभाव सेती जजै जिन चौवीशजी ।
 वर धातुदीप अचल सुपेरावते भावी ईशजी ॥
 सो पुत्रमित्रकलत्र संपत सुख लहे नवनीतजी ।
 पुनिशक्र चक्रतनों सुपद लहिहोइ मुकत निचीतजी ॥
 इति श्रीअचलैरात्रभायी चौवीशी पूजा संपूर्णा ।
 वृत्तिगमेरु संबंधी पूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धद्वीपमंदिरमेरुसंबंधीविरहमान
 जिनचारिपूजा प्रारब्धते ।

छंदः अमृतध्वनि त्रिभंगी पर ।

दमकततनसारं रविशशिधारं अतिदुतिधारं सुखकारं ।
 भ्रमतम शतखंडन शिवमगमंडन कलुषविहंडन दुखदारं ॥

पू

२२१

त्रितिदीप सुहरं मंदरमेरं पूरवेढरं शुति सज्जे ।

तित विहर मुमानं चहु भगवानं सुगुननिधानं धुनिगज्जे ॥१॥

गज्जज्व धुनि सज्जजनसुनि रज्जजनमन ।

सज्जजम नम भज्जजम गम मज्जज्जन नन ॥

चंचचरन सुंधावुभभग्न सुसचस्समकत ।

ठःठः थपत सुज्जे जपत प्रभादंदमकत ॥२॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्यप्रिहरमानजिन चंद्राहु-भुजगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वर
अत्रायतर अयतर मयापद् आदाननं ।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्यप्रिहरमानजिन चंद्राहु-भुजगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वर
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्यप्रिहरमानजिन चंद्राहु भुजगप्रभ ईश्वरनमीश्वर
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहाः ।

अथाष्टकं ।

प्रमिताक्षरा उद—

जल भृग माहि भरि धार करों । पदपूजि नाथ दुखदोषहरों ।
 त्रिति द्वीपमंदिर विदेहनिमें । जिनचार सारजाजि गेहनिमें ॥
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो-जन्ममृत्युविनाशाय जलं ॥१॥

वरगंध चंदन कपूर घशै । जिनराज पूजि भवताप नशै ॥ त्रि०
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो सत्सारतापनाशाय गंव ॥२॥

शुभशालि मुक्त मनु शुक्त समंतसुपुंज युंज भवदुःख गमं ॥ त्रि०
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षत ॥३॥

निरदोष फूल सुख मूल महा । तुव अग्रधारि सरशूल दहा ॥ त्रि०
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्य कामगणनाशाय पुष्पं ॥४॥

रसपूर सारचरु भूरिकरा । जजते क्षुधादि अस्किर हरा ॥ त्रि०
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

मनि दीपजोत तम नाशतु हैं । पद सेवतें सुगुन भासतु है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेयमन माचतु है । मनु धूमधूम मिशि नाचतु है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

रसमिष्ट शिष्ट फल सुष्ट धरों । जिनचंद वृंद सुखकंद वरों ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

वसुद्रव्य सन सजि अर्घकरो । पद पूजिसार शिवनारि वरों ॥

त्रिति दीप मंदिर विदेहनिमें । जिन चार सार जाजि गेहनिमें ॥

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

आर्या छद-पुष्करमंदिर एवं, सीतोत्तर विहरमान जिनदेवं ।

श्रीचंद्रवाहु सेवं, समदशृत संस्थित वसूमेवं ॥१॥

रेणुकमाता ख्याता, नमों पिता देवनंद विख्याता ।

नगर विनीतं जाना, जजों सदा पद्मअंक सुखदाता॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे . मंदिरमेरुमवधिमीतोत्तरतटे पदस्वडमंडलमंडितचक्र
वर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन चद्रवाहुस्यामिने ॐ ॥१॥

पुष्करमंदिर जानं सीता दच्छिन विदेहथित मानं ।

देव भुजंग प्रमानं, पूजों समवशृत भगवानं ॥१॥

महिमा माता जानों, पिता महाबल दयाल गुनवानों ।

लच्छन चंद्र प्रमानों विजया नगरी त्रिलोकपति थानों ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदिरमेरु सीतादक्षिणतटे पदस्वड मंडलमंडितचक्र-
वर्त्यादि सेव्यमान जिन भुजगप्रभाय अर्थ, ॥२॥

पुष्करमंदिर जोहै सीतोदा दक्षिणे सुमन मोहै ।

ईश्वर स्वामी सोहैं ताहि जजें सर्व संपदा होहैं ॥१॥

ज्वाला जतनी गजें. नगर मुमीमा अनूपछवि द्यौजे ।

गलमेन जासुगजें, गवि पदमें चिन्ह कोटि गविलाजें ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पाद्वर्द्धापेमदिरमेरुसीतोदादभिगतटे पद्मदंडमंडित चक्र-
चर्यादिसेव्यमानपिङ्गमानजिन ईदग्नायाय अर्घ्य ॥३॥

पुष्कर मंदिर नामी, सीतोदा उत्तरेषु अभिगामी ।

श्रीनेमीश्वर स्वामी, समवष्टानस्थित जजामि शिवपामी ॥१॥

सेना माता जाकी, पिता नमों वीरराज शुभ नाही ।

वृषलच्छन पद्मा की, नगर अयोध्या प्रमोदपद माकी ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पाद्वर्द्धापेमदिरमेरुसीतोदावाउत्तरतटे पद्मदंडमंडलमंडित चक्र-
वर्त्यादिसेव्यमानपिङ्गमानजिन नमीश्वराय अर्घ्य ॥४॥

सुदरी उद—

त्रितिय पुष्करदीप सुहावनो । प्रथम मंदिर मेरु तहा वनो ॥

तसु विदेहनिमें जिन चार हैं । जजत होत भवोदधि पार हैं ॥

ॐ ह्रीं नमो भुजंगप्रभङ्गिभ्यो नमः ॥ पूर्णार्घ्यं निवेदयामि ।

अथ जयमाला ।

पता—जैजै जगवन्दन कलुषनिकन्दन त्रिभुवनजन आनन्द कग ।

जै केवलमानं भूषणमहानं भविकमलानं मोदभग ॥१॥

तोड़क २४—

जै भोजिन चंद सुवाटु मठा । जै जंति भुजंग प्रवेश कठा ।

श्वर नाथ अनाथ हितू । नमि उम्बर नाथ त्रिलोक पितू ॥२॥

दीपहि मंदर मेरु वसै । निबसै शुभ जत्र विदेह वसै ॥

शृत छादय जोजन हैं । भवि सा यत यत्र प्रयोजन हैं ॥३॥

रस को केई पान कर । वसु कर्मनि को धरि व्यापन हरै ॥

करै बहु भांति तहां । गुन गावन नावन भाल तहां ॥४॥

बतु हैं मननं सननं । धुनि नृपद पै जनन जनन ॥

किनि गुंजत किनननं । मुर लेन केई तनन तनन ॥५॥

केइ वारह भावन भावत हैं । अपनो गुन आपु लखावत हैं ॥
 केइ चारित भार सम्हारत है । केइ कर्म नतच्छन जारत है ॥६॥
 वह धन्य विदेह सुयान सही । शिव मारग नित्त चलै चितही ॥
 जह आपु विहार पुनीत करै । चदसंघ लिये अघ सघ हरै ॥७॥
 गनराज जहां धुनि झेलत हैं । भवि को सब सशय डेलत हैं ॥
 रतनत्रय भवि उदोत करै । सुनिके भविजी शिवनारि वरै ॥८॥
 हम जाचतु है तुमसों जिनजी । निज संनिधिद्यो विनती सुनजी ॥
 तुव वैज सुधारस पान करों । लखि रूप सबै दुखदद हरो ॥९॥
 वत्ता—जैजे जिनदेवं सुरकृत सेवं सुगुनअछेवं शुद्धमती ।

शिवसपति दायक विघनविनायक जै जै जै चिद्रूपपती ॥

ॐ ह्रीं चद्रवाहु-भुजंप्रभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥१०॥

वसंत तिलका—आशीर्वादः ।

श्रीपुष्करार्द्ध मह मंदिर मेरु काजै ।

ताकी विदेहनि विषे जिनराज राजे ॥
 पूजे तिन्हे भविक जो बहु भक्ति लाई ।
 सो सर्वमार सुखभुक्त सु मुक्त जाई ॥
 इति मद्राचलमेरुप्रियाजमानविरहमानजिनपूजा समाप्ता ।

अथ पुष्कारद्वीपेमंदिरमेरुभरत
 वर्तमानचौवीशीपूजा ।

छंद कुंडलिया—

मदरमेरु विराजई पुष्कर पूरव वोर
 ताकी दच्छिन में लसै भरत छेत्र शुभ ठौर ॥
 भरत छेत्र शुभ ठौर तहां त्रिभुवन हितकारी ।
 वसतमान चौवीश ईश पूजे नर नारी ॥

ती.चौ.

२३०

जिन्ह को गुन उर ध्याय मुदित मन जजत पुरंदर ।

तिन्ह को थापों इहां जहां जिनवर को मंदर ॥

ॐ ह्रीं भरत वर्तमान जिन चतुर्विंशतिअत्रावतर अवतर सर्वोपद् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं भरत वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रमम सन्निहितो भवभव वपटूस्त्राण ।

अथाष्टकं ।

(चाल जत्तताल आदि में)

भवसागर तागेजी, दीन दयाल जिनेसुर जी । भव० ।

पुष्करदीप शिखरमंदिर के दच्छिन भरत विराजै ।

वरतमान चौबीश जिनेसुर पूजत भव भै भाजेजी ॥भौ०॥टेक॥

गगाजल भरि कनक भृग में तन मन प्रीत उपायो ।

धारा तीन करत पद आगे करम कलक हरायौ जी ॥ भव० ॥

पृ-

२३०

ॐ ह्रीं भक्तवर्तमानचतुर्विंशतिजिनममृतेभ्यो जलं निर्गमामि ॥१॥

केशर चंदन कदली नंदन दाहनिकंदन लायौ ।

शिव तिग जिनवर तुम पद पूजत सब दुखदं नशायौजी ॥ भौ० ॥

ॐ ह्रीं भक्तवर्तमानचतुर्विंशतिजिनममृतेभ्यो गंधं निर्गमामि ॥२॥

तदुल मंदुल शारभि मंडित अमल अखंड सौहायौ ।

पुंज धस्त दुखदद हस्त सुखकंद भक्त समायौजी ॥ भव० ॥

ॐ ह्रीं भक्तवर्तमानचतुर्विंशतिजिनममृतेभ्यस्तदुलं निर्गमामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुवरन थारी सुवरन थार भरायौ ।

मनमथमदमथ नाथ तुम्हे लखि हाथ साथ शिरनायौजी भौ०

ॐ ह्रीं भक्तवर्तमानचतुर्विंशतिजिनममृतेभ्यः पुष्पं निर्गमामि ॥४॥

घेवर वावर फेनी श्रेनी खाजे ताजे भायौ ।

बुधारोग निस्वारन कारन मनमुख लै शिरनायौजी ॥ भौ० ॥

ती. चौ

२३२

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यश्च नमः निर्वपामि ॥५॥

जगमग जोति होत दश दिश में ऐसो दीप अनायौ ।
तासो तुम पद पूजत संशय विभ्रममोह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशविध गंध पुनीतम लै करि खेवत शौरभि छायाँ ।
अष्ट करम मम दुष्ट जरत है धूम घूमसु उड़ायाँजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुरस वरन रसना मन भावन पक्क सुफल उपगायौ ।
पूजत चरन कमल जिनवर के विघनसमूह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

आठों दख मिलाय मनोहर हरष हरष गुनगायौ ।
पूजत चरन कमल जिनवर के शिवतरु बीज बुवायौ ।

पू

२३

भौ सागर तारो जी दीन दयाल सुरेसुरजी ॥भव॥
 पुष्कर दीप शिखर मंदर के दच्छिन भरत विराजे ।
 वरतमान चौबीश जिनेसुर पूजत भौ भै भाजे जी भवसा० ॥
 ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं

पाईता छद—

शत आठ कोश सुभिच्छं । जिन जगन्नाथ क्रिय सुच्छं ।
 गिरि मंदिर भरत सुहायौ । जजि वरतमान सुखपायौ ॥१॥

ॐ ह्रीं जगन्नाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

नभ माहि चलै जिन स्वामी । जिन देव प्रभाश नमामी । गि० २।

ॐ ह्रीं प्रभाशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

नाहि जीव जहां बध हो है । जिन सूर स्वामि मम सो है । गि० ३

ॐ ही सूरस्वमिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

ती चौ.

२३४

नहि कवलाहार करें हैं । भरतेश कलैश हरै हैं ॥ गि० ४ ॥

ॐ ही भरतेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

उपसर्ग वितीत विराजै । जिन दीर्घानन छवि छाजै । गि० ५

ॐ ही दीर्घाननाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

चतुरानन मूगति दरसै । सुनिजात कीर्त सुख सरसै । गि० ॥६॥

ॐ ही विजातकीर्तयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

सत्र विद्या के पति जानों । अवशानन सो पहिचानों ॥ गि० ७

ॐ हा अवशाननाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

तन की न परै परछाई । सुप्रबोधन देव कहाही । गि० ॥८॥

ॐ ही प्रबोधनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

द्रिग में न निमेष लगे हैं । सुतपोनिधि ज्ञान पगै द्वै गि० ९

ॐ हा तपोनिधयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

पू.

२३४

नखकेश बैठे नहि जाकौ । जिन पावक नाम सुताको ॥गि०

ॐ ह्रीं पावकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छद रथोद्धता—

शोक चूरन अशोक वृक्ष है । सो जिनेश त्रिपुरेश इच्छेहें ।
पुष्करार्द्ध गिरि मंदरें सही । भर्तवर्तत जजामि हों यही ११

ॐ ह्रीं त्रिपुरेशाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

पुष्पवृष्टि नभतें जहां परै । शौगतेश सरशूल कों हरे ॥पु०

ॐ ह्रीं शौगताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

दिव्यवेन सुखसों जहां खिरै । श्रीयवास मुखराशकों भरे । पु०

ॐ ह्रीं श्रीवासाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

चौर चौसठ सुरेश द्वारही । श्री मनोहर कलेश टारही । पु० १५

ॐ मनोहराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

सिंहपीठ परजे विराजही । श्री जिनेश शुभकर्म छाजही ॥पु०

२३६
ती चौ.

ॐ ही शुभकर्मसाय अर्घ निर्वपामि ॥१५॥

कायक्रांति कृतमंडला कृतं । इष्ट सेवक सुचित्त में धृतं ॥ पु०

ॐ ही इष्टसेवकाय अर्घ निर्वपामि ॥१६॥

देवदुंडुभि अकाश में वज्रै । श्रीजिनेंद्र अमलेंद्र मै भजै ॥ पु०

ॐ ही अमलेद्राय अर्घ निर्वपामि ॥१७॥

तीनछत्र तिहु रत्नसे लशै । धर्मवाश जिन त्रासकों नशै ॥ पु०

ॐ ही धर्मवासाय अर्घ निर्वपामि ॥१८॥

छद मोतीदाम—

अनंत सुछायक ज्ञान महान । प्रशाद जिनेश धरें अमलान ।
सुमदर भारत दच्छिन खेत । जजों जिन वर्तत हैं छविदेत ॥

ॐ ही प्रशादाय अर्घ निर्वपामि ॥१९॥

अनंत अगाध लशै द्विग जास । प्रभामृग अंक भरें भविआश ॥ सु०

ॐ ही प्रभामृगांकाय अर्घ निर्वपामि ॥२०॥

अनंत सुखामृत अदभुत रूप । नमों अकलंक निशंकसरूप ॥सु०॥

ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

अनंत अवाधित वीरज जास । नमों स्फटिक प्रभुकों शिवआस ।सु०॥

ॐ ह्रीं स्फटिकप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

छंद भुजंग प्रयात ।

हनें दोष अष्टादशों मूलसेती । गनेंद्रं जिनेंद्रं नमों मुक्तहेती ।

जजों मंदिराख्या चले भर्त थानों गुणग्रामधारी प्रभुवर्तमानों ॥

ॐ ह्रीं गनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

चिदानंदको ध्यानधारे विराजें । नमों ध्यानस्वामी असह्य ध्यान भाजें

जजों मंदिराख्या चले भर्त थानों । गुणग्रामधारी प्रभुवर्तमानों ॥

ॐ ह्रीं व्यानजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

लोलतरंग छंद—

पूरन अर्घ्य वनाय पुनीतं । पूजतु हौं सवही जिनमीतं ।

ती.चौ.

२४०

अडिल्ल छंद

जो पूजे चौबीस जिनेसुर देवजी ।

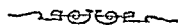
पुष्कर मंदर भरत विराजे येवजी ॥

सो मनवांछित सार सख सुख पायजी ।

शक्र चक्र पद भोगि मुक्त पुर जायजी ॥

इत्यार्शर्वादः ।

इतिपुष्करद्वीपभरतवरतमानचौबीशी पूजा समाप्ता ।



अथ मंदरमेरुजरतातीतचौबीशीपूजामाह

छंद माधवी सवैया सिंघावलोकन मुक्तपदग्रस्त यथा

मंदिर मेरु विराजतु है नित पुष्करदीप विपैं आति सुंदर ।

सुंदर दन्छिन भर्त वसै तित तीत जिनेसुर धर्म धुरंधर ॥

५०

२४०

धर्म धुरंधर सेवतु हे गुन वृंद सुध्यावत जाहि पुरंदर ।
जाहि पुरंदर ध्यावतु ताहि सुधापहु पूजन को जिन मंदर ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्राचतरअग्रतर सर्वोपद्रुआह्वानन

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिन अत्र मम संनिहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

गीता छंद-

कलधौत वरन उत्तंग कुल गिरि गंग चंग सुवार है ।

भरि कनक भारी धार दारी जनम मरन निवार है ॥

वर दीप पुष्कर मेरुमंदर पूर्व अति छवि छाजई ।

तसु भरततीत जिनेश पूजत सकल भौ भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

वरमलय चंदन कदलिनंदन मुजलसंग वशात है ।

तुम चरन पुष्कर पूजते भवताप तुरति नशात है ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

शित शाल दुति उजियाल हीर हिमाल ते आति सोहनों ।
तसु पुंज परम वियुजते सुख भुंजते मनमोहनों ॥वर द्वीप०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥

पुष्कर कदंब कुरंड केतक सुमन सुमन समान है ।
तुव चरन पुष्कर पूजतें प्रभु नशत मनमथ वान है ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पकवान सुरस सवार सुवरन थार भर कर में लिया ।
तासों समश्चत चरन जुग दुख दोष कों पानी दिया ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

दुति दीप दिपत दिगंतरा ले सकल घटपट भास है ।
तासों उतारत आर्त्ता जिनपर प्रबोध प्रकाश है ॥वरद्वीप०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेय हुताश माही मोद उर धरि संत है ।

वसु करम भरम जरंत ताको धूम घूम उडंत है ॥वरद्वी०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

ऋतु जनित फल कलरहित सुंदर पक्व मिष्ट मनोगता ।

तासों समरचत चरनजुग वांछित भविक सुख भोगता ॥व०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फल विमल वसुदरव को शुभ अरघ थार विपैं करें ।

कर जोरि जुग तुम चरन चरचत तुरित भौसागर तरौं ।

वर दीप पुष्कर मेरु मंदर पूर्व अति छवि छाजई ।

तसु भरत तीत जिनेस पूजत सकल भौ भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

छंद तामरस तथा नाराच ।

ती. चौ

२४६

तीर्थस्वामी सेइयै सदैव शर्म वेइयै,

कर्म भर्मनाशि शुद्ध परम धर्म लेइयै ॥

सुपुष्करार्थ मंदराचले सुभर्त खेत है,

पूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥१३॥

ॐ ही तीर्थस्वामिने अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

धर्म धीश परम धर्मको प्रकाश कर्त हैं,

धर्मचंद नंदकों पुनीत पुन्य भर्त हैं ॥पु०॥

ॐ ही धर्माधीशाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१४॥

क्षमा धरी अधीश धारणेश सीस नावहीं,

पुनीत ध्यान धारिके अमीत शर्म पावही ॥पु०॥

ॐ ही धरणेशाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

पू-

२४६

प्रभाव जासु लोक में प्रसिद्धसिद्धदाय है,

नमों प्रभाव देव जो विशुद्धबुद्ध पाय है ॥पु०॥

ॐ ह्रीं प्रभावाय नमः ॥१६॥

अनादि देव ध्याइये निशंकितंग पाइये,

अनादि शुद्ध बुद्ध रिद्ध सिद्ध को उपाइये ॥पुष्करार्थ॥

ॐ ह्रीं अनादिदेवाय नमः ॥१७॥

नमों अनादि सुप्रभं विषादवादवर्जितं,

निकांछितंग दायकं कलंक संत तर्जितं ॥पुष्कारार्थ॥

ॐ ह्रीं अनादि प्रभवे नमः ॥१८॥

सर्व तीर्थनाथकूं सदैव माथ नाइये,

ग्लान भाव नासि शुद्धभावना लहाइये ॥पु०॥

ॐ ह्रीं सर्वतीर्थाय नमः ॥१९॥

ती.चौ.

२४८

निरूपमाय श्रीजिनाय ऊपमा अतीत हैं ।

अमूढ भाव देत हैं कलेश सो वितीत हैं ॥पु०॥

ॐ ह्रीं निरूपमाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

कुमार मार वर्जितं सुभव्यवर्गं सर्जितं ।

सु सोपगूहनांग देत अब्द शब्द गर्जित ॥पु०॥

ॐ ह्रीं कुमाराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

विहार गेह देवने त्रिलोक वस्तुकों लखा,

जु धर्मसों डिगे तिनें सुधर्म में थिरा रखा ॥पु०॥

ॐ ह्रीं विहारग्रहाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

धारणे श्वरेशकों सुरेशवृंद वंदते,

वातसत्य अंग पाय पापकों निकंदते ॥पु०॥

ॐ ह्रीं धारणेश्वराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

पू.

२४८

ती चौ.

२४६

विकाश देवने समस्त वस्तुकों विकाशियौ,
सुमार्ग की प्रभावना दिखाय पाप नाशियौ ॥

सुपष्करार्द्ध मंदिराचले सुभर्त खेत है,
सुपूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥२४॥

ॐ ही विकाशाय अर्थ निर्वपामि ॥२४॥

छंद सुंदरी तथा द्रुताविलवित—

जल फलादि मिलाय मनोहरं । अरघ पूरन कीन सुभौहरं ।
जजत पुष्करमंदिर भर्त है । जिन अतीत महासुख कर्त हैं ॥२५॥

अथ जयमालं ।

यत्ता-जै केवल चंदा उदय अमंदा आनंदकंदा निरदंदा ।
कृतभक्तिक कमोदं परमप्रमोदं ज्ञानमहोदं सुखवृंदा ॥१॥

जै मदनकदन मदनैंद्र देव, मूरति स्वामी कृत सुख स्वमेव ।
 नीराग स्वामी विनु रागदोष, जै जै प्रलवित जगत्तपोष ॥२॥
 पृथ्वीपति मो भव उदधि तार, चारित निधि कुर्मति कलेश डार ।
 अपराजित प्रभु पद परम देह, जै जै सुबोध सुधि वेग लेह ॥३॥
 बुद्धेश करे कमला सुधाम, वैतालिक जिन पद को प्रनाम ।
 जै जै त्रिसुष्ट वर इष्ट देत, मुनि बोधक जिन भवसिन्धु सेत ॥४॥
 तीरथ स्वामी मेढत कलेश, जै धर्म शीश सेवत सुरेश ।
 धरनेश नमत धरनेश शीश, प्रभवेश परमपावन जगीश ॥५॥
 जै जै अनादजिन गुन समुद्र, जै जै अनादि प्रभ नमत रुद्र ।
 जै सर्वतीर्थ त्रिभुवन पुनीत, निरूपम अनूपम गुन जगत मीत ॥६॥
 श्रीजिनकुमार प्रत्यूह खंड, जै जै विहार ग्रह सुख डमंड ।
 धरणेश्वर जगदाधार परम, जै जै विकासजुत परम शर्म ॥७॥
 ए तीत जिनेसुर भरत थान, गिर मंदर पुष्करदीप जान ।

चौथे गुन सात प्रकृत विनाश, सातें त्रय नौ छतीस नाश ॥८॥
 दशयेक द्वादशें सोल चूर, ऐ त्रैसट छै केवल प्रपूर ।
 चौदहे वहत्तर तेर हान, सिव धान जसै करुना निधान ॥९॥
 तुम गुन गावत सुर असुरराय, नाचत ताधेइ धेइ पग चलाय ।
 द्विमि द्विमि धिधितवलां सुरजनाद, संसाग्रदिसांगी सुरपुरतवाद
 पगनृपुर झननननननाय, कटकिं किनि किनिनिनिनि सुहाय ।
 बहु हाव भाव रसको बताय, तननननन तनन तान गाय ॥११॥
 पट पटपट पाटह नाद मिष्ट, हुंहुभि बीनादिक साज सिष्ट ।
 सजि साज भगततुव करत देव, निज जनम सफल करते सुमेव १२
 तुम धन्य अमल गुनगन निधान, भवसागर तारन तरन जान ।
 हम शरण गही मन वचन काय मन वांछित सुख द्यौहे जिनाय १३
 घता—जै जनप्रनरक्षक अरिअहितक्षक, वस्तुविवक्षक दक्षपती ।
 सेवत सुरजक्षक लाखि शिवगच्छक जै गुन कक्षक स्वच्छमती
 ॐ ह्रीं मदरमेरुभरतातीतजिनसमूहेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

दोहा — पुष्कर मंदर भरत के, तीत जिनंद दयाल ।

जो पूजे सो सकल सुख लहे भविक गुनमाल ॥

इत्याशीवाद ।

इति मंदिराचलभरतातीत चौबीशीपूजा समाप्ता ।



अथ भावी चौबीशी पूजा प्रारभ्यते ।

छंदचित्र पवर्तवध वाईसा ।

आय सही वे हरे अति आरति इंद शुने तिहितें जु सया ।

हो इत थापत मंदर के परतच्छ सु भर्त भविष्य तया ॥

भर्म विनाशक आतम भाशक भव्यजीव कंहं शर्म दया ।

आय सेव तिथु हो पमजी सु जीभव हो शुति देसय आ ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र अवतरत अतरत सगौपट् अदानन

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

चौ.

२५३

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वपद् स्वाहाः ।

पृ.

							आ							
							य							
							स							
						ह्रीं	वे	ह						
					ह्रीं	अ	ति	आ	र					
			ति	इ	द	थु	ने	ति	हि					
		तैं	जु	स	या	ह्रीं	इ	त	था	प				
	त	मं	द	र	के	प	र	त	छ	सु	भ			
	तैं	म	वि	ध्य	त	या	भ	मं	वि	ना	श	क	आ	
त	म	भा	श	क	भ	व्य	जी	व	कैं	हैं	श	मं	द	या
							सु							

२५३

सुदगी तथा द्रुतिविलंबित छंद—

सुर नदी जल उज्जल पावनो, त्रिविध कर्षकलंक नशावनों ।

त्रितिय दीप सु मंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भावी जिन जन्म जरामृत्यु विनाशाय जल ।

कदलिनंदन चंदन सो घसै । जजत ही भवदंदनकों नसै । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरतभावि जिन ससारतापविनाशाय चंदनं निर्वपामि ॥२॥

विमल मंदुल तंदुल आनिये । धस्त पुंज सवे दुख हानिये । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावी जिनेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये तदुल निर्वपामि ॥३॥

सुमन सौरभिरंग सोहावनो । जजत शूल समस्त नशावनों । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावि जिनेंद्रेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥४॥

शशि सुधासम नेवज लै धरा, जजि पदांबुज रोग कुधा हरा । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ॥५॥

तमविनाशक दीपक जोत है, करन आरति ज्ञान उदोत है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो दीप भिर्वपामि ॥६॥

अगर चंदन आदिक धूप है, जजत होत सुगंध अनूप है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

स्ति फलोत्तम पक्व रशाल है । जजत आनंद होत विशाल है त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फलादिक को सज अर्घ्य है, जजत पावत थान अनर्घ्य है ।

त्रितिय दीप सुमंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्य

छद नंदीधराष्टक की

क्षित क्षिमापती गुनवृंद देव वसंत धुजं ।

गिर मंदर भरत सुच्छंद भविय देव पुजं ॥१॥

ॐ ह्रीं वसतध्वजाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

वृषमार्द्धव गुणमणिमाल श्रीत्रिजयंत सही ।

गिर मंदर भरत विशाल भाविय सेवतही ॥२॥

ॐ ही त्रिजयताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

वृष आजर्जव आर्जव एव श्रीस्त्रिस्थंभ कहा ।

जजि मंदिर भरत सुदेव भाविय नाथ महा ॥३॥

ॐ ह्रीं स्त्रिस्थंभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

वचसत्य रतनके खान खान परम ब्रह्म जिनं ।

गिर मंदर भरत सुथान भाविय सेय तिनं ॥४॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

जुग शौच धरमके मूलनाथ अवालीशं ।

जजिमंदर भरत अतूत भाविय नुतशीशं ॥५॥

ॐ ह्रीं अवालीशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

चौ ती.

२६७

जुगसम दमजम जुत देव नाथ प्रवादिक है ।

जजिमंदर भरत लखेव भावियतादिक है ॥६॥

ॐ ह्रीं प्रवादिकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

दो विधि तपसागर चंद भृमानंद जिनं ।

गिर मंदर भरत अफंद भावि जजामि तिनं ॥७॥

ॐ ह्रीं भृमानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

जुगत्याग धरमके मूल त्रिनयन जिन जानों ।

गिर मंदर भरत अतूल भावित भजि ध्यानो ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिनयनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

परिग्रह त्याग जिनेश श्रीविद्वेष जती ।

गिर मंदर भरत भवेश पूजत शुद्धमती ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्वेषाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

परमात्म प्रशंग महेश ब्रह्माचार धरा ।

५.

२६७

गिर मंदर भरत जिनेश भाविय सेवकरा ॥१०॥

ॐ ह्रीं परमात्मप्रशंगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

भूमिंद्र चंद्र नागिंद्र भूमिंद्रेश जपैं ।

गिर मंदर भरत गनिंद्र भाविय पाप खपैं ॥११॥

ॐ ह्रीं भूमिद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

गोपाल लंगली सेय गोस्वामि हि सदा ।

गिर मंदर भरत भवेय पूजों ताहिअदा ॥१२॥

ॐ ह्रीं गोस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

कल्याण प्रकाशित स्वामि पंच उच्छाह धेरें ।

गिर मंदर भरत यजामि भाविय विघ्नहरें ॥१३॥

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकाशिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

दुति मंडित मंडल ईश मंडलनाथ नमैं ।

गिर मंदर भरत भवीश पूजत पाप दमैं ॥१४॥

ती.चौ.

२५९

ह्रीं मंडलेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

चौपार्श्व-लक्ष्मी जासु पदांबु वसै है, देव महा वसवेस वहै है ।

पुष्कर पूरव मंदर जानो भाविय भर्त जजों धरिध्यानो ॥ १५॥

ॐ ह्रीं महावसवेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

जनम स्नान सुमेर पवित्रं, तेज उदै जिनसों जगमित्रं ॥ पु० १६

ॐ ह्रीं तेजउदयाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

चारित धारि हरे सब कर्म, दिव्य जोतिपी जिनगुनपर्म ॥ पु० १७

ॐ ह्रीं दिव्यज्योतिषे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

घाति विघाति प्रबोध धरैया, जैति प्रबोध कुबोध हरैया ॥ पु० १८

ॐ ह्रीं प्रबोधिताय निर्वपामि ॥१८॥

मुक्तसती आलिंगन होर, श्री अभयंक नमों जगतारे ॥ पु० १९

ॐ ह्रीं अभयंकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

मुक्ततिया जु कटाक्ष चलावैं, जो परसो प्रमितेश कहावैं ॥ पु० २०

ॐ ह्रीं प्रमिताय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

पृ.

२५९

ती चौ
२६०

दिव्य स्फारक श्रीजिनदेवा, चार प्रकार करें सुरसेवा ॥ पु० २१
ॐ ह्रीं दिव्यस्फारकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

जे व्रतव्रात अघात धरैया । ते व्रत स्वामी दोष हरैया ॥ पु०
ॐ ह्रीं व्रतस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

जो निधि दुर्लभ है जगमाहीं, सो निधिनाथ जपैं निपजाहीं ॥
ॐ ह्रीं निधिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

कर्म कलंक निशंक सिपाये, देव निकर्मक नाम कहाये ।
पुष्कर पूरव मंदर जानों, भाविय भर्त जजों धरि ध्यानों ॥२४॥
ॐ ह्रीं निकर्मकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-श्रीपुष्कर पूरव दिशा भरत भविष्यत देव ।
पूजों पूरन अर्घ्य सों विघनमिटे स्वयमेव ॥
ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।
अथ जयमाला ।

पद्या-जै जै जनरक्षक शिवमग वक्षक चारितकक्षक स्वक्षवरा ।

पृ.

२६०

जै लक्षअलक्षक सर्वविलक्षक दक्षक पक्षक रक्षकरा ॥

छंद नैमालिनी—

धरम ध्वज वशात धुज जैजै , अजयंते नमो अरुज जैजै ।
 स्त्रिस्थंभन भवभंजन जै जै, परम ब्रह्म मुनि रंजन जै जै ॥२॥
 अवालीश छयालिशगुन जै जै, श्री प्रवादिक परमधुन जै जै ।
 भूमानंद कंद जस जै जै, अिनयन त्रिजग लसत वस जै जै ॥३॥
 विद्वेषिक निरसगिक जै जै, परमात्म परसगिक जै जै ।
 भूमिंदक शनेन्द्र नुत जै जै, गोस्वामी गनेन्द्र नुत जै जै ॥४॥
 शुभ कल्याण प्रकाशित जै जै, मंडल आत्म भासित जै जै ।
 महावसव वासवनुत जै जै, उदै तेज समरस नुत जै जै ॥५॥
 दिव्य जोति चतुरानन जै जै, श्रीप्रबोध भवभानन जै जै ।
 अभैअंक जगजानन जै जै, प्रमित परम पहिचानन जै जै ॥६॥
 दिस्करक सुख सागर जै जै, व्रत स्वामी नुत नागर जै जै ।
 श्रीनिधान निधि दायक जै जै, जिन निःकर्म सहायक जै जै ॥७॥

अथाष्टकं ।

लक्ष्मीधरा छंद—

जान्हवी नीरसों हेमभारी भरोँ, धार दे तीन तीनों विथाकों हरोँ
पुष्करार्द्धे गिरे मंदैरावते, वर्तमानं जजे शर्मकों पावते ॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा ।

केदलीनंदनौ चंदनं वावना, पूजते तासुसों शांतिता पावना । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ।

देवजीरादिसे शालि शोभामई पुंजकों धारते शर्म साता लई । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

पुष्करं पुष्कराद्या धरोँ पुष्करं, कामनाशै सही पुष्करं दुष्करं पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्पं निर्वपामि ।

नव्यगव्यादि नैवेद्यनीके किये, थार में धारते सुखसाता लिये पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।
 दीपसोंहे प्रभूमें करो आरती, ज्ञान उद्योतता दीजिये भारती । पु०
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।
 अग्नि माही दशों गंध खेवो सही, अष्टदुष्टें जेरें धूमधूमै वही पु०
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।
 आम्र काम्रादि एलासु केला लये, पूजतें विघ्नका आजु पानी दये
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःफल निर्वपामि ।
 नीर गंधादि लै अर्घ कीनों वरा, पूजतें कर्मकंतारसों निस्तरा
 पुष्करार्द्धे गिरे मंदरैरावते, वर्तमानं जजै शर्मकों पावते ॥
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

हुति मध्यक छंद—

शंकर शंकरते जगमाही, धर्म उद्योतक सो निज आही ।

१ जन्म मरण जरा । २ भारती सरस्वती । ३ ज्ञानावरणादि । ४ कर्मरूपी जंगल ।

ती.चौ.

२६६

मंदर मेरु सु उत्तर जानों, वरततु हे अयरावत थानों ॥१॥

ॐ ह्रीं गरुडाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

कौनन कर्म हुताशनसे है, जिनवर अश्व सुवाश कहे है। म०२

ॐ ह्रीं अश्ववागाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

सर्व उपाधि निवारि सुखदा । अनुभव मग्न सुनग्न जिनंदा । मं०

ॐ ह्रीं नग्नाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

नग्न सुआदि महातप धारी, अमल महा नगनाधिप भारी । मं०

ॐ ह्रीं नग्नाधिपाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

चौपाई-नष्ट किये पाखंड अनेक, नष्ट पखंड नमों शिष्टेक ।

मंदर ऐरावत भगवान वरततु हे पूजों धरि ध्यान ॥५॥

ॐ ह्रीं नष्ट पास्तडाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

१ अग्नि ।

प.

२६६

ती.चौ.

२६७

षोडशसुपन लखे जसु माय । स्वप्नबोधजिन सो सुखदाय मं०

ॐ ह्रीं स्वप्नबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशतप विधि निधि दातार । नमो तपोधन जिन अविकार मं०

ॐ ह्रीं तपोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

पुष्पकांड खंडन दुखदंद । पुष्पकेतु मंडन सुखकंद ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्पकेतवेऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

दशो धरम परकाशक स्वामी । धार्मिक जिन पदपदमनमामी । मं०

ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

चंद्रकेतु चंद्रानन सुष्ट, किल्बिषहरत करत सुख पुष्ट ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेतवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

वीते राग दोष समुदाय । सो निज वीत राग सुखदाय । मं०

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

महाजोति धारी धरमज्ञ । श्री अनुक्त जपे उरतज्ञ ॥ मं० ॥

५.

२६७

ती.चौ

२६८

ॐ ह्रीं अनुरक्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

आतम जोत उदोत करंत । उद्योतक निज शिवतियकंत मं०

ॐ ह्रीं उद्योतकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

भविउर तिमिर करत चकचूर तमोपेछ जिन गुनगन पूर । मं०

ॐ ह्रीं तमोपेक्षाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

माधव मधुसेवें पदपद्म । श्री मधुनाथ देत शिव सद्म । मं०

ॐ ह्रीं मधुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

चक्र गदाधर गनधर वृंद । श्रीमरु देव नमें सानंद । मं०

ॐ ह्रीं मरुदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

शमदमजमञ्जुत केवलभान श्रीदममाय जपों धरि ध्यान । मं०

ॐ ह्रीं दममाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

वृषचक्री वृषकेत लशंत । वृषदायक वृषभेसुर संत । मं०

ॐ ह्रीं वृषभेसुराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

ती.चौ.

२६९

पांडुशिलातन क्रांतिपवित्र । नमो शिलातन त्रिभुवनमित्र । मं०

ॐ ह्रीं शिलनाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विश्वमाहि जिनसम नहिं नाथ । विश्वनाथ सो हें शिवसाथ । मं०

ॐ ह्रीं विश्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

मोतीदाम छद ।

गनेंद्र सुरेंद्र नरेंद्र खगेंद्र जयें नित चित्त महेन्द्र जिनेन्द्र ।

सुपुष्कर पूरव मंवर जान । जजो अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं महेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जगज्जन आनंद अबुधि चंद । अनंत सुखाकर नंद जिनंद । सु०

ॐ ह्रीं नंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

शरीर प्रभातम भंजन जास । तमोनिभ नाथ महा जशरास । सु०

ॐ ह्रीं तमोनिभाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

५

२६९

ती.चौ.

२७०

सुब्रह्म विचारन तारन ब्रह्म । नमों जिन ब्रह्म सुधारन ब्रह्म ॥

सुपुष्कर मंदर पूरव जान । जजों अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा-आठों दरव बनाय आठों अंग नमायकें ।

जजों हरप उरलाय चटु गिरि ऐरावत जिनं ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

वत्ता-तुव सुजशविशाला गुन मनिमाला परमरशाला सुकुमाला ।

नर सुरगपताला पति तिरकाला कृतनुतमाला सुखसाला ॥

छद कामिनी मोहन तथा आर्या शखला ।

सारसुखकारसंकर जिनेसुरमहा॥स्वच्छअक्षीणपदअक्षवासी लहा॥

मग्न आनंद में नग्न जिननायकं भग्नसंताप नग्नाधिप लायकं ॥

५

२७

आर्या—पाखंड मुंड खडन नष्ट पाखंड देवअरि दंडन ।

श्रीस्वप्नबोध मडन नमों नमों मेट मेट भवहंडन ॥२॥

कामिनीमोहन छंद—

मेदि भवहंडन तपोधन मुक्तहै पुष्पकेतुकजिनं परम सुख जुक्त है ।

आतमोद्भवन धरमेशस्वामी कहा चंद्रकेतू नमों होत साता महा ॥

आर्या—साता महाउपाई तजि रागैं वीतराग जिनराई ।

अनुरक्त मुक्तदाई जानानंद नमों जिनराई ॥४॥

कामिनी मोहन छंद—

नायशिर हंड चंदति उद्योतित जै तमोपेक्षितं सारसुख जो जितं ॥

नमों मधुनाथशिवसाधनिरदोषहै जैति मरुदेव सुखदेव भवि पोषहैं ॥

आर्या छंद—पोषहि शमदम सुष्ट श्रीदममाय जिनेन्द्र गुनपुष्टं ।

जै वृषभेश अद्भुष्ट लोचकृतं केशपंचकर मुष्टं ॥६॥

कामिनी मोहन छंद—

पंचकरमुष्ट मह शिलातनतपधरे जैति जिन विश्वनाथ शकल भैहरै ॥

ती.चौ.

२७२

नमत शतहृद मोहेन्द पद पकजं । नद आनद दाता जगत रजन॥
आर्या छंद-रंजन जन भव भंजन तमोनिधी दोष दुष्ट दुखगंजन ।
श्रीब्रह्मधार भञ्जन नमो नमो ज्ञान नैनन के अंजन ॥

अंजनं मोखमगगामिके हैं सही, जैति चऊबीसजगराज सुखकेमाही
पुष्करे मंदिरैरावते वर्त ही, पंचकल्याणपाति ध्याय भवि तर्तही॥६॥
आर्या-भवतर्तहि लखि देवै सुर ध्यावैं नाय भाल पद सेवैं ।
नाचैं चहुँ गति लेखैं साजैं वाजै रसाल बहु भेवै ॥१०॥

कामिनी मोहन छंद—

साज बाजै रसालैं सुबहु भेवजी सम्रादिसंसाग्रादिसारंगी धुनि लेवजी
झिनिनिनिनिझिनिनिनिनि झलछरी बाजई ।

धिकट धुनि धनप पुनि द्रिम मुरज साजई ॥

आर्या-बाजई वीनानाद तननननन तान लेत अहलादं ।

सनननाट अवादं कृत सुरसुर साल ताल तलपादं॥१२॥

कामिनी मोहन—

तालतलमाद वादिते जो बाजई, तासु उपमान कहु जगत मे छाजई॥

प.

२७२

धन्य जिनचंद गुनवृद्धपदबंदही, गायजस आज हम लेत आनंद ही॥

वत्ता—जै मनमथमंथक नित शिव पंथक कृतश्रुत ग्रंथक ग्रंथपती ।

जै करुना मंदर जंजत पुरंदर धरम धुरंधर शुद्धमती ॥१४॥

रथोद्धता छंद—

पुष्करार्द्धवर पुंनव में कहा, मंदिराद्रि अयरावते महा ।

वर्तमान पद जो जजै सही, वांछितार्थ पदलेत सो सही ॥१५॥

इत्याशर्वाद ।

इति मंदिराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिपूजा समाप्ता ।

अथपुष्करार्द्धद्वीपेमंदिराचलैरावतातीत पूजाप्रारभ्यते

स्थापना धनुषबंध—

दोहा—चतुस्थ गिरिवर उत्तरे जिन जे तीत प्रमान ।

तिनहि सुथापतु भावसों उपजै पदनिखान ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रावतरअवतरसंवौपट् आज्ञान
 ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन
 ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रममसंनिहितोभव भव वपट् स्वा

अथाष्टक तालजत्त होली की चाल में

गिर मंदिर उत्तरस्थान पूजों तीतकों ॥ गिर० ॥ टेक ॥

पदमद्रह गतनीर सार शुभ कनक कुंभ भरिआन ।

धार करत तुम चरनन आगे करम कलंक नशान ॥ पूजों० ॥१॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः जलं निर्वपामि ।

वावन चंदन कदली नंदन केशर संघ घशान ।

भवतपहरन चरन परि पूजत विघन तपतकी हान ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमदाराचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गध निर्वपामि ।

शालि अपंडित शौरभि मंडित शसि सम दुति दमकान ।

अपे संपदा कारन पूजों हे जिनवर धरि धान ॥ पूजों० ॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

सुमन सुगंधित प्राशुक लीनों गुंजत अलिगन आन ।

पूजत चरन कमल जिनवर तुव मनमथ वान नशान ॥ पूजों० ॥ ३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥

घेवर वावर फेनी श्रेनी सौरभ सरस महान ।

लुधा रोग निस्वारन कारन जजों निराकुल दान ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥

मनिमय दीप उदोत होतवर हे जिन भूमतमभान ।

तासों आरति करत जगत गुरु उपजै आतम ज्ञान ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः दीपं निर्वपामि ॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन धूप सुगंध अमान ।

खेवत धूमकेतु मँहि ताको जरत दुरित दुख दान ॥ पूजों० ॥

ओं ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीत जिनेभ्यो धृष निर्वपामि ।
 श्रीफल पक्व मनोहर पावन । मधुर रसीले आन ।
 पूजत मनवांछित परिपूजत अनुक्रम अनुपम थान । पूजों०
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीत जिनेभ्यः फल निर्वपामि ।
 जलफल आदि द्रव वसु साजे अरघ ललित वरदान ।
 नाचिराचि शिरनाय समरचत मिलत विमल मुखथान । पूजों०॥
 ओं ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीत जिनेभ्योऽर्घ निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

लोलतरंग छद्--

जे उपगारिय वैन बखानैं । ते कृतनाथ नमों धर ध्यानैं ।
 पुष्कर मंदिर उत्तर मानों । तीत जजों अईरावत थानों ॥१॥
 ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घ निर्वपामि ।

इष्ट विसिष्ट प्रविष्ट करै हैं । श्री उपविष्ट अरिष्ट हरै हैं ॥पु०॥

ॐ ह्रीं उपविष्टाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

मोहमहा तमभंजन भानं । आदित देवनमो गुनखानं ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं आदिनदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

अष्टम भूमि सुथानकवासी । श्रीअसथान नमो अविनासी ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं अस्थानिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

चन्द्रसमान प्रमोद प्रकाशी । देव प्रचंद नमो सुखरासी ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं प्रचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

वेणुके जस गावत देवा । वेनुक गावत हें बहुभेवा ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं वेणुकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

कोटिकभानु छिपे छविदेखें । नाथत्रिभानु विभूतिविशेखें ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं त्रिभानवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

ब्रह्मसु ब्रह्म जिनेसुर स्वामी । ब्रह्मविकाशक ब्रह्म नमामी ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

वज्रशरीर लसे जसु आदी वज्र सुअंग नमों निखादी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं वज्रागाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

वेरविरोध निरोधन हारे, श्रीअविरोधन है अविकारे । पुष्कर० ॥

ॐ ह्रीं अविरोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

पाषप्रकृत्त सवे चकचूरे, जैति अपाप जिनाधिप पूरे ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं अपापाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

लोक अलोक लखे जसरासी लोक सुउत्तर ग्यान प्रकाशी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं लोकोत्तराय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

इंद्रचंद्रा छंद—

जलाधिशेषं जिनराज स्वामी जगत्रयी ईशपदं नमामी ।

सुपुष्करे मंदर मेरु सोहै । ऐरावतें तीत जजामि जोहै ॥१३॥

ॐ ह्रीं जलाधिशेषाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

विद्योदितु द्योतित बोधलोके । विद्यापती सेवत देय धोके ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं विद्योदिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १४ ॥

सुमेरसे गौर सुमेरनाथ भवाब्धि में डूवत थाभि हाथ ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं सुमेरवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १५ ॥

श्री भावितं भव्य समस्त सेवें । आनंद देवें भवनाव खेवें ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं भाविताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १६ ॥

समस्त पे वच्छल लच्छकारी । नमों नमों वच्छल स्वच्छधारी ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं वच्छलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १७ ॥

अतिंद्रियज्ञान प्रकाश कीनों । नमों जिनालं जिन ध्यानभीनों ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं जिनालयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥ १८ ॥

पापं सरोजं दहने तुषारं । नमों तुषारं जिन शर्मकारं ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं तुषाराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १९ ॥

निर्विघ्नदाता भुवनेस स्वामी । आनंद वारानिध चंद्रनामी ॥ सु० ॥

ती चौ.

२८०

ॐ ह्री भुवनेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

कंदर्प सर्पापहरं खगेशं सुकामस्वामी प्रणामो जिनेशं ॥सु०॥

ॐ ह्री सुकामाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

आनंदकंदं जिनचंद्र वंदं देवाधिदेवं प्रणामो अमंदं ॥ सु० ॥

ॐ ह्री देवाधिदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

आकारिमं देवपरं पवित्रं निरूपमं रूप अरूपचित्रं ॥ सु० ॥

ॐ ह्री आकारिमाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

विनीतनें नीत सनै वतायो विनीत सेयें निज नीत पायौ ॥

सुपुष्करें मंदरमेर सोहे ऐरावते तीत जजामि जोहै ॥२४॥

ॐ ह्री विनीताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

वसंततिलका छंद—

जै तीततीर्थपति मंदरपुष्करार्थे । ऐरावते परमआतम धर्मसाधे ।

पु.

२८०

ती, चौ.

२८१

ताकों समर्चत सुपूरन अर्यधारी पावे समस्तसुख सो उभयप्रकारी॥

ॐ ह्रीं पुकराद्विषमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः पूर्णार्थं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

यत्ता-जे जिन मलवर्जित अरिहरितर्जिति घनमिवगर्जित वैनवरं
भवि जनमनसर्जित सुमति उपर्जित विघनविवर्जित चैनकरं॥

३० मात्रा का उद—

वदामो कृत नंदा मदा चंदासे आनंदा दान ।

इष्टं शिष्टं नष्टानिष्टं श्रीउपविष्टं पुष्टादान ॥

गुह्यं बुद्धं ह्ये निःकृष्टं देवादित्यं सुष्टामान ।

स्वश्वक्षेमा वृद्धा वृद्धा स्थानीकं संरक्षोमान ॥२॥

विश्वव्यापि ह्ये अद्यापी प्राचंदापी लक्ष्मीमान ।

शोभाधारी जे भौतारी श्रीवेणुंरु जे जे जे वान ।

मातैडा भाखंडं मह चड जोत भीष्मीमान् ।

५

२८१

ब्रह्मब्रह्मा ब्रह्मव्यापी ब्रह्मापेक्षी ब्रह्मध्यान् ॥३॥

वज्राधीशं कृतनुतशीसं श्रीवज्रांगा वज्रांगान् ।

ध्याता ध्येयं ग्याता गेयं अवबोधनजुत शसैहान् ।

पापात्यक्ता आपाजुक्ता भुक्ता मुक्ता शर्मोधान् ।

लोकालोक सर्वविलोकं लोकोत्तर श्रीशोभाधान् ॥४॥

हेषादेय समुद्र विमंथन ग्रंथ निग्रंथ जलाधिपवान् ।

अद्वितियदुत जानोद्योत विद्योत सद्बिधादान् ।

ध्यानी ग्यानी हैं निःकंपी मानो मेरु सुमेरु समान् ।

प्रानी भावै भावित के गुन धीरज वीरज सुकृत खान् ॥५॥

निच्छल स्वच्छल सत सुवच्छल वच्छल लच्छित लच्छविधान

चक्री शक्रधरं वृषचक्र जिनालै देव नमैं हैं आन् ।

सातासाना जुग्मविमुक्ता जुक्ततुपारं मुक्तस्थान् ।

तातातीनों लोकतने हैं श्रीभुनेसुर कृतकल्यान् ॥६॥

जीवाजीवादे प्रत्यक्षं चक्षेलक्ष सुकामजितान् ।

धर्माधर्म विशेष विक्रांते श्रीदेवाधिसुदेवमहान् ॥

कर्त्ता कर्ता भुक्ता भुक्ता आकारिक कीर्त्तों विद्वान् ।

नीतानीत विनीत यताये नीतमती माने है आन ॥७॥

जे चौबीसा पुष्करमंदर ऐरावर्मे है तातान् ।

ताकों इदं चंद गनिदं, वंदं है नागिदं आन ।

ताकों सेवें हैं जे प्राणी ते होवें श्रीगोभावात्

पूजाठानै गुनउर आने "वृंद" नरिंद धरिं हं ध्यात् ॥८॥

पद्या—जे श्रीजिनकुंजर हरि भवपिंजर कीरति गुंज रही जगमें

जे मुक्तधरापति बुक्तमहामति मंगलदायक श्यो मगमें ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमंदराचलैरायतातीनजिनेभ्यो महारं निर्वाहामि ।

अथाशीर्वादः । अडिल्लद्वंद-

पुष्करमंदरऐरावत जिन तीत जी ।

पूजत सुनर नारि तिन्हे धरि प्रीतजी ।

ती चौ.

२८४

जो सेवै मनलाय हरप उमगायजी ।

सो सुरनर सुख भोगि परमपददायजी ।

इति श्रीपुष्करार्धे पृथ्वदराचलैरावत २४ पूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्धे मंदराचलैरावते भाविपूजा प्रारभ्यते।

कमलवद्ध चित्र—

दोहा—चवथवग्नि वर वतावते वनै वरावतवनाव

भावेदेव भव भाव सव आव आव सिवराव ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रावतरअवतर सर्वोपद् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रमम सन्निहितो भव भव वपद् स्वाहाः

अथाष्टकम् ।

(चाल नंदीश्वराष्टक भाषाधानतरायजी कृततालजत्तादिमें बने है)

यह सलिल कलिल मलहार भारी माही भरा ।

पदपंकज पूजत सार मेढत जनम जरा ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥१॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिनेभ्यो जन्मादिविनाशाय जलं निर्वपामि ।

घसि चंदन केसर सार सौरभि भृंग भरा ।

तुम चरन कमल परवार भौ आताप हरा । वर०॥२॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ।

हिम हीर शशीसम सेत तंदुल मंदुल से ।

तसु पुंज विथुंज धरेत वारिद दुःख नसे । वर०॥३॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

यह काम महाजग शूल आपु निमूल किया ।

ती.चौ.

२८६

यातें लेकर वर फूल पूजत खोल हिया । वर०॥४॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

जग रोगवली इक भूख दूपत सब प्राणी ।

ताको तुम नासि अरूप नेवज मैं आनी । वर०॥५॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ।

तुम ज्ञान प्रकाश जिनेश लोकालोक लखें ।

हम दीप चढ़ाय महेश आपा आप चखें । वर०॥६॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

तुम कर्म कलंक विनाश आतम शुद्ध भये ।

हम खेवत धूप सुवास नाचत कर्म चये । वर०॥७॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

तुम पाय अतिंद्रिय शर्म परम पुनीत फलं ।

पू.

२८

ती चौ.

२८७

फलसों पूजों तजि भर्म दीजो मोक्ष थलं । वर॥८॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरायतभाविचतुर्विगतिजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

तुम आनंद कंद जिनद सब दुख दंद हरे ।

हम अरघ लेय अभिनंद पूजत भक्त धरे ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वैसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसै ॥९॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विगतिजिनेन्द्रभ्यः सर्वं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्य ।

चौपाई छंद ।

विसद सुखद जस पूरन चंद । नमों जशोधर जगदानंद ।

पुष्कर पूरव मंदर मेर । जजों भाविण्यैरावत हेर ॥१॥

ॐ ह्रीं यशोधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

५.

२८७

परम सुकृत पद दायक परम । सुकृतदेव कृत नितजिनधर्म । पु० ॥

ॐ ह्रीं सुकृताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

अभै घोषनाकृत जगजेन । अभैघोष जिन निजगुन देन । पु० ॥

ॐ ह्रीं अभैघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दायक पद निर्वाण उदार । श्रीनिर्वाण नमों भवतार । पु० ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

शुद्ध सकलव्रत जिनके पास । सो व्रतवास भरत भविआशा । पु० ॥

ॐ ह्रीं व्रतवासाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

राजनिके राजा पदसेय । सो अतिराज राजपद देय । पु० ॥

ॐ ह्रीं अतिराजाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

ध्यान अश्व चढके शिवलीन नमों अश्वजिन परमप्रवीन । पु० ॥

ॐ ह्रीं अश्वजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अर्जुनवर्न विवर्जित मान, जै अर्जुन जिन गुनमनि खान । पु० ॥

ॐ ह्रीं अर्जुनजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

धरम सुधाधरतें मिय चखें, तपश्चंद्र सो चिदगुन लखें ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं तपश्चंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

पंच परावर्तन चक्रचूर । शारीरिक जिन समता पूर । पुष्कर० ।

ॐ ह्रीं शारीरिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

मनवांच्छित पद देत मिलाय । नमों महेसुर जिनके पाय । पु० ।

ॐ ह्रीं महेस्वराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

सुंदर ग्रीव लखत द्विगचैन । श्रीसुग्रीव नमों निरणेन । पुष्कर० ।

ॐ ह्रीं सुग्रीवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

दिढ़ प्रहारतें अरि खैकीन । दिढ़प्रहार समतारस भीन । पु० ।

ॐ ह्रीं दिढ़प्रहाराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

दयानीत जग जस विख्यात दयानीत जिनवर वरगात ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं दयानीताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

पाडता छंद-जिन अंवरीख पद सेवों निरदोष निजातम वेवों ।

गिरि मंदर पूज रचावों अयरावत भावत भावों॥१५॥

ॐ ह्रीं अवरीपाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१५॥

जश नारद तुंवर गावैं । जिन तुंवर सों लय लावैं ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं तुमराय अर्घ्य निर्वपामि॥ १६॥

विफलीकृत कामकलका । जिन सर्व शील जु अटका ॥ गि०॥

ॐ ह्रीं सर्वशीलाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१७॥

जनमोच्छ्व सार धरें हैं । प्रतिजातक पाप हरेहैं । गिरि०॥

ॐ ह्रीं प्रतिजातकाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१८॥

जित इंद्रिय दिव्य भए हैं । सुअतिंद्रिय शर्म लए हैं । गि०॥

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१९॥

तप आदिततें अति तेजा । तप आदित भवि शिवभेजा । गि०

ॐ ह्रीं तपादित्याय अर्घ्य निर्वपामि ॥२०॥

चौ.ती.

२६१

स्तनत्रय क्रांत धेरें हैं । शिव स्तनकीर्ण सुवरें हैं । गिरि॥

ॐ ही स्तनकिरणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

दिवसाधिप सेवत आई । प्रणमामि दिवेश सदाई ॥ गिरि॥

ॐ ही दिवेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

शुभ लच्छन लच्छित गीता । जिन लांछित सो जग तीता ॥ गिरि॥

ॐ हीं लाछनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

निज शुद्ध प्रदेश करैया । सुप्रदेश कलेश हरैया ।

गिरि मंदर पूज रचावों । अयरावत भावित भावों ॥२४॥

ॐ ही सुप्रदेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

लोलतरंग उद ।

पूरन अर्घ्य बनाय पुनीतं । पूजत हों जिनके नुत मीतं ॥

मंदर उत्तर भाविय सारं । वदत “वृंद” करो भवपारं ॥२५॥

ॐ ही मदराचलैरावत भाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

५

२९१

अथ जयमाला ।

पू.

यत्ता-जै चिदगुन दर्पन भविसंतर्पन शिवदिव अर्पन विघ्नहरा ।
जै जै भगवंतं कृत भव अंतं अतुल अनंतं ज्ञानधरा ॥१॥

तोटक उद--

प्रणमामि जशोभरसार जसी । कृत सुकृत सुकृत देव वसी ।
जय घोष अभै जिन शुद्धमती । निरवान नमो निर्दोष जती ॥२॥
व्रतवास सदा भवत्रास हँरै । अतिराज नमों सुखकंद करै ॥
नित अश्वजिनेश विपाद हँरै । जिन अर्जुन अर्जुन कीर्त करै ॥
चंद जिनद गर्निद भजे । सु सरीरिऊ पाय सतद जजै ।
र मेर महेश महा । पद ग्रीवक ग्रीवसु देत कहा ॥४॥

सु प्रहार दिवप्रहर । प्रणमामि दयानित नीत धरं ॥
संवर अवर ईप गहा । जश गावत तुंवर तुंवरहा ॥५॥
सब सोल महामनि भूखन है । प्रतिजात सदा निरदूखन है ।
सुख शुद्ध अतिद्विय चूखन है । तप आदित ज्ञान अदूखन है ॥६॥

रतनत्रय रत्न सु कर्ण धरै । सु दिवेश महामल जीर्ण करै ।
 जिन लांछन लांछित वोयकला । सुप्रदेश अशेष कलेश दला ॥७॥
 वर पुष्कर मंदर मेर लमै । अघरावन उत्तर तास वसै ।
 तसु भाविय तीरथ नाथ सही । गुनध्यावत पावत मोच्छ मही ८
 तिनसों अरदास करों नितही । प्रभु भक्ति सदा निवसो चित ही ।
 तव आगमज्ञान रहो हियमें । नित आतमध्यान जगो जियमें ९
 रतनत्रय प्राप्त होहु सही । जिहि ते द्रष्ट पाइय मोच्छ मही ।
 जब लौं न मिलै जिनराज हमें । तबलों इतनों हम नित पमें ॥१०॥
 शिवसाधन जोग सदैव मिलो । अनुभौ रस अद्भुत चित्त पिलो ।
 दु खदारिद विघ्न विनाशकरो । सुखसंपतसार सु गेह भरो ॥११॥
 धता-जै शिवसरमंजन कलमलभंजन मुनिमनकंजन रंजकरा ।
 जै सद्यनिरंजन भविद्रिगअंजन विपतिविगंजन तंज हरा ॥
 ॐ ही मंदराचलैरावतभावि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वादः । चौबोल छंद-

ती.चौ.

२९४

आठों दरव मिलाय गाय गुन जो पूजे जिनराज जती ।

पुष्करद्वीप तुरित मंदिर गिर ऐरावत भावत सुमती ॥

सो जन पुत्र मित्र धन जोवन वांछित लाभ लहत है अती ।

शक्र चक्र अनुभूति पायके "वृंदावन" है मुक्तपती ॥

इति श्रीपुष्करार्द्धद्वीपे मंदराचलैरावतभाविपूजा समाप्ता ।

इति चतुर्थमेरूपूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धद्वीपे मेरुसंवंधी विदेहदेव संस्थित
विहरमान पूजा प्रारब्धते ।

छंद सारंगी धुनिवर्ण १५

आपा शुद्ध चैतन्यं मे जे धीरं साधें बैठे ।

जा देखें द्वे हों शं जीमें निग्रथायों श्यो पेठे ॥
सो ह्यांते मे चाहों तेरो सेवा स्वामी नौ मामी ।

पाचै मेरं वेदे हों में थापों ह्यां चारों स्वामी ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्विपश्चिमत्रिधुन्मालीमेरुकेविदेहक्षेत्रसर्वधी चारिविहरमान
श्रीवीरसेनमहाभट्ट देवजशत्रुजितवीर्य जिन-अत्रावतर अवतर संवौपद् आह्वाननं ।
अत्र तिष्ठतिष्ठ ठाठ स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भयभव वपद् स्वाशः ।

अथाष्टकम् ।

(चाल भाषा सिद्धाष्टक ध्यानतविलाशकी)

नीर विमल शीतलमहा भरि कंचनभारी लाय ।

लुम पद पदम चढ़ाइयौ मम करम कलंक नशाय ॥

विद्यन्माली मेरुके लखि चारि विदेह महान ।

समवसरन जुत पूजिहौं चहु विहरमान भगवान । वि०

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्री-
वीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्य जन्मजरामृत्युविनाशाय जल निर्वपामि ।

केशर चंदन वावनों घसि कदलीनंद मिलाय ।

तुम चरनन पर पूजते सब विघन सघन मिटिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पृष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्री
वीरसेन-महाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यश्चंदन निर्वपामि ।

शालि अखंडित सेत हैं शुभ पुंज धरंत सुधाय ।

दारिद्र्य द्रुम दुखनाशिकें सुख अखय संपदा पाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः
श्रीवीरसेनमहाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

फूल सुगंध सुवास है अलिगुंजत जापे आय ।

सो तुम आगे धारते सब समरशूल नशिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिममेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-म-

हाभद्र-देवजश अजितवीर्येभ्यः पुण्यं निर्वपामि ।

नेवज सज सुरस सुगंधता मन नैन स्सन सुखदाय ।

सो ले तुम आगे धरौ मम रोग बुधा नशिजाय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं षण्णरार्धद्वीपश्चिममेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश अजितवीर्येभ्यः नेवेद्य निर्वपामि ।

यह दीप प्रकाश महालसे निरधूम नयन प्रिय लाय ।

तासों तुम आरति करों उर आस्ततम छै जय । वि० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्यः दीपं निर्वपामि ।

दशगंध सुगंध उखेड़ये जिन तुम चरनन द्विग लाय ।

करम कलंक जरौ सही मो धूम धूम उडाय ॥ विहरमा० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेवराज अजितवीर्येभ्यः धूपं निर्वपामि ।

फल पक्क रसीले पावने भरि हाटक थार मगाय ।
दारिद्र विघन विनाशियै हम पूजत हैं शिरनाय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेघप्रिदेहक्षेत्रस्थविहरजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव
जग अजितवीर्येभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल वसु दख संजोयके कर जोरि जजों शिवराय ।
आनंद संपति दीजियै अरिनाश करो जिनराय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेघप्रिदेहक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव
जग अजितवीर्येभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद—

पुष्कार्द्ध गिर पश्चिम शीता । उत्तर पुंडरीक नी मीता ।
भानु मातु भुविपात नरिंदा वीरसेन यैरावत छंदा ॥

ॐ ह्रीं वीरसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम शीता दक्षिण विजै नगर नवनीता ।
देवराज सुउमादे जननी । महामद्र जजि शशि पग जननी ॥

ॐ ह्री महाभद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम लसे सीतोदा जम सुशिमा वसे ।
गंगा माश्रव भूत नरेसुर स्वस्ति लच्छ देवजस जिनेसुर ॥

ॐ ह्री देवजगाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम गनों सीतोदा उत्तर तट भनों ।
अजितवीर्य नगरीय अजोध्या मातु कननिका कमल सुवोध्या

ॐ ह्री अजितवीर्याय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

दोहा—समव शरन शोभा सहित विहरमान भगवान ।

पूजत सुरनर नागपति हम पूजत धरिध्यान ॥

ॐ ह्री विगुन्माळी मेघविदेह क्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्र

देवजश अजितवीर्येभ्यः पूर्णधि निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

वत्ता—जै केवलदिनमनि मोहतिमिरहनि भव्यसरोजनि मोदकरा
शिवराय दिखावन जे जगपावन पापनशावन विघ्नहरा १

नैमालनी तामरस चंडी छंद—

वीरसैन गुनसेन नमस्ते । महाभद्र सुखदेव नमस्ते ॥

सदा देव जेशदाय नमस्ते । अजित वीर्य पदध्याय नमस्ते ॥२॥

तीर्थकर अमलान नमस्ते । संजुत केवलज्ञान नमस्ते ।

समवसरन धित देव नमस्ते । इंद चंद गनसेव नमस्ते ॥३॥

अध्यालिश गुनभंडार नमस्ते । अशरन जन आधार नमस्ते ।

बानी खरत त्रिकाल नमस्ते । झेलत गनधर हाल नमस्ते ॥४॥

दरसावत सब तत्त्व नमस्ते । गहत जहां भविसत्त्व नमस्ते ।

केह श्रावक व्रतधार नमस्ते । केह होत अनगार नमस्ते ॥५॥

केह करम प्रजाल नमस्ते । लहत केवल विशाल नमस्ते ।

केह अघान बिघात नमस्ते । शिवपुरकों धुनिजात नमस्ते ॥६॥
 केह आत्म अनुभवत नमस्ते । सांत सुधारस पवन नमस्ते ।
 इत्यादिक वृष रीत नमस्ते । चलत मुक्तमग नीत नमस्ते ॥७॥
 सदा अगम गुनवंत नमस्ते । जै जै शिवनिग कंत नमस्ते ।
 मम मनमा परिपूर नमस्ते । रहो सु आप हजूर नमस्ते ॥८॥
 सेवो जुगपद कंज नमस्ते । भववाधा मम भंज नमस्ते ।
 तुम प्रसाद हानि कर्म नमस्ते । होहु आप सम पर्व नमस्ते ॥९॥
 यता-जै जै गुनसंचन दूपन रंच न देव अवंचन ज्ञानपते ।

तुम सेवत सज्जन वाजतवज्जन गावतभज्जन भावरेते १०

ओं ह्रीं विष्णुःमालीमेरुविदेह्येनस्थविह्रमान जिनेभ्यः श्रीश्रीग्नै न महाभद्र
 देवजश अजितवीर्येभ्यः महान् निर्मपामि ।

अनाशीर्वादः-गीताउंद—

जश गाय गुन उर ध्याय दख मिलाय जो शिरनाईजी ।

पूजै सदा जिनराय पुष्कर अरध पश्चिम जाइजी ॥
 श्री वीरसेन सु आदि चार विहारमान विदेहमें ।
 सोनर सुरग सुख भोग आतम सुख लहे शिवगेहमें ॥
 इति श्री विद्युन्माली मेरु के विदेहक्षेत्रस्थ विहरमान पूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुके भरतक्षेत्र संबंधी
 वर्तमाना ९४ जिनपूजा ।

लोलतरंग छंद—

विद्युत्तमालिय मेरु विराजै । दन्छिनभर्त सुतामधि छाजै ।
 चौविश वर्तसुमान जिनंदा । थापतु हों सुखसागर चंदा ॥
 ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरत वर्तमानजिनअत्रावतर अवतर संवौपद् आह्वाननं
 अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव
 वपद् स्वाहाः ।

अथाष्टकं ।

(चाल-मोहि राखो हो शरना) टप्पा —

पृ.

हम पूजैँ हो चरना । वस्तमान जिनराजके । हम० ।
 विद्युन्माली मेरु विराजत दच्छिन भरत सु वरना
 चौविश जिन सुनरसुनिगन धर सेवत पातकहरना । हम० टेका ।
 प्राशुक जलभरि कनकभृंगमें धार तीन सो दरना ।
 जनम मरन मल धोय तुरित भो सागर पार उतरना । हम० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योजन्मादिविनागाय जलं निर्वपामि
 वावनचंदन कदलीनंदन घस सुगंध विसतरना ।

भवतप हरन चरन जुग पूजत विघन ताप निस्वरना । हम० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो गंधं निर्वपामि ॥ २॥
 तंदुल मंदुल शशिसम शोभत अजिय जुगत जसु वरना ।

पुंज धरत तुम चरनकमल द्विग अखै संपदा करना ॥हम०॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योऽक्षतं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सुवरन सुमन सुगंधित शोभित सुवरन थारी भरना ।

मनमथ मथन चरनतर धारत समरशूल छैकरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

नव्य गव्य पक्वान वनायौ मधुर सुरस मृदु धरना ।

क्षुधा रोग निस्वारन कारन पूजत हों तुम चरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ।

जग मग जोत होत दीपगकी तासों आरति करना ।

तिमरमोह निश्नासि तुरित निज आत्मजोत सुधरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

दशविध गंध मनोहर'लै जिन सनमुख खेवन करना ।

करम काठकों जारि प्रभू यह विनती बहुविध करना ।हम॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वापामि ।

सुरस मधुर रितु फल कलवर्जित रसन नैनमन हरना ।

चरचत चरन जुगल जिनवरके मुकतरमनिकुं वरना ।हम॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल सकल मिलाय अरघकरि सुजश विविधविधिवरना ।

जजों तुमें त्रिभुवनपति जिनवर भववाधा परिहरना ।

हम पूजें हो चरना, वरतमान जिनराजके । हम पूजै० ।

विद्युन्माली मेरु विराजित दक्षिण भरत सु वरना ।

चौविश जिन सुरनर मुनिगनधर सेवत पातक हरना ।हम॥

ॐ ह्रीं विद्युन्माली मेरु भरत वर्तमान जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वापामि ।

अथ प्रत्येकार्थ ।

दोहा-हितकारी सर बांगके श्री सगवांग जिनेश ।

जजों भर्त वरतत महा विद्युत नाम नरेश ॥१॥

ॐ ह्रीं सर्वागस्यामिन् अर्थं निर्वपामि ॥१॥

प्रभव अनूपमकूं धरें देव प्रभाकर भेस । ज० वि० ॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युत्प्रभाय अर्थं निर्वपामि ॥२॥

श्री पद्माकर पद्मद्युति पद्मा देत अशेश । ज० वि० ॥३॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्थं निर्वपामि ॥३॥

बल अनंत बलनाथमें शोभत नवल निवेश । ज० वि० ॥४॥

ॐ ह्रीं बलनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥४॥

तिहू जोग निखार निज जोगनाथ गुनभेस । ज० वि० ॥५॥

ॐ ह्रीं जोगीश्वराय अर्थं निर्वपामि ॥५॥

ती चौ.

३०७

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपात क्रिय । सूक्ष्म अंग निपुनेस । ज०वि०॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

चल मल दोष वितीत है । चला तीत वृत्तदेश । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं चलातीताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

ध्वांत ध्वंस करता अखिल । देव कलंवक येश । ज०वि०॥

ॐ ह्रीं कलवकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

पर परनत परित्याग क्रिय । श्रीपरित्याग महेश । ज०वि०॥

ॐ ह्रीं परित्यागाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

विधि पोषक सोपक अविधि श्रीनिषेधक जिनेस । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं निषेधकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

पाप हरन सुख करन सब ॥ पाप प्रहार जगेस । ज०॥

ॐ ह्रीं पापप्रहारकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

मुक्त बंधू वर-विमल गुन । मुक्त चंद बुधि भेस ।

जजों भर्त वर्त्तन महा । विद्युत मालि नगेस ॥१२॥

ॐ ह्रीं मुक्तचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

छंद सारवती—

ग्यान मई अप्रकाश जिनं । वामव सेवत पाय तिनं ।

विद्युत मालिय भर्तमहा । वर्त्तन पूजत सुखलहा ॥१३॥

ॐ ह्रीं अप्रकाशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

अस्त रु नास्त पदार्थ कहे । श्री जै चंद कलेस दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं जैचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

अन्तर बाह्य हरे मलको । देहु मलाधर श्यो थलको ।विष्णु०॥

ॐ ह्रीं मलधारिणे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

स्याद सु अस्त पदार्थ कहे । जैति सु संजत कर्म दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं सुसंजताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

स्याद सु नास्तिय वस्तु भने । निरमल श्रीमल सिंधुवने ।वि०॥

ॐ ह्रीं मलैस्त्रिन्धवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

स्यादकंथचित अस्त परं । स्वक्ष गुणाकर अक्षे धरं । वि०॥

ॐ ह्रीं अक्षधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

अस्त अकथ्य कंथचित है । जैति धरा गुन संचित है । वि०॥

ॐ ह्रीं धराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

नास्ति अकथ्य कथचित है । देव गणाधिप दोष दहै । वि०॥

ॐ ह्रीं गणाधिपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

अस्त रु नास्त अवाच कथं । चित्त अकामिक पाप मथं । वि०॥

ॐ ह्रीं अकामिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

सातहु भंग अमंग भने । नित्य विनीत अनीत हने । वि०॥

ॐ ह्रीं विनीताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

राग रु दोष वितीत सदा । वीतित राग जिनेश वदा । वि०॥

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

ती.चौ.

३१०

प.

आनंद अंबुधि वृद्ध करै । शुद्ध रतानंद मोद भैं ।

विद्युत मालिय भर्त महा । वर्तत पूजत शर्म लहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं रतानदाय अर्घ्य निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा छंद-विद्युत माली मेरु, पुष्करार्ध पूरव दिशा ।

भरत संत जिन हेर, पूजों पूरण अर्घ्य सों ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्कारार्धद्वीपविष्णुमालीमेरुभरतस्थवर्तमानजिनेभ्यो पूर्णार्घ्य ।

अथ जयमाला ।

षठा-जै जै जगवंदित पाप निकंदित नित आनंदित शुद्धमती ।

जुत विभव अमंदित सदयसुखंदित जै निरफंदित बोधपती ।

पद्धड़ी छंद—

जय जगतहितू सरवांगदेव । वंदामि प्रभाकर गुन अखेव ।

जै पद्माकर पदमानिधान । बलनाथ तनें सुनि धरत ध्यान ॥२॥

जै जोगीश्वर सुर नमत पाय । सूक्ष्मांग नमों मन वचन काय ।

३१०

जै चलातीत निहचल सरूप । जै जैति कलंवक सुख अनूप ॥३॥
 परित्याग नमों करजोर चित्त । जै जै निषेध जिन जगपवित्त ।
 जै पापप्रहारी हरन पाप । जै मुक्तचंद भविहरन ताप ॥४॥
 जै अप्रकाशक प्रकाश जान । जयचंद जिनद दयानिधान ।
 मल घारी जिन शिवधाम देत । जै जैति सुसंजत सुगुनसेत ॥५॥
 मलसिंधु विमल गुन वेत सार । प्रणमामि अक्षधर जगत तार ।
 जै धरादेव निव धरा दाय । जै जैति देवगण नितसहाय ॥६॥
 सुरगज अगामिक नमत आन । नित नीत निपुन सु विनीतवान
 जै बीतराग करुना निधान । लछ देतु रतानद सकल धान ॥७॥
 ए चौविश जिनवर धरतमान । निशुतमाली गिर भरत जान ।
 जिहि सेवत वासव मुदित अंग । गुन ध्यावत गावत साजसगट
 द्विमि द्विमि धिधिरुटवाजन मृदंग । संसाग्रदि साग्रदिसारगिचंग
 किनिनिनिनिनिनिनि किंकिनि करत । करतलसुरान्वितधुनिधुरन्त
 ता थेड थेड थेड थेड धरत पाव । ताना येइ धुंगत धुंगत चलाव ।
 धुगतां धुगता गतवजै पुष्ट । तननननन तान अलापि सुष्ट ॥१०॥

ती.चौ.

३१२

इत्यादि समाज मिलाय इंद । तुव जशगावतु हैं हे जिनंद ।
तुम पच कल्याणक ईश पर्म । गुन सागर अगम अनंत शर्म ११ ॥
हम शरण गही दुख खड खड । मन वांछित आनंद मंड मड ॥
भव बाधा मेरी मेट मेट । शिवराधा सों कर भेट भेट ॥१२॥

वचा-जै जै गुनमूरत अनुपमसूरत आनंद पूरत पर्मपती ।

“वृदांवन” ध्यावत शीसनवावत वांछित पावत शर्म अती १३

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

अथाशीर्वाद-शार्दूलविकीर्णित छंद—

जो पूजे मनलै पाय जिनके सद्द्रव्य औ भावसों ।
विद्युन्मालिय भर्त वरततु महा ताकों जपैं चावसों ॥
सो पावे धन धान्य शर्म सकलं शक्राधि है के सही ।
चक्री होय अतिद्वि आनंद लहै श्रीसिद्ध की जो मही ॥

इति विद्युन्माली मेरुभरतवर्तमान पुजा समाप्ता ।

पू.

३१२

अथ विद्युन्माली मेरुभरतातीत जिन पूजा प्रारभ्यते ।

दोहा-विद्युन्मालीय मेरु के भरतातीत जिनराय ।

थापों चौविश सुगुननिधि आय आय प्रभु आय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धक्षीपे विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रा-
वतर अवतर सर्वोपद् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ टः ठः स्थापनं । अत्र
मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा

अथाष्टकं ।

वशंततिलका वंद—

सज्जान्हवीय जल उज्जल हेमभारी धाराकरों त्रिविध रोग हरो हमारी
श्रीपुष्करार्द्धगिरिविद्युत्तमालिनामीपूजों सुभर्तवरतीतजिनेशस्वामी

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरु भरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥

काश्मीरचंदनकपूरसुगंधपूरेतसों समरचतप्रभु भवतापचूरे । श्री० ।

ती चौ.

३१४

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ॥

मुक्ता समान सित तंदुलसार सोहे,

धारंत पुंज मनवांछित सुख हो है । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥

कुंदारु विंदवर केतुकि पुष्पसारे,

हे नाथ धारहुँ इहां हर शूलम्हारे । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

नानाप्रकार चरुसार रसाल लायो,

तासों समरचत क्षुदा दुखको नशायौ । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥

वाती कपूर घृत पूरित दीपकीनों,

ताकों चढ़ाय निज आतम ज्ञान लीनों । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥

कृष्णागरु प्रमुख धूप अनूप खेवों,

कर्मोघ दाहि निज आतमरूप बेवों । श्री० ।

ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

काम्नाम्रजाम शुभ पक्कलवंग एला,

इत्यादि सोचत मिले शिव संगवेत्ता । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥

गंगा जलादि सब द्रव्यफलार्थ साजे,

बाजे बजे जजत पाप समस्त भाजे ।

श्रीपुष्करार्द्ध गिरि विद्युतमलिनामी,

पूजों सुभर्तवरतीत जिनेशस्वामी ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

मोदक छंद—

पद्मसुचंद महा ह्यवि आनन । भाषतधर्म अदोष पुरानन ।
विश्रुतमालियभर्त विराजत तीतजर्जे भवि आनंद साजत ॥

ॐ ह्री पद्मचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

सद्गुणारत्न विभूषण भूषित रत्नशरीर नमो निरदूषित । वि० ।

ॐ ह्री रत्नांगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

जोगि यजोगनि द्वार निहारत । देव अजोग तिजोगनिवारत । वि०

ॐ ह्री अजोगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

दायकसिद्ध सु अर्थ पुनीतम । श्रीसरवारथ सिद्ध अभीतम । वि०

ॐ ह्री सिद्धार्थाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

श्रीकृपनाथ किये कृप कर्मनि । दीप्त शरीर हरो भवि भर्मानि । वि०

ॐ ह्री कृपनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

ती.चौ

३१७

इंद सुचंद सदा पद सेवत । श्रीहरिचंद निजांतम वेवत ।वि०

ॐ ह्रीं हरिचन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशभेव सभा जशगावत । सद्गुणजुक्त गुणाधिप ध्यावतावि०

ॐ ह्रीं गुणाधिपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

या भव औ परभौ सुख कारन । देव परत्र कलेश निवारनावि०

ॐ ह्रीं परत्रेकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

पूरन ब्रह्म पदाविन्त राजत । ब्रह्म सु नाथ प्रभाळवि छाजतावि०

ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

आँनंदकंद चिदानंद स्वामिय । श्रीमुनिचंद नमें शिवगामियवि०

ॐ ह्रीं मुनिचन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीकुल दीपक दीपक वंदिय । दायक मोखपुरी अभिनंदियवि०

ॐ ह्रीं कुलदीपकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

राजनिके पाति पूजत पंडित । राजरिपी रिपिपंकति मंडित वि०

पृ.

३१७

ॐ ह्रीं राजर्षये अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

भव्यप्रबोधक धर्म सु भाषत । देव विशाख निजानंद चाखत वि०

ॐ ह्रीं विशाखाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

नाथ अनंदित आनंद मंदिर । हैं निकलंक नमंत पुरंदर ॥वि०

ॐ ह्रीं आनंदिताय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

छंद इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवजा ।

जे भानुसे दीप्त धरें शरीर वंदों रवि स्वामि जिनें संधीरं ।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं रविस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

श्रीसोमदत्तं प्रणमामि देव । आनंदकंदं शतइंद सेव ।श्री०

ॐ ह्रीं सोमदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

जेकाम शत्रू कहि छीन कीनों नमों जयस्वामि महाप्रवीनों श्री०

ॐ ह्रीं जयस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जे मोक्षलक्ष्मी जुत केल कर्ते । ते मोक्षनाथं भवतीत हर्ते । श्री०

ॐ ह्रीं मोक्षनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

निसर्गसम्यक्तसुव्यक्त दाता सो अग्रभावी जगमेंविख्याता । श्री०

ॐ ह्रीं अग्रभानवेऽर्घं निर्वपामि ॥१९॥

ध्यावों सदा सो धनुषांग स्वामी धनुर्धरेशार्चित मुक्तधामी । श्री०

ॐ ह्रीं धनुषांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सुधाधरं व्यक्त उत्तंगकाया श्रीमुक्तनाथं प्रणमों जिनाया । श्री०

ॐ ह्रीं मुक्तनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

रोमांचकों ध्यावत शर्म पावै आनंद रोमांच तुरंत आवै । श्री०

ॐ ह्रीं रोमांचाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

प्रसिद्ध संबंध सुसिद्ध धारी । प्रसिद्ध नाथं भव सिंधुतारी । श्री०

ॐ ह्रीं प्रसिद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जो जीव को वांछित देत नीकें जिनेश सो ईस सवे जती के ।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी । पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं जिनेशस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-पूरन अर्घ वनायकें जजों जुगल कर जोर ।

विद्युतमाली भर्तके तीत जिनेसुर ओर ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्विद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतातीतजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता-जै जिनगुनसागर सुजश उजागर सेवत नागर नीतमती ।

सब विघनविनाशन उन्नत शासन ज्ञान प्रकाशन बुद्धपती ।

छंद दोहा आचलीबंध ।

विद्युनमालीमेरके दच्छिन दिश सुखकार ।

भरतीतजिनपतिजजों ध्यावों पर अविकार ।

भविहो जिनगुनगावौ भावशोजी पदमचंद पद्मा करै श्रीरतनांगअनूप

नमहि अजोग जपो सदा सरवारथ सिव भूप । भवि हो० ॥२॥

करम कृषन कृपनाथ हैं श्री हरिचंद दयाल ।
 जैति गुणाधिप सुगुन निध जै परत्रिक गुनमाल ॥ भविहो० ॥
 ब्रह्मनाथ आनदमैं नमों मुनिन्द जिनद ।
 दीपक जग दीपक भए राज ऋषी सुख कंद । भविहो० ॥
 द्यौ विशाख अभिलाष मम आनंदित जित कर्म ।
 रवि स्वामी शिवमग अखैं शोभदत्त निरभर्म । भविहो० ॥५॥
 जै स्वामी जै देतु हैं मोक्षनाथ सुख हेत ।
 अग्रभाव बुधि दीजिये धनुष अग सुधि लेत । भविहो० ॥६॥
 मुक्तनाथ शिवसाथ हैं रोमांचक अधचूर ।
 जैति प्रसिद्ध सुसिद्धकों श्री जिनेश सुख पूर । भविहो० ॥७॥
 गरभागम पट मासलों नवधित गरभ मझार ।
 इंद रतन वरषा करी दिन त्रिवार मनि धार । भविहो० ॥८॥
 जनमत सुरगिर न्होन करि निज नियोग विसतार ।
 पिता शौंषि जिनसेवकों राखे सुर सु कुमार । भविहो० ॥९॥

भोग भोगि तज राजकौं जोग धरे अविहार ।
 त्रेसट सिद्ध लहें तवे मौन सहित व्रतधार । भविहो० ॥१०॥
 घाति घाति केवल लयो लोकालोक प्रकाश ।
 समवशरन रचना वनी इन्द्र भर शतदाश । भविहो० ॥११॥
 फिर अघाति चक्रचूरिके मोक्ष भए जिनचद ।
 गुन अनत इकरूप है वंदत भवि नित "वृंद" । भविहो० ॥१२॥
 वत्ता--जै श्रीजिनस्वामी त्रिभुवननामी गुनअभिरामी शिवधामी ।
 तव पादनमामी हृदय धरामी पाप नशामी सुखपामी ।
 ॐ ह्रीं पिण्डमालीमेरुभरतभाविचतुर्विचतिजिनेभ्यो धूपं निर्दशामि ॥७॥

अथाशीर्वाद-जोगीगसा छद—

पुष्करार्द्ध गिर पिण्डुतमाली पच्छिम माहि विभजै ।
 तास भरत तित तीत जिनेसुर आनंदकारी छाजै ॥
 तिनपद जो भवि साजि समाजनि पूजत भगत धराई ।

सोसुर नरसुख भोगि सकल विधि अनुक्रम शिवपुरजाई ॥

इति श्री विद्युन्मालीमेरुभरतातीतपूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुभरतजाविजिन पूजा प्रारभ्यते ।

छंद मदाविलिख कपोल ।

विद्युतमाली मेरु दीप पुष्कर मह छाजत ।

तासु भरत के माहि भविष्यत जिनवर राजत ॥

तिनको थापों इहां जुगलपद पूजन कारन ।

आय प्रभु इत अवे सकल दुखदद निवारन ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभाषिचतुर्विंशतिजिनसमूह-अत्रायतर अत्रतर संवो-
पद आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठ स्थापन अत्रमम सन्निहितो भवभवपदस्वाहाः ।

अथाष्टकम् ।

छंद रूपक कविता-

हिमवन गिरगत गंगाजलवर कंचनभारी भरकर लाय ।

मनवचन पुलकित नित पूजत जनमजरामृत रोग पलाय ॥

विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवरजग सुखदाय ।

पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वंदत जसु पाय ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

वावनचंदन कदलीनंदन केसरसंग सुगंध घसाय ।

भवतप हरन चरन जिनवरके पूजत ही भवताप पलाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ॥२॥

सेतशालि शुभ शशिसम दमकत गमकत वासनैनसुखदाय ।

पुंजधरत दुखदंदहरत आनंदभरत अनुपम सुखदाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥

कमल केतुकी वेलचमेली सुमनसुमन समसुमन सुभाय ।

सुमनमथमदमंथनके कारण सेवो मनमथमथनजिनाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥
नव्य गव्य मनमोदन मोदक खाजे ताजे तुरित उपाय ।

कुधारोग निस्वारन कारन पूजत हों पदमंगल गाय वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥
जगमग जोत होत दीपक की तासों आरति करी सुजाय ।

प्रभुतन माहि तास दुति दशत मानों ध्यानकनी सरसाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥
धूप अनूप उखेवत हों प्रभु तुम द्विग वात होत्र में डाय ।
ध्यान अगनि में करम जैरें हैं धूम धूम यह तास उडाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पूषं निर्वपामि ॥७॥
आम जाम अभिगम सुफल कलवर्जित पक्व मधुर मनलाय ।
तासों अरचत तुम पदपंकज विघनसघन ततखिन नशिजाय । वि०

ॐ ह्रीं विष्णुमालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥
 जल चंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अरघ वनाय ।
 पूजों चरन करन सुखसंपत तारन तरन जगत वरदाय ॥
 विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवर जग सुखदाय ।
 पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वदत जस पाय ॥
 विष्णुमालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

मोतीदाम छंद- -

प्रभाव करें सुरराज्जु आय । प्रभावकदेव नमों शिरनाय ।
 सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्त जजों धरिध्यान ।
 ॐ ह्रीं प्रभावकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥
 नमैं नरदेव उमंग समेत । नमों विनतेन्द्र जिनेंद्र सुचेत । सु०
 ॐ ह्रीं विनतेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

विभावसुभाव विभेदन हार । सुभावकदेव नमो अविकार । सु०

ॐ ह्रीं सुभावकाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दिनिंदसमान प्रकाश शरीर । नमो नित श्रीदिनकार सुधीर । सु०

ॐ ह्रीं दिनकराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

अनंग विकार निवारन देव । सदा जय अंग सुतेज अघेव । सु०

ॐ ह्रीं अनगतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

सुभव्यनिकों धनधान्य करंत । नमो धनदत्त जिनेश महंत । सु०

ॐ ह्रीं धनदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

सुपूख कर्म विपाक विनीत । जिनेसुर पौख हैं निरभीत । सु०

ॐ ह्रीं पौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

सदा समदिष्टिय सेवत पाय । सुखाकर श्रीजिनदत्त जिनाय । सु०

ॐ ह्रीं जिनदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

चद्रूं घनघातियकर्म हनंत । त्रिलोकहितू प्रभु पार्श्वमहंत । सु०

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

गनांबुधि श्रीमुनिसिन्धु अगाध। जपे नितचित्त पुनीतम साध सु०

ॐ ह्रीं मुनिसिन्धवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

सु अस्त रु वस्त प्रशस्त वताय । नमो कमलाधर अस्तक भाय । सु०

ॐ ह्रीं अस्तकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

भवोदधि तारनकों समरथ्य । सुरेशनमें भवनीकहि मथ्यं ।

सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्त जजों धरि ध्यान ॥

ॐ ह्रीं भवनीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

छंद सूर ।

नृपनाथ नृपकुल पाल । पूजों सदा गुनमाल ।

पञ्चम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्य ॥

ॐ ह्रीं नृपनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

नारायनाय जिनेय । ध्यावों नारायणध्येय । पञ्चम०

ॐ ही नारायणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

प्रशमोक प्रशम प्रदाय । पूजों सुजश गुनगाय । पञ्चम०

ॐ हीं प्रशमौकसे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

भूपति भजें पदकंज । भुपति भजों भैभंज । पञ्चम०

ॐ ही भूपतयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

केवल सुदिष्ट विकाश । पूजों सुदिष्ट हुलाश । पंचम०

ॐ ही सुदिष्टये अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

भवभांति भीत अतीत । भवभीरु जजि जगमीत । पंचम०

ॐ हीं भवभीरवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

आनंद कंद जिनंद । नंदन जजों सुख कंद । पंचम०

ॐ हीं नंदनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

जै शुद्ध बुद्ध अक्रुद्ध । भार्गव जजों जूत रिद्ध । पंचम०

ॐ ह्रीं भार्गवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

वासव सदा जसु भक्त । पूजों सु वासव व्यक्त ।पंचम०

ॐ ह्रीं वासवेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

वस विश्व जास वसंत । पर वास जिंनहि जजंत ।पंचम०

ॐ ह्रीं परवासवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

वनवसत नाशि उपाध । वनवासि साध अराध ।पंचम०

ॐ ह्रीं वनवासिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

भरतेश कमला करन । पूजों सकल जन सरन ।

पंचम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्य ।

ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

रथोद्धता छंद—

पूर्ण अर्घ्य यह अग्र धारिहो । ध्याय गाय जश पाप टारिहों ।

पुष्करार्घ्य गिर पंचमें सही । भर्त भावि जिन पूजिहों यही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्घ्यद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतभाविजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि

अथ जयमाला ।

पत्ता-जै शिवमगमंडन कलुपविहंडन कृतब्रह्मंडन शर्म अती
दारिद्र्यमखंडन जै भवहंडन हरनप्रचंडन कर्मगती ॥

छंद नमालिनी तामरस चंडी ।

जै प्रभाव शिवराव नमस्ते । विनतेंद्रं जुगपाय नमस्ते ।
जै सुभाविक दयाल नमस्ते । श्री दिनकर गुनमाल नमस्ते ॥२॥
अगतेज जसपुंज नमस्ते । धनदत्त सुखभुज नमस्ते ।
पौरव पूरन शर्म नमस्ते । जै जिनदत्त सु परम नमस्ते ॥३॥
पार्श्वनाथ शिवसाथ नमस्ते । मुनिसिंघव मम नाथ नमस्ते ।
अस्तिक जिनगुनवत नमस्ते । श्रीभवनीक महंत नमस्ते ॥४॥
श्री नृपनाथ मुनीश नमस्ते । नारायण जगदीश नमस्ते ।
प्रशमोकश जशराश नमस्ते । भूपत यिमलविलाश नमस्ते ॥५॥
जै सुदिष्ट जग इष्ट नमस्ते । भवभीख गुन मिष्ट नमस्ते ।
नंदन आनंद कंद नमस्ते । भार्गव जिन निरफंद नमस्ते ॥६॥

जै सुवासव पुनीत नमस्ते । परवासक जगमीत नमस्ते ।
 श्री वनवास मुनिंद नमस्ते । जै भरतेश जिनद नमस्ते ॥७॥
 पुष्कर पंचम मेर नमस्ते । भरत भविष्यन हेर नमस्ते ।
 चौबीशों जिनराय नमस्ते । गुन अनंत समुदाय नमस्ते ॥८॥
 पंच कल्याणक राय नमस्ते । शिव मारग दरशाय नमस्ते ।
 गनधर पूजत पाय नमस्ते । "वृंदावन" शिरनाय नमस्ते ॥९॥
 घत्ता-जै जै जशवंतं जिनभगवंतं सुगुन अनंतं शुद्ध मते ।
 नित ध्यावत संतं जेति महंतं लब्धि लशंतं बुद्धपते ॥
 ॐ ह्रीं पुष्कार्धद्वीपवियुन्मालीमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वाद-गीता छंद—

वसु दख सुंदर साज जो जिनराज चरन जजै नरा ।
 पुष्कर सु पंचम मेरु भरत भविष्य श्रीमज्जिनवरा ॥
 सो सकल पुत्र सुमित्र सपत लहत सार समाज कों ।

अनुक्रम वरे शिव परम गमनी भविक जन हितकाजकों ॥

इति श्री भरतपञ्चमाचलसंबंधी भाषितचतुर्विंशति प्रजा समाप्ता ।

अथ पुष्करार्धद्वीपविष्णुमालीऐरावत
वर्तमान २४ पूजा ।

दोहा-विष्णुमाली मेरुके ऐरावत छित माहि ।

वर्तमान चौबीश जित थापों इत प्रभु आहि ॥

ॐ ह्रीं पञ्चमालैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर सर्वोपद्
आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा

अथाष्टकं ।

छंद चौबोल-

छोरीदधि सम उज्जल जल शुभ कनक कटोरी माहि भरे ।

जनम जरामृत नाश करनकों श्रीजिन सनमुख धार करे ॥

पुष्करार्थ गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।
वरतमान चौबीश जिनसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

केशर चंदन दाह निकंदन कदली नंदन गंध भरे ।
जलसगंधसि लसि मसिसम समकर पूजत भवआताप हरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो गंध निर्वपामि ।

तंदुलसेत निशाकर वारिज छीर छटा हिम हीरहरे ।
कंचनथार विषे तसु पुंज सु युंजत ही दुख दोष टरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ।

कामवली प्रतिकै सबके सब रुद्रनिके सब जेर करे ।
तासु विनासनि जानि तुम्हें प्रभु पूजत फूल सुगंध भरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्य पुष्प निर्वपामि ।

रोग कुधा जंगजलुनिकों नित जेर करें छिन नाहि टरे ।

तासु विनाशन जानि तुमें जिन पूजहु नेवज व्याधि हरे । पु०।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

मोह महातम छाये रह्यो जग नाहि हिताहित दिष्ट परे ।

सो तुम नाशि प्रकाश कियो शिव दीप चढ़ावत भर्म हरे । पु०।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

काल अनाद वितीत भयौ संग कर्मनिके दुख भूरि भरे ।

तुम दिग धूप अनूप उखेऊं ज्यों वसु कूर प्रचूर जरे । पु०।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

ज्ञान अतिंद्रिय शर्म अनाकुल आतम परम सुधर्म धरे ।

सो प्रगटो मम हे जिन स्वामिय सेवतु हो फलधार भरे । पु०।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जलचंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अर्घ करे ।

नाचि राचि शिरनाय समरचत भव भवके सवपापहरे ।

पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।

वरतमान चौवीश जिनेसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥२४॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

चौपाई छंद--

गंग घटासम अंग विशुद्ध । गांगेयक वंदत वर शुद्ध ।

पुष्कर पंचम मेरु लसंत । ऐरावत जिन संत जजंत ॥

ॐ ह्रीं गांगेयकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

मल्लवास जसरास पुनीत । भुक्तमुक्त दानी जगमीत । पु० ।

ॐ ह्रीं मल्लवासवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

भीम जिनंद भीम भैहत । सुखकारी जै जै अरिहन्त । पु० ।

ॐ ह्रीं भीमाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

ती. चौ.

३३७

दयानाथ सेवंत विदग्ध । स्तनरास करि दारिद्र्यदग्ध । पु०।

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीसुभद्र दायक नित भद्र । भद्रभाव जुत सुगुन समुद्र । पु०

ॐ ह्रीं भद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

स्वामीनाम नमों जिनराय । ध्वजा चिन्ह जह बहुत मुहाय । पु०

ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

हनिक नामजिन गुनमनिमाल । द्वादशसभा सहित जगपाला पु०

ॐ ह्रीं हनिकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

नंदघोष जिन जगजन पोष । चतुरानन राजें निरदोष । पु०

ॐ ह्रीं नंदघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

रूपबीज श्रीजिनगुन खान । कोटि भानु दुति देखि लजान पु०।

ॐ ह्रीं रूपबीजाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

वज्रनाभ वज्राधिप सेव । नटसाला नाचै नट देव । पु०

पु०

३३७

ती.चौ.

३३८

ॐ ह्रीं वज्रनाभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीसंतोष तोषणद पोष । मन्दिर पंक्तिरुचिर चित चोष । पु०

ॐ ह्रीं संतोषाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

श्रीसुधर्म जिन परम दयाल । सोहत है देवद्रुम माल । पु०

ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

श्रीफनीस पद फनपति ध्यात । पुष्पवाटि फल फूल सुहात ।

ॐ ह्रीं फनीश्वराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

वीरसेन जश किन्नर सार । गावतु हैं नानाप्रकार । पु०

ॐ ह्रीं वीरचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

मेधानीक नमों जिनचंद । स्वच्छ छवी छाजत मुखकंद पु०

ॐ ह्रीं मेधानीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

स्वच्छनाथ गुन स्वच्छ अनंत । सुर जश गावत ध्यावतसंत
पुष्कर पंचम मेर लसत । ऐरावत जिन संत जतंत ।

प.

३३८

ती.चौ.

३३९

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

दोहा-कोप छय करि कोप छे भापत सवहित बैन ।

नग पंचम ऐरावते वरतमान जजि चैन ॥१७॥

ॐ ह्रीं कोपछयाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जयति अकामक कामकर समवसरन थित लेन । नगंवर ।

ॐ ह्रीं अकामकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

धरमधाम अभिराम नमि गंध कुटी छवि देन । नगंवर ।

ॐ ह्रीं धर्मधामाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

सुक्तसेन वंदत विद्युध वन उपवन जह ऐन । नगंवर ।

ॐ ह्रीं सुक्तसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

क्षेम करन छेमंग जिन साल फूल सुखदाय ॥

गिर पंचम ऐरावते वरतमान पद ध्याय ।

ॐ ह्रीं क्षेमकराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

पृ.

३३६

दयानाथ आनंद घन मृगराजा सनसीन ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत अमलीन ॥

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

कीर्तपाय जिनराय जजि प्रश्नोतर करतार ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखकार ॥

ॐ ह्रीं कीर्तपायजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

शुभकर जिन शुभ करत नित मंगल नित नौदाय ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखदाय ॥२४॥

ॐ ह्रीं शुभकराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

मालिनी छद-जल फल सब साजे बाजते सार बाजे ।

गिर पनम विराजेरावते वर्त ताजे ॥

चदु जुग जिनराजे पंच कल्याण साजे ।

पद जजि महाराजे सर्व कल्याण पाजे ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विगतिजिनेभ्यः पूर्णाधि निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

पदा-जै जिनगुणमालं विरद विसालं सुस्तुतभालं सुकुमालं ।

जै कवि कुलभालं अरिपिजालं जैति कृपालं शिवचालं ॥

पद्वडी वंद—

जै गगदेव शिवसंग सार । जै मल्लवास मदमल्ल टार ।

जै भीम भीम भव हरन देव । जै जैति दयाधिक गुण अछेव ॥२॥

जै जैति भद्र भद्रेश कर्ण । स्वामी जिनवर भवभीत हर्ण ॥

जै हनक हरण मनमल समस्त । जै नंदघोष भाषत सुवस्त ॥३॥

जै रूपबीज वीरज उदार । जै वज्रनाभ भवसिंधुतार ॥

संतोष जैति दुख दोष चूर । जै जिन सुधर्म जिनब्रमे पूर ॥४॥

जै जिन फनीश फनपति नमत । जै वीर चंद जिनगुण अनंत ।

मेधानिक मेधा नमत पाय । जै स्वच्छनाथ शिव मग पताय ॥५॥

कोष छैकर निज कोष छैन । नै नै अरुण कामद प्रसीन ॥
 प्रसीमनाय जुन प्रसन्न शूर । नै सुनिमै न जुन रिद्ध मिद्ध ॥३॥
 क्षेत्रांग क्षेत्रदारी मदीय । नै दशनाथ फलना अनीय ॥
 नै कर्मनाथ कोरत उदीय । श्रीशुभ निनर भव समुद्र पोत ॥४॥
 प पंचम गिर पेरारतेय । छै प्रसन्नमान शौवीश मेय ॥
 कल्याणक पत विगातमान । शरत्तावन पालन विरदमान ॥५॥
 अथ नृप सो दत्ता पाय आज । तथा जानौ प्रभु समार काज ॥
 भक्तानां नै मोक्ष निकाल । नद अरुण तरो विनयो विहाल ॥६॥
 ७॥ नै दयाभुंर शिवपुर मंदर जजन पुंदर भगत भग ।
 दानय जतमंजन समकृत मंडन कलुष विहंडन कमनि हमा ।
 ८॥ श्री पंचमार्गानां गानां गुणानां विनयेन मया विरचित ॥

पञ्चमार्गानां गुणानां विनयेन मया विरचित ॥

विभूतमाली मेरु विराजत मारजी ।

पेरारत नद शोभित प्रसन्न उदरजी ॥

चौविस जिन तह वरतमान जो पूजई ।

सो भवि सव सुख पाय मुकत पद कूजई ॥

इति श्रीपंचमाचलैरायते वर्तमानचतुर्विंशति पुजा समाप्ता ।

अथैरावतातीतचतुर्विंशति जिन पूजा ।

तोटक छंद—

गिर पंचम पुष्कर दीप तनों । अयरावततीत जिनेश भनों ।

चववीस सुथापतु हों इतही प्रभु आय करो भविके हितही ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरायतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्रायतरअयतरसवौपद् आदानन ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरायतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रममसन्निहितो भवभयपदस्वाहा ।

अथाष्टकं ।

लावनी-गही है नाथ शरन तेरी ।

ती चौ.

३४४

भव पाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी । गही०
पुष्कर पंचम मेर विराजत ऐरावत हेरी ।

तीत जिनेसुर पद परिपूजन मिटत जगत फेरी । ग० टेका
छीरोदधि सम नीर सीर भरि कनक भृंगमेरी ।

धार करत तुम चरन कमल तर सकल कलुष छेरी । ग० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

वावन चंदन कदली नंदन जल संघ घसि लेरी ।

पूजत चरन जुगल करुनानिध भवतप चूरी ॥ गही० ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ।

देवजीर सुखदास वास दुतिरास तंदुलेरी ।

पुंज धरत दुख कुंज हरत जिनपद सु पूजतेरी । गही० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

पारजात मंदार सुमन संतान जाति केरी ।

चरचौं चरन हरन मनमथ मद शुद्ध शील देरी । गही०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

कुधा रोग निस्वार निराकुल पद तुमने लेरी ।

नैवज साजि जजौं जगनायक हरो व्याध मेरी । गही०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ।

केवल भान प्रकाश प्रभू तुम सब परगासेरी ।

दीपक सो आरती उतारों निज प्रकाश देरी । गही०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

दुष्ट अष्ट तुम नासि पुष्ट पद माहि थिर भयेरी ।

हम पूजें दशगंध धूपसों कूर अरि जेरी ॥ गही०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

विघन सघन वन ध्यान अगनिसों तुम परजालेरी ।

ती.चौ.

३४६

हम प्राशुक फलसों पद पुजै वांछितार्थ देरी । गही०

ॐ ही पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥

तुम अनंत गुन लेहे अनूपम अमल अचल हेरी ।

हम पूजै पद अरघ्य थार भर मिटो जगत फेरी । गही है नाथ ।

भवपाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी ।

पुष्कर पंचम मेरु विराजत ऐरावत हेरी ।

तीत जिनेसुर पद परिपूजत मिटत जगत फेरी । गही है ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घ्य निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ्य ।

हरिणी छंद-

भवातप शांत करंत सदा । नमों उपशांति प्रशांति प्रदा ।

सु पुष्कर पंचममेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥१॥

ॐ ह्रीं उपशांतिजिनराय अर्घ्य निर्वपामि ॥१॥

पू

३४६

शरीर अनूपम सोहत है । सो फल्यु जगज्जन मोहन है । सु० ।

ॐ ह्रीं फाल्गुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

नमों पुखास सु आस भरे । जिनेश अशेष कलेश हरे । सु० ।

ॐ ह्रीं पूर्वाशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

त्रिलोक सुहावन रूप लसै । नमों जिन सुन्दर पाप नसै । सु० ।

ॐ ह्रीं सुदराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

धरें गुन गौरव गौरवता । नमों जिन गौरव गौरवता । सु० ।

ॐ ह्रीं गौरवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

कषाय सवे चक्रचूर किया । त्रिविक्रम आनंद पूरि दिया । सु० ।

ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

जुरोष गयंद मृगिद सम । नमों नरसिंघ कुकर्म दम । सु० ॥

ॐ ह्रीं नरसिंघाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

छहों विधि हास रतादि हनें । नमों मृगवासव सार पने ।

सु पुष्कर पंचमेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥

ॐ ह्रीं मृगवासवे ऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद प्रियवदा—

पुरुषवेद निस्वार कीन है । परम शोभ जिन सो प्रवीन हैं ।

त्रितिय दीप गिरि पंचमें सही । जजत तीत अयरावते यही ॥

ॐ ह्रीं शोभाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

सुमल लोभ जिह्व सूक्ष्म नासियो । जिन सुधाव सुबोध भासियो ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं शुद्धावराय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

दुखद पंचविधि नाद नासियो । जिन अपाप सवस्तु भासियो ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं अपापजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

दरशनावरन अंत कीन है । जिन विवाध नमते प्रवीन हे त्रि०

ॐ ह्रीं विवाधाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

मति श्रुतावरन आदि जे कहा । हरन संधिक जिनेशते महा ।

त्रितिय दीप गिर पंचमें सही । जजत तीत अयरावते यही ।

ॐ ह्रीं संधिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

हृद रथोद्धता—

विघ्न पंचजिन निघ्नकीन हैं । मान धात्र जिनसों अछीन हैं ।

पुष्करार्ध गिर पंचमें सही । तीत पूजत यरावते मही ॥

ॐ ह्रीं माधवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

शुक्लध्यान दुतिवत शुद्ध हैं । अश्वतेज जिनसों विशुद्ध हैं । पु०

ॐ ह्रीं अश्वतेजाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

पुद्गलीक गुनतें सु जे चुतं । सोय देदवर विद्यया जुतं । पु० ।

ॐ ह्रीं विद्याधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

बंध आधि तन भेद थे जिते । सो सुलोचन हने सहीतिते पु०

ॐ ह्रीं सुलोचनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

सर्व सहननसों वितीत हैं । मौनकं निधि नमों सुमीत हैं पु०

ॐ ह्रीं मौननिधाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

पुंडरीक जिनकों नमों सदा । छः प्रकार परजाप्त सों जुदा पु०

ॐ ह्रीं पुंडरीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

जैति चित्रगण मित्रजीय के । रक्षपाल पटकाय हीय के पु०

ॐ ह्रीं चित्रगणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

छंद दुतपा—

त्रिविध जोग जिननें चक्रचोर । गुन समुद्र मनि इंद्रजु प्रेर ।

पुहकरार्ध गिर पंचम नामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं मुनिद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

गुननिधान परघात दला है । सर्व पूज निज सर्व कला है पु०

ॐ ह्रीं सर्वकलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

सकल भूखत्रिष रोग निवासे । जयति भूरिश्रवने सुखरासे पु०

ॐ ह्रीं भूरिश्रवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

परमपुन्य जुतकाय अनूपं । जय पुनंग जिनवर जसरूपं ।
 पुहकरार्द्ध गिर पंचमनामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी २४
 ॐ ह्रीं पुणांगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

मुमुषी छद -

पुहकर पंचममेर गनों । तह ऐरावत खेत भनों ।
 जिनवर तीत जजामि सदा । कर धर पूरन अर्घ्य अदा
 ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्भिर्गतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

वत्सा-जै जिनजगवंदित जन आनंदित जैति अमंदित मोनव्रती
 सम दमजुत राजत सब सुख साजत भवभै भाजत हे सुअती

छद नयमालिनी तामरस चढी—

उपशांतिक मति मडित जै जै । फलगू जिन दुख खडित जै जै ।
 श्री पूर्वास अखंडित जै जै । सुन्दर जिन भ्रम दंडित जै जै ॥१॥

गौरिक हरिहर वदित जै जै । त्रीविक्रम सु अमदित जै जै ।
 नरसिंघेस सु छंदित जै जै । मृगवस जगदानंदित जै जै ॥३॥
 सोमेश्वर सुखदायक जै जै । शुद्धावर सब लायक जै जै ।
 श्री अपाप गुन ह्यायक जै जै । जिन विवाध शिवनायक जै जै ।४।
 सधिक भवदधि तारन जै जै । मांधात्रे मद मारन जै जै ।
 अश्वतेज जगटारन जै जै । विद्याधर उद्धारन जै जै ॥५॥
 श्री सुलोचन प्रकाशक जै जै । मौननिधी वृत वासव जै जै ।
 पुंडरीक जसरासक जै जै । चित्रगुनी गुनरासक जै जै ॥६॥
 श्रीसुनिरिंद महंत जै जै । सर्वकला भगवंतं जै जै ।
 भूरिश्रव भवअंतं जै जै । जिन पुण्यांग अनंतं जै जै ॥७॥
 पुष्कर पचम गिरवर जै जै । तीतैरावत जिनवर जै जै ।
 वदत सुरनर सुनिवर जै जै । अमल अचल शिवतिथ वर जै जै ८
 दास सदा यह जाचतु जै जै । होहु भगत नित शांचतु जै जै ।
 सुर सुरेश मनरांचतु जै जै । सुजश गाय हमि नाचतु जै जै ।९।

ती.चौ.

३६३

पग नूपुर छवि छाजतु जै जै । मांदल द्विमि द्विमि वाजत जै जै ।
चंग उपग अवाजत जै जै । श्रुंगत श्रुंगत गत शाजत जै जै ॥१०॥
साग्रदि सारंगी सुर बाजत जै जै । कटकिं किनिनिविराजत जै जै
दुति लखि रवि शशि लाजत जै जै । भगत करत अव भाजत जै जै ॥११॥
मिथ्यामति मल मजन जै जै । विघनसमूह विगंजन जै जै ।
वृन्दावन" मन रंजन जै जै । जै जिन रवि भविकंजन जै जै ॥१२॥
पत्ता-जै धरमप्रकाशक भूमतमनाशक शिवमगभासक ज्ञानपते
दारिद्र्य द्रुमछेदक जैति अखेदक वेद विवेदक वेदमते ॥१३॥

ॐ ह्रीं पचमाचलरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

चौबोल उद ।

आठों दरव मिलाय गाय गुन जो भविजन जिनराज जजै ।
पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत में तीत सजै ।
सो लहि पुत्र मित्र सुख संपति भोग मनोग समस्त विजै ।

अनुक्रम करम नासि करि भवि वह मुक्त धाम में राज रजै ।

अथाशीर्वादः—

इति पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

अथ पंचमाचलैरावतभावि २४ पूजा प्रारब्धते ।

तोटक छंद—

गिर पंचम को ऐरावत है । जिन भाविय मो मन भावत है ।

जिहि ध्यावत आनद पावत है तिहि थापत पूज रचावत है ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर सनौपद् ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितो भव भन वपद् ।

अथाष्टकं ।

चालनक्षीश्वराष्टक भाषा दानतरायजी कृतकी तथा होली गर्भाआदि अनेक चालमे

उज्जल जल शीतल लाय हाटक भुंग भरा ।

तुम चरनन देत चढ़ाय मेष्टत जनम जरा ॥

गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजत धरि ध्यानो ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥

शुभ चदन कंदन दंद कदलीनंद लिया ।

जलसों वसि पूजि जिनंद भवतप दूर किया । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गधं निर्वपामि ।

मुक्ताफल हिम हरि हीर दमक गमक धारी ।

धरि तंदुल मंदुल वीर दारिद दुख हारी । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥

शुचि सुमन सुमन सम आन सुमन सुमन नीके ।

करि मदन कदन पनवान पूजत पदजीके । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

रस रासत नेवज सार कंचन थार भरा ।

तुमकों अरपत अविकार रोग समूह हरा । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥

तम भंजन दीप संवार आरति कीन्ह सही ।

मम तिमर मोह निरदार आरत मेंट यही । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥

कृष्णागर अगर कपूर धूप उखेवत हौं ।

सब जरत करम मम कूर तुम पद सेवत हौं० । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

रित फल कलवर्जित लाय सुवरन थार भरा ।

तुम पूजत विघन नशाय वांछित लाभ करा । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥

वसु दरव सवार पवित्र अरघ्य सुहाय लिया

पद सेवों हे जगमित्र दीजे सुकत प्रिया ॥
गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजों धरि ध्यानों ॥
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावनभावि चतुर्विंशतिजिनेभ्यो सर्वं निर्वपामि ॥
अथ प्रत्येकार्घ्य ।

छंद समुद्रिका मात्रा १४ ।

अमलगुन अदोष में गनो । परम धरम कारने भनों ।
गिर पनमयरावतें जजों । जिन भवतव आनंदें सजों ॥
ॐ ह्रीं अदोषाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥ .

छंद सुमुखी मात्रा १४

वृषभ जिनेश कलेश हों । जिन वृषको उपदेश करें ॥
पुहकर पंचम मेर जजों । भवतव उत्तर खेत सजों ॥
ॐ ह्रीं वृषभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

ती चौ.

३५८

छंद सूर मात्रा १२—

जिनदेव विनायानंद । आनंद अंबुधि चंद ।

गिर पंचमैरावत । भावी भजे भौ तर्त ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं त्रिनयानंदाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

छंद लोलतरंग मात्रा १६—

श्रीमुनि भारत आतमज्ञानी । आतम की अनुभूति धरानी ।

पंचमेमेर जजों सिर नाई । भविय देव यरावत राई ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं मुनिभारताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

छंद सारस्वती मात्रा १४—

इंद्रक इंद्र फनिंद्र नमे । आतम आनंद कंद पमें ।

पुष्कर पंचम मेर सजों । भवियरावत देव जजों ॥५॥

ॐ ह्रीं इंद्रकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

छंद इद्रवज्रा मात्रा १८ ।

चंद्राननं चंद्र सुकेत स्वामी । आनंद वाराणिधि वृद्धनामी ।

पू.

३५८

तौ.चौ

३५६

ऐरावते भावित नाथ पूजों । श्रीपुष्करे पश्चिम मेर दूजो ॥६॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

छंद उपेन्द्रवज्रा मात्रा १५

प्रभाकरक्रांति अनन्त धारी । नमों ध्वजादित्य अनेक तारी ।

सु पुष्करार्द्धा परमेर सोहै । भविष्यतेरावत चित्तमोहे ॥७॥

ॐ ह्रीं ध्वजादित्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

छंद इंद्रवशा मात्रा १८ ।

जु वस्तुकों एकहि काल जनिहीं । सु वस्तुबोधं जिन धारिध्यानहीं

स पुष्करार्द्धा परमेर सोहै । भविष्यतेरावत चित्त मोहै ॥८॥

ॐ ह्रीं वस्तुबोधकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

छंद हरिनी मात्रा १५ ।

नमों नित मुक्तगती जिनकों । सुरेश नरेश नमै तिनकों ।

सु विद्युतमालिय मेरु जजों । भविष्य यरावत खेत सजों ॥९॥

प

३५६

ती.चौ.

३६०

ॐ ह्रीं मुक्तगतये सर्वं निर्वपामि ॥९॥

छंद वसततिलका वर्ण १४ ।

श्रीधर्मबोधकप्रबोधकभव्यप्रानी आनंदकंदनिजआतमरूप ध्यानी
श्रीपुष्करार्ध मह पश्चिममेरजानों । ऐरावतें जजत भवितधारि ध्यानों

ॐ ह्रीं धर्मप्रबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद आर्या सर्व मात्रा ६० ।

श्रीदेवांग जिनेशं, नमें सदा जाहि सर्व देवेशं ।

पुष्कर पंच नगेशं, ऐरावत भावि संजजेते ॥

ॐ ह्रीं देवाङ्गाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

छंद प्रियवदा वर्ण १२ —

कलुषदारन उदार हैं वली । जिन मरीच अरि मीचकों दली ।

पुष्करार्ध गिर पंचमों रजै । जिन भविष्य अयरावतें जजै ।

ॐ ह्रीं मारीचाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

पू.

३६०

ती.घौ.
३६१

छंद भुजंगप्रयात वर्ण १२-

सबे जीवके नाथ हैं जीवनाथ । दयाधर्म दाता सदा मुक्तसाथ ।
जजो पंचमे भूभूते भावनीकं । कृपासिन्धु ऐरावते भावनीकं ॥

ॐ ह्रीं जीवनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

छंद मोतीदाम वर्ण १२

जसोधर देव महा जसरास । सुरेश नरेश खगेशुर दास ।
जु पुष्कर पंचममेरु लसंत । जजो अयरावत भावित संत ॥

ॐ ह्रीं जसोधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

छंद लक्ष्मीधरा वर्ण १२

गौतमनाथकों गौतमेशं भजै । जास आराधतें सौख्यसाता सजै ॥
पुष्करार्द्धाचले पंचमैरावते । भावि पूजें सबै शांति को पावते ॥

ॐ ह्रीं गौतमाय अर्घ्यं निर्वपामि १५॥

छंद द्रुतिविलवित तथा सुन्दरी-

विशद बुद्ध धरें मुनि शुद्धजी । सुजनको नितदायक रिद्धजी ॥

पू.

३६१

जजत पुष्कर पंचम मेरके जिन भविष्य यरावत हेर के ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुद्धाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

छंद द्रुतपा वर्ण १२-

चिद विलास बुधि वंदत जाकों जिन प्रबोधक नमों पद ताको ।

पुहकरार्ध गिर पंचम सेवों । जिन भविष्य अइरावत वेवो ॥

ॐ ह्रीं प्रबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

छंद शिखरनी वर्ण १७-

सदानीकं स्वामी सकल सुख संपत्ति करता ।

सदाज्ञानी ध्यानी जगत जनके क्लेश हरता ॥

जजों विद्युन्माली विशद गिरकेरावत विषें ।

कृपाधारी भावी अमलगुन कारी शिव दिखें ॥

ॐ ह्रीं सदानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छंद प्रमिताक्षरा वर्ण ११२॥-

जिनराज चारित सुनाथ महा । गहि शुद्ध चारित कलंक दहा ।

गिर पंचमें सु अयरावत है । भवतव्य सेय सुख पावत है ॥

ॐ ह्रीं चारित्रनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

छंद द्वाविमध्यक प्रथम त्रितियचरन प्रस्तार ॥॥॥॥॥॥ अर द्वितिय

चतुर्थपाद ॥॥॥॥॥॥ या भाति मात्रा १६ सर्वत्र यथा-

आनंद अंबुधि चंद समाना । अमल सदानंद श्री भगवाना ।

पंचम मेर ऐरावत ध्यावों । भवतव सेवत ह्रीं सुख पावों ।

ॐ ह्रीं सदानन्दाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

छंद प्रमानिका वर्ण ८

वेदार्थनाथ ध्याइयै सदैव शीस नाइयै ।

गिरिंद पंच भावनों जजोंत्तरे सु पावनों ॥

ॐ ह्रीं वेदार्थकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

छंद नाराच वरन ॥२६॥

निजातमीक लाभ परम धर्म शर्म देत है ।

ती चौ.

३६४

सुधासुनीक देवजी भवाब्धि माहिं सेत हैं ॥

सु पंचमाचले पुनीत उत्तरे सुखेत हैं ।

जजामि भावनीक जो सुबोधको निकेत है ॥

ॐ ह्रीं सुधानीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

छंद चामर वर्ण ॥ १६॥

जोति मूर्त देवकों त्रिलोक धोक देत है ।

शोक थोक नाशके प्रमोदकों जुहेत है ।

पंचमाचलें सु उत्तरे पुनीत जानिये ॥

भावनीक देव पूजिगीत नृत्य ठानिये ॥

ॐ ह्रीं जोतिमूर्तयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

छंद रथोद्धता-वर्ण ११

श्री सुरार्घ्य सुर सर्व ध्यावहीं । जासके न गुन पार पावहीं ।

पंचमाचल यरावतें महा । भावतव्य पर शर्ण मैं गहा ॥२४॥

ती.चौ.
३६५

ॐ ह्रीं सुरायाय अर्घ्यं निर्वहामि ॥२४॥

छंद पादद्वयी लध्वत मात्रा १६

लखि पुष्करार्घ्यं मह अपर मेर । अयगवत जिन भवतव्य हेर ।
पर पूजों तिनकों अरघ धार । संसारऽसारतें तार तार ॥
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वहामि ॥

अथ जयमाला ।

पञ्चा छंद मात्रा ६४

जेजै गुनछायक विघन विनायक दास सहायक जगनायक ।
धरि वस्तुधिसायक अग्निन घायक सिवसुखदायक सबलायक ।

छंद नोटक-

सब दोष अदोष जुचुरत हैं । वृषभेश वृषामृत पूरत हैं ।
विनयानंद आनंद सूरत हैं । मुनि भारत भौ भय दूरत हैं ॥१॥
जिन इंद्रक इंद्रनि बंदित हैं । शसिकेत जगत आनदित हैं ।
धुज आदित जोति अमदित हैं । जिन वस्तु विबोध सुब्रंदिन हैं २

पृ.

३६५

जिन मुक्तगती भवभंजन हैं । जिन परम सुधर्म निरजन हैं ।
 नित देव सुअग अनजन हैं । जिन मारिच मीचहि गंजन हैं ॥३॥
 जिय नाथ अनाथहि रक्षत हैं । सब वस्तु जशोधर वक्षत हैं ।
 जिन गौतम श्यो मग गक्षत हैं । मुनि शुद्ध प्रबुद्ध प्रतक्षत हैं ४
 सुखसार प्रबोध उमडित है । अविकार सदानिक पडित हैं ।
 जिन चारित चारु अखंडित है । जु सदानंद आनंद मडित हैं ५
 सु वेदार्थक वेद विबोधन हैं । जु सुधानिक आतम सोधन हैं ।
 जिन जोति सुमूर्त तपोधन हैं । जु सुरार्थ जगजन बोधन हैं ॥६॥
 पनमों अयरावत भाविय हैं । नमते सब आनंद पाविय हैं ।
 तुम हो भगवंत अनंत गुनी । तुमरो यश मैं निज औन सुनी ७
 शरना चरना रज आय गही । मम वछित सिद्ध करो सबही ।
 तुव भक्ति सदा मन माहि वसौ । उरते दुख दोष कलंक नसो ८
 तुव आगम में चित नित रमों नित संगति साधरमीय पमो ।
 नित ही अनुभो रस पान करों । नित सजम पूजन दान करों ९

ती.चौ.

३६७

रतनत्रय भाव सुभाव मिलौ । मल राग रु दोष कषाय टिलौ ।
भव भौ यह जोग मिलो तबलों । शिव नारि धरो प्रभुजी तबलों ?
नित मगल होहु प्रमोद मई । वर सपति सार मिलो नितई ।
सब विघ्नसमूह विनाश करो । निज दामनिके सब आस भरो ?
जगमें सुखसागर नृरि भरो । निज धर्म उदोत सदैव करो ।
मन वांछित कारज सिद्ध करो । जन "वृंद" तनें वर रिद्ध भरो ?
वृत्ता-जे केवल दिनकर तिमिरमोहहर मोखडगर पराकाश करो ।

“वृंदावन” वंदत पापनिकंदत दीजे आनंद कंदवरा ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरायतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महावर्चनिर्वपामि ।

दोहा-जो पूजे मनलायपद भावी जिन चौबीश ।

ऐरावत पंचम तनों सो ह्वे सुकत शतीश ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीपुष्कार्धद्वीपे ऐरावतक्षेत्रचौबीमीपूजा समाप्ता ।

पृ.

३६७

अथ समुच्चय पूर्णार्घ ।

छंद माधवी सवैया वर्ण २४

जल चंदन तटुल पुष्प लसै चरु दीप सुधूप फलोव गहा ।
सब उत्तमसों अति उत्तम है तिनको सजि अर्घ सुथाल-लहा
गत आगत वरतत जे दशहू थल तरिथनाथ दयाल कहा ।
तिहि पूजत पूरन अर्घ लिये प्रभु देहु हमें शिव धाम महा ॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीपके दशक्षेत्रसंवधी गतागतवर्ततजिनेभ्यो ऽर्घपूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ आशीर्वाद—

कवित्त छंद मात्रा ३१

सातसतक अरु बीस बीस जगदीश जजै जो भवि मनलाय
ताके पुन्यतनी अति महिमा को कवि कहै वचन दरशाय ॥
मुक्त महल को नीव दियो तिन इंद्र सरा है तसु जश गाय ।
शक्र चक्र अहमिंद्र तीर्थपति पदलहि सुखसों शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीतीसचौबीसीपूजा वृंदावन अग्रवाल गोयलगोत्री कृत संपूर्णा ।

प्रथम सूत्रावतारमिदं पुस्तकं लिखित ग्रन्थकारेण निजपरोपकार
भाषा होने का कारण, तथा देश नगर शैली के नामीजन
तथा सहाई तथा कर्ता नाम
कुल वर्णन ।

दोहा छंद-एक समैं काशी विषैं भयौ संसकृत पाठ ।

काशीनाथ कराइयौ वन्यौ अनूपम ठाठ ॥१॥

तवसों यह अभिलाष थी भाषा होय मनोग ।

अवै मिल्यो सब जोग तब भयौ सुधारस भोग ॥२॥

मनहरन ३१

काशीजी में काशीनाथ मूलचंदनंतराम,

नन्हूजी गुलाबचंद प्रेरक प्रमानिये ।

तहां धर्मचंदनंद शिष्य सुखलालजी को,

बृंदावन अग्रवाल गोयलगोती ठानिये ॥

ताने रचे पाठ निज पर परमारथ को

सज्जन सो इहां यह वीनती वखानिये ॥

हीनाधिकशोधि शुद्ध कीजिये प्रमोद धारि

बालबुद्ध जानिकें दयाल भाव आनिये ॥

दोहा-दख तख गुनकेवलसु सम्मत विक्रमवान ।

माह धवल पांचैं नवल पूरन परम निधान ॥ १ ॥

जो पूजै इस पाठसों श्रीजिन पद लवलाय ।

मंगल मोद अनेक सुख सो भवि बहु विधिपाय ॥ २ ॥

जिन पूजा फलको सकल को विधि कहै बनाय ।

एक दखसों पूजिके बहुजन सुरपुर पाय ॥ ३ ॥

ती.चौ.

३७१

तातें पूजो दरु अरु भाव सहित जिनराय ।
जातें हे भवि तुम लहो सुर सुख शिवपुर राय ॥ ४ ॥
जवलों रवि शशि गगनमें उदै अमंद धराय ।
तवलों यह रचना रहौ निरमल जश सुखदाय ॥
जिनवानी रचना रचत जो कछु सुख उपजाय ।
सो सुख जानैं केवली के जानै कविराय ॥
जै वंतौ जिनराज जो पंच कल्याणक पाय ।
सो इत नितमंगल करो मन वांछित पददाय ॥

इति श्री तीसचौवीसी पूजा भाषा होने का कारन करता देश कुल सेली
सहाई फल मंगल संपूर्ण वरनन समाप्तम् ।

शिव भूयात् ।

पू.

जजन पियन विनशाय, विजयैगवत संत जिन ॥६॥

ॐ ह्रीं नमोऽय नमो निर्माणि ।

पद्माकर जिनराय पद्माकर तसुदास घर ।

पूजन पिपति पत्न्याय, विजयैगवत संतजिन ॥७॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय नमो निर्माणि ।

उदयनंद जिनराय, आनंद मिथु वदावर्दी ।

जजते दुग्गि नशाय, विजयैगवत संत जिन ॥८॥

ॐ ह्रीं उदयनंदाय नमो निर्माणि ।

रत्नम इंदु जिनराय, रत्नम इंदुनम दुति धरें ।

पूजन दागि जाय, विजयैगवत संत जिन ॥९॥

ॐ ह्रीं रत्नम इंदुनाय नमो निर्माणि ।

श्रीरामान्द शिवराय, भजन मिळन चिंतिन अग्य ।

ती.चौ.

१२१

पूजत वांछित दाय विजयैरावत संत जिन ॥१०॥

ॐ ही कृपालाय अर्घ्य निर्वपामि ।

लोकालोक लखाय, प्रोष्ठिल केवलज्ञान में ।

जजत जगत सुखदाय, विजयैरावत संत जिन ॥११॥

ॐ ही प्रीष्ठिलायार्घ्य निर्वपामि ।

प्रगट सिद्ध पददाय, सिद्धेसुर सिवतिय रमन ।

पूजत गनफन पाय, विजयैरावत संतजिन ॥१२॥

ॐ ही सिद्धेसुराय अर्घ्य निर्वपामि ।

वचपियूष सरशाय अमृत इंदु जिनराय तें ।

जजत परम पद, पाय विजयैरावत संत जिन ॥१३॥

ॐ हीं अमृतइंदुजिनाय अर्घ्य निर्वपामि ।

स्वामिनाथ जिनराय सुगत देत शिव हेत नित ।

पू.

१२१

पूजत मनवचक्राय, विजयेगवत संत जिन ॥१४॥

ॐ श्री ग्यामिने नमो निवेदामि ।

मेनिन्यांग जगराय शिवसाधन हेतु हैं ।

पूजत वांछित दाय विजयेगवत संत जिन ॥१५॥

ॐ श्री मेनिन्यांग जगो निवेदामि ।

नम्य अग्य नुभदाय, श्री नम्याय सुगुननिध ।

पूजत हों शिन्नाय विजयेगवत संत जिन ॥१६॥

ॐ श्री नम्यांग जगो निवेदामि ।

आनद धन सपाय मेघनंद जिन विजय धुज ।

पूजत भूजत भवभाग विजयेगवत संत जिन ॥१७॥

ॐ श्री मेघनंद जगो निवेदामि ।

संदकेश जिनगय केशल्योचि आनंद धर ।

पूजत पाप पलाय विजयेगवत संत जिन ॥१८॥

ॐ श्री संदकेश जगो निवेदामि ।

ती. चौ.

१२३

हरिहर प्रीत उपाय हरि जिन पदपंकज जजत ।
पूजत विघन विलाय विजयैरावत संत जिन ॥१९॥

ॐ ह्रीं हरिजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

जै अधिष्ट जिनराय शिष्ट इष्ट दातार वर ।
पूजत अरघ चढाय विजयैरावत संत जिन ॥२०॥

ॐ ह्रीं अधिष्ठाय अर्घं निर्वपामि ।

शांतिक सब सुखदाय जोगारूढ निपुनमती ।
जजों जुगल तमुपाय विजयैरावत संत जिन ॥२१॥

ॐ ह्रीं शांतिकाय अर्घं निर्वपामि ।

आनंद संपति दाय नंद स्वामि भवि वृंदकों ।
पूजत पाप पलाय विजयैरावत संत जिन ॥२२॥

ॐ ह्रीं नंदस्वामिने अर्घं निर्वपामि ।

पू.

१२३

श्री. श्री.

१२४

त्रिभुवनपति शिरनाय कुंद पार्श्व नित सेवहीं ।

जजन चगन उमगाय विजयेरावत संत जिन ॥ २३ ॥

ॐ श्री गंगाधाराय नमः निर्तापि ।

रुचि उर अधिक उपाय देव विगेचनकों भजों ।

वियन हरन सुपदाय, विजयेरावत संत जिन ॥ २४ ॥

ॐ श्री विगेचनाय नमः निर्तापि ।

नमो गायदानकुंद—

सजे वसुदर्य पुनीतपुनीत । वजे सब साज सुनीत सुनीत ।

जजों उर आनंद पाय सुपाय । विजेगिर उत्तर भाय सुधाय ॥ २५ ॥

ॐ श्री विजे उत्तरभायसमाननतुर्गिनिविनयः नमः ।

अथ जयमान्या ।

वैदिक गुरु (नाय ३२)

जैजै जिनेश अनुगम विनेश भूगतम निवेश नाशन अणेश ।

सेवत सुरेश वेवत गनेश महिमा महेश कारन कलेश ॥
गुन अतुल भेश मुनि भजत शेश शिववल्लभेश हरि अरि प्रवेश ।
हम शरन देश आये जगेश-भवसिंधुते समुद्धर रमेश ॥१॥

चौपाई छंद—

जै जिनराय अपश्चिम स्वामी । पुष्पदंत जैजै शिवगामी ॥
जै अरिहंत सत जन ध्यावै । देव सु चारित चित हरषावै ॥२॥
सिद्धानंद सुखंद जिनिंदा । जैजै नंदग आनंद कंदा ॥
जै पदमेश परमपद दाता । उदै नंद जै जगविख्याता ॥३॥
जै रुक्मेदु इंदु दुतिधारी । जै कृपाल करुना विस्तारी ॥
प्रेष्ठिलदेव परम वैरागी । जै सिद्धेश्वर शमता पागी ॥४॥
अमृतदेव ज्ञानामृत पूरे । जै स्वामी जिहि भव भै चूरे ॥
भेनिलांग अनंग मद गंजन । जै सरवारथ जन मन रंजन ॥५॥
मेघनंद आनंद जल पूरन । नंदकेश जिन अमृतम चूरन ।
जै हरि देव जजत हरि पादं । जै अधिष्ठ जिन कृतमरजाद ॥६॥

जैजै शान्ति कृपा ॥ नंद म्यामी मम रिपत करैया ॥
 कुद पार्थ जस शशि समलोक ॥ देव विरोचन मोचन जोरुं ॥७॥
 प पडरीश ईश सुखसागर ॥ वरनमान जस जगत उजागर ॥
 सुषिरत सुरनर हिसर नागर ॥ गावन जस नाचन रससागर ॥८॥
 द्विम द्विम द्विम द्विम मांदल पाजै ॥ द्रम द्रम द्रम नुँक पग छाजै ॥
 कटकिकिनी कितिनितिनितिकुजै ॥ पग नृपूर क्षितिनितिनिति गुंजै ॥९॥
 पट पट पट पाटन पुनि है है ॥ धुँगुन धुमान गत धेई धेई मो है ॥
 दट दट भर पट नाट नटनै ॥ मधुर मधुर सुर सुजस रटनै ॥१०॥
 डन समान गुन भगत करै हैं ॥ भर भर जनि कटक करै हैं ॥
 दम दंदन पद गुन कर जोरी ॥ दरो प्रन भर बाग मारी ॥११॥
 पग जैजै गुनगुंदर भक्त धुंधर भजन गुंदर भगतभग ॥

हम जगत गुंदर मम उरंदर भक्तमंदर भानुपग ॥ १२॥

भुजंगप्रयात छंद ।

जजै उत्तरैरावतें वर्तमानं । विजै मेरुके जे सुधी बुद्धिवानं ।
लहै ते इहां सौख्य इन्द्रीजनीत । अतिंद्रि लहै फेरि होवें निचीतं ।
इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजैमेरुऐरावतवर्तमान चौबीशीपूजा समाप्ता ।

अथ विजैमेरुऐरावतातीत पूजा लिख्यते ।

स्थापना छंद नंदि श्वराष्टक भाषाका--

गिरि विजय मुर उत्तर सार ऐरावत सो है ।

तित तीत जिनेश उदार सुरनर मन मोहै ॥

थापौं उर प्रीत लगाय पूजन हेत सही ।

प्रभु आपु विराजा आय दायक मुक्तिमही ॥१॥

ॐ ही धातुकी द्वीप-विजयमेरु ऐरावतातीत जिन-अत्रावतर अवतर संमौ-
पद आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं धातुह्रीं गिरविजयमेकं गेरावतातीन जिन । अत्र तिष्ठतिष्ठताऽऽऽ न्यापनं
ॐ ह्रीं धातुह्रीं गिर विजयमेकं गेरावतातीन जिन अत्र मम सखितिनो भव
मा तद स्थाण ।

अष्टाष्टक ।

वेदं द्रष्टुं नाथा ३२ ।

सुरसरितवार प्राशुक अपार भरि हेम भार धारा निकार ।
हे जग अधार जिनवर उधार सुधिल सवार मल कर्म टार ॥
गिर विजे धार उत्तर सिंगार तित तीन चारि अरु बीस सार ।
पुत्रों निहार प्रभु मो अवार मंसार सार्वे तार तार ॥

ॐ ह्रीं धातुह्रीं गिरविजयमेकं गेरावतातीन जिनमेकं अत्र निर्णयामि ।
कर पूमार शीतल निहार चन्दन उदार घमिलेन सार ।
पुत्रों प्रवार जिनगुन अगार भवताप हार सुगद अपार ॥ गि०
ॐ ह्रीं धातुह्रीं गिरविजयमेकं गेरावतातीन जिनमेकं अत्र निर्णयामि ।
अनन पिल्ल इतन प्रतन अभिलन अत्र सुपपशकार ।

तीचौ.

१२९

तसु पुंजरक्ष सुंखभुजस्वक्ष कलिकुंजनक्ष शिवगक्षसार ॥ गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुल ।

यह मदनशूल सत्र जगतभूल कारक अकूल तुमकिय निमूल ।
तातें सुफूल धरिहों अधूल प्रभुदे अतूल शुभ शील भूल ॥ गि०

ॐ हों धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प ।

खाजे रसाल मोदक विशाल भरि कनक थाल प्राशुक सुहाल ।
सो हेदयाल तुमनिकट हाल धरि नमतभाल आकुलनिकाल गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि

दाहक अमंद दीपत सुखंद सो जजि जिनिंद जगवंद चंद ।
भूमतमनिकंद केवलदिनंद प्रगटै अफंद सुखवंद नंद ॥ गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप ।

दशगंध आन सौरभ अमान खेवत प्रमान वसुकरम हान ।
दिशिदिशि उड़ान मनु मेघजान निरततसयान केकीमुजान ॥ गि०

ॐ श्री पातुर्हीर्षादिभिर्देवैर्गोमातातीतनुर्गिनिजिनेभ्यो नमः निर्वापामि ।
 फलपत्रमिष्टं स्वशिष्टं इष्टं मोलं वणिष्टं पूजो जगिष्ट ।
 हनि अमृष्टं शिव दे सुपुष्टं हेविजदं दिष्टं दायकं अभिष्टागिष्ट ।
 ॐ श्री पातुर्हीर्षादिभिर्देवैर्गोमातातीतनुर्गिनिजिनेभ्यः कृतं निर्वापामि ।
 जलकल मित्वाय वसु अंगनाय वाजनवजाय सुख सुजगगाय ।
 मन्त्र श्रीजिनाय मनवचनकाय वञ्चितल्लहाय भवभय नशाय ।
 गिरि विजयथा उत्तर सिंगा नितर्तत चाग्रु वीसमार ॥
 पूजो निहार प्रभुमो अवार संसारऽपामर्तं तार तार ॥

ॐ श्री पातुर्हीर्षादिभिर्देवैर्गोमातातीतनुर्गिनिजिनेभ्यो नमः निर्वापामि

अथ प्रत्येकार्थ ।

उपेयार्थं नाम २३

हमकटो महागिरि जानो । भद्रक वज्र वज्रजिन मानो ।
 दक्षिण दीप गिरिविजय सुदजोपेयवन अतीत जिन पूजो ॥१॥

ती.चौ.

१३१

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

उदय विशुद्ध सदा जिन धारे । उदयदत्ता जिनवर अविकारे ॥ दु० ऐ०

ॐ ह्रीं उदयदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सूरवीरवर सूर्य जिनंदा । भजों भविक मोदनगन चंदा । दु० ऐ० ।

ॐ ह्रीं सूर्याय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुरुषोत्तम नित सेवत जाकों । पुरुषोत्तम जिनसदन सुधाको । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

भविकवृदकों शरण सहाई । शरणस्वामि त्रिभुवन के राई । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं शरणाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

भवि समोध दायक शिवधामं । श्री अवबोध करें परनामं । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं अवबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

परम पराक्रम क्रांति धरैया । निर्घटकजिन विपति हरैया । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं निर्घटकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

पू.

१३१

अगम पराक्रम जामें मोहै । सो विक्रमजिन जनमन मोहै ॥ दु० गे०

ॐ श्री विष्णवे नमः ॥२॥

हगिहर इंद चंद पद वंदें । सो हरिंद केवल अभिनंदें ॥ दु० गे०

ॐ श्री हरीं नमः ॥३॥

मनि शिवपथ पंथी पायेयं । पश्चिमिजिन मुनिगन ज्येयादु० गे०

ॐ श्री परमेश्वर नमः ॥४॥

भविजनकों पद दे निग्यानं । जिन निखान मूर भगवानां ॥ दु० गे०

ॐ श्री नारायण नमः ॥५॥

दोनों धर्मबुगधर स्वामी । धर्महेतु पद परम नमामी ॥ दु० गे०

ॐ श्री परमेश्वर नमः ॥६॥

चतुर्गनन चहुँद बखान । देव चतुर्मुख मंजय माने ॥ दु० गे०

ॐ श्री चतुर्मुख नमः ॥७॥

इंद नरिंद चंद पद वंदें । गुरुनइंद जन बुंद अनंदें ॥ दु० गे०

ॐ ह्रीं सुकृतेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

श्रुतिअंबुद्धि भविजन श्रुतिद्वारे । देव श्रुतंबुद्धिअंबुद्धि तारे ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं श्रुतांबुद्ध्याये अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

आदितसम तनविमल दिपै है । विमलादितजिन करम खिपै है ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं विमलादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

देव देवपति नमत अनेकं । देवदेवजिन नमों चिदेकं ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं देवदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

धरनी धर धरनेंद्र सुरेंद्र । सेवत नित धरनेंद्र जिनेंद्र ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं धरनेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

भविजन भव जलतें उद्धारे । तीरथ नाथ नमों अविकारे ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं तीर्थनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

परमानंद निरंतर भोगी । उदयानंद शुद्ध उपयोगी ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ह्रीं उदयानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सखाग्र्य पद मिद्ध प्रदाना । सखाग्र्य जिन त्रिभुवन ताता ॥ दु० ॥

ॐ ह्रीं नमोऽस्तुते अरे निर्गतानि ॥२१॥

धर्मिक कह धनधान्य बढ़ावै । धार्मिक जिन जन मुक्त बढ़ावै ॥ दु० ॥

ॐ ह्रीं धार्मिक जने निर्गतानि ॥२२॥

गग क्षेत्र कह भवि शिर नापे । क्षेत्रम्बामि सो प्रीत बढ़ावै ॥ दु० ॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रम्बामिने अरे निर्गतानि ॥२३॥

इंद्र चंद्र दिन इंद्र भोजे हैं । जिन दृग्निंद्र सुमोक्ष सजे हैं ।

इतियही गिरि विजय मृदुजो । ऐगवन अतीत जिन पूजो ॥

ॐ ह्रीं गिरिजय जने निर्गतानि ॥२४॥

ऐग-पुमन अग्न वनाय वर पूजो उग्रवर ध्यान ।

विजयैगवन तीत जिन नमो जोगि जुग पान ॥२५॥

ॐ ह्रीं विजयैगवन तीत जिन नमो जोगि जुग पान ॥२५॥

ती. चौ.

१३५

अथ जयमाला ।

घत्तानंद छंद ।

पू.

अविचल थल जुक्ता, शिवसुख भुक्ता, उक्तिनिरुक्ता, मुक्तिधरा ।
भूमतम शतखंडा, आनंदमंडा, जै जै जै शिव रमानि वरा ॥१॥

कामिनी मोहन छंद—

जयति वज्रेश वज्रेश पूजत चरन ।

जय उदय दत्त सुख उदय भविजन करन ॥

जयति जिनसूर्य भविजलज के सूर है ।

जयति पुरुषोत्तमं जानरस पूर है ॥२॥

शरन स्वामी त्रिजगजीव कों शरन हैं ।

देव अवबोध बुधि विसद विस्तरन हैं ॥

जयति विक्रम करम शत्रु तुम चूरियौ ।

जयति निरघंट तुम सामरस पूरियौ ॥३॥

जजत हरिहृद हरिहृद पद आइकैं ।

१३५

भजत परश्वरितहि विबुधगन ध्यायकैं ॥
 देत निरवान निरवान निज दामकौ ।
 रमके हेत जिन परि भवि मासकौ ॥४॥
 चतुरमुख देव नित चतुर मुख सेवते ।
 सकृत् जिनराज गुन सकृत् जन सेवते ॥
 देव हतिमिथु भविमिथुनै तारही ।
 रिमर आदिन्य मग मुकत विम्वारही ॥५॥
 देव प्रभकौ चतुरमेव मूर सेवते ।
 देव परनेत्र गुन सुमुन मन सेवते ॥
 नाथ तारथ जगत जालनै कारियौ ।
 उदय आनंद पानंद मोहि शरियौ ॥६॥
 जगति सर्वार्थे सर्वार्थ दातार हौ ।
 धार्मिकं देव जिन परम आधार हौ ॥
 देव स्वामी मुकत ऐश्व दायक महा ।

देव हरिचंद पद शरन हमने गहा ॥७॥
 ए चतुर बीस जगदीश नित वंदिये ।
 विजय ऐरावतें तीन अभिनंदियै ॥
 तरन तारन हरनै करम जगजन्त कै ।
 गुन अमल अचल अनुपम लसै संतकै ॥८॥
 ज्ञान द्विग शर्म धीरज विशद लसत हैं ।
 सो परमदेव मो मन सदा वसत है ॥
 अरज कर जोरि जुग करहुं सुन लीजिये ।
 धरम के नदकौं परम मुख दीजिये ॥९॥
 गता-जैजै करुनाकर मोह तिमरहर ज्ञानदिवाकर उदयकरा ।
 संशयतम भंजन मुनिमन कंजन रंजन जै जै विघन हरा ।
 अथाशीर्वादः । चावैले छद ।
 जो पूजे जिनराय पाय जुग दरब भाव विधि मोदधरे ।
 धातु दीप गिरि विजयैरावत तीत जगत जन भीत हरे ॥

सो पावे धन धान्य पुत्र प्रिय मित्र कलत्र प्रवीन वरे ।

सुगति होय नरूपति हकें भगवत्क धरि मुक्त वरे ॥

श्री गुरुभ्यो नमः शिवाय नमः ॥

— १३८ —

अथ श्रीविश्वनाथजीन पूजा प्रारब्धते

नंदीश्वरप्रद हो पाव ।

वर धातुकी दीप विजाल फूव मेरु कहा ।

तिन पैगवन सुरमाल गोमा देत महा ।

तहं भारी जिन चौराज मव विधि लायक हो ।

धातु हो मो जगदीश दाम महायक हो ॥

१ श्री विष्णुजीन श्रीगुरुभ्यो नमः शिवाय नमः ॥

२ श्री विष्णुजीन श्रीगुरुभ्यो नमः शिवाय नमः ॥

३ श्री विष्णुजीन श्रीगुरुभ्यो नमः शिवाय नमः ॥

अथाष्टकं ।

चाल सुन्दरी छन्द ।

पृ

परम पावन वारि सुधारिये । जजत हों मलकर्म निवारिये ।
दुतिय दीप विजै अइरावते । जिन भविष्य जजों मनभावते ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

कदलिनंदन चंदन लेइयै । जजतु हों भवताप उछेइयै । दु० ।

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं ।

सुरभि तंदुल मंदुल लाइयै । निकट धारि अखै पद पाइये ॥ दु० ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुलं निर्वपामि ।

समरशूल निमूलन कारने । सुभग फूल धरों मदटारने ॥ दु०

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

चरुशाल मनोहर लैधरों । सकल आकुलकल्मषकों हगें ।
दुतिय दीप विजैऐरावते । जिन भविष्य जजों मनभावते ॥

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेश्वो वरु निरंतामि ।
तिभिरनाशरु दीपक भारती कस्त हों प्रभु सन्मुख आरती॥दु०

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेश्वो दीप निरंतामि ।
अगर आदि दशंग सुधूपजी । हवत कर्म जे सु विरूपजी॥दु०

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेश्वो वरु निरंतामि ।
फल सु पक मनोग रमाल हें । जजन वाञ्छित देत विशाल हें॥दु०।

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेश्वः कस्त निरंतामि ।
जल फलादिको मजि अर्थ हे । जजन आनंद होत अनर्थ हे॥
दुनिय दीप विजे एगवते । जिन भविष्य जजो मन भावते ॥

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेश्वो वरु निरंतामि ।

अथ प्रत्येकार्थ ।

ॐ श्री विजयगतभागीनपुत्रिगतिजिनेश्वः कस्त निरंतामि ।

श्री विजयगत आनन गोभं, गग वितीत तिन्हें नित थोक ।

धातु वज्रै गिरि उत्तर जाई । भवियदेव जजौं शिरनाई ॥

ॐ ह्री वीरनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

देव विजै अरि जीत विराजै । सुंदर श्री उर अंतर छाजै ॥ धा०

ॐ ह्रीं विजयाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

सत्यप्रभु बच सत्य वखानैं । सत्य प्रभाजुत भौतम भानैं ॥ धा०

ॐ ह्री सत्यप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

विष्टर जासु मृगेंद्र लसै है । देव मृगेन्द्र कुकर्म नशै है ॥ धा०

ॐ ह्रीं मृगेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

चिंतित लाभ सुदेत जिनिदा । देव सुचिंतमनी सुखकदा ॥ धा०

ॐ ह्री चिंतामणिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

शोक समूह विनाश करै हैं । आनंद थोक अशोक भरै हैं ॥ धा०

ॐ ह्री अशोकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

कर्म गयंग मृगेन्द्र समानं । सो द्विमृगेंद्र नमों भगवानं ॥ धा०

ॐ श्री विष्णवे नमः ॥७॥

नष्ट कियो अरि अष्ट प्रकाश । श्री उपवाजिक परम उदास ॥धा०

ॐ श्री उपवाजिक नमः ॥८॥

चंद्रमान सु आनन सो हैं । पद्मसुचंद्र जगज्जन मो है ॥धा०

ॐ श्री पद्मसुचंद्र नमः ॥९॥

भवक मोदनि इंदु समान । बोधक इंदु नमों धरि ध्यान ॥धा०

ॐ श्री बोधक नमः ॥१०॥

११ वीं श्लोक—

चिता उतपलकों हैं पाला । चिता हिम श्री जिनगुनमाला ।

धानु विजै गिरि उत्तर आई । माविदेव जज्ञों जिग्नाई ॥११॥

ॐ श्री चिता नमः ॥११॥

माहम उर उन्माद धरें हैं । उन्मादक जिन मुक्तवैं हैं ॥धानु विजै०

ॐ श्री उन्मादक नमः ॥१२॥

शिव सुख सहित अपासिक देवा । चतुनिकाय करें सुरसेवा ॥ धा०

ॐ ह्री अपासकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

करम ज्वाल कँहँ मेघसमाना । जै जलदेव जगत मनमाना ॥ धा०

ॐ ह्री जलदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

अरिको धातन जाकौं लागै । नारिकदेव भजें भय भागै ॥ धा०

ॐ ह्री नारिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

शांति सुधारस मेघ जिनिंदा । जै अनिंद्य जिन आनंदकंदा । धा०

ॐ ह्री अनिंद्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

नाग इंद्र आदिक सुर सेवै । नाग इंद्र जिन मेटि कुंटवै ॥ धा०

ॐ ह्री नागेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

नीलोत्पल सम श्याम विराजै । नीलोत्पल जिन समता साजै ॥ धा०

ॐ ह्री नीलोत्पलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

मेरु समान अकंप सरूप । अप्रकंप करुणा रसे कूप ॥ धा०

ॐ श्री भगवताय नमः निर्वाणि ॥१६॥

हित कारज में पूजन स्वामी । नमों पुणेहित जिन शिवगामी ॥धा०

ॐ श्री पुणेहिताय नमः निर्वाणि ॥१७॥

पापताप भव भेदन हारे । भिदकनाथ नमों अतिकारे ॥धा०

ॐ श्री भिदकनाथ नमः निर्वाणि ॥१८॥

सदा भगतके पास विगजें । पार्थनाथ भजतें भय भाजें ॥धा०

ॐ श्री पार्थनाथाय नमः निर्वाणि ॥१९॥

चव प्रवृत्त तज निर्वच स्वामी । दिव्य ध्वनि उपदेशक नामी ॥धा०

ॐ श्री निर्वचस्वामी नमः निर्वाणि ॥२०॥

गेष दोष तजि मग प्रकाशे । नाथ विशेष मोक्ष सुखगशे ॥

धातु विजे गिरि उत्त । जाई । भानिय देव जजों शिगनाई ॥२१॥

ॐ श्री शिगनाथाय नमः निर्वाणि ॥२२॥

ॐ—आठ दरपके अग्रमों पजों चमन जिनेश ।

विजयैरावत भावि तव नाशत सकल कलेश ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।

अथ जयमालं ।

धत्ता—परपरनति चूरन समता पूरन जै जिनराज अनंतगुनी ।

नित सुरजश जंपत अंत कुकंपत सेवत संपत होत धनी ॥१॥

चौपाई छंद ।

वीर जिनेश नमैं धरि धीरं । विजै देत नित विजै गहीरं ॥

सत्य पद्म जिन सत्य प्रभावी । सदा मृगेन्द्र सुरेन्द्र जजावी ॥२॥

चिन्तामनि चितचितित पूरैं । सदा अशोक शोक चक चूरैं ॥

मृगपति सदा नमैं दुमृगेन्द्रं । उपवाशिक जै जैति जिनेदं ॥३॥

पद्मचद मुनि कैरव चदा । बोधकेदु भवि कमल दिनदा ॥

चिंताहिम मम आरति नाशैं । उत्साहक उत्साह प्रकाशैं ॥४॥

हे अपाशि जिन हरि भवपाशी । सदा देवजल जिनअधिनाशी ॥

नारक गति नारक जिन भंजै । जगत पूज अनिद मनरंजै ॥५॥

नाम इह नामिदृदि ध्याये ॥ नीलोत्पल जिन दुति दरजाये ॥
 अमकं पद देत अकपों । शिव हित हिये पुगोहित जेपों ॥६॥
 भेदक कर्म भजो जिन भिदक । पार्थनाथ जिन मन आनदक ॥
 निरीक्षा गुनवचन अगोचर । ओविरोंप जिय पांग करेनर ॥७॥
 न नयवीश भविष्यत स्वामी । विजयमरु गेरावन नामी ॥
 गनवर असनि पान पर ध्याये ॥ गुनसागरको पार न पाये ॥८॥
 निनमों अगल करों कर जोरी । हरो मय भयवाया मोरी ॥
 आठ कर्म मोहि घेरि रहें हैं । इन मग दुःख अनंत महे हैं ॥९॥
 मो दुःख दूति करों जिन स्वामी । बारवार पदपदम नमामी ॥
 गती अगल दिण पर भारी । पुनरावनकों मयदधि नारी ॥१०॥
 जै जै जिनभानं, भूमतमहानं, भविरुमलानं, मोदकरं ।

शिवमग परराजक, जै जमनाजक, केवल्योय अगाधधरा ॥ नगरी
 गोविंद मग ॥

भक्तिज जिनेश गेरावन थान । विज गिरिके सुजने धरि ध्यान ।

मिले मनवञ्छित आनंद ताहि । अनुक्रम सों शिवधाम लहाहि ॥

इत्याशीर्वादः

इति श्रीविजैदेरुपेरावतभावीचौबीशीपूजा समाप्ता ।

—*o*—

अथ श्रीधातुकीदीप अचलमेरु संबंधी पूजा ।

(प्रथम चारि विदेहनिके चारि विरहमान पूजा प्रारम्भे)

दुतविलवित तथ्य सुन्दरी लुंद ।

दुतिय दीप सुधातुकि सोहनों, अचलमेरु तहा मनमोहनों ।

तसु विदेहनिमें जिन चार हैं, तिनहिं थापत आपत टार हैं ॥

ॐ ही अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर
चंद्रानन अत्रावतर अवतर सवौपद् आह्वानन ।

ॐ ही अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र धर
चंद्रानन अत्र तिष्ठ ठ.ठः स्थापन ।

ॐ श्रीं नमोऽस्तुतेऽस्मिन्निवापिदमान निन सुगम विद्यालक्ष्मीं यत्र यत्र
चंद्रानन तत्र मम तन्निश्चिंतो भव भव यद् व्यादाः ।

अथवा एक चाल टप्पा श्री ।

प्रभु पूजों हो चरना । त्रितिय मेरु सुविदेह में ॥ प्रभू ० ॥ ॥ टिका ॥
उज्जल जल भरि कनक भृगमें धाग मनमुख करना ।

जनम गन मल धोव तुरित भव, सागर पार उतरना ।

प्रभू पूजों हो चरना । तृतीय मेरु सुविदेह में ॥ प्रभू पूजो हो ० ॥

ॐ श्रीं नमोऽस्तुतेऽस्मिन्निवापिदमान निन सुगम विद्यालक्ष्मीं यत्र यत्र
चंद्रानन तन्निश्चिंतो भव भव यद् व्यादाः ।

हेमर चंदन केदली नंदन कुंकुम धमिकर धरना ।

जगत जिनेसुर चरन कमल जुग भवाताप पहिरना ॥ प्रभू ॥

ॐ श्रीं नमोऽस्तुतेऽस्मिन्निवापिदमान निन सुगम विद्यालक्ष्मीं यत्र यत्र
चंद्रानन तन्निश्चिंतो भव भव यद् व्यादाः ।

तंदुल अमल निशाकर से शुभ सुवरन थारी भरना ।

पुंज धरत जिनराज चरन द्विग तुरंत अखे सुख वरना ॥प्रभू॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-
धर चद्राननाय तदुलं निर्वपामि ।

कमल केतुकी वेलि चमेली सुमन सुमन सम वरना ।

समरशूल निरमूल करनकों जजों जगत गुरु चरना ॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशाल कीर्ति वज्र-
धर चद्राननाय पुंजं निर्वपामि ।

नव्य गव्य पक्वान विविध मनमोदन मोदक करना ।

अंजुलि मंजुलि जोर जजन पद क्षुधारोग निरवरना ॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-
धर चद्राननाय चरुं निर्वपामि ।

दीपक जोत उद्योत होत तम खोत धूम विनु धरना ।

तामों जजन जगतिरवि तुमपद तिमिर मोह खंफना ॥प्रभु॥

ॐ श्रीं भक्त्येकदिग्गमं स्थितिदयमान जिन सख्यभ-विशालकीर्ति वत्त-
धर चराननाय दीप निर्मापि ।

धूप दजंग सुगंधित लेकर सेवत सनमुख करना ।

आठकाठ अरिफूर जेरं मो धूम घूम विम्वरना ॥प्रभु॥

ॐ श्रीं भक्त्येकदिग्गमं स्थितिदयमान जिन सख्यभ-विशालकीर्ति वत्त-
धर चराननाय धूप निर्मापि ।

आम्र कामरु अनार मार फल भार ललित शुचि वरना ।

तासों जजन विघन परि हरिकुल वृष्टि मुक्तफल धरना ॥प्रभु॥

ॐ श्रीं भक्त्येकदिग्गमं स्थितिदयमान जिन सख्यभ-विशालकीर्ति वत्त-
धर चराननाय फल निर्मापि ।

जलफल सरुल मिलाय मनोहर अरव कान्त गुन वरना ।

पूजत चमन जुगल जिनपदकं पूजत वंदित करना ॥

प्रभु पूजों हो चरना, तृतीय मरुसों विदेहे में । प्रभू पूजोहो॥
 ॐ ह्रीं अचलमेखविदेहस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-
 धर चंद्रानमाय अर्घ्य निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्य ।

चाल नंदीश्वराष्टक की

सूरप्रभ मूरज चिन्ह शिवमगं दर्शावें ।

भद्रातें जनम जु लिन्ह विजयपुरी गावें ॥

नृप नागराज महाराज सीतोत्तर जानो ।

तृतियाचल अचल समान पूजत सुखमानो ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपपश्चिममेखद्वंद्वमंडलमंडितविदेहक्षेत्रस्थ चक्रवर्त्यादि
 सेवित समवशरणादिविभूतिसयुक्त श्रीसूरप्रभाय अर्घ्य ।

सीता दिग दक्खिन मान अचलाचल सोहै ।

सुविशाल कीर्त भगवान चंद चिहन मोहै ।

नर पुंडरीक पुर जान गय विजापति हैं ।

विजया जननी सुखमान पूजत जापति हैं ॥

ॐ ह्रीं धातृसीतीप पश्चिममंगलीतादक्षिणे पदमाश्रमं मृगमदित्यकृत्यादि
नेत्रमन्त्रमाश्रयादिभिर्भक्तिगजमानविधायकान्तो अर्च ॥२॥

जिन वज्र धौंश महेश जंगल निहल गजे ।

मीनोदा दक्षिण देश अचलाचल आज्ञ ॥

नगरीय सुशीमा मानु सरस्वति मनमो है ।

पदमाश्रय नृप मम आनु पूजत सुख हो है ॥

ॐ ह्रीं धातृसीतीपवनयोग्यमीनोदादक्षिणभागे सुशीमानगरमंदिता
तस्यां भक्तिनेत्रकनकनगरादिभ्यो नापेदं मन्त्रिणीस्यधरेणायनमः त्रि ॥३॥

चंद्रानन आनन चंद्र वृषभ भुजा धारी ।

पदमावति मान अमंद अचलाचल भारी ॥

सीतोदा उत्तर धाम पुंडरीक नीमें ।

बल्मीक पिता अभिराम पदमावति जी में ।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपअचलमेरुसीतोदाउत्तरभागे पट्स्वडमंडलमंडितचक्रवर्त्यादि-
सेव्यमानसमवशरणादिशोभाविराजमानविहरमानश्रीचंद्राननाय अर्घ्य॥४॥

चहुसंग सहित वृषभाप, करत विहार सही ।

गनधर सेवत अभिलाष, पावत मोष मही ॥

पद पूरन अरघ चढ़ाय सेवत हौं स्वामी ।

मोहि आतमज्ञान बढ़ाय कीजे शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपअचलमेरुविदेहसस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ विशाल
कीर्ति वज्रधर चद्राननाय पूर्णार्घ्य ॥

अथ जैमालं ॥

वत्ता-जै चारि जिनंदा आनंदकंदा विहरमानं दुखदंद हरा

समवश्रुत स्वामी त्रिभुवन नामी विश्रामी सुविदेह वरा ।

मोतीदान छंद—

ती.ती.
१५४

५.

नमो जिन सूर प्रभु अभिगम । जगज्जन कंजनिहों दिनस्वामि ।
विनाक सुकीर्त जग सरवज । गनेन्द्र जपे गुन गावन तज ॥२॥
मग जग यज्ञ नरेज जिनेश । कुरुष कुलानल वज्र समेश ।
जगो जिनचंद्र सु आनंद कंद । सुमन्यकमोद प्रमोदन चंद ॥ ३ ॥
ममरश्चुत मजुत राजत एव । रिबुत अनूप लजै स्वयमेव ॥
सुरेश मदा पद सेगत आन । गनेश करे जह तर ववान ॥४॥
नरेज अशेष नमो कर्णार । अनेक सुभज्य सुनें पुनि मार ।
अनादि मित्रात मित्राग नुगत । रहे केर करन जान अनंत ॥५॥
केह पूत आवकहो गति सुष्ट । लखे सुरसंपति पूरन पुष्ट ॥
केह सुरसुंदर भक्ति करंत । बजारत मान समाज लखत ॥६॥
नये केह भार बसाय पुनीत । यजे पग नृपा अदनुत रीत ॥
जनासनमंजननं जनजोर । करे कदाहि किनि किनिनिनि शौर ॥७॥
नवा नववा अनवा बितवा । नये गत पुगत धुगत पददाय ॥

१५४

ती. चौ.

१५५

द्रिम द्रिमि द्रिमिनाद करै मिरदंग । सुरान्वित चग उपंग अभग ॥८॥

तनननतान महानभनंत । इनादि समाज सजत महंत ॥

समौ श्रुत माहि वन्यौ सुख साज । वनै नहि भाषत सो सख आज ६

हमें यह आश लगी जगदीश । मिलै कव दर्शन हे गुनईश ।

बुलाय समीप सुनौ तुम वैन । लहौ निज आतम ज्ञान सुचैन १०

घचा-जै जै गुन छायक त्रिभुवननायक विघनविनायक बोधमहा

बंदतगननायक नितसुखदायक अव सब लायक-शरणगहा

ॐ ह्रीं अचजमेरुविदेहस्थितविहरमानजिनेंद्रेभ्यो महार्थनिर्वपामी ।

कवित—

सूरप्रभ सु विशालकीर्त जिन वज्र धरेश अगम गुनधाम ।

चंद्रानन ये चार तीर्थपति अचल विदेहनि में विसराम ॥

कबहुक करहिं विहार कवहुं थित समवशस्त शोभित अभिराम

तिनहिं जजत मनवंछित सुखलाहि मुकत होहि तिहि करो प्रनाम

गालि अगंडित उज्जली हो, शशिसम वृत्ति दमकाय ।

पुंज धरत तुम चरन द्विग हो, देह अघेपद गय ॥ सदा ॥

ॐ श्रीं नमःस्येकभक्तार्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो तदुक्तं निर्मायामि ॥३॥

बेल चमेली केतकी हो, सुमन सुमन समलाय ।

तार्ते तुम पद पूजने हो, समर शूल नशिजाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्रीं नमःस्येकभक्तार्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो पुनः निर्मायामि ॥४॥

ताजे ताजे साजके हो, मोहन मोदक लाय ।

नामों तुम पद पूजने हो, क्षुधागेग नशि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्रीं नमःस्येकभक्तार्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो तेषां तेषां निर्मायामि ॥५॥

दीपगजोति सुहायनी हो जगमगात सुरदाय ।

तासों आगनी कल ही हो, तिमिर मोह निशि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्रीं नमःस्येकभक्तार्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीप निर्मायामि ॥६॥

ती.चौ.

१५६

कृष्णागर आदिक दशों हों, गंध सुगंधित लाय ।

धूप उखेवों चरन ढिग हो, अष्ट करम जरि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

मधुर रसीले पावने हो, श्रीफल सुंदर लाय ।

तासों तुम पूजा करत हो सुकत महाफल पाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल चंदन को आदि दे हों आठों द्रव मिलाय ।

सो ले तुम आगे धरों हों संकट कोट नशाय ॥

सदा श्रीजिनवरका, पूजा करों सुखदाय ।

अचलमेरु दच्छिन दिशा हो भरतक्षेत्र द्रशाय ।

वरतमान चौबीस जिनको पूजत सुरपत पाय ॥ सदा श्रीजिन०

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥

पू.

१५९

अथ प्रत्येकार्थ ।

चौपाई ३८—

जगदानंद कंद सुख वृंदा । विश्वचंद जिन आनन चंदा ॥

अचल मेरु भारत सुखदाई । वस्तमान पूजो जश गाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो नित्याय ॥१॥

मकल धरम मारग परगाजे । कपिल देव जमता सुख गजे ।

अचल मेरु भारत सुखदाई । वस्तमान पूजो यश गाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो नित्याय ॥२॥

वृषदागरु वृषभेसुर स्वामी । सुभग जील संजुत शिवगामी । अ०

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो नित्याय ॥३॥

आनमजोनि माहि सब व्यापा प्रियदग्जन जिन विगतकलापा अ०

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो नित्याय ॥४॥

विषय अंग अनंग मदगंजन । व्यावो भविक मोद मन रंजन अ०

ती.चौ.

१६१

ॐ हा चारित्र्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥
चारित रुचिर पात्र अभिरामी । चारित नाथ जिनेस नमामी । अ०

ॐ ही प्रशमस्यामिने अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥
शमदमप्रशमसाहित नितराजै । प्रशमरवामि जमजीति विराजै । अ०

ॐ ही प्रभादित्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥
प्रभादित्य पद तिहुँ जग वंदै । आदत प्रभा जीति आनंदें । अ०

उद पाइता मात्रा १४ ।

जिन मुजकेश पद ध्यावो । मन वांछित आनंद पावो ।
तृतियाचल भारत माहीं । पद पूजो वस्तु आहीं ॥९॥
ॐ ही मुंजकेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

तपसों तन दीपत जाको । जिन पीतवास कहि ताको ॥११॥
ॐ ही पीतवासाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

१६१

नर ईश सुभासु ईशं । नमने नु सुभासिप शशिं ॥ तृतीया ॥

ॐ श्री सुभासिप नमो निरुत्तमि ॥२॥

दृग्मा सुदया कमि भीतो । जिन दयानाथ अपत्नीतो ॥ तृ० ॥

ॐ श्री दयानाथ नमो निरुत्तमि ॥२॥

सु महम्मदगि सप्त काया । सु महम्मदगि जिनमया ॥ तृ० ॥

ॐ श्री महम्मदगि नमो निरुत्तमि ॥२॥

बसुहर्म गयंद मृगिद । जिन मृगनाम सु जिनिंद ॥ तृ० ॥

ॐ श्री बसुहर्म नमो निरुत्तमि ॥२॥

हर ऐवमन हर मोहे । जिन भवमो मन मोहे ॥ तृतीया ॥

ॐ श्री ऐवमन नमो निरुत्तमि ॥२॥

जिन बाहु जयो मुनिगजा । जिनहे अभीनमव हाजा ॥ तृ० ॥

ॐ श्री बाहु नमो निरुत्तमि ॥२॥

नमरश्चन लनी धर्म । श्रीमाल भवोदयि नर्म ॥ तृतीया ॥

ती. चौ.
१६३

ॐ ह्रीं श्रीमालाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तिहुँ जोग हनेसु अजोगी । निज जोगे सुधारस भोगी ॥तृ॥

ॐ ह्रीं अयोगाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

सु अजोगनाथ पद सेवो । सब जोग समग्री लेवो ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं अजोगनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

करिकों हरि जेम विदारें । तिमि काम रिपु मद मोरें ॥तृ०॥

ॐ ह्रीं कामरिपवे अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सब दंभारंभ हरे हैं । शिव हेतारंभ करे हैं ॥तृतीयाचल०॥

ॐ ह्रीं आरभाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जिन धर्मचक्र रथ नेमं । जिन नेम करैं सब खेमं ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

तिहुँ ज्ञान गर्भतें धारी । जिन गर्भ ज्ञान अविकारी ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं गर्भनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

भरभर गगनकुल जलम लोटि। भरभर मर्मगत निरहृदु मोदि १
 सवभर तुम भागन तरंगधोय। भरभर अनुभव विकल्पनिरोध।
 सवभर तावित जन शीलदान। भरभर तुम भगति मिलो मशान १०
 सवभर अगतागम संग लोय। सवभर समाधि जुन मरनजोय।
 यह जाणव हीमो गौदयाल। हरि विपन हरो मगद रजा ॥ १॥
 जे जे हृदनावन मोहनपतहन सकल भव्यजन वीपफरा।
 नदन 'बृंशवन' श्रीन नौ मन हो जिन संपति नदन भग ॥
 जे जे हृदने 'पर' लोमानर गुण' विनिर्वा मगधे निंतावि।
 जे जे मनलाय, अनल भग्न नमन चरन।
 नौ मन वंदित पाव अजगद पदहो लहे ॥

इत्युक्तं ।

श्री. गायत्र्यारंभो गौतमिना च केन ।

—११३३—

अथाचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिपूजा प्रारब्धते ।

तोटकछन्द-

तृतीयाचल भारतभूत जिनं । चौवीश महामुख सिंधु गिनं ।
तिहु थापतु हों इत जोरि करं । प्रभु आय विराजहु पापहरं ॥

ॐ ह्रीं अचलभरतातीतजिन-अत्रायतर अत्र संवोपद् आत्मानर्न स्वाहाः ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतजिन-अत्र मसं संनिहितो भवभव वपद् स्वाहाः ।

चाल प्रभू पूजें रे भाई ।

तुम पद पूजें शिरनाई । जासों पातक जात पलाई ।

अचलमेरु दक्षिण दिशा हो भरततीत जिनराई ॥ तुम० ॥ टेका ॥

हिमवन गिरिगत गंगाजल वर, सुवरन भृंग भराई ।

तासों पूजत चरन कमल जुग, तृषा रोग मिटि जाई । तुमपद० ॥

ॐ श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमो नमः ॥१॥

कदलीनंदन चंदन वावन कुंकुम मंच घसाई ।

विषन ताप निर्याग्न कामन पूजो पद पुनगाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमो नमः ॥२॥

नंदलु आलविशाल नेनि जुम गमक दमक दग्गाई ।

पुंज भान तुम नमन कमल दिग लहन अगेवद गाई ॥ तुम० ॥

ॐ श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमो नमः ॥३॥

नमन सुमन नम सुमन थार मर सुमन नमन सुगादाई ।

नामि तुमपद पदम जजो जिमि ममगल नजिजाई ॥ तुम० ।

ॐ श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमो नमः ॥४॥

नदय गदय मनमोदन मोदक नाने नाजे लाई ।

मो पुन निरुद यो जिमनायक देह निगकुलाई । तुम० ॥

ती. चौ.

१६९

ॐ ह्री अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥२॥

घृत पूरित अथवा कपूरमनि दीपक जोति लगाई ।

आरति करत हरत सब आरत आतम जोति जगाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥३॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन देवदारु सब लाई ।

धूप उखेवतु हों तुम आगे ज्यों वसुकरम जराई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्य शृपं निर्वपामि ॥४॥

आम्रकाम्रक अनार सार फल प्राशुक पक धराई ।

पूजों तुम पदप्रीत लाइके ज्यों वांछित पदथाई ॥ तुमपद०॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फल निर्वपामि ॥५॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर अरघ कियौ उमगाई ।

नाचिराचि शिरनाई समरचों ज्यों अनर्घ पदपाई ।

पू.

१६६

तुम पद पुजो शिखाई जामों पातक जान पलाई ।

अनलमेरु दक्षिण दिशा हो, भगवतीत जिनगई । तुमपदपूजो०

ॐ हो पातकभयनाशानुशितितिनो सो अरे निर्तामि ।

अथ प्रत्येकार्थ ।

जात गरी माएक—

वृषभेश धों वृषमार जानन वस्तु सवे ।

तुनियाचल भग्न धार तीत जजामि अवे ॥१॥

ॐ हो वृषभेश धों निर्तामि ।

प्रिय मित्र सकल जगमीन त्रिभवनकों प्यारे ।

तुनियाचल भग्न अतीत पूजन भवतारे ॥२॥

ॐ हो मित्राणां धों निर्तामि ।

तिन शान्तिनाथ जिनगय शान्ति कों सबही ।

ती चौ.

१७१

तृतियाचल भरत जिनाय तीत जजों अवही ॥३॥

ॐ ही शान्तिनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन सुमति सुमति दरशाय सुमतिनकों प्यारे ॥

तृतियाचल भारत ध्याय तीत जजों सारे ॥४॥

ॐ हीं सुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

मनमथ मद मंथनहार आदि जिनेश कहा ।

तृतियाचल भरत उदार भूत जजामि महा ॥५॥

ॐ हीं आदिजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

अतिव्यक्त जगोत्तम रीत तीरथ व्यक्त करें ।

तृतियाचल भारततीत पूजत पाप टरें ॥६॥

ॐ हीं अतिव्यक्ताय अर्घं निर्वपामि ।

जिन कलासेन भगवान सकल कलाधारी ।

पू

१७१

गिर अचल भग्न गनवान पुजन नग्नार्ग ॥७॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

जिन कर्म परम सग देव अघमद नृगि द्यो ।

नृनियानल भग्न जुमेव नीत पुनीत भयो ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

मुनिनायक गुह्य प्रबुद्ध गिह रु गिह कर्म ।

नृनियानल भग्न समुल नीत जजाभि वें ॥८॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

भग भाग प्रवृत्त निर्गुन देव प्रवृत्त किया ।

नृनियानल भग्न अमृत नीत भगपि दिया ॥९॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

सोपम धर्म निज धर्म सोपमधर्म भजे ।

ती.चौ.

१७३

तृतियाचल भारत पर्म तीत जिनेश जजै ॥११॥

ॐ ह्री सौधर्माय अर्घं निर्वपामि ।

तमभानन आनन सार देव तमोदीपं ।

तृतियाचल भरत अधार तीत जजामीपं ॥१२॥

ॐ ह्री तमोदीप्ताय अर्घं निर्वपामि ।

जिन वज्र भजै वज्रेश वज्र शरीर धरें ।

तृतियाचल भरत महेश तीत जजामि वरें ॥१३॥

ॐ ह्री वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

सुप्रवृद्धनाथ जिन स्वामि सेवत शुद्धमती ।

तृतियाचल भरत जजामि तीत अभीत जती ॥१४॥

ॐ ह्री प्रवुद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

निरबंध प्रबंध जिनंद कीर्त प्रबंध कहा ।

पू.

१७३

तृतीयानल भग्न सुद्वंद्व नति जजापि महा ॥१५॥

ॐ त्रिं पञ्चाशत् शतं निरुत्तमि ।

स्वल्प गुणिभान अतीत गति पंकज पोष्ये ।

तृतीयानल भग्न अतीत पूजत दुल सौम्ये ॥१६॥

ॐ त्रिं पञ्चाशत् शतं निरुत्तमि ।

जिन सुमुख भविक आनेत्र दायक गुणगावों ।

तृतीयानल भग्न सुद्वंद्व नति जजां यावों ॥१७॥

ॐ त्रिं पञ्चाशत् शतं निरुत्तमि ।

पञ्चोपम देव पुनीत उपमा नति मही ।

तृतीयानल भग्न अतीत पूजत ज्ञान मही ॥१८॥

ॐ त्रिं पञ्चाशत् शतं निरुत्तमि ।

सौगादि पर्वीण विनाश तीन त्रकोण जिनं ।

तृतियाचल भरत जजास तीत निचीत गिनं ॥११॥

ॐ ह्रीं अकोपाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन निष्ठित देव उदार पूजत इष्ट मिलें ।

गज भरत तृतिय गिरि सार संकट कोट टले ॥१२॥

ॐ ह्रीं निष्ठिताय अर्घं निर्वपामि ।

मृगनाभि शरीर सुगंध पावन सुखकारी ।

तृतियाचल भरत अवंध तीत जजों भारी ॥१३॥

ॐ ह्रीं मृगनाभये अर्घं निर्वपामि ।

देवेंद्र जिनेंद्र मुनेंद्र इंद्र भजें सारे ।

तृतियाचल भरत महेन्द्र तीत जजों प्यारे ॥१४॥

ॐ ह्रीं देवेंद्राय अर्घं निर्वपामि ।

मुनिवृंद पदस्थित देव सेवत गुनगार्ई ।

तृतियाचल भारत ऐव तीत जजों भार्ई ॥१५॥

ॐ श्रीं परमेश्वर्यै नमः ।

शिवनाथ नमो धरि प्रीत दायक मुक्तमही ।

नृनिपाचल भग्नार्त्तान पुजन शमे लही ॥२४॥

ॐ श्रीं परमेश्वर्यै नमः ।

देव-पुत्र अम्य सत्त्व के नमो नमन धरि प्रीत ।

अचल भक्त गन जगनपति ह्यन विधन जड़रीत ॥

ॐ श्रीं परमेश्वर्यै नमः ।

नमः प्रेमाय ।

ॐ श्रीं जिन गुननाथ मुजन उजागर निनननागर सेवकै ।

ने जग उदायक भवद्विनाशक भविक "बुद्ध" नुव शान्तये ॥

ॐ श्रीं नमः ।

नमः प्रेमाय । शिवनाथ धरि प्रीत दायक मुक्तमही ।

जिनशान्ति प्रशान्ति प्रमिद करे । सुमतेन भवद्विनाशकै ॥२५॥

जिन आदि अनादि विवाद हरैं । अतिव्यक्त चिदातम व्यक्त करैं ।
 प्रणमामि कलाधर सेन जिन । जित कर्म जिनं अमलीन गिनं ॥३॥
 भवि बोधक देव प्रबुद्ध सही । परिवृत्त करै भवि मुक्तमही ।
 सब धर्म निजातम धर्म धरैं । तम दीपित कर्म कलंक हरै ॥४॥
 प्रभुवज्र सबै दुख चूर करैं । सुप्रबुद्ध महारिपु कुद्ध हरैं ।
 निरवध प्रवध प्रनाम करो । सुअतीत जपों भवसिधु तरों ॥५॥
 सुमुखेश महेश दयाधर हैं । सुपलोपम मोह विथाहर है ।
 विनुकोप अकोप सु शत्रुहरैं । जिन निष्ठित दृष्टित पुष्टकरैं ॥६॥
 मृगनाभ अनंत गुणाकर हैं । नित देव सुइंद सुधाधर हैं ।
 अति उच्च पदस्थ पदस्थ करैं । शिवनाथ प्रमोद प्रसस्त भरैं ॥७॥
 चउवीश घेई जगदीश महा । तृतियाचल भारततीत कहा ॥
 गुनसार अनंत धरें नित हैं । द्रगज्ञान सुवीरज सजुत हैं ॥८॥
 सुख सूक्ष्म ना लघुना गुरुता । अवगाह अबाध सदा पुरता ॥
 निररूप सरूप चिदातम हैं । भवव्याधि व्यतीत शुचातम हैं ॥९॥

॥ अथ भातम ज्ञोति प्रकाशनु है । अममोह मृषामद नाशनु है ॥
 निरदोष अलोभ अलोभ मये । अमलीन अनीन अदीन भये ॥
 अमन अमन अमन अकलं । अमद अमद अदल अत है ।
 इन भातं अनेन भरे गुन है । निन निननु निन मशामुन है ॥ ११ ॥
 तुमलो करजार नही निनयो । भातमाग मों शिवाय पयो ।
 निनभातम ज्ञोति उदोन कर । दुपदारिद निन ममूह करे ॥ १२ ॥
 ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
 "वृंदावन" भावन शीम नवावन वांछित अर्थ प्रवच्छ लहा ॥
 ॥ १३ ॥ अथ भातम ज्ञोति प्रकाशनु है । अममोह मृषामद नाशनु है ॥

॥ १४ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
 दम भात विधि गहिन सु तो नर है वडभागी ।
 वर भर मृष धनधान्य सकल मनवांछित पाई ।
 मुगति होई पुनोन चक्रपति है शिव गदि ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्री अचलभरतातीतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथाचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशति जिन पूजा ।

अदिल उद ।

दुतिय दीप सुविशाल धातुकी सोहनों ।

पश्चिम अचल सुमेरु भरतमन मोहनों ।

होनहार चौवीश जिनेसुर सारजी ।

थापो पूजन हेत प्रभू सुपधारजी ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्राग्रतर अग्रतर संवौपद् आह्वानन ।

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भवभव वपद् स्वाहा ।

त्रिमंगी अपनाशक उद ।

हिमवनगत गंगा जलभरि भृगा सुचि सरवंगा सुखकारी ।

तुम पदतर स्वामी धार दृगमी तुषा नमागि अतिभागी ॥
गिरि अनलविगजे अति छविछाजे भक्तसमाजे मुगसमाजे ।
नित भासियदेवं चवविश एवं कृतपद मेवं दृग्व भाजे ॥

॥ ११ ॥ तत्पदभक्तभाषाचारिणिनिर्दिष्टं जयं निर्दिष्टम् ॥ ११ ॥

चमि वाचनचदन कदली नंदन द्वादनिकद जीतवरं ।
कमि तुमपदचंदन हे जिनचदन हसि भवकंदन भवकरं ॥ गिरि ॥

॥ १२ ॥ तत्पदभक्तभाषाचारिणिनिर्दिष्टं जयं निर्दिष्टम् ॥ १२ ॥

नंदुल मुनि मडित शशि छविमडित पुनउमडित मनहारी ।
दुगदगिन चिहं डित पुनगनमडित शशिछविमडित हितभागी गिरि ॥

॥ १३ ॥ तत्पदभक्तभाषाचारिणिनिर्दिष्टं जयं निर्दिष्टम् ॥ १३ ॥

मगजल नशावन तुम पद पावन जील्य वदुवन जानिसरी ।
पद हल्यमुदावन दिगमन भावन चमनचटावन आनिगरी ॥ गिरि ॥

ती.चौ.

१८१

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पठरम करिजित क्षुधाविभांजिन चरु दुखगजित मृदुसो हे ।
तुमपद पूजत जगजशकूजत शिववर हूजत मन मोहे । गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामी ॥५॥

दीपगतमखडन दुतिदिगमडन सत्रव्रह्ममंडन मोदकरा ।
सो तुम दिगवारों श्रुति विस्तारों भूमतमटारों बोधकरा ॥ गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो द्वीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध बनाई तुम दिगलाई हे जिनराई जशगाई ।
खेवों उमगाई हरप बढ़ाई करम जराई शिखराई ॥ गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो वृषं निर्वपामि ॥७॥

फल पक्वमुहावन मनललचावन विघननशावन लै आयौ ।
तुम पदतर धारत दारिदहारित सुखविसतारत उमगायौ ॥ गि०ति० ॥

पू.

१८१

ती. चौ.

१८३

ॐ ह्रीं चक्रहस्ताय अर्घं निर्वपामि ।

बहुनृप सेवत पाय, द्वेप रहित कृतनाथ जिन ।

मोपर होहु सहाय, अचल भरत भावी जजों ॥३॥

ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

पद्मसुख जिनचंद चंदवदन छवि देत नित ।

हरत सकल दुखदद अचल भरत भावी जजों ॥४॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

मनहर मूरत जास, देवसु मूरत जगत हित ।

जस कीरतकी राश अचल भरत भावी जजों ॥५॥

ॐ ह्रीं सुमूर्तये अर्घं निर्वपामि ॥५॥

मुक्तक्रांत जिन स्याम, मुक्त रमनिवर मुक्त कर ।

नमों क्रांति सुखधाम, अचल भरत भावी जजों ॥६॥

पृ.

१८३

ती.चौ.

१८४

ॐ ह्रीं मुक्तिकान्ताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

केशसमूह उपाग. व्रतधारं निःकेश जिन ।

सो मो पतित उधार, अचल भक्त भावी जजों ॥७॥

ॐ ह्रीं निःकेशाय अर्घं निर्वपामि ।

देव प्रशस्तिक सार, देत प्रशस्त महान सुख ।

मम दुखदं निवार, अचल भक्त भावी जजों ॥८॥

ॐ ह्रीं प्रशस्तिकाय अर्घं निर्वपामि ।

निराहार जिनसार कमलाहार वितीत नित ।

सो मम विघ्न निवार, अचल भक्त भावी जजों ॥९॥

ॐ ह्रीं निराहाराय अर्घं निर्वपामि ।

भजों अमूरत देव विमल जांति चिद्रूपवन ।

कस्त गच्छीपाति सेव. अचल भक्त भावी जजों ॥१०॥

ती चौ.

१८५

ॐ ह्रीं अमृतया अर्घं निर्गमि ।

चार वरग नित जाहि सेवित सो द्विजराज जिन ।

नमों जोरकर ताहि अचल भरत भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं द्विजनाथाय अर्घं निर्गमि ।

श्रेयनाथ भगवान्, श्रेयकरें पातक हरे ।

देत सकल सुखखान अचल भरत भावी जजों ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रेयनाथाय अर्घं निर्गमि ।

छंदनाराच ।

रुजादि दोष नाशिकें निजात्म शुद्ध भाशियो ।

प्रबोधि भव्य वृंदकों अरुज्जकर्म नाशियो ॥

नमामि पाद पंकजं सुंद्र जासकों भजें ।

तृतीय मेरु भारते भविष्यतं जिनं जजै ॥१२॥

पृ.

१८५

ती. चौ.

१८६

ॐ ह्रीं अरुजाय अर्घ्यं निर्वहामि ।

समस्त देव सेवही सदैव देवनाथकों ।

भवाब्धि हूवते गहो जिनेश वेगि हाथकों । न०तृ० ॥१४॥

ॐ ह्रीं देवनाथाय अर्घ्यं निर्वहामि ।

समस्त दीनपै दया धेरं दयाधिके जिन ।

निजातम स्वभाव में विगजने सदा तिनं । न०तृ० ॥१५॥

ॐ ह्रीं दयाधिकाय अर्घ्यं निर्वहामि ।

सुपुष्पनाथ नायकं सुपर्म धर्म दायकं ।

सु पुष्पचाप घायकं प्रशस्तशील लायकं । न०तृ० ॥१६॥

ॐ ह्रीं पुष्पनाथाय अर्घ्यं निर्वहामि ।

नरेश ओ सुरेश वृंद जाहि नित्य सेवही ।

नेगुनाथ देवमा भवाब्धि नाव सेवही न०तृ० ॥१७॥

ती.चौ.

१८७

ॐ ह्रीं नरेशाय अर्घं निर्वपामि ।

समस्त जीवपे दया धरें सदा विराजहीं ।

प्रती सुभूतकों भजें अशेषक्लेश भाजहीं ॥ न० तृ० ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं प्रतिभूताय अर्घं निर्वपामि ।

दिविंद भाव निंदचंद वितरेंद ध्यावही ।

सुनाग इंद देव सेवते सुशर्म पावही । न० तृ० ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं नागेशाय अर्घं निर्वपामि ।

महा तपोदिके धनी तपोधिकं अराधही ।

नमों सदा तिन्हें समस्त परम शर्म साधही । न० तृ० ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं तपोधिराय अर्घं निर्वपामि ।

दशोंदिशा विषें सुव्याप्त कीर्त जास है गह्यौ ।

दशाननाख्य देव सेवते सुबोधको गह्यौ । न० तृ० ॥ २१ ॥

पृ.

१८७

ती चौ.

१८८

ॐ ह्रीं दशाननाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

उभे प्रकारको तपादि तासके धनी सही ।

अरण्यनाथको नमामि देत मुक्तकी मही । न० तृ० ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं अरण्यनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

अनंगके दशों अनीनको विनाश कीन है ।

दशा सुनीकको नमों सदैव सो प्रवीन है । न० तृ० ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं दशार्जुनाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

सदा अच्छोभ राजही पुनीत भाव साजही ।

जिनेंद्र शाखिकं भजें दग्दि दुख भाजही ।

नमामि पादपंकजं सुगेंद्र जासको भजें ।

तृतीयमेरु भास्ते भविष्यतं जिन जजें ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं शान्तिराय अर्घ्यं निर्वपामि ।

पृ.

१८८

ती.चौ.

१८९

स्थोद्वता-अष्टद्रव्य सब छाजिकें वरं, नाचिराच गुनगायहीधरं ।
पूजिहो अचल भारते महा, होनहार चवनीश जे कहा॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णाग्रैः निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

पत्ता-जै जिन कलपद्रुम दयावेलि तुम सुमन सुजसगम कंतवरा ।
फल शिवसुरमंडित विपति विहंडित वांछितार्थपद पुष्टकरा॥

पादद्वितीय छंद—

जै रक्तकेश आनंद भेश । जै चक्रहस्त नुत शङ्कशेष ॥
कृतनाथ कृतारथ करत भव्व । परमेश्वर पूरत ज्ञान सब्व ॥१॥
जय देव सु मूरत मदनभग । जय मुक्तकांत शिवकांत संग ॥
निःकेश केश तजि व्रतवराय । जय जय प्रशस्तपद परमदाय ॥२॥
जय निराहार अविकार बुद्ध । जय जय अमूर्त जिन सुगुन शुद्ध
द्विजनाथ मोहि दुखते निकार । श्रेयो गति मो दै श्रेयसार ॥३॥

पू.

१८९

जय अरुज हरो मम गेग पथ । जय दयानाथ मुनि वेगि लेन ॥
 प्रणमामि दयाधिक दयाधीश । जे गुणनाथ गुननिधि जगीश ॥५॥
 नरनाथ नमैं नरनाथ पाय । प्रतिभूत गहन गुनगन जिनाय ॥
 नागेंद्र देव नागेंद्रराज । नित देव तपोनिध सुखसमाज ॥६॥
 जय जैति दशानन सुजशराज । आरण्यरुके सुर असुर दाम ॥
 नित नमो दशानिक निगुन देव । शास्त्रिक जिनवर पद करो मेध ॥
 ए धातुदीप गिरि अचल नाम । नित भक्त भविष्यत सुगुन धाम
 मुनिमडल नित चित धरत ध्यान । सुरनखगणजत चरन आन ॥८॥
 ये तारन तरन दरन कलेश । निरदोष मोक्षपोषक मलेश ।
 शिष्यजन जनमन परुज दिनद । सुगमागर वर्जन मदग चंद ॥९॥
 "वृंदावन" मेवत जुगलपाय । जिमि विवनमनन तनछिन चिलाय ।
 अरु जग्न गरी प्रभु प्रीत पाय । भवसागरतें मोक्षां निहार ॥१०॥
 जैजै जिननाथक मवविधिलायक द्वायकभाव अनंतपती
 भवतापनशायक शांति वदायक तुम गुन नित चित जपत जती

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभायीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो मन्त्रार्थं निर्वपामि ।
 आर्या छ०-जो पूजे मनलाई, तृतियाचल भारतेश सुखदाई ।
 भायी त्रिभुवनराई, सो पावै भुक्त मुक्तभुकराई ॥
 इत्याशीर्वादः ।

इति अचलमेरुभरतभायीचतुर्विंशतिजिनपूजा संपूर्णा ।

अथाचलमेरुऐरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन पूजा ।

रोडक उद—

दुतियदीप अभिराम अचल पश्चिम छवि छजे ।

ताकी उत्तर माहि क्षेत्र ऐवरावत गजे ॥

वर्तमान चौवीश तहां त्रिभुवन के नायक ।

थापतु हों करजोर इहां आवो वरदायक ॥

ॐ ह्रीं अचलऐरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रायतरअवतर संग्रौपद् आह्वाननं

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठं ठं स्थापन ।

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशति जिन—अत्र मम मन्निष्ठितो भव
भव उपद् म्वादा ।

(चाल पोटेश नारण चानतराहृत पूजा ताके अष्टकी)

मकल सुखदान, पूजां चरनकमल अमलान । सकल सुख० ।

अचलाचल ऐरावतस्थान, वरतमान जनकंजन भान । स० टेक॥

मुनिमनमम जलउज्ज्वल आन, धारकस्त मन्मुखदुखहान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्णामि ॥१॥

चदन केदलिनंदनमान, घसि लशि शशि सम ममतादान । म० ।

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदन निर्णामि ॥२॥

तंदुलमंदुल उज्जल भान, पुजविगुंजत शिवपददान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरापतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुलं निर्णामि ॥३॥

सुमन मल आति गुजन आन, धरत हस्त उर मदन वितान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नेवज तुरितपुरितरसथान, जजतभजत आकुल कलकान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

दीपक जोत दिपत दुतिवान, जजततुरित उरतिमिरनसान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगरदहतवसुकरम दहान धूम धूम यह तास उडान । स० अ०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

फलकलदलनचलन शिवथान, तुमढिगधारत विघनविलान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जलफलसकल विमल शुभ आन, अरघ जजत करि अनुभो पान ।

सकल सुखदान, पूजों चरन कमल अमलान । सकलसुख०

अचलाचल ऐरावत थान, वरतमान जनकंजन भान । स०॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

नौपाई ३८—

माधित नाम जिनेश नमामी । जिनको व्यावत हैं शिवगामी ॥
धातु अचल ऐरावत यानों । वरतमान पूजों धरि न्यानों ॥१॥

ॐ नौ माधिताय नमः निर्वायामि ॥१॥

जिनस्वामी त्रिभुवन आधार । सेवन संव चार परकार ॥धा० व०

ॐ नौ जिनस्वामिने नमः निर्वायामि ॥२॥

स्ममितिन्द्रिय जिनद मितिन्द्रीय । नमित इंद्रजे अतिइंद्रीय ॥धा० व०

ॐ नौ स्ममितिन्द्राय नमः निर्वायामि ॥३॥

अन्यानंद जिनदभिगम । आनंदमदिर शिवपुरधाम । धा० व०

ॐ नौ अन्यानन्दाय नमः निर्वायामि ॥४॥

पुष्पकोटपुष्पकजिन ईश । फुल्लित कमलनयननिशिदीश । धा० व०

ॐ नौ पुष्पकोटपुष्पकाय नमः निर्वायामि ॥५॥

ती.चौ.
१९५

त्रिभुवन मंडनमुंडन सहा । मुंडक नाम नमों निरमल्ल । धा० व०

ॐ ह्रीं मुंडकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

प्रहतहते कंदर्प प्रचंड । सेवत सुरनरनाग रमंड । धा० व० ।

ॐ ह्रीं प्रहताय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

मदनसिंघ प्रणमों करजोर । वेगि प्रभु भवसंकल तोर । धा० व०

ॐ ह्रीं मदनसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

इंद्र समूह नमैं पदकंज । हसमिंद्र जिन भो भै भंज । धा० व०

ॐ ह्रीं हंसमिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

इंद्रचंद्र दिग सेवत पाय । चंद्र पार्श्वजिन गुनसमुदाय । धा० व०

ॐ ह्रीं चंद्रपार्श्वाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

भाविकअब्जबोधकजिमभान । अब्जबोधजिन सुगुननिधान । धा०

ॐ ह्रीं अब्जबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

प.

१९५

जिनको रूप रुचिर दर्शात । जिनवल्लभ सो जगविख्यात । धा०
ॐ श्री जिनवल्लभाय नमः निर्वाणि ॥१२॥

ॐ गोतोदाम ।

विभूति अनूप लणे जुगजास । विभूत जिनेश नमों सुखराज ।
तृतीय गुराचल उत्तर ध्यान । जजों ऐरावत वर्तसु मान ॥१३॥
ॐ श्री विभूताय नमः निर्वाणि ।

कुक्ष्याजिनेश सुखामृतकुंड नयें जिनकों नित वासवकुंड ॥ तृ०
ॐ श्री कुक्ष्याय नमः निर्वाणि ॥१४॥

सुवर्ण शरीर लामे सुखदाय । सुवर्णशरीर नमों जिनगाय ॥ तृ०
ॐ श्री सुवर्णशरीराय नमः निर्वाणि ॥१५॥

महा जगमें जयवंत मरूप । नमों हरिनाम मुधाग्न कृप ॥ तृ०
ॐ श्री हरिनामाय नमः निर्वाणि ॥१६॥

नमैन्नित प्रीतधरं भवि जाहि । नमो प्रियमित्र धगे उर ताहि । तृ० ।
ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

निजातम धर्म समस्त धरेय । सुधर्म जिनेसुर कर्म हरेय । तृ० ।
ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

प्रिया रतनेश जिनेश नमाम । रमाशिव संग क्रियौ विसराम । तृ० ।
ॐ ह्रीं प्रियारत्नाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

सवैसुर आनंद धारि नमंत । सुनादित नाथ नमों भगवंत । तृ० ।
ॐ ह्रीं नंदनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

अखड पदस्त लियौ जिनगज । नमों अमुनीक सवै सुखसाजा । तृ० ।
ॐ ह्रीं अवानीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

सुपर्व जिनेशानि गर्व लशेय । सदा समद्रिष्टिय चित्तधरेय । तृ० ।
ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

अथाचलमेरु ऐरावतेऽतीत जिन पूजा प्रारब्धते ।

स्थापना—(चाल नदीधराष्टक की)

दुतिदीप अचल गिराज ऐरावत जानों ।

तित तीत नमों जिनराय चौविश युति ठानों ॥

थापों त्रिविधा करजोर हे त्रिभुवन स्वामी ।

इत आय हरो दुःख घोर कीजै शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्रावतर अवतर सर्वोपद् आदानन

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठाठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्रममसन्निहितोभवभवपदस्वाहा

अथाष्टक—(प्रभु पूजारे भाई)

नित पूजारे भाई मुकतरमन जिनराजकों नित० ।

अचलमेरु उत्तर ऐरावततीत सकल सुखदाई ।

सुरसुग्देश पद पूजत जाके तनमन प्रीत उपाई । नि० ॥ टेक ॥

मोहमहामल धोय प्रभु तुम छायक समकत पाई ।

जान्हवीय जलमों हम पूजें । छायक सम्यक दाई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीहीपाचरमेन्पेरास्तातीनजिनेभ्यो जल निर्वापामि ॥१॥

ज्ञाना वरनी नाश प्रभु तुम ज्ञान अनंत उपाई ।

चंद्रन सो पद पूजों जातें ज्ञान अनंत लदाई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीहीपाचरमेन्पेरास्तातीनजिनेभ्यो सुगंधं निर्वापामि ॥२॥

दग्ध आवरन नशिनाय तुम दग्ध अनंत जगाई ।

तदुल अमल लेय पद पूजों ज्यों अनंत दिग याई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्हीहीपाचरमेन्पेरास्तातीनजिनेभ्यो अन्नं निर्वापामि ॥३॥

अंतगय अरि चूर प्रभु तुम बल अनंत उपजाई ।

फल धों तुम चरन कमल दिग यों अनंत प्रभुताई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपेरावतातीतजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

क्षुधावेदनी नाशि लियौ तुम निरआकुल ठकुराई ।

चरु चढाय पूजों पदपकज ज्यों अत्राध पदपाई ॥नि०अचल०

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपेरावतातीतजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

आयुकरम अवगाहन गुन मम रोकि रह्यो जिनराई ।

दीप चढाय जजों प्रभु तुमको जिमि सों गुन उदय कराई ॥नि०

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपेरावतातीतजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

नाम करम सूछिम गुन ढकिरें जग बहु नाच नचाई ।

धूप दहों तुम चरनन आगे सो गुन प्रकट कराई ॥नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपेरावतातीतजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

गोत अगुरुलघु गुन मम रोक्यौ बहु विधि जग भरमाई ।

फलसों पूजत यह फल पावों अजर अमर ठकुराई ॥नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुपेरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल ललित लेकर में भगत भाव उमगाई ।
जगत तुम त्रिभुवन के नायक मनवांछित सुखपाई ॥
नित पूजेरे भाई, मुकल रमनि जिनराजकों । नित पूजो रे०
अचलमेरु उत्तर ऐरावत तीत सकल सुखदाई ॥
सुर मुग्ध पद पूजत जाके तनमन प्रीत लगाई ॥ नित पू० ।
ॐ श्री गानुकीर्त्तयानम्येन्प्रेमपतातीतजिनेव्योऽयं निर्त्तामि ॥८॥

अथ प्रत्येकार्थ ।

शेख—सुगिर सम गुरु जगतगुरु श्रीसुमेर जिनराय ।
अचलैरावत तीत पद पूजों मन वचकाय ॥१॥
ॐ ॥ सुमेर्येऽयं निर्त्तामि ।

जिनकृत जिनकृत मोद जग मुकल रमनिपति न्याय ॥ अ०
ॐ श्री जिनकृताय नमः निर्त्तामि ॥२॥

कैटभनाथ जपों सदा मनवांछित उपजाय ॥ अचलै०॥३॥

ॐ ह्रीं कैटभनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

श्री प्रशस्त जिनचंद कों पूजत पाप पलाय ॥ अचलै०॥४॥

ॐ ह्रीं प्रशस्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

निरदै जिन अरि दमन किय दया धुरंधरं राय ॥ अचलै०॥५॥

ॐ ह्रीं निर्दयाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

निजकुल कमल दिनंद हैं श्रीकुलकर जिनराय ॥ अ० ॥६॥

ॐ ह्रीं कुलकराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

वर्धमान गुन वृद्धजुत उदय अपूरव पाय ॥ अचलै० ॥७॥

ॐ ह्रीं वर्द्धमानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

अमृत इंद्र गुनवृंद प्रभु अमृत इंद्र पदपाय ॥ अचलै० ॥८॥

ॐ ह्रीं अमृतेंद्रवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

संख्यानंद जिनंद नित आनंद अमित कराय ॥ अच०॥९॥

ती.नौ.

२०६

ॐ ह्रीं मय्यानंदाय नमः निर्वापामि ॥०॥

कल्पद्रुम सम देत सुख कल्पकृत जिनराय ॥ अच० ॥१०॥

ॐ ह्रीं कल्पकृताय नमः निर्वापामि ॥१०॥

मेवत हरि नित तासको श्रीहरिनाथ जिनाय ॥ अच० ॥१२॥

ॐ ह्रीं हरिनाथाय नमः निर्वापामि ॥११॥

बहु स्वामी त्रिभुवन तिलक सेवत त्रिभुवन पाय ॥ अ० ॥१३॥

ॐ ह्रीं बहुस्वामिने नमः निर्वापामि ॥१३॥

उद मारम्भत प्रन्तार ॥॥॥॥॥॥॥ भात वर्ण १०

भद्र जिनेसु भद्र भेरं । आनंद अयुधि वृद्ध करं ।

भेम्बृतीय पेरवत हे । तीन जजें सुख पावत हे ॥१४॥

ॐ ह्रीं भद्रदेवाय नमः निर्वापामि ॥१४॥

श्रीप्रविषात जिनेश वरा कर्म कुलाचल भेद कर ॥ मे०ती

ॐ श्रीं प्रविषाताय नमः निर्वापामि ॥१५॥

पूरन ब्रह्म विचार जती । ब्रह्म सुचारिय शुद्धमती ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचारित्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

मुक्तसती जुत केलि करें । नाथ वियोखित दुःख हें ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं वियोपिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

शाक्षियरूप त्रिलोक लखें । नाथ अशाक्षिक शर्म चखें ॥ मे० ॥

ॐ ह्रीं अशाक्षिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

चास्ति सैन प्रनाम करें ज्यों जिन चास्ति भार धरा ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं चारित्रसेनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

जो परणामिक भाव यहै सो परणामिक देव कहै ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं परिणामिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

शाश्वत आनंद देत हमें शाश्वतनाथ कलंक दमें ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं शाश्वतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

श्रीनिधिनाथ प्रनाम करें ज्यों निधि सार सुधाम भरें ॥ मे० ॥

ॐ श्रीं निगिनाथाय अर्पे निगामि ॥२२॥

कौशिकनाथ दयाल महा दारिद्र दुःख कुकर्म दहा ॥ भे०ती०

ॐ श्रीं कौशिकनाथ अर्पे निगामि ॥२३॥

श्रीधरमेश जिनेश नमो आनंदकंद समस्त पमो ।

मेरुतृतीय पंगवत हे तीत जेजे सुखपावत हे ॥२४॥

ॐ श्रीं धर्मेशाय अर्पे निगामि ॥२४॥

मोतीमान छंद ।

तृतीय सुगचल उत्तर जान । अतीत जिनेश महागुनग्वान ।

जजां पद पूरण अर्थ चहाय । कलेश अणेष सवे नशिजाय ॥

ॐ श्रीं धातुकीदीपाचलमेग्वेरापनातीनजिनेभ्यो नमो निगामि ।

जयमानं ।

पगा जेजे करुनावन रीचर वानतन मेवकजन आनंद करा ।

जेजे जयदायक सब विधित्तायक कर्मकलंक अशेष हरा ॥२५॥

ती.चौ.

२०९

जै जै सुमेरु थिर मेरु जेम । जै जै कृत जिनकृत सुकृत छेम ।
 जै कैटभ अघकानन हुताश । जै जै प्रशस्त भवि भरत आश ॥२॥
 जै निर्दय जिन जुग दयाईश । जै जै कुलकर नुत सकल ईश ॥
 जै वर्द्धमान गुन वृद्ध सुष्ट । जै अमितिद्रिय आनंद पुष्ट ॥३॥
 जै सख्यानंद अनंत ज्ञान । जै कलपकृत कृत सुख निधान ॥
 हरिसेवत नित हरिनाथ देव । बहुस्वामि सकल सुर करतसेव ॥४॥
 जै भार्गव भवतप दमन सूर । जै भद्रदेव भवि भद्रपूर ॥
 प्रविपातन जिन दारिद्र हर्ण । जिन ब्रह्मचारि चारित्र भर्ण ॥५॥
 जै जैति विघोषित शिव रमेश । जै जैति अशाक्षिक भवतरेष ॥
 जै चारितसेन दयाल धीर । परिनामक जिनवर हरत पीर ॥६॥
 शाश्वताजिन शाश्वत थान देत । निधिनाथ निधान करत निकेत ॥
 कौशिक जिन कौशिकराज देहि । धरमेश तुरित भवतार देहि ॥७॥
 ए भूत चतुरविशति जिनेश । गिरि अचलैरावत सुगुन भेश ॥

पृ

२०९

गनधर मुनिभ्यावत सुजशराश। सुर असुर जासके भये दाज॥८॥

नर विद्याधर सेवत त्रिकाल। गुन गावत नाचत चरन भाल ॥

किन्नर नारद तुवर अवस्थ। हा हा हू हू विश्वासुवस्थ ॥०॥

एनाचन थंड थंड थंड उमंग। लय तान नान गावत सुरंग ॥

नमलां चम्लां त्रिमि त्रिमि मृदंगामंन्यादि साग्रदि सारगिसग?०

पगनूपुर जननन जनननाय। कर्दकि किनि किनिनिनिनिनि सुनाय

करनाल लाल करमे लसंत। किरिकिरि शुकि शुकि भावरि रचन??

रसगम प्रगट जुन करत भक्त। पावत समाज सम्यक्त्व व्यक्त ॥

हम तुम पद चंदन वार वार। वृष चंदनद भवि "वृद" तार ॥१२॥

पत्ता-जे जे जगज्जन भूमतम भंजन भविकंजन जिनगजवग।

नित मुनिजनवंदन पाप निकंदत पावन आत्म ज्ञानवरा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥१३॥

गान्धारी उद-तृतीय अचलमेरु उन्नरेगावने हैं।

नित अनित जितेसंमन्य कृ भावते हैं ॥

तिन पद जुगसारं जो जजै प्रीतलाई ।

सुरनर सुखसार भोगि सो मुक्ति जाई ॥

इत्याशीर्वाद -

इति श्रीअचलमेरुऐरावतातीत चौवीसी पूजा संपूर्णा ।

अथ अचलमेरुऐरावतजावीजिन पूजा प्रारब्धते

लक्ष्मीधरा उद ।

मेरुतीजोमहाशोभनीकं लसे । क्षेत्रऐरावते उत्तरे सो वसे ॥
तासमें भावतव्यं जिनेसं कही । यापिहों अत्र आवो प्रभूजीसही

ॐ ह्रीं अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्रावतर अत्रतर संवौपट् आदानन ।

ॐ ह्रीं अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं अचलैरावतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वपट् स्वाहा ।

छद सारगी न्वनि सब गुरु वर्ण ।

गंगा भंगा पानी चंगा भारी धारी आनी है ।

धारा तीनों ताकी दीनों तीनों तापं हानी है ॥
तीजो मेरं ताके हेरं ऐरावतें राजें हैं ।

भावी देवं कीजै सेवं जो आनंदे साजें हैं ॥

ॐ ह्रीं धातुक्षिप्राचर्यमेक्षणेरावनभाविजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

कुंकूमाद्यै गंधं सारं करपूगेधं लै आयो ।

अंबुत्कृष्टा घृषा सुष्टा दुष्टा तापं कूं घायो ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुक्षिप्राचर्यमेक्षणेरावनभाविजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ॥२॥

शाला द्याला शुद्धं बुद्धं मुक्ता के से शुक्ता हैं ।

सो ले साग पुंजे धाग भो भै सो हो मुक्ता है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुक्षिप्राचर्यमेक्षणेरावनभाविजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥३॥

नेना घाना कौ आमोदे गेंमे फूले आना है ।

१ जल जग नृपु । २ स्वयं जल मे अच्छा तरा ।

ती चौ.

२१३

तासों स्वामी सेवों आमी कामों वाना हाना है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्य पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

फेनी श्रेनी खाजे ताजे साजे मिष्टा पुष्टा है ।

सो लै थारी आगे धारी वाधा नष्टा दुष्टा है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥५॥

वी को दीयौ ऐसो लीयो जासौ भातें नाशा है ।

तासों पूजै ऐसो हूजै तीनों लोकं भाशा है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

गंधा धारं धूपोदारं सेवों वन्ही माही है ।

कूरं कर्म होवे चूरं धूमा घूमोडाही है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

पुंगी नारंगी जंवीरा एला केला लाए हैं ।

पृ.

२१३

ती. नो

२१४

तासो सेवों आपा वेवों साता "वृंदो" पाये हैं ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातुनिष्ठीपाचलमेरुपेगातभाविजिनेभ्यः कलं निर्वपामि ॥८॥

आठों द्रव्यों सेती पूजों आच्छे वाजे वाजे हे ।

नाचों राचों शर्ण आवो मोक्ष स्थानं पाजे हैं ॥

तीजो मेरं ताके हेरं ऐगवते राजे हैं ।

भावी देवा कीजे मेवा सो आनंदे साजे हैं ॥

ॐ ह्रीं धातुनिष्ठीपाचलमेरुपेगातभाविजिनेभ्यो ऽथ निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्य ।

लोलतरंग उद—

श्री गवि इंदं जिनंद नमाभी । म्वेदविवर्जित अर्जित स्वामी ।

मेरु नृनीय ऐगवत यानों । भाविय देव जजों धरि ध्यानो ॥१॥

ॐ ह्रीं र्गोदरेऽर्थ निर्वपामि ॥१॥

५

२१४

ती. चौ.

२१५

निर्मल काय जसे सुखदाई । श्री सुकुमालक मोहि सहाई । में०

ॐ ही सुकुमालिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

प्रश्रितवंत नमो भगवता । क्षीर समान सुरक्त धरंता । में० भा०

ॐ ही प्रश्रितस्तेष्वर्घं निर्वपामि ॥३॥

श्रीकुलरत्न जिनेसुर मानों । चारिउ थान समान प्रमानों । में०॥४॥

ॐ ही कुलरत्नाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धर्म जिनेसुर आनंदकारी । आदि शरीर लसे अविकारी । में०॥५॥

ॐ ही धर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोम जिनंद अमंद प्रतापी । सुंदररूप सुधारस वापी । में०॥६॥

ॐ ही शोमजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

श्रीवरुणेंद्र जिनिद नमामी । सौरभकाय धरें अभिरामी । में०॥७॥

ॐ ही वरुणेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

श्रीअभिनंदन आनंददाता । साष्ट सहस्र सुलक्षणगाता । में० ॥८॥

५.

२१५

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्थं निर्वपामि ॥८॥

श्रीसखेश नमो वरज्ञानी । अप्रमितं वल जामु वखानी । मे० ॥१॥

ॐ ह्रीं सर्वनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥९॥

नेन महाप्रिय हे हितकारी । नाथ मुदिष्ट नमो भवतागि॥ मे० ॥१०॥

ॐ ह्रीं मुदिष्टनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥१०॥

छंद तोटक—

जमु अर्थ सुमागधवेन खिरे । जिन शिष्ट नमो भवसिंधुतिरे ॥
तृतियाचलको ऐगवत हे । भवतव्य जजें सुखपावत हे ॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टजिनाय अर्थं निर्वपामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुखन्नाय अर्थं निर्वपामि ॥१२॥

फत्तफत्त सर्व गितुके निर्वसे । जह शोमशशी प्रभुजी हुळजे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं शोमचद्राय अर्थं निर्वपामि ॥१३॥

किं तदप्यनृत्य प्रकाशं धूमं । जहं धेनव अर्धश निवासं कुरु ॥ १० ॥
 ॐ ह्रीं धेनवधोराय अर्धं निर्वपामि ॥ १४ ॥

नित आनंदं अर्धश वृद्धं कुरु । सु सदतिक्रमाय दधि दह ॥ १० ॥
 ॐ ह्रीं सदतिक्रमाय अर्धं निर्वपामि ॥ १५ ॥

अधुर्कलं वपाम पुनीतं वह ॥ जहं श्रीजिनराज जयंत अहं ॥ १० ॥
 ॐ ह्रीं जयराज अर्धं निर्वपामि ॥ १६ ॥

वैष्ण कटक धूमं विनाशितं ह ॥ जिनराज तमोनिष्ठ मोचिंत ह ॥ १० ॥
 ॐ ह्रीं तमोनिष्ठवेऽर्धं निर्वपामि ॥ १७ ॥

जलशय सप्तं पुनीतं वृ ॥ जिन निम्बल सो मम पाप हरे ॥ १० ॥
 ॐ ह्रीं निम्बल अर्धं निर्वपामि ॥ १८ ॥

नमः कनकंजन पू चलयी । कृत पापस विघ्न सर्व दलयी ॥ १० ॥
 ॐ ह्रीं कनकपाशाय अर्धं निर्वपामि ॥ १९ ॥

फलमपि सर्वशूल धातु नये । जिनशोषप्रज्जलाभयमात्र मये ॥ १० ॥

ती.चौ.

२१६

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्घ्यं निर्दिशामि ॥८॥

श्रीसखेश नमो वरज्ञानी । अप्रमत्तं बलं जायु वखानी । में०॥१॥

ॐ ह्रीं मर्वनाथाय अर्घ्यं निर्दिशामि ॥९॥

नैन महाप्रिय है हितकारी । नाथ सुदिष्ट नमो भवतारी ॥ में०॥१०॥

ॐ ह्रीं सुदिष्टनाथाय अर्घ्यं निर्दिशामि ॥१०॥

उद तोटक—

जसु अर्घ्य सुमागधवेन खिरे । जिन शिष्ट नमो भवसिंधुतिरे ॥

तृतियाचलको ऐसावत है । भवतव्य जजें सुखपावत है ॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टाजेनाय अर्घ्यं निर्दिशामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्घ्यं निर्दिशामि ॥१२॥

फलफूल सवै रितुके निवसे । जह शोमशशी प्रभुजी हुलशे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं शोमचंद्राय अर्घ्यं निर्दिशामि ॥१३॥

पृ.

२१६

ती.चौ.

२१७

छितदर्पनतुल्य प्रकाश धरें । जहँ क्षेत्र अधीश निवास करें ॥तृ०

ॐ ही क्षेत्राधीशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करे । सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥तृ०

ॐ हीं सदंतिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

अनुकूल वयार पुनीत वहै । जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तृ०

ॐ ही जयताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

तृण कटक धूलि विनाशित है । जिनराज तमोरिपु मोचित है ॥तृ०

ॐ ही तमोरिपवेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

जलगंध समेत पुनीत परै । जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तृ०

ॐ ही निर्मलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पैं चलही । कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तृ०

ॐ हीं कृतपार्श्वाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

फलभार सबै थल धान्ध नये । जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तृ०

पृ.

२१८

ती.चौ.

२१८

ॐ ह्रीं गोधराभाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥२०॥

नमनिर्मल ओ दिगसुन्दर हे । बहुनद नमंत पुन्दर हे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं गङ्गाभाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥२१॥

सुखेस्त हें भविजीयनिकों । जिनदिष्ट सुधावन्न पीवनकों । तृ०

ॐ ह्रीं दिष्टस्वामिने ऽर्घ्यं निर्वापामि ॥२२॥

वृषचक्र धर अरिचक्र हें । जिन कुंकुम आभ सुवर्ण करें ॥ तृ०

ॐ ह्रीं कुकुमाभाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥२३॥

वसु मंगल द्रव्य पुनीत धरें । जिनवक्ष सु ईश कलेश हें ॥

तृतीयाचलको ऐरावत हे । भवतव्य जजें सुख पावत हे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावताय अर्घ्यं निर्वापामि ॥२४॥

यह पूरन अर्घ्य लियो कर्म में । पद पूजन हों प्रभुको घरमे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं भार्याचतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घ्यं पूर्णार्घ्यं निर्वापामि स्वाहा ।

पत्ता-जै जै जै मंडित पूरन पंडित विघ्न विहंडित ज्ञानधरा ।
सेवक प्रणरक्षक त्रिभुवन लक्षक लक्ष अमंडित देतवरा ॥

(उद तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी)

जै रवींद्र जितंद नमस्ते । सुकुमालिक जगवंद नमस्ते ॥
प्रश्रीवंत महंत नमस्ते । जै कुलरत्न भवंत नमस्ते ॥ २ ॥
धर्मनाथ कृत शर्म नमस्ते । शोमनाथ पद पर्म नमस्ते ॥
वरुणनाथ दुग्धहरण नमस्ते । अभिनंदन सुखकरन नमस्ते ॥ ३ ॥
सर्वनाथ निर्दोष नमस्ते । जिन सुदिष्ट कृतमोख नमस्ते ।
शिष्टनाथ कृत उष्ट नमस्ते । जै सुवन्य धुनि मिष्ट नमस्ते ॥ ४ ॥
शोमचंद निरुलंक नमस्ते । क्षेत्राधीश निशक नमस्ते ॥
जै सदैवतक जिनेश नमस्ते । जै जयन वयमेश नमस्ते ॥ ५ ॥
देव तमोरिषु पाय नमस्ते । निर्मल जिन सुखदाय नमस्ते ॥
जै कृतपारशनाथ नमस्ते । बोध लाभ शिव साथ नमस्ते ॥ ६ ॥

जै बहुनंद अमंद नमस्ते । त्रिष्ट स्वामि सुखकंद नमस्ते ॥
 कुंकुमाभ निरफद नमस्ते । जै वक्षेश अदंद नमस्ते ॥७॥
 ए भावी चौबीश नमस्ते । अचलैरावत धीश नमस्ते ॥
 सेवन इंद समस्त नमस्ते । जानन जुगपत वस्तु नमस्ते ॥८॥
 विघ्नमहीधर विज्जु नमस्ते । जै ऊरधिगति रिज्जु नमस्ते ॥
 मुक्तिरमनि सह शिज्जु नमस्ते । त्रिभुवन आनंद किज्जु नमस्ते
 ध्यावत सज्जन सत नमस्ते । पावतु है भव अत नमस्ते ॥
 गुन अनत अविकार नमस्ते । तारन तरन उदार नमस्ते ॥९॥
 सकल कलेश निरवार नमस्ते । दारिद दुख परिहार नमस्ते ॥
 वांछित पद दातार नमस्ते । "वृंदावन" विस्तार नमस्ते ॥१०॥
 वचा-जै जै जिननायक, विघ्नविनायक सबसुखदायक देववरा ।
 हम शरनें आये शीशनवाये गुनगन गाये सेवकरा ॥११॥
 ॐ ह्रीं धातुकिंदीपाचलमेरुपेरानतभाविजिनेभ्यो महार्पे नमः ।

ती चौ.

२२१

जो दख अरु वरभाव सेती जजै जिन चौबीशजी ।
 वर धातुदीप अचल सुपेरावते भावी ईशजी ॥
 सो पुत्रमित्रकलत्र संपत सुख लहे नवनीतजी ।
 पुनिशक्र चक्रतनों सुपद लहिहोइ मुकत निचीतजी ॥
 इति श्रीअचलैरात्रभायी चौबीसी पूजा संपूर्णा ।
 वृत्तिगमेरु संबंधी पूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धद्वीपमंदिरमेरुसंबंधीविरहमान
 जिनचारिपूजा प्रारब्धते ।

छंद अमृतध्वनि त्रिभंगी पर ।

दमकततनसारं रविशशिधारं अतिदुतिधारं सुखकारं ।
 भ्रमतम शतखंडन शिवमगमंडन कलुषविहंडन दुखदारं ॥

पू

२२१

त्रितिदीप सुहरं मंदरमेरं पूरवेढरं शुति सज्जे ।

तित विहर मुमानं चहु भगवानं सुगुननिधानं धुनिगज्जे ॥१॥

गज्जज्व धुनि सज्जजनसुनि रज्जजनमन ।

सज्जजम नम भज्जजम गम मज्जज्जन नन ॥

चंचचरन सुंधावुभभग्न सुसचस्समकत ।

ठःठः थपत सुज्जे जपत प्रभादंदमकत ॥२॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्यप्रिहरमानजिन चंद्राहु-भुजगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वर
अत्रायतर अयतर मयापद् आदाननं ।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्यप्रिहरमानजिन चंद्राहु-भुजगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वर
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्यप्रिहरमानजिन चंद्राहु भुजगप्रभ ईश्वरनमीश्वर
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहाः ।

अथाष्टकं ।

प्रमिताक्षरा उद—

जल भृग माहि भरि धार करों । पदपूजि नाथ दुखदोषहरों ।
 त्रिति द्वीपमंदिर विदेहनिमें । जिनचार सारजाजि गेहनिमें ॥
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो-जन्ममृत्युविनाशाय जलं ॥१॥

वरगंध चंदन कपूर घशै । जिनराज पूजि भवताप नशै ॥ त्रि०
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो सत्तारतापनाशाय नमः ॥२॥

शुभशालि मुक्त मनु शुक्त समंतसुपुंज युंज भवदुःख गमं ॥ त्रि०
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षत ॥३॥

निरदोष फूल सुख मूल महा । तुव अग्रधारि सरशूल दहा ॥ त्रि०
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो कामगणनाशाय पुष्पं ॥४॥

रसपूर सारचरु भूरिकरा । जजते क्षुधादि अस्किर हरा ॥ त्रि०
 ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

मनि दीपजोत तम नाशतु हैं । पद सेवतें सुगुन भासतु है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेयमन माचतु है । मनु धूमधूम मिशि नाचतु है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

रसमिष्ट शिष्ट फल सुष्ट धरों । जिनचंद वृंद सुखकंद वरों ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

वसुद्रव्य सन सजि अर्घकरों । पद पूजिसार शिवनारि वरों ॥

त्रिति दीप मंदिर विदेहनिमें । जिन चार सार जाजि गेहनिमें ॥

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

आर्या छद-पुष्करमंदिर एवं, सीतोत्तर विहरमान जिनदेवं ।

श्रीचंद्रबाहु सेवं, समदशृत संस्थित वसूमेवं ॥१॥

रेणुकमाता ख्याता, नमों पिता देवनंद विख्याता ।

नगर विनीतं जाना, जजों सदा पद्मअंक सुखदाता॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे . मंदिरमेरुमवधिमीतोत्तरतटे पदस्वडमंडलमंडितचक्र
वर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन चद्रवाहुस्यामिने ॐ ॥१॥

पुष्करमंदिर जानं सीता दच्छिन विदेहथित मानं ।

देव भुजंग प्रमानं, पूजों समवशृत भगवानं ॥१॥

महिमा माता जानों, पिता महाबल दयाल गुनवानों ।

लच्छन चंद्र प्रमानों विजया नगरी त्रिलोकपति थानों ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदिरमेरु सीतादक्षिणतटे पदस्वड मंडलमंडितचक्र-
वर्त्यादि सेव्यमान जिन भुजगप्रभाय अर्थ, ॥२॥

पुष्करमंदिर जोहै सीतोदा दक्षिणे सुमन मोहै ।

ईश्वर स्वामी सोहैं ताहि जजें सर्व संपदा होहैं ॥१॥

ज्वाला जतनी गजें. नगर मुमीमा अनूपछवि द्याजे ।

गलमेन जासुगजें, गवि पदमें चिन्ह कोटि गविलाजे ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पाद्वर्दीपेगदिरमेरुसीतोदादभिगतटे पद्मदंडमंडित चक्र-
चर्यादिसेव्यमानपिङ्गमानजिन ईदग्नायाय अर्घ्य ॥३॥

पुष्कर मंदिर नामी, सीतोदा उत्तरेषु अभिगामी ।

श्रीनेमीश्वर स्वामी, समवष्टानस्थित जजामि शिवपामी ॥१॥

सेना माता जाकी, पिता नमों वीरराज शुभ नाही ।

वृषलच्छन पद्मा की, नगर अयोध्या प्रमोदपद माकी ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पाद्वर्दीपेगदिरमेरुसीतोदायाउत्तरतटे पद्मदंडमंडलमंडित चक्र-
वर्त्यादिसेव्यमानपिङ्गमानजिन नमीश्वराय अर्घ्य ॥४॥

सुदरी उद—

त्रितिय पुष्करदीप सुहावनो । प्रथम मंदिर मेरु तहा वनो ॥

तसु विदेहनिमें जिन चार हैं । जजत होत भवोदधि पार हैं ॥

ॐ ह्रीं नमो भुजंगप्रभङ्गिभ्यो नमः ॥ पूर्णार्घ्यं निवेदयामि ।

अथ जयमाला ।

पता—जैजे जगवन्दन कलुषनिकन्दन त्रिभुवनजन आनन्द कग ।

जै केवलमानं भूतमहानं भविकमलानं मोदभग ॥१॥

तोटक ७४—

जै भोजिन चंद सुवाटु महा । जै जंति भुजंग प्रवेश कहा ।

श्वर नाथ अनाथ दितू । नमि श्वर नाथ त्रिलोक पितू ॥२॥

दीपहि मंदर मेरु वसै । निबसै शुभ जत्र विदेह वसै ॥

शृत छादय जोजन हैं । भवि सा यत यत्र प्रयोजन हैं ॥३॥

रस को केई पान कर । वसु कर्मनि को धरि व्यान हरैं ॥

करै बहु भांति तहां । गुन गावन नावन भाल नहा ॥४॥

बतु हैं मननं सननं । धुनि नृप दे जनन जनन ॥

किनि गुंजत किनननं । मुर लेन केई तनन तनन ॥५॥

केइ वारह भावन भावत हैं । अपनो गुन आपु लखावत हैं ॥
 केइ चारित भार सम्हारत है । केइ कर्म नतच्छन जारत है ॥६॥
 वह धन्य विदेह सुयान सही । शिव मारग नित्त चलै चितही ॥
 जह आपु विहार पुनीत करै । चदसंघ लिये अघ सघ हरै ॥७॥
 गनराज जहां धुनि झेलत हैं । भवि को सब सशय डेलत हैं ॥
 रतनत्रय भवि उदोत करै । सुनिके भविजी शिवनारि वरै ॥८॥
 हम जाचतु है तुमसों जिनजी । निज संनिधिद्यो विनती सुनजी ॥
 तुव वैज सुधारस पान करों । लखि रूप सबै दुखदद हगों ॥९॥
 वत्ता—जैजै जिनदेवं सुरकृत सेवं सुगुनअछेवं शुद्धमती ।

शिवसपति दायक विघनविनायक जै जै जै चिद्रूपपती ॥

ॐ ह्रीं चद्रवाहु-भुजंप्रभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥१०॥

वसंत तिलका—आशीर्वादः ।

श्रीपुष्करार्द्ध मह मंदिर मेरु काजै ।

ताकी विदेहनि विषे जिनराज राजे ॥
 पूजे तिन्हे भविक जो बहु भक्ति लाई ।
 सो सर्वमार सुखभुक्त सु मुक्त जाई ॥
 इति मद्राचलमेरुप्रिगजमानविरहमानजिनपूजा समाप्ता ।

अथ पुष्कारद्धदीपेमंदिरमेरुभरत
 वर्तमानचौवीशीपूजा ।

छंद कुंडलिया—

मदरमेरु विराजई पुष्कर पूरव वोर
 ताकी दच्छिन में लसै भरत छेत्र शुभ ठौर ॥
 भरत छेत्र शुभ ठौर तहां त्रिभुवन हितकारी ।
 वरतमान चौवीश ईश पूजे नर नारी ॥

ती.चौ.

२३०

जिन्ह को गुन उर ध्याय मुदित मन जजत पुरंदर ।

तिन्ह को थापों इहां जहां जिनवर को मंदर ॥

ॐ ह्रीं भरत वर्तमान जिन चतुर्विंशतिअत्रावतर अवतर सर्वोपद् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं भरत वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रमम सन्निहितो भवभव वपटूस्त्राण ।

अथाष्टकं ।

(चाल जत्तताल आदि में)

भवसागर तागेजी, दीन दयाल जिनेसुर जी । भव० ।

पुष्करदीप शिखरमंदिर के दच्छिन भरत विराजै ।

वरतमान चौबीश जिनेसुर पूजत भव भै भाजेजी ॥भौ०॥टेक॥

गगाजल भरि कनक भृग में तन मन प्रीत उपायो ।

धारा तीन करत पद आगे करम कलक हरायौ जी ॥ भव० ॥

पृ-

२३०

ॐ ह्रीं भक्तवर्तमानचतुर्विंशतिजिनममृतेभ्यो जलं निर्गमामि ॥१॥

केशर चंदन कदली नंदन दाहनिकंदन लायो ।

शिव त्रिगंजिनवर तुम पद पूजत सब दुखदं नशायोजी ॥ भो० ॥

ॐ ह्रीं भक्तवर्तमानचतुर्विंशतिजिनममृतेभ्यो गंधं निर्गमामि ॥२॥

तदुल मंदुल शारभि मंडित अमल अखंड सौहायो ।

पुंज धस्त दुखदद हस्त सुखकंद भक्त समायोजी ॥ भव० ॥

ॐ ह्रीं भक्तवर्तमानचतुर्विंशतिजिनममृतेभ्यस्तदुलं निर्गमामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुवरन थारी सुवरन थार भरायो ।

मनमथमदमथ नाथ तुम्हे लखि हाथ साथ शिरनायोजी भो०

ॐ ह्रीं भक्तवर्तमानचतुर्विंशतिजिनममृतेभ्यः पुष्पं निर्गमामि ॥४॥

घेवर वावर फेनी श्रेनी खाजे ताजे भायो ।

क्षुधारोग निस्वारन कारन मनमुख ले शिरनायोजी ॥ भो० ॥

ती. चौ

२३२

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यश्च नमः निर्वपामि ॥५॥

जगमग जोति होत दश दिश में ऐसो दीप अनायौ ।

तासो तुम पद पूजत संशय विभ्रममोह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशविध गंध पुनीतम लै करि खेवत शौरभि छायाँ ।

अष्ट करम मम दुष्ट जरत है धूम घूमसु उड़ायाँजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुरस वरन रसना मन भावन पक्क सुफल उपगायौ ।

पूजत चरन कमल जिनवर के विघनसमूह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

आठों दख मिलाय मनोहर हरष हरष गुनगायौ ।

पूजत चरन कमल जिनवर के शिवतरु बीज बुवायौ ।

पू

२३

भो सागर तारो जी दीन दयाल सुरेसुरजी ॥भव॥
 पुष्कर दीप शिखर मंदर के दच्छिन भरत विराजे ।
 वरतमान चौबीश जिनेसुर पूजत भौ भै भाजे जी भवसा० ॥
 ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं

पाईता छद—

शत आठ कोश सुभिच्छं । जिन जगन्नाथ क्रिय सुच्छं ।
 गिरि मंदिर भरत सुहायौ । जजि वरतमान सुखपायौ ॥१॥

ॐ ह्रीं जगन्नाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

नभ माहि चलै जिन स्वामी । जिन देव प्रभाश नमामी । गि० २।

ॐ ह्रीं प्रभाशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

नाहि जीव जहां बध हो है । जिन सूर स्वामि मम सो है । गि० ३

ॐ ही सूरस्वमिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

ती चौ.

२३४

नहि कवलाहार करें हैं । भरतेश कलैश हरै हैं ॥ गि० ४ ॥

ॐ ही भरतेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

उपसर्ग वितीत विराजै । जिन दीर्घानन छवि छाजै । गि० ५

ॐ ही दीर्घाननाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

चतुरानन मूगति दरसै । सुनिजात कीर्त सुख सरसै । गि० ॥६॥

ॐ ही विजातकीर्तयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

सत्र विद्या के पति जानों । अवशानन सो पहिचानों ॥ गि० ७

ॐ हा अवशाननाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

तन की न परै परछाई । सुप्रबोधन देव कहाही । गि० ॥८॥

ॐ ही प्रबोधनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

द्रिग में न निमेष लगे हैं । सुतपोनिधि ज्ञान पगै द्वै गि० ९

ॐ हा तपोनिधयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

पू.

२३४

नखकेश बैठे नहि जाकौ । जिन पावक नाम सुताको ॥ गि०

ॐ ह्रीं पावकाय अर्घं निर्वपामि ॥ १० ॥

छद रथोद्धता—

शोक चूरन अशोक वृक्ष है । सो जिनेश त्रिपुरेश इच्छेहें ।
पुष्करार्द्ध गिरि मंदरें सही । भर्तवर्तत जजामि हों यही ११

ॐ ह्रीं त्रिपुरेशाय अर्घं निर्वपामि ॥ ११ ॥

पुष्पवृष्टि नभतें जहां परै । शौगतेश सरशूल कों हरे ॥ पु०

ॐ ह्रीं शौगताय अर्घं निर्वपामि ॥ १२ ॥

दिव्यवेन सुखसों जहां खिरै । श्रीयवास सुखराशकों भरे । पु०

ॐ ह्रीं श्रीयासाय अर्घं निर्वपामि ॥ १३ ॥

चौर चौसठ सुरेश द्वारही । श्री मनोहर कलेश टारही । पु० १४

ॐ मनोहराय अर्घं निर्वपामि ॥ १४ ॥

सिंहपीठ परजे विराजही । श्री जिनेश शुभकर्म छाजही ॥ पु०

२३६
ती चौ.

ॐ ही शुभकर्मसाय अर्घ निर्वपामि ॥१५॥

कायक्रांति कृतमंडला कृतं । इष्ट सेवक सुचित्त में धृतं ॥ पु०

ॐ ही इष्टसेवकाय अर्घ निर्वपामि ॥१६॥

देवदुंडुभि अकाश में वज्रै । श्रीजिनेंद्र अमलेंद्र मै भजै ॥ पु०

ॐ ही अमलेद्राय अर्घ निर्वपामि ॥१७॥

तीनछत्र तिहु रत्नसे लशै । धर्मवाश जिन त्रासकों नशै ॥ पु०

ॐ ही धर्मवासाय अर्घ निर्वपामि ॥१८॥

छद मोतीदाम—

अनंत सुछायक ज्ञान महान । प्रशाद जिनेश धरें अमलान ।
सुमदर भारत दच्छिन खेत । जजों जिन वर्तत हैं छविदेत ॥

ॐ ही प्रशादाय अर्घ निर्वपामि ॥१९॥

अनंत अगाध लशै द्विग जास । प्रभामृग अंक भरें भविआश ॥ सु०

ॐ ही प्रभामृगांकाय अर्घ निर्वपामि ॥२०॥

अनंत सुखामृत अदभुत रूप । नमों अकलंक निशंकसरूप ॥सु०॥

ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

अनंत अवाधित वीरज जास । नमों स्फटिक प्रभुकों शिवआस ।सु०॥

ॐ ह्रीं स्फटिकप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

छंद भुजंग प्रयात ।

हनें दोष अष्टादशों मूलसेती । गनेंद्रं जिनेंद्रं नमों मुक्तहेती ।

जजों मंदिराख्या चले भर्त थानों गुणग्रामधारी प्रभुवर्तमानों ॥

ॐ ह्रीं गनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

चिदानंदको ध्यानधारे विराजें । नमों ध्यानस्वामी असह्य ध्यान भाजें

जजों मंदिराख्या चले भर्त थानों । गुणग्रामधारी प्रभुवर्तमानों ॥

ॐ ह्रीं व्यानजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

लोलतरंग छंद—

पूरन अर्घ्य वनाय पुनीतं । पूजतु हौं सवही जिनमीतं ।

ती.चौ.

२४०

अडिल्ल छंद

जो पूजे चौबीस जिनेसुर देवजी ।

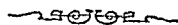
पुष्कर मंदर भरत विराजे येवजी ॥

सो मनवांछित सार सख सुख पायजी ।

शक्र चक्र पद भोगि मुक्त पुर जायजी ॥

इत्यार्शर्वादः ।

इतिपुष्करद्वीपभरतवरतमानचौबीशी पूजा समाप्ता ।



अथ मंदरमेरुजरतातीतचौबीशीपूजामाह

छंद माधवी सवैया सिंघावलोकन मुक्तपदग्रस्त यथा

मंदिर मेरु विराजतु है नित पुष्करदीप विपै आति सुंदर ।

सुंदर दन्छिन भर्त वसै तित तीत जिनेसुर धर्म धुरंधर ॥

५०

२४०

धर्म धुरंधर सेवतु हे गुन वृंद सुध्यावत जाहि पुरंदर ।
जाहि पुरंदर ध्यावतु ताहि सुधापहु पूजन को जिन मंदर ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रावतरअमतर सर्वोपद्रुआद्यानन

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिन अत्र मम संनिहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

गीता छंद-

कलधौत वरन उत्तंग कुल गिरि गंग चंग सुवार है ।

भरि कनक भारी धार दारी जनम मरन निवार है ॥

वर दीप पुष्कर मेरुमंदर पूर्व अति छवि छाजई ।

तसु भरततीत जिनेश पूजत सकल भौ भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

वरमलय चंदन कदलिनंदन मुजलसंग घशात है ।

तुम चरन पुष्कर पूजते भवताप तुरति नशात है ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

शित शाल दुति उजियाल हीर हिमाल ते आति सोहनों ।
तसु पुंज परम वियुजते सुख भुंजते मनमोहनों ॥वर द्वीप०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥

पुष्कर कदंब कुरंड केतक सुमन सुमन समान है ।
तुव चरन पुष्कर पूजतें प्रभु नशत मनमथ वान है ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पकवान सुरस सवार सुवरन थार भर कर में लिया ।
तासों समश्चत चरन जुग दुख दोष कों पानी दिया ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

दुति दीप दिपत दिगंतरा ले सकल घटपट भास है ।
तासों उतारत आर्त्ता जिनपर प्रबोध प्रकाश है ॥वरद्वीप०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेय द्रुताश माही मोद उर धरि संत है ।

वसु करम भरम जरंत ताको धूम घूम उडंत है ॥वरद्वी०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

ऋतु जनित फल कलशहित सुंदर पक्व मिष्ट मनोगता ।

तासों समरचत चरनजुग वांछित भविक सुख भोगता ॥व०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फल विमल वसुदरव को शुभ अरघ्य थार विपें करें ।

कर जोरि जुग तुम चरन चरचत तुरित भौसागर तरें ।

वर दीप पुष्कर मेरु मंदर पूर्व अति छवि छाजई ।

तसु भरत तीत जिनेस पूजत सकल भौ भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

छंद तामरस तथा नाराच ।

ती. चौ

२४६

तीर्थस्वामी सेइयै सदैव शर्म वेइयै,
कर्म भर्मनाशि शुद्ध परम धर्म लेइयै ॥
सुपुष्करार्थ मंदराचले सुभर्त खेत है,
पूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥१३॥

ॐ ही तीर्थस्वामिने अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

धर्म धीश परम धर्मको प्रकाश कर्त हैं,
धर्मचंद नंदकों पुनीत पुन्य भर्त हैं ॥पु०॥

ॐ ही धर्माधीशाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१४॥

क्षमा धरी अधीश धारणेश सीस नावहीं,
पुनीत ध्यान धारिके अमीत शर्म पावहीं ॥पु०॥
ॐ ह्री धरणेशाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

पू.

२४६

प्रभाव जासु लोक में प्रसिद्धसिद्धदाय है,
नमों प्रभाव देव जो विशुद्धबुद्ध पाय है ॥पु०॥

ॐ ह्रीं प्रभावाय सर्वं निर्णयामि ॥१६॥

अनादि देव ध्याइये निशंकितंग पाइये,
अनादि शुद्ध बुद्ध सिद्ध को उपाइये ॥पुष्कार्थ॥

ॐ ह्रीं अनादिदेवाय सर्वं निर्णयामि ॥१७॥

नमों अनादि सुप्रभं विषादवादवर्जितं,
निकांक्षितंग दायकं कलंक संत तर्जितं ॥पुष्कार्थ॥

ॐ ह्रीं अनादि प्रभवे सर्वं निर्णयामि ॥१८॥

सर्व तीर्थनाथकूं सदैव माथ नाइये,
ग्लान भाव नासि शुद्धभावना लहाइये ॥पु०॥

ॐ ह्रीं सर्वतीर्थाय सर्वं निर्णयामि ॥१९॥

ती.चौ.

२४८

निरूपमाय श्रीजिनाय ऊपमा अतीत हैं ।

अमूढ भाव देत हैं कलेश सो वितीत हैं ॥पु०॥

ॐ ह्रीं निरूपमाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

कुमार मार वर्जितं सुभव्यवर्गं सर्जितं ।

सु सोपगूहनांग देत अब्द शब्द गर्जित ॥पु०॥

ॐ ह्रीं कुमाराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

विहार गेह देवने त्रिलोक वस्तुकों लखा,

जु धर्मसों डिगे तिनें सुधर्म में थिरा रखा ॥पु०॥

ॐ ह्रीं विहारग्रहाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

धारणे श्वरेशकों सुरेशवृंद वंदते,

वातसत्य अंग पाय पापकों निकंदते ॥पु०॥

ॐ ह्रीं धारणेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

पू.

२४८

ती चौ.

२४६

विकाश देवने समस्त वस्तुकों विकाशियौ,
सुमार्ग की प्रभावना दिखाय पाप नाशियौ ॥

सुपष्करार्द्ध मंदिराचले सुभर्त खेत है,
सुपूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥२४॥

ॐ ही विकाशाय अर्थ निर्वपामि ॥२४॥

छंद सुंदरी तथा द्रुताविलवित—

जल फलादि मिलाय मनोहरं । अरघ पूरन कीन सुभौहरं ।
जजत पुष्करमंदिर भर्त है । जिन अतीत महासुख कर्त हैं ॥२५॥

अथ जयमालं ।

यत्ता-जै केवल चंदा उदय अमंदा आनंदकंदा निरदंदा ।
कृतभक्तिक कमोदं परमप्रमोदं ज्ञानमहोदं सुखवृंदा ॥१॥

जै मदनकदन मदनेंद्र देव, मूरति स्वामी कृत सुख स्वमेव ।
 नीराग स्वामी विनु रागदोष, जै जै प्रलवित जगत्तपोष ॥२॥
 पृथ्वीपति मो भव उदधि तार, चारित निधि कुर्मति कलेश डार ।
 अपराजित प्रभु पद परम देह, जै जै सुबोध सुधि वेग लेह ॥३॥
 बुद्धेश करे कमला सुधाम, वैतालिक जिन पद को प्रनाम ।
 जै जै त्रिसुष्ट वर इष्ट देत, मुनि बोधक जिन भवसिन्धु सेत ॥४॥
 तीरथ स्वामी मेढत कलेश, जै धर्म शीश सेवत सुरेश ।
 धरनेश नमत धरनेश शीश, प्रभवेश परमपावन जगीश ॥५॥
 जै जै अनादजिन गुन समुद्र, जै जै अनादि प्रभ नमत रुद्र ।
 जै सर्वतीर्थ त्रिभुवन पुनीत, निरूपम अनूपम गुन जगत मीत ॥६॥
 श्रीजिनकुमार प्रत्यूह खंड, जै जै विहार ग्रह सुख डमंड ।
 धरणेश्वर जगदाधार परम, जै जै विकासजुत परम शर्म ॥७॥
 ए तीत जिनेसुर भरत थान, गिर मंदर पुष्करदीप जान ।

चौथे गुन सात प्रकृत विनाश, सातें त्रय नौ छतीस नाश ॥८॥
 दशयेक द्वादशें सोल चूर, ऐ त्रैसट छै केवल प्रपूर ।
 चौदहे वहत्तर तेर हान, सिव धान जसै करुना निधान ॥९॥
 तुम गुन गावत सुर असुरराय, नाचत ताधेइ धेइ पग चलाय ।
 द्विमि द्विमि धिधितवलां सुरजनाद, संसाग्रदिसांगी सुरपुरतवाद
 पगनृपुर झननननननाय, कटकिं किनि किनिनिनिनि सुहाय ।
 बहु हाव भाव रसको बताय, तननननन तनन तान गाय ॥११॥
 पट पटपट पाटह नाद मिष्ट, हुंहुभि बीनादिक साज सिष्ट ।
 सजि साज भगततुव करत देव, निज जनम सफल करते सुमेव १२
 तुम धन्य अमल गुनगन निधान, भवसागर तारन तरन जान ।
 हम शरण गही मन वचन काय मन वांछित सुख द्यौहे जिनाय १३
 घता—जै जनप्रनरक्षक अरिअहितक्षक, वस्तुविवक्षक दक्षपती ।
 सेवत सुरजक्षक लाखि शिवगच्छक जै गुन कक्षक स्वच्छमती
 ॐ ह्री मदरमेरुभरतातीतजिनसमूहेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

दोहा — पुष्कर मंदर भरत के, तीत जिनंद दयाल ।

जो पूजे सो सकल सुख लहे भविक गुनमाल ॥

इत्याशीवाद ।

इति मंदिराचलभरतातीत चौबीशीपूजा समाप्ता ।



अथ भावी चौबीशी पूजा प्रारभ्यते ।

छंदचित्र पवर्तवध वाईसा ।

आय सही वे हरे अति आरति इंद शुने तिहितें जु सया ।

हो इत थापत मंदर के परतच्छ सु भर्त भविष्य तया ॥

भर्म विनाशक आतम भाशक भव्यजीव कंहं शर्म दया ।

आय सेव तिथु हो पमजी सु जीभव हो शुति देसय आ ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र अवतरत अतरत सगौपट् अदानन

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

चौ.

२५३

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वपद् स्वाहाः ।

पृ.

							आ												
							य												
							स												
							हि	वे	ह										
						रें	अ	ति	आ	र									
				ति	इ	द	थु	ने	ति	हि									
		तैं	जु	स	या	हो	इ	त	था	प									
	त	मं	द	र	के	प	र	त	छ	सु	भ								
	तैं	म	वि	ध्य	त	या	भ	मं	वि	ना	श	क	आ						
त	म	भा	श	क	भ	व्य	जी	व	कैं	हैं	श	मं	द	या					
							सु												

२५३

सुदगी तथा द्रुतिविलंबित छंद—

सुर नदी जल उज्जल पावनो, त्रिविध कर्षकलंक नशावनों ।
त्रितिय दीप सु मंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भावी जिन जन्म जरामृत्यु विनाशाय जल ।

कदलिनंदन चंदन सो घसै । जजत ही भवदंदनकों नसै । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरतभावि जिन ससारतापविनाशाय चंदनं निर्वपामि ॥२॥

विमल मंदुल तंदुल आनिये । धस्त पुंज सवे दुख हानिये । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावी जिनेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये तदुल निर्वपामि ॥३॥

सुमन सौरभिरंग सोहावनो । जजत शूल समस्त नशावनों । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावि जिनेंद्रेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥४॥

शशि सुधासम नेवज लै धरा, जजि पदांबुज रोग कुधा हरा । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ॥५॥

तमविनाशक दीपक जोत है, करन आरति ज्ञान उदोत है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो दीप भिर्वपामि ॥६॥

अगर चंदन आदिक धूप है, जजत होत सुगंध अनूप है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

स्ति फलोत्तम पक्व रशाल है । जजत आनंद होत विशाल है त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फलादिक को सज अर्घ्य है, जजत पावत थान अनर्घ्य है ।

त्रितिय दीप सुमंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्य

छद नंदीधराष्टक की

क्षित क्षिमापती गुनवृंद देव वसंत धुजं ।

गिर मंदर भरत सुछंद भविय देव पुजं ॥१॥

ॐ ह्रीं वसतध्वजाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

वृषमार्द्धव गुणमणिमाल श्रीत्रिजयंत सही ।

गिर मंदर भरत विशाल भाविय सेवतही ॥२॥

ॐ ही त्रिजयताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

वृष आजर्जव आर्जव एव श्रीस्त्रिस्थंभ कहा ।

जजि मंदिर भरत सुदेव भाविय नाथ महा ॥३॥

ॐ ह्रीं स्त्रिस्थंभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

वचसत्य स्तनके खान खान परम ब्रह्म जिनं ।

गिर मंदर भरत सुथान भाविय सेय तिनं ॥४॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

जुग शौच धरमके मूलनाथ अवालीशं ।

जजिमंदर भरत अतूत भाविय नुतशीशं ॥५॥

ॐ ह्रीं अवालीशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

चौ ती.

२५७

जुगसम दमजम जुत देव नाथ प्रवादिक है ।

जजिमंदर भरत लखेव भावियतादिक है ॥६॥

ॐ ह्रीं प्रवादिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

दो विधि तपसागर चंद भृमानंद जिनं ।

गिर मंदर भरत अफंद भावि जजामि तिनं ॥७॥

ॐ ह्रीं भृमानंदाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

जुगत्याग धरमके मूल त्रिनयन जिन जानों ।

गिर मंदर भरत अतूल भावित भजि ध्यानो ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिनयनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

परिग्रह त्याग जिनेश श्रीविद्वेष जती ।

गिर मंदर भरत भवेश पूजत शुद्धमती ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्वेषाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

परमात्म प्रशंग महेश ब्रह्माचार धरा ।

५.

२५७

गिर मंदर भरत जिनेश भाविय सेवकरा ॥१०॥

ॐ ह्रीं परमात्मप्रशंगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

भूमिंद्र चंद्र नागिंद्र भूमिंद्रेश जपैं ।

गिर मंदर भरत गनिंद्र भाविय पाप खपैं ॥११॥

ॐ ह्रीं भूमिंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

गोपाल लंगली सेय गोस्वामि हि सदा ।

गिर मंदर भरत भवेय पूजों ताहिअदा ॥१२॥

ॐ ह्रीं गोस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

कल्याण प्रकाशित स्वामि पंच उल्लाह धेरें ।

गिर मंदर भरत यजामि भाविय विघ्नहरें ॥१३॥

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकाशिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

दुति मंडित मंडल ईश मंडलनाथ नमैं ।

गिर मंदर भरत भवीश पूजत पाप दमैं ॥१४॥

ती.चौ.

२५९

ह्रीं मंडलेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

चौपार्द-लक्ष्मी जासु पदांबु वसै है, देव महा वसवेस वहे है ।

पुष्कर पूरव मंदर जानो भाविय भर्त जजों धरिध्यानो ॥ १५॥

ॐ ह्रीं महावसवेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

जनम स्नान सुमेर पवित्रं, तेज उदै जिनसों जगमित्रं ॥ पु० १६

ॐ ह्रीं तेजउदयाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

चारित धारि हरे सब कर्म, दिव्य जोतिपी जिनगुनपर्म ॥ पु० १७

ॐ ह्रीं दिव्यज्योतिषे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

घाति विघाति प्रबोध धरैया, जैति प्रबोध कुबोध हरैया ॥ पु० १८

ॐ ह्रीं प्रबोधिताय निर्वपामि ॥१८॥

मुक्तसती आलिंगन होर, श्री अभयंक नमों जगतारे ॥ पु० १९

ॐ ह्रीं अभयंकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

मुक्ततिया जु कटाक्ष चलावैं, जो परसो प्रमितेश कहावैं ॥ पु० २०

ॐ ह्रीं प्रमिताय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

पृ.

२५९

ती चौ
२६०

दिव्य स्फारक श्रीजिनदेवा, चार प्रकार करें सुरसेवा ॥ पु० २१
ॐ ह्रीं दिव्यस्फारकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

जे व्रतव्रात अघात धरैया । ते व्रत स्वामी दोष हरैया ॥ पु०
ॐ ह्रीं व्रतस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

जो निधि दुर्लभ है जगमाहीं, सो निधिनाथ जपैं निपजाहीं ॥
ॐ ह्रीं निधिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

कर्म कलंक निशंक सिपाये, देव निकर्मक नाम कहाये ।
पुष्कर पूरव मंदर जानों, भाविय भर्त जजों धरि ध्यानों ॥२४॥
ॐ ह्रीं निकर्मकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-श्रीपुष्कर पूरव दिशा भरत भविष्यत देव ।
पूजों पूरन अर्घ्य सों विघनमिटे स्वयमेव ॥
ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।
अथ जयमाला ।

पद्या-जै जै जनरक्षक शिवमग वक्षक चारितकक्षक स्वक्षवरा ।

पृ.

२६०

जै लक्षअलक्षक सर्वविलक्षक दक्षक पक्षक रक्षकरा ॥

छंद नैमालिनी—

धरम ध्वज वशात धुज जैजै , अजयंते नमो अरुज जैजै ।
 स्त्रिस्थंभन भवभंजन जै जै, परम ब्रह्म मुनि रंजन जै जै ॥२॥
 अवालीश छयालिशगुन जै जै, श्री प्रवादिक परमधुन जै जै ।
 भूमानंद कंद जस जै जै, त्रिनयन त्रिजग लसत वस जै जै ॥३॥
 विद्वेषिक निरसगिक जै जै, परमात्म परसगिक जै जै ।
 भूमिंदक शनेन्द्र नुत जै जै, गोस्वामी गनेन्द्र नुत जै जै ॥४॥
 शुभ कल्याण प्रकाशित जै जै, मंडल आत्म भासित जै जै ।
 महावसव वासवनुत जै जै, उदै तेज समरस नुत जै जै ॥५॥
 दिव्य जोति चतुरानन जै जै, श्रीप्रबोध भवभानन जै जै ।
 अभैअंक जगजानन जै जै, प्रमित परम पहिचानन जै जै ॥६॥
 दिस्करक सुख सागर जै जै, व्रत स्वामी नुत नागर जै जै ।
 श्रीनिधान निधि दायक जै जै, जिन निःकर्म सहायक जै जै ॥७॥

अथाष्टकं ।

लक्ष्मीधरा छंद—

जान्हवी नीरसों हेमभारी भरोँ, धार दे तीन तीनों विथाकों हरोँ
पुष्करार्द्धे गिरे मंदैरावते, वर्तमानं जजे शर्मकों पावते ॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा ।

केदलीनंदनौ चंदनं वावना, पूजते तासुसों शांतिता पावना । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ।

देवजीरादिसे शालि शोभामई पुंजकों धारते शर्म साता लई । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

पुष्करं पुष्कराद्या धरोँ पुष्करं, कामनाशै सही पुष्करं दुष्करं पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्पं निर्वपामि ।

नव्यगव्यादि नैवेद्यनी के किये, थार में धारते सुखसाता लिये पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।
 दीपसोंहे प्रभूमें करो आरती, ज्ञान उद्योतता दीजिये भारती । पु०
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।
 अग्नि माही दशों गंध खेवो सही, अष्टदुष्टें जैरें धूमधूमै वही पु०
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।
 आम्र काम्रादि एलासु केला लये, पूजतें विघ्नका आजु पानी दये
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःफल निर्वपामि ।
 नीर गंधादि लै अर्ध कीनों वरा, पूजतें कर्मकंतारसों निस्तरा
 पुष्करार्द्धे गिरे मंदरैरावते, वर्तमानं जजै शर्मकों पावते ॥
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

हुति मध्यक छंद—

शंकर शंकरते जगमाही, धर्म उद्योतक सो निज आही ।

१ जन्म मरण जरा । २ भारती सरस्वती । ३ ज्ञानावरणादि । ४ कर्मरूपी जंगल ।

ती.चौ.

२६६

मंदर मेरु सु उत्तर जानों, वरततु हे अयरावत थानों ॥१॥

ॐ ह्रीं गरुडाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

कौनन कर्म हुताशनसे है, जिनवर अक्ष सुवाश कहे है। म०२

ॐ ह्रीं अक्षवागाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

सर्व उपाधि निवारि सुखदा । अनुभव मग्न सुनग्न जिनंदा । म०

ॐ ह्रीं नग्नाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

नग्न सुआदि महातप धारी, अमल महा नगनाधिप भारी । म०

ॐ ह्रीं नग्नाधिपाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

चौपाई-नष्ट किये पाखंड अनेक, नष्ट पखंड नमों शिष्टेक ।

मंदर ऐरावत भगवान वरततु हे पूजों धरि ध्यान ॥५॥

ॐ ह्रीं नष्ट पास्तडाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

१ अग्नि ।

५.

२६६

ती.चौ.

२६७

षोडशसुपन लखे जसु माय । स्वप्नबोधजिन सो सुखदाय मं०

ॐ ह्रीं स्वप्नबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशतप विधि निधि दातार । नमो तपोधन जिन अविकार मं०

ॐ ह्रीं तपोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

पुष्पकांड खंडन दुखदंद । पुष्पकेतु मंडन सुखकंद ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्पकेतवेऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

दशो धरम परकाशक स्वामी । धार्मिक जिन पदपदमनमामी । मं०

ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

चंद्रकेतु चंद्रानन सुष्ट, किल्बिषहरत करत सुख पुष्ट ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेतवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

वीते राग दोष समुदाय । सो निज वीत राग सुखदाय । मं०

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

महाजोति धारी धरमज्ञ । श्री अनुक्त जपे उरतज्ञ ॥ मं० ॥

५.

२६७

ती.चौ

२६८

ॐ ह्रीं अनुरक्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

आतम जोत उदोत करंत । उद्योतक निज शिवतियकंत मं०

ॐ ह्रीं उद्योतकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

भविउर तिमिर करत चकचूर तमोपेछ जिन गुनगन पूर । मं०

ॐ ह्रीं तमोपेक्षाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

माधव मधुसेवें पदपद्म । श्री मधुनाथ देत शिव सद्म । मं०

ॐ ह्रीं मधुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

चक्र गदाधर गनधर वृंद । श्रीमरु देव नमें सानंद । मं०

ॐ ह्रीं मरुदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

शमदमजमजुत केवलभान श्रीदममाय जपों धरि ध्यान । मं०

ॐ ह्रीं दममाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

वृषचक्री वृषकेत लशंत । वृषदायक वृषभेसुर संत । मं०

ॐ ह्रीं वृषभेसुराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

प

२६

ती.चौ.

२६९

पांडुशिलातन क्रांतिपवित्र । नमो शिलातन त्रिभुवनमित्र । मं०

ॐ ह्रीं शिलनाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विश्वमाहि जिनसम नहिं नाथ । विश्वनाथ सो हें शिवसाथ । मं०

ॐ ह्रीं विश्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

मोतीदाम छद ।

गनेंद्र सुरेंद्र नरेंद्र खगेंद्र जयें नित चित्त महेन्द्र जिनेन्द्र ।

सुपुष्कर पूरव मंवर जान । जजो अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं महेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जगज्जन आनंद अबुधि चंद । अनंत सुखाकर नंद जिनंद । सु०

ॐ ह्रीं नंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

शरीर प्रभातम भंजन जास । तमोनिभ नाथ महा जशरास । सु०

ॐ ह्रीं तमोनिभाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

५

२६९

ती.चौ.

२७०

सुब्रह्म विचारन तारन ब्रह्म । नमों जिन ब्रह्म सुधारन ब्रह्म ॥

सुपुष्कर मंदर पूरव जान । जजों अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा-आठों दरव बनाय आठों अंग नमायकें ।

जजों हरप उरलाय चटु गिरि ऐरावत जिनं ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

वत्ता-तुव सुजशविशाला गुन मनिमाला परमरशाला सुकुमाला ।

नर सुरगपताला पति तिरकाला कृतनुतमाला सुखसाला ॥

छद कामिनी मोहन तथा आर्या शखला ।

सारसुखकारसंकर जिनेसुरमहा॥स्वच्छअक्षीणपदअक्षवासी लहा॥

मग्न आनंद में नग्न जिननायकं भग्नसंताप नग्नाधिप लायकं ॥

आर्या—पाखंड मुंड खडन नष्ट पाखंड देवअरि दंडन ।

श्रीस्वप्नबोध मडन नमों नमों मेंट मेंट भवहंडन ॥२॥

कामिनीमोहन छंद—

मेदि भवहंडन तपोधन मुक्तहै पुष्पकेतुकजिनं परम सुख जुक्त है ।

आतमोद्धारन धरमेशस्वामी कहा चंद्रकेतू नमों होत साता महा ॥

आर्या—साता महाउपाई तजि रागैं वीतराग जिनराई ।

अनुरक्त मुक्तदाई जानानंद नमों जिनराई ॥४॥

कामिनी मोहन छंद—

नायशिर हंड चंदंति उद्योतित जै तमोपेक्षितं सारसुख जो जितं ॥

नमों मधुनाथशिवसाधनिरदोषहै जैति मरुदेव सुखदेव भवि पोषहैं ॥

आर्या छंद—पोषहि शमदम सुष्ट श्रीदममाय जिनेन्द्र गुनपुष्टं ।

जै वृषभेश अदृष्ट लोचकृतं केशपंचकर मुष्टं ॥६॥

कामिनी मोहन छंद—

पंचकरमुष्ट मह शिलातनतपधरे जैति जिन विश्वनाथं शकल भैहरै ॥

ती.चौ.

२७२

नमत शतहृद मोहेन्द पद पकजं । नद आनद दाता जगत रजन॥
आर्या छंद-रंजन जन भव भंजन तमोनिधी दोष दुष्ट दुस्खगंजन ।
श्रीब्रह्मधार भजन नमो नमो ज्ञान नैनन के अंजन ॥

अंजनं मोखमगगामिके हैं सही, जैति चऊबीसजगराज सुखकेमाही
पुष्करे मंदिरैरावते वर्त ही, पंचकल्याणपाति ध्याय भवि तर्तही॥६॥
आर्या-भवतर्तहि लाखि देवै सुर ध्यावैं नाय भाल पद सेवैं ।
नाचैं चहुँ गति लेखैं साजैं बाजै रसाल बहु भेवै ॥१०॥

कामिनी मोहन छंद—

साज बाजै रसालैं सुबहु भेवजी सम्रादिसंसाग्रादिसारंगी धुनि लेवजी
झिनिनिनिनिझिनिनिनिनि झलछरी बाजई ।

धिकट धुनि धनप पुनि त्रिम मुरज साजई ॥

आर्या-बाजई बीनानाद तननननन तान लेत अहलादं ।

सनननाट अवादं कृत सुरसुर साल ताल तलपादं॥१२॥

कामिनी मोहन—

तालतलमाद वादिते जो बाजई, तासु उपमान कहु जगत मे छाजई॥

प.

२७२

धन्य जिनचंद गुनवृद्धपदबंदही, गायजस आज हम लेत आनंद ही॥

वत्ता—जै मनमथमंथक नित शिव पंथक कृतश्रुत ग्रंथक ग्रंथपती ।

जै करुना मंदर जंजत पुरंदर धरम धुरंधर शुद्धमती ॥१४॥

रथोद्धता छंद—

पुष्करार्द्धवर पुंनव में कहा, मंदिराद्रि अयरावते महा ।

वर्तमान पद जो जजै सही, वांछितार्थ पदलेत सो सही ॥१५॥

इत्याशर्वाद ।

इति मंदिराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिपूजा समाप्ता ।

अथपुष्करार्द्धद्वीपेमंदिराचलैरावतातीत पूजाप्रारभ्यते

स्थापना धनुषबंध—

दोहा—चतुस्थ गिरिवर उत्तरे जिन जे तीत प्रमान ।

तिनहि सुथापतु भावसों उपजै पदनिरवान ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रावतरअवतरसंवौपट् आज्ञान
 ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन
 ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रममसंनिहितोभव भव वपट् स्वा

अथाष्टक तालजत्त होली की चाल में

गिर मंदिर उत्तरस्थान पूजों तीतकों ॥ गिर० ॥ टेक ॥

पदमद्रह गतनीर सार शुभ कनक कुंभ भरिआन ।

धार करत तुम चरनन आगे करम कलंक नशान ॥ पूजों० ॥१॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः जलं निर्वपामि ।

वावन चंदन कदली नंदन केशर संघ घशान ।

भवतपहरन चरन परि पूजत विघन तपतकी हान ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमदाराचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गध निर्वपामि ।

शालि अपंडित शौरभि मंडित शसि सम दुति दमकान ।

अपे संपदा कारन पूजों हे जिनवर धरि धान ॥ पूजों० ॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।
 सुमन सुगंधित प्राशुक लीनों गुंजत अलिगन आन ।
 पूजत चरन कमल जिनवर तुव मनमथ वान नशान ॥ पूजों० ॥ ३॥
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥
 घेवर वावर फेनी श्रेनी सौरभ सरस महान ।
 लुधा रोग निस्वारन कारन जजों निराकुल दान ॥ पूजों० ॥
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥
 मनिमय दीप उदोत होतवर हे जिन भूमतमभान ।
 तासों आरति करत जगत गुरु उपजै आतम ज्ञान ॥ पूजों० ॥
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः दीपं निर्वपामि ॥
 अगर तगर कृष्णागर चंदन धूप सुगंध अमान ।
 खेवत धूमकेतु मँहि ताको जरत दुरित दुख दान ॥ पूजों० ॥

ओं ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीत जिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।
 श्रीफल पक्व मनोहर पावन । मधुर रसीले आन ।
 पूजत मनवांछित परिपूजत अनुक्रम अनुपम थान । पूजों०
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीत जिनेभ्यः फल निर्वपामि ।
 जलफल आदि द्रव वसु साजे अरघ ललित वरदान ।
 नाचिराचि शिरनाय समरचत मिलत विमल मुखथान । पूजों०॥
 ओं ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीत जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

लोलतरंग छद्--

जे उपगारिय वैन बखानैं । ते कृतनाथ नमों धर ध्यानैं ।
 पुष्कर मंदिर उत्तर मानों । तीत जजों अईरावत थानों ॥१॥
 ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

इष्ट विसिष्ट प्रविष्ट करै हैं । श्री उपविष्ट अरिष्ट हरै हैं ॥पु०॥

ॐ ह्रीं उपविष्टाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

मोहमहा तमभंजन भानं । आदित देवनमों गुनखानं ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं आदिनदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

अष्टम भूमि सुथानकवासी । श्रीअसथान नमों अविनासी ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं अस्थानिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

चन्द्रसमान प्रमोद प्रकाशी । देव प्रचंद्र नमों सुखरासी ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं प्रचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

वेणूके जस गावत देवा । वेणुक गावत हैं बहुभेवा ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं वेणुकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

कोटिकभानु छिपे छविदेखें । नाथत्रिभानु विभूतिविशेखें ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं त्रिभानवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

ब्रह्मसु ब्रह्म जिनेसुर स्वामी । ब्रह्मविकाशक ब्रह्म नमामी ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

वज्रशरीर लसे जसु आदी वज्र सुअंग नमों निखादी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं वज्रागाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

वैरविरोध निरोधन हारे, श्रीअविरोधन है अविकारे । पुष्कर० ॥

ॐ ह्रीं अविरोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

पापप्रकृत्त सेवे चकचूरे, जैति अपाप जिनाधिप पूरे ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं अपापाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

लोक अलोक लखे जसरासी लोक सुउत्तर ग्यान प्रकाशी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं लोकोत्तराय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

इंद्रवज्रा छंद—

जलाधिशेषं जिनराज स्वामी जगत्रयी ईशपदं नमामी ।

सुपुष्करे मंदर मेरु सोहै । ऐरावतें तीत जजामि जोहै ॥१३॥

ॐ ह्रीं जलाधिसेपाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

विद्योदितु द्योतित बोधलोके । विद्यापती सेवत देय धोके ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं विद्योतिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १४ ॥

सुमेरसे गौर सुमेरनाथ भवाब्धि में डूवत थाभि हाथ ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं सुमेरवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १५ ॥

श्रीभावितं भव्य समस्त सेवें । आनंद देवें भवनाव खेवें ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं भाविताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १६ ॥

समस्त पे वच्छल लच्छकारी । नमों नमों वच्छल स्वच्छधारी ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं वच्छलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १७ ॥

अतिंद्रियज्ञान प्रकाश कीनों । नमों जिनालं जिन ध्यानभीनों ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं जिनालयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥ १८ ॥

पापं सरोजं दहने तुषारं । नमों तुषारं जिन शर्मकारं ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं तुषाराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १९ ॥

निर्विघ्नदाता भुवनेस स्वामी । आनंद वारानिध चंद्रनामी ॥ सु० ॥

ती चौ.

२८०

ॐ ह्री भुवनेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

कंदर्प सर्पापहरं खगेशं सुकामस्वामी प्रणामो जिनेशं ॥सु०॥

ॐ ह्री सुकामाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

आनंदकंदं जिनचंद्र वंदं देवाधिदेवं प्रणामो अमंदं ॥ सु० ॥

ॐ ह्री देवाधिदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

आकारिमं देवपरं पवित्रं निरूपमं रूप अरूपचित्रं ॥ सु० ॥

ॐ ह्री आकारिमाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

विनीतनें नीत सनै वतायो विनीत सेयें निज नीत पायौ ॥

सुपुष्करें मंदरेमर सोहे ऐरावते तीत जजामि जोहै ॥२४॥

ॐ ह्री विनीताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

वसंततिलका छंद—

जै तीततीर्थपति मंदरपुष्करार्थे । ऐरावते परमआतम धर्मसाधे ।

पु.

२८०

ती, चौ.

२८१

ताकों समर्चत सुपूरन अर्यधारी पावे समस्तसुख सो उभयप्रकारी॥

ॐ ह्रीं पुकराद्विषमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः पूर्णार्थं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

यत्ता-जे जिन मलवर्जित अरिहरितर्जिति घनमिवगर्जित वैनवरं
भवि जनमनसर्जित सुमति उपर्जित विघनविवर्जित चैनकरं॥

३० मात्रा का उद—

वदामो कृत नंदा मदा चंदासे आनंदा दान ।

इष्टं शिष्टं नष्टानिष्टं श्रीउपविष्टं पुष्टादान ॥

गुह्यं बुद्धं ह्ये निःकृद्धं देवादित्यं सुष्टामान ।

स्वश्वक्षेमा वृद्धा वृद्धा स्थानीकं संरक्षोमान ॥२॥

विश्वव्यापि ह्ये अद्यापी प्राचंदापी लक्ष्मीमान ।

शोभाधारी जे भौतारी श्रीवेणुंरु जे जे जे वान ।

मातैडा भाखंडं मह चड जोत भीभीमान् ।

५

२८१

ब्रह्मब्रह्मा ब्रह्मव्यापी ब्रह्मापेक्षी ब्रह्मध्यान् ॥३॥

वज्राधीशं कृतनुतशीसं श्रीवज्रांगा वज्रांगान् ।

ध्याता ध्येयं ग्याता गेयं अवबोधनजुत शसैहान् ।

पापात्यक्ता आपाजुक्ता भुक्ता मुक्ता शर्मोधान् ।

लोकालोक सर्वविलोकं लोकोत्तर श्रीशोभाधान् ॥४॥

हेषादेय समुद्र विमंथन ग्रंथ निग्रंथ जलाधिपवान् ।

अद्वितियदुत जानोद्योत विद्योत सद्बिधादान् ।

ध्यानी ग्यानी हैं निःकंपी मानो मेरु सुमेरु समान् ।

प्रानी भावै भावित के गुन धीरज वीरज सुकृत खान् ॥५॥

निच्छल स्वच्छल सत सुवच्छल वच्छल लच्छित लच्छविधान

चक्री शक्रधरं वृषचक्र जिनालै देव नमैं हैं आन् ।

सातासाना जुग्मविमुक्ता जुक्ततुपारं मुक्तस्थान् ।

तातातीनों लोकतने हैं श्रीभुनेसुर कृतकल्यान् ॥६॥

जीवाजीवादे प्रत्यक्षं चक्षेलक्ष सुकामजितान् ।

तों, चौ.

२८३

धर्माधर्म विशेष ब्रिक्कागे श्रीदेवाधिमुदेवमहान् ॥

कर्त्ताकर्ता मुक्ता मुक्ता आकारिक कीनों विस्त्राव ।

नीतानीत विनीत यताये नीतमती माने है आन ॥७॥

जे चौबीसा पुष्करमंदर ऐरावते हैं ताताव ।

ताकों इंद्रे चंद गनिंदे, वंदे है नागिंदे आन ।

ताकों सेवें हैं जे प्राणी ते होवें श्रीगोभावाव ।

पूजाठाने गुनउर आने "वृंद" नरिंद धरें है ध्याव ॥८॥

पद्या—जे श्रीजिनकुंजर हरि भवपिंजर कीरति गुंज रही जगमें

जै मुक्तधरापति जुक्तमहामति मंगलदायक श्यो मगमें ॥

ॐ हौं पुष्करार्द्धद्वीपमंदगनल्लेखातीतजिनेभ्यां महारं निर्वहामि ।

अथाशीर्वादः । अडिन्ल्लच्छंद-

पुष्करमंदरऐरावत जिन तीत जी ।

पूजत सुनर नारि तिन्हे धरि प्रीतजी ।

पु.

२८३

ती चौ.
२८४

जो सेवै मनलाय हरप उमगायजी ।

सो सुरनर सुख भोगि परमपददायजी ।

इति श्रीपुष्करार्धे पृथ्वदराचलैरावत २४ पूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्धे मंदराचलैरावते भाविपूजा प्रारभ्यते।

कमलवद्ध चित्र—

दोहा—चवथवग्नि वर वतावते वनै वरावतवनाव

भावेदेव भव भाव सव आव आव सिवराव ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रावतरअवतर सर्वौपद् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रमम सन्निहितो भव भव वपद् स्वाहाः

अथाष्टकम् ।

(चाल नंदीश्वराष्टक भाषाधानतरायजी कृततालजत्तादिमें बने है)

यह सलिल कलिल मलहार भारी माही भरा ।

पदपंकज पूजत सार भेटत जनम जरा ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥१॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिनेभ्यो जन्मादिविनाशाय जलं निर्वपामि ।

घसि चंदन केसर सार सौरभि भृंग भरा ।

तुम चरन कमल परवार भौ आताप हरा । वर०॥२॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ।

हिम हीर शशीसम सेत तंदुल मंदुल से ।

तसु पुंज विथुंज धरेत वारिद दुःख नसे । वर०॥३॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

यह काम महाजग शूल आपु निमूल किया ।

ती.चौ.

२८६

यातें लेकर वर फूल पूजत खोल हिया । वर०॥४॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

जग रोगवली इक भूख दूपत सब प्रानी ।

ताको तुम नासि अरूप नेवज मैं आनी । वर०॥५॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ।

तुम ज्ञान प्रकाश जिनेश लोकालोक लखें ।

हम दीप चढ़ाय महेश आपा आप चखें । वर०॥६॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

तुम कर्म कलंक विनाश आतम शुद्ध भये ।

हम खेवत धूप सुवास नाचत कर्म चये । वर०॥७॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

तुम पाय अतिंद्रिय शर्म परम पुनीत फलं ।

पू.

२८

ती चौ.

२८७

फलसौं पूजों तजि भर्म दीजो मोक्ष थलं । वर॥८॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विगतिजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

तुम आनंद कंद जिनद सब दुख दंद हरे ।

हम अरघ लेय अभिनंद पूजत भक्त धरे ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥९॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विगतिजिनेन्द्रभ्यः सर्वं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्य ।

चौपाई छंद ।

विसद सुखद जस पूरन चंद । नमों जशोधर जगदानंद ।

पुष्कर पूरव मंदर मेर । जजों भाविण्यैरावत हेर ॥१॥

ॐ ह्रीं यशोधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

५.

२८७

परम सुकृत पद दायक परम । सुकृतदेव कृत नितजिनधर्म । पु० ॥

ॐ ह्रीं सुकृताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

अभै घोषनाकृत जगजेन । अभैघोष जिन निजगुन देन । पु० ॥

ॐ ह्रीं अभैघोषाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

दायक पद निर्वाण उदार । श्रीनिर्वाण नमों भवतार । पु० ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

शुद्ध सकलव्रत जिनके पास । सो व्रतवास भरत भाविआश । पु० ॥

ॐ ह्रीं व्रतवासाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

राजनिके राजा पदसेय । सो अतिराज राजपद देय । पु० ॥

ॐ ह्रीं अतिराजाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

ध्यान अश्व चढके शिवलीन नमों अश्वजिन परमप्रवीन । पु० ॥

ॐ ह्रीं अश्वजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

अर्जुनवर्न विवर्जित मान, जै अर्जुन जिन गुनमनि खान । पु० ॥

ॐ ह्रीं अर्जुनजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

धरम सुधाधरतें मिय चखें, तपश्चंद्र सो चिदगुन लखें ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं तपश्चंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

पंच परावर्तन चक्रचूर । शारीरिक जिन समता पूर । पुष्कर० ।

ॐ ह्रीं शारीरिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

मनवांच्छित पद देत मिलाय । नमों महेसुर जिनके पाय । पु० ।

ॐ ह्रीं महेस्वराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

सुंदर ग्रीव लखत द्विगवैन । श्रीसुग्रीव नमों निरणेन । पुष्कर० ।

ॐ ह्रीं सुग्रीवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

दिढ़ प्रहारतें अरि खैकीन । दिढ़प्रहार समतारस भीन । पु० ।

ॐ ह्रीं दिढ़प्रहाराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

दयानीत जग जस विख्यात दयानीत जिनवर वरगात ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं दयानीताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

पाडता छंद-जिन अंवरीख पद सेवों निरदोष निजातम वेवों ।

गिरि मंदर पूज रचावों अयरावत भावत भावों॥१५॥

ॐ ह्रीं अवरीपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

जश नारद तुंवर गावैं । जिन तुंवर सों लय लावैं ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं तुमराय अर्घ्यं निर्वपामि॥ १६॥

विफलीकृत कामकलका । जिन सर्व शील जु अटका ॥ गि०॥

ॐ ह्रीं सर्वशीलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

जनमोच्छ्व सार धरें हैं । प्रतिजातक पाप हरेहैं । गिरि०॥

ॐ ह्रीं प्रतिजातकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

जित इंद्रिय दिव्य भए हैं । सुअतिंद्रिय शर्म लए हैं । गि०॥

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

तप आदिततें अति तेजा । तप आदित भवि शिवभेजा । गि०

ॐ ह्रीं तपादित्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

चौ.ती.

२६१

स्तनत्रय क्रांत धेरें हैं । शिव स्तनकीर्ण सुवरें हैं । गिरि॥

ॐ ही स्तनकिरणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

दिवसाधिप सेवत आई । प्रणमामि दिवेश सदाई ॥ गिरि॥

ॐ ही दिवेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

शुभ लच्छन लच्छित गीता । जिन लांछित सो जग तीता ॥ गिरि॥

ॐ हीं लाछनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

निज शुद्ध प्रदेश करैया । सुप्रदेश कलेश हरैया ।

गिरि मंदर पूज रचावों । अयरावत भावित भावों ॥२४॥

ॐ ही सुप्रदेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

लोलतरंग उद ।

पूरन अर्घ्य बनाय पुनीतं । पूजत हों जिनके नुत मीतं ॥

मंदर उत्तर भाविय सारं । वदत “वृंद” करो भवपारं ॥२५॥

ॐ ही मदराचलैरावत भाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

५

२९१

अथ जयमाला ।

पू.

यत्ता-जै चिदगुन दर्पन भविसंतर्पन शिवदिव अर्पन विघ्नहरा ।
जै जै भगवंतं कृत भव अंतं अतुल अनंतं ज्ञानधरा ॥१॥

तोटक उद--

प्रणमामि जशोभरसार जसी । कृत सुकृत सुकृत देव वसी ।
जय घोष अभै जिन शुद्धमती । निरवान नमो निर्दोष जती ॥२॥
व्रतवास सदा भवत्रास हरै । अतिराज नमों सुखकंद करै ॥
नित अश्वजिनेश विपाद हरै । जिन अर्जुन अर्जुन कीर्त करै ॥
चंद जिनद गर्निद भजे । सु सरीरिऊ पाय सतद जजै ।
र मेर महेश महा । पद ग्रीवक ग्रीवसु देत कहा ॥४॥

। सु प्रहार दिहप्रहर । प्रणमामि दयानित नीत धरं ॥

संवर अवर ईप गहा । जश गावत तुंवर तुंवरहा ॥५॥
सब सोल महामनि भूखन है । प्रतिजात सदा निरदूखन है ।
सुख शुद्ध अतिद्विय चूखन है । तप आदित ज्ञान अदूखन है ॥६॥

रतनत्रय रत्न सु कर्ण धरै । सु दिवेश महामल जीर्ण करै ।
 जिन लांछन लांछित वोयकला । सुप्रदेश अशेष कलेश दला ॥७॥
 वर पुष्कर मंदर मेर लमै । अघरावन उत्तर तास वसै ।
 तसु भाविय तीरथ नाथ सही । गुनध्यावत पावत मोच्छ्र मही ८
 तिनसों अरदास करों नितही । प्रभु भक्ति सदा निवसो चित ही ।
 तव आगमज्ञान रहो हियमें । नित आतमध्यान जगो जियमें ९
 रतनत्रय प्राप्त होहु सही । जिहि ते द्रष्ट पाइय मोच्छ्र मही ।
 जब लौं न मिलै जिनराज हमें । तबलों इतनों हम नित पमें ॥१०॥
 शिवसाधन जोग सदैव मिलो । अनुभौ रस अद्भुत चित्त पिलो ।
 दु खदारिद विघ्न विनाशकरो । सुखसंपतसार सु गेह भरो ॥११॥
 धता-जै शिवसरमंजन कलमलभंजन मुनिमनकंजन रंजकरा ।
 जै सद्यनिरंजन भविद्रिगअंजन विपतिविगंजन तंज हरा ॥
 ॐ ही मंदराचलैरावतभावि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वादः । चौबोल छंद-

ती.चौ.

२९४

आठों दरव मिलाय गाय गुन जो पूजे जिनराज जती ।

पुष्करद्वीप तुरित मंदिर गिर ऐरावत भावत सुमती ॥

सो जन पुत्र मित्र धन जोवन वांछित लाभ लहत है अती ।

शक्र चक्र अनुभूति पायके "वृंदावन" है मुक्तपती ॥

इति श्रीपुष्करार्द्धद्वीपे मंदराचलैरावतभाविपूजा समाप्ता ।

इति चतुर्थमेरूपूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धद्वीपे मेरुसंवंधी विदेहदेव संस्थित
विहरमान पूजा प्रारब्धते ।

छंद सारंगी धुनिवर्ण १५

आपा शुद्ध चैतन्यं मे जे धीरं साधें बैठे ।

जा देखें है हों शं जीमें निग्रथायों श्यो पेठे ॥
 सो ह्यांते मे चाहों तेरो सेवा स्वामी नौ मामी ।

पाचै मेरं वेदे हों में थापों ह्यां चारों स्वामी ॥
 ॐ ह्रीं पुष्कराक्षद्वीपपश्चिमत्रिधुन्मालीमेरुकेविदेहक्षेत्रसर्वधी चारिविहरमान
 श्रीवीरसेनमहाभट्ट देवजशत्रुजितवीर्य जिन-अत्रावतर अवतर संवौपद् आदाननं ।
 अत्र तिष्ठतिष्ठ ठाठ स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भयभव वपद् स्वाशः ।

अथाष्टकम् ।

(चाल भाषा सिद्धाष्टक ध्यानतविलाशकी)

नीर विमल शीतलमहा भरि कंचनभारी लाय ।

तुम पद पदम चढ़ाइयौ मम करम कलंक नशाय ॥

विद्यन्माली मेरुके लखि चारि विदेह महान ।

समवसरन जुत पूजिहौं चहु विहरमान भगवान । वि०

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्री-
वीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्य जन्मजरामृत्युविनाशाय जल निर्वपामि ।

केशर चंदन वावनों घसि कदलीनंद मिलाय ।

तुम चरनन पर पूजते सब विघन सघन मिटिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पृष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्री
वीरसेन-महाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यश्चंदन निर्वपामि ।

शालि अखंडित सेत हैं शुभ पुंज धरंत सुधाय ।

दारिद्र्य द्रुम दुखनाशिकें सुख अखय संपदा पाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः
श्रीवीरसेनमहाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

फूल सुगंध सुवास है अलिगुंजत जापे आय ।

सो तुम आगे धारते सब समरशूल नशिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिममेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-म-

हाभद्र-देवजश अजितवीर्येभ्यः पुण्यं निर्वपामि ।

नेवज सज सुरस सुगंधता मन नैन स्सन सुखदाय ।

सो ले तुम आगे धरौ मम रोग बुधा नशिजाय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं षण्णरार्धद्वीपश्चिममेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश अजितवीर्येभ्यः नेवेद्य निर्वपामि ।

यह दीप प्रकाश महालसे निरधूम नयन प्रिय लाय ।

तासों तुम आरति करों उर आस्ततम छै जय । वि० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्यः दीपं निर्वपामि ।

दशगंध सुगंध उखेड़ये जिन तुम चरनन द्विग लाय ।

करम कलंक जरौ सही मो धूम धूम उडाय ॥ विहरमा० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेवराज अजितवीर्येभ्यः धूपं निर्वपामि ।

फल पक्क रसीले पावने भरि हाटक थार मगाय ।
दारिद्र विघन विनाशियै हम पूजत हैं शिरनाय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेघप्रिदेहक्षेत्रस्थविहरजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव
जग अजितवीर्येभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल वसु दख संजोयके कर जोरि जजों शिवराय ।
आनंद संपति दीजियै अरिनाश करो जिनराय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेघप्रिदेहक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव
जग अजितवीर्येभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद—

पुष्कार्द्ध गिर पश्चिम शीता । उत्तर पुंडरीक नी मीता ।
भानु मातु भुविपात्त नरिंदा वीरसेन यैरावत छंदा ॥

ॐ ह्रीं वीरसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम शीता दक्षिण विजै नगर नवनीता ।
देवराज सुउमादे जननी । महामद्र जजि शशि पग जननी ॥

ॐ ह्री महाभद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम लसे सीतोदा जम सुशिमा वसे ।
गंगा माश्रव भूत नरेसुर स्वस्ति लच्छ देवजस जिनेसुर ॥

ॐ ह्री देवजगाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम गनों सीतोदा उत्तर तट भनों ।
अजितवीर्य नगरीय अजोध्या मातु कननिका कमल सुवोध्या

ॐ ह्री अजितवीर्याय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

दोहा—समव शरन शोभा सहित विहरमान भगवान ।

पूजत सुरनर नागपति हम पूजत धरिध्यान ॥

ॐ ह्री विष्णुमांढ्री मेघविदेह क्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्र

देवजश अजितवीर्येभ्यः पूर्णाधि निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

वत्ता—जै केवलदिनमनि मोहतिमिरहनि भव्यसरोजनि मोदकरा
शिवराय दिखावन जे जगपावन पापनशावन विघ्नहरा १

नैमालनी तामरस चंडी छंद—

वीरसैन गुनसेन नमस्ते । महाभद्र सुखदेव नमस्ते ॥

सदा देव जेशदाय नमस्ते । अजित वीर्य पदध्याय नमस्ते ॥२॥

तीर्थकर अमलान नमस्ते । संजुत केवलज्ञान नमस्ते ।

समवसरन थित देव नमस्ते । इंद चंद गनसेव नमस्ते ॥३॥

द्वयालिश गुनभंडार नमस्ते । अशरन जन आधार नमस्ते ।

वानी खरत त्रिकाल नमस्ते । श्लेहत गनधर हाल नमस्ते ॥४॥

दरसावत सब तत्त्व नमस्ते । गहत जहां भविसत्त्व नमस्ते ।

केह श्रावक व्रतधार नमस्ते । केह होत अनगार नमस्ते ॥५॥

केह करम प्रजाल नमस्ते । लहत केवल विशाल नमस्ते ।

केह अघान बिघात नमस्ते । शिवपुरकों धुनिजात नमस्ते ॥६॥
 केह आत्म अनुभवत नमस्ते । सांत सुधारस पवन नमस्ते ।
 इत्यादिक वृष रीत नमस्ते । चलत मुक्तमग नीत नमस्ते ॥७॥
 सदा अगम गुनवंत नमस्ते । जै जै शिवनिग कंत नमस्ते ।
 मम मनमा परिपूर नमस्ते । रहो सु आप हजूर नमस्ते ॥८॥
 सेवो जुगपद कंज नमस्ते । भवबाधा मम भंज नमस्ते ।
 तुम प्रसाद हानि कर्म नमस्ते । होहु आप सम पर्व नमस्ते ॥९॥
 यता-जै जै गुनसंचन दूपन रंच न देव अवंचन ज्ञानपते ।

तुम सेवत सज्जन वाजतवज्जन गावतभज्जन भावरेते १०

ओं ह्रीं विष्णुःमालीभेरुविदेह्येनस्थविह्रमान जिनेभ्यः श्रीश्रीगमैर्न महाभद्र
 देवजश अजितवीर्येभ्यः महान् निर्मपामि ।

अनाशीर्वादः-गीताउंद—

जश गाय गुन उर ध्याय दख मिलाय जो शिरनाईजी ।

पूजै सदा जिनराय पुष्कर अरध पश्चिम जाइजी ॥
 श्री वीरसेन सु आदि चार विहारमान विदेहमें ।
 सोनर सुरग सुख भोग आतम सुख लहे शिवगेहमें ॥
 इति श्री विद्युन्माली मेरु के विदेहक्षेत्रस्थ विहरमान पूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुके भरतक्षेत्र संबंधी
 वर्तमाना ९४ जिनपूजा ।

लोलतरंग छंद—

विद्युत्तमालिय मेरु विराजै । दन्तिन्नभर्त सुतामधि छाजै ।
 चौविश वर्तसुमान जिनंदा । थापतु हों सुखसागर चंदा ॥
 ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरत वर्तमानजिनअत्रावतर अवतर संवौपद् आह्वाननं
 अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव
 वपद् स्वाहाः ।

अथाष्टकं ।

(चाल-मोहि राखो हो चरना) टप्पा —

पृ.

हम पूजैँ हो चरना । वस्तमान जिनराजके ।हम०।
 विद्युन्माली मेरु विराजत दच्छिन भरत सु वरना
 चौविश जिन सुनरसुनिगन धर सेवत पातकहरना ।हम०टेक।
 प्राशुक जलभरि कनकभृंगमें धार तीन सो ढरना ।
 जनम मरन मल धोय तुरित मो सागर पार उतरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योजन्मादिविनागाय जलंनिर्वपामि
 वावनचंदन कदलीनंदन घस सुगंध विसतरना ।
 भवतप हरन चरन जुग पूजत विघन ताप निरवरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो गंधं निर्वपामि ॥२॥
 तंदुल मंदुल शशिसम शोभत अजिय जुगत जसु वरना ।

पुंज धरत तुम चरनकमल द्विग अखै संपदा करना ॥हम०॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योऽक्षतं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सुवरन सुमन सुगंधित शोभित सुवरन थारी भरना ।

मनमथ मथन चरनतर धारत समरशूल छैकरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

नव्य गव्य पक्वान वनायौ मधुर सुरस मृदु धरना ।

क्षुधा रोग निस्वारन कारन पूजत हों तुम चरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ।

जग मग जोत होत दीपगकी तासों आरति करना ।

तिमरमोह निश्नासि तुरित निज आत्मजोत सुधरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

दशविध गंध मनोहर'लै जिन सनमुख खेवन करना ।

करम काठकों जारि प्रभू यह विनती बहुविध करना ।हम॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

सुरस मधुर रितु फल कलवर्जित रसन नैनमन हरना ।

चरचत चरन जुगल जिनवरके मुकतरमनिकूं वरना ।हम॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल सकल मिलाय अरघकरि सुजश विविधविधिवरना ।

जजों तुमें त्रिभुवनपति जिनवर भवचाथा परिहरना ।

हम पूजें हो चरना, वरतमान जिनराजके । हम पूजै० ।

विद्युन्माली मेरु विराजित दक्षिण भरत सु वरना ।

चौविश जिन सुरनर मुनिगनधर सेवत पातक हरना ।हम॥

ॐ ह्रीं विद्युन्माली मेरु भरत वर्तमान जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्थ ।

दोहा-हितकारी सर बांगके श्री सगवांग जिनेश ।

जजों भर्त वर्तत महा विद्युत नाम नरेश ॥१॥

ॐ ह्रीं सर्वागस्यामिन् अर्थं निर्वपामि ॥१॥

प्रभव अनूपमकूं धरें देव प्रभाकर भेस । ज० वि० ॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युत्प्रभाय अर्थं निर्वपामि ॥२॥

श्री पद्माकर पद्मद्युति पद्मा देत अशेश । ज० वि० ॥३॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्थं निर्वपामि ॥३॥

बल अनंत बलनाथमें शोभत नवल निवेश । ज० वि० ॥४॥

ॐ ह्रीं बलनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥४॥

तिहू जोग निखार निज जोगनाथ गुनभेस । ज० वि० ॥५॥

ॐ ह्रीं जोगीश्वराय अर्थं निर्वपामि ॥५॥

ती चौ.

३०७

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपात क्रिय । सूक्ष्म अंग निपुनेस । ज०वि०॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

चल मल दोष वितीत है । चला तीत वृत्तदेश । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं चलातीताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

ध्वांत ध्वंस करता अखिल । देव कलंवक येश । ज०वि०॥

ॐ ह्रीं कलवकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

पर परनत परित्याग क्रिय । श्रीपरित्याग महेश । ज०वि०॥

ॐ ह्रीं परित्यागाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

विधि पोषक सोपक अविधि श्रीनिषेधक जिनेस । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं निषेधकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

पाप हरन सुख करन सब ॥ पाप प्रहार जगेस । ज०॥

ॐ ह्रीं पापप्रहारकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

मुक्त बंधू वर-विमल गुन । मुक्त चंद बुधि भेस ।

५

३०७

जजों भर्त वर्त्तन महा । विद्युत मालि नगेस ॥१२॥

ॐ ह्रीं मुक्तचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

छंद सारवती-

ग्यान मई अप्रकाश जिनं । वामव सेवत पाय तिनं ।

विद्युत मालिय भर्तमहा । वर्त्तन पूजत सुखलहा ॥१३॥

ॐ ह्रीं अप्रकाशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

अस्त रु नास्त पदार्थ कहे । श्री जै चंद कलेस दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं जैचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

अन्तर बाह्य हरे मलको । देहु मलाधर श्यो थलको ।विष्णु०॥

ॐ ह्रीं मलधारिणे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

स्याद सु अस्त पदार्थ कहे । जैति सु संजत कर्म दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं सुसंजताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

स्याद सु नास्तिय वस्तु भने । निरमल श्रीमल सिंधुवने ।वि०॥

ॐ ह्रीं मलैस्त्रिन्धवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

स्यादकंथचित अस्त परं । स्वक्ष गुणाकर अक्षे धरं । वि०॥

ॐ ह्रीं अक्षधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

अस्त अकथ्य कंथचित है । जैति धरा गुन संचित है । वि०॥

ॐ ह्रीं धराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

नास्ति अकथ्य कथचित है । देव गणाधिप दोष दहै । वि०॥

ॐ ह्रीं गणाधिपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

अस्त रु नास्त अवाच कथं । चित्त अकामिक पाप मथं । वि०॥

ॐ ह्रीं अकामिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

सातहु भंग अमंग भने । नित्य विनीत अनीत हने । वि०॥

ॐ ह्रीं विनीताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

राग रु दोष वितीत सदा । वीतित राग जिनेश वदा । वि०॥

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

ती.चौ.

३१०

प.

आनंद अंबुधि वृद्ध करै । शुद्ध रतानंद मोद भैं ।

विद्युत मालिय भर्त महा । वर्तत पूजत शर्म लहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं रतानदाय अर्घ्य निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा छंद-विद्युत माली मेरु, पुष्करार्ध पूरव दिशा ।

भरत संत जिन हेर, पूजों पूरण अर्घ्य सों ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्कारार्धद्वीपविष्णुमालीमेरुभरतस्थवर्तमानजिनेभ्यो पूर्णार्घ्य ।

अथ जयमाला ।

षठा-जै जै जगवंदित पाप निकंदित नित आनंदित शुद्धमती ।

जुत विभव अमंदित सदयसुखंदित जै निरफंदित बोधपती ।

पद्धड़ी छंद—

जय जगतहितू सरवांगदेव । वंदामि प्रभाकर गुन अखेव ।

जै पद्माकर पदमानिधान । बलनाथ तनें सुनि धरत ध्यान ॥२॥

जै जोगीश्वर सुर नमत पाय । सूक्ष्मांग नमो मन वचन काय ।

३१०

जै बलातीत निहचल सरूप । जै जैति कलंवक सुख अनूप ॥३॥
 परित्याग नमों करजोर चित्त । जै जै निषेध जिन जगपवित्त ।
 जै पापप्रहारी हरन पाप । जै मुक्तचंद भविहरन ताप ॥४॥
 जै अप्रकाशक प्रकाश जान । जयचंद जिनद दयानिधान ।
 मल घारी जिन शिवधाम देत । जै जैति सुसंजत सुगुनसेत ॥५॥
 मलसिंधु विमल गुन वेत सार । प्रणमामि अक्षधर जगत तार ।
 जै धरादेव निव धरा दाय । जै जैति देवगण नितसहाय ॥६॥
 सुरगज अगामिक नमत आन । नित नीत निपुन सु विनीतवान
 जै बीतराग करुना निधान । लछ देतु रतानद सकल धान ॥७॥
 ए चौविश जिनवर धरतमान । निशुतमाली गिर भरत जान ।
 जिहि सेवत वासव मुदित अंग । गुन ध्यावत गावत साजसग
 द्विमि द्विमि धिधिरुटवाजन मृदंग । संसाग्रदि साग्रदिसारगिचंग
 किनिनिनिनिनिनिनि किंकिनि करत । करतलसुरान्वितधुनिधुरन्त
 ता थेइ थेइ थेइ थेइ धरत पाव । ताना येइ धुंगत धुंगत चलाव ।
 धुगतां धुगता गतवजै पुष्ट । तननननन तान अलापि सुष्ट ॥१०॥

ती.चौ.

३१२

इत्यादि समाज मिलाय इंद । तुव जशगावतु हैं हे जिनंद ।
तुम पच कल्याणक ईश पर्म । गुन सागर अगम अनंत शर्म ११ ॥
हम शरण गही दुख खड खड । मन वांछित आनंद मंड मड ॥
भव बाधा मेरी मेट मेट । शिवराधा सों कर भेट भेट ॥१२॥

वचा-जै जै गुनमूरत अनुपमसूरत आनंद पूरत पर्मपती ।

“वृदांवन” ध्यावत शीसनवावत वांछित पावत शर्म अती १३

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

अथाशीर्वाद-शार्दूलविकीर्णित छंद—

जो पूजे मनलै पाय जिनके सद्द्रव्य औ भावसों ।
विद्युन्मालिय भर्त वरततु महा ताकों जपैं चावसों ॥
सो पावे धन धान्य शर्म सकलं शक्राधि है के सही ।
चक्री होय अतिदि आनंद लहै श्रीसिद्ध की जो मही ॥

इति विद्युन्माली मेरुभरतवर्तमान पुजा समाप्ता ।

पू.

३१२

अथ विद्युन्माली मेरुभरतातीत जिन पूजा प्रारभ्यते ।

दोहा-विद्युन्मालीय मेरु के भरतातीत जिनराय ।

थापों चौविश सुगुननिधि आय आय प्रभु आय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धक्षीपे विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रा-
वतर अवतर सर्वोपद् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ टः ठः स्थापनं । अत्र
मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा

अथाष्टकं ।

वशंततिलका वंद—

सज्जान्हवीय जल उज्जल हेमभारी धाराकरों त्रिविध रोग हरो हमारी
श्रीपुष्करार्द्धगिरिविद्युत्तमालिनामीपूजों सुभर्तवरतीतजिनेशस्वामी

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरु भरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥

काश्मीरचंदनकपूरसुगंधपूरेतसों समरचतप्रभु भवतापचूरे । श्री० ।

ती चौ.

३१४

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ॥

मुक्ता समान सित तंदुलसार सोहे,

धारंत पुंज मनवांछित सुख हो है । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥

कुंदारु विंदवर केतुकि पुष्पसारे,

हे नाथ धारहुँ इहां हर शूलम्हारे । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

नानाप्रकार चरुसार रसाल लायो,

तासों समरचत क्षुदा दुखको नशायौ । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥

वाती कपूर घृत पूरित दीपकीनों,

ताकों चढ़ाय निज आतम ज्ञान लीनों । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥

कृष्णागरु प्रमुख धूप अनूप खेवों,

कर्मोघ दाहि निज आतमरूप बेवों । श्री० ।

ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

काम्नाम्रजाम शुभ पक्कलवंग एला,

इत्यादि सोचत मिले शिव संगवेत्ता । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥

गंगा जलादि सब द्रव्यफलार्थ साजे,

बाजे बजे जजत पाप समस्त भाजे ।

श्रीपुष्करार्द्ध गिरि विद्युतमलिनामी,

पूजों सुभर्तवरतीत जिनेशस्वामी ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

मोदक छंद—

पद्मसुचंद महा ह्यवि आनन । भाषतधर्म अदोष पुरानन ।
विश्रुतमालियभर्त विराजत तीतजर्जे भवि आनंद साजत ॥

ॐ ह्री पद्मचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

सद्गुणारत्न विभूषण भूषित रत्नशरीर नमो निरदूषित । वि० ।

ॐ ह्री रत्नांगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

जोगि यजोगनि द्वार निहारत । देव अजोग तिजोगनिवारत । वि०

ॐ ह्री अजोगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

दायकसिद्ध सु अर्थ पुनीतम । श्रीसरवारथ सिद्ध अभीतम । वि०

ॐ ह्री सिद्धार्थाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

श्रीकृपनाथ किये कृप कर्मनि । दीप्त शरीर हरो भवि भर्मानि । वि०

ॐ ह्री कृपनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

ती.चौ

३१७

इंद सुचंद सदा पद सेवत । श्रीहरिचंद निजांतम वेवत ।वि०

ॐ ह्रीं हरिचन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशभेव सभा जशगावत । सद्गुणजुक्त गुणाधिप ध्यावतावि०

ॐ ह्रीं गुणाधिपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

या भव औ परभौ सुख कारन । देव परत्र कलेश निवारनावि०

ॐ ह्रीं परत्रेकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

पूरन ब्रह्म पदाविन्त राजत । ब्रह्म सु नाथ प्रभाछवि छाजतावि०

ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

आँनंदकंद चिदानंद स्वामिय । श्रीमुनिचंद नमें शिवगामियवि०

ॐ ह्रीं मुनिचन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीकुल दीपक दीपक वंदिय । दायक मोखपुरी अभिनंदियवि०

ॐ ह्रीं कुलदीपकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

राजनिके पाति पूजत पंडित । राजरिपी रिपिपंकति मंडित वि०

पृ.

३१७

ॐ ह्रीं राजर्षये अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

भव्यप्रबोधक धर्म सु भाषत । देव विशाख निजानंद चाखत वि०

ॐ ह्रीं विशाखाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

नाथ अनंदित आनंद मंदिर । हैं निकलंक नमंत पुरंदर ॥वि०

ॐ ह्रीं आनंदिताय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

छंद इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवजा ।

जे भानुसे दीप्त धरें शरीर वंदों रवि स्वामि जिनें संधीरं ।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं रविस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

श्रीसोमदत्तं प्रणमामि देव । आनंदकंदं शतइंद सेव ।श्री०

ॐ ह्रीं सोमदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

जेकाम शत्रू कहि छीन कीनों नमों जयस्वामि महाप्रवीनों श्री०

ॐ ह्रीं जयस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जे मोक्षलक्ष्मी जुत केल कर्ते । ते मोक्षनाथं भवतीत हर्ते । श्री०

ॐ ह्रीं मोक्षनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

निसर्गसम्यक्तसुव्यक्त दाता सो अग्रभावी जगमेंविख्याता । श्री०

ॐ ह्रीं अग्रभानवेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

ध्यावों सदा सो धनुषांग स्वामी धनुर्धरेशार्चित सुक्तधामी । श्री०

ॐ ह्रीं धनुषांगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

सुधाधरं व्यक्त उत्तंगकाया श्रीमुक्तनाथं प्रणमों जिनाया । श्री०

ॐ ह्रीं मुक्तनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

रोमांचकों ध्यावत शर्म पावै आनंद रोमांच तुरंत आवै । श्री०

ॐ ह्रीं रोमांचाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

प्रसिद्ध संबंध सुसिद्ध धारी । प्रसिद्ध नाथं भव सिंधु तारी । श्री०

ॐ ह्रीं प्रसिद्धनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

जो जीव को वांछित देत नीकै जिनेश सो ईस सवे जती के ।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी । पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं जिनेशस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-पूरन अर्घ वनायकें जजों जुगल कर जोर ।

विद्युतमाली भर्तके तीत जिनेसुर ओर ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्विद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतातीतजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता-जै जिनगुनसागर सुजश उजागर सेवत नागर नीतमती ।

सब विघनविनाशन उन्नत शासन ज्ञान प्रकाशन बुद्धपती ।

छंद दोहा आचलीबंध ।

विद्युनमालीमेरके दच्छिन दिश सुखकार ।

भरतीतजिनपतिजजों ध्यावों पर अविकार ।

भविहो जिनगुनगावौ भावशोजी पदमचंद पद्मा करैं श्रीरतनांगअनूप

नमहि अजोग जपो सदा सरवारथ सिव भूप । भवि हो० ॥२॥

करम कृषन कृपनाथ हैं श्री हरिचंद दयाल ।
 जैति गुणाधिप सुगुन निध जै परत्रिक गुनमाल ॥ भविहो० ॥
 ब्रह्मनाथ आनदमैं नमों मुनिन्द जिनद ।
 दीपक जग दीपक भए राज ऋषी सुख कंद । भविहो० ॥
 द्यौ विशाख अभिलाष मम आनंदित जित कर्म ।
 रवि स्वामी शिवमग अखैं शोभदत्त निरभर्म । भविहो० ॥५॥
 जै स्वामी जै देतु हैं मोक्षनाथ सुख हेत ।
 अग्रभाव बुधि दीजिये धनुष अग सुधि लेत । भविहो० ॥६॥
 मुक्तनाथ शिवसाथ हैं रोमांचक अधचूर ।
 जैति प्रसिद्ध सुसिद्धकों श्री जिनेश सुख पूर । भविहो० ॥७॥
 गरभागम पट मासलों नवधित गरभ मझार ।
 इंद रतन वरषा करी दिन त्रिवार मनि धार । भविहो० ॥८॥
 जनमत सुरगिर न्होन करि निज नियोग विसतार ।
 पिता शौंषि जिनसेवकों राखे सुर सु कुमार । भविहो० ॥९॥

भोग भोगि तज राजकौं जोग धरे अविहार ।
 त्रेसट सिद्ध लहें तवे मौन सहित व्रतधार । भविहो० ॥१०॥
 घाति घाति केवल लयो लोकालोक प्रकाश ।
 समवशरन रचना वनी इन्द्र भर शतदाश । भविहो० ॥११॥
 फिर अघाति चक्रचूरिके मोक्ष भए जिनचद ।
 गुन अनत इकरूप है वंदत भवि नित "वृंद" । भविहो० ॥१२॥
 वत्ता--जै श्रीजिनस्वामी त्रिभुवननामी गुनअभिरामी शिवधामी ।
 तव पादनमामी हृदय धरामी पाप नशामी सुखपामी ।
 ॐ ह्रीं पिण्डमालीमेरुभरतभाविचतुर्विचतिजिनेभ्यो धूपं निर्दशामि ॥७॥

अथाशीर्वाद-जोगीगसा छद—

पुष्करार्द्ध गिर पिण्डुतमाली पच्छिम माहि विगजै ।
 तास भरत तित तीत जिनेसुर आनंदकारी छाजै ॥
 तिनपद जो भवि साजि समाजनि पूजत भगत धराई ।

सोसुर नरसुख भोगि सकल विधि अनुक्रम शिवपुर जाई ॥

इति श्री विद्युन्मालीमेरुभरतातीतपूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुभरतजाविजिन पूजा प्रारभ्यते ।

छंद मदाविलिख कपोल ।

विद्युतमाली मेरु दीप पुष्कर मह छाजत ।

तासु भरत के माहि भविष्यत जिनवर राजत ॥

तिनको थापों इहां जुगलपद पूजन कारन ।

आय प्रभु इत अवे सकल दुखदद निवारन ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभाषिचतुर्विंशतिजिनसमूह-अत्रायतर अत्रतर संवो-
पद आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठ स्थापन अत्रमम सन्निहितो भवभवपद स्वाहाः ।

अथाष्टकम् ।

छंद रूपक कविता-

हिमवन गिरगत गंगाजलवर कंचनभारी भरकर लाय ।

मनवचन पुलकित नित पूजत जनमजरामृत रोग पलाय ॥

विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवरजग सुखदाय ।

पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वंदत जसु पाय ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

वावनचंदन कदलीनंदन केसरसंग सुगंध घसाय ।

भवतप हरन चरन जिनवरके पूजत ही भवताप पलाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ॥२॥

सेतशालि शुभ शशिसम दमकत गमकत वासनैनसुखदाय ।

पुंजधरत दुखदंदहरत आनंदभरत अनुपम सुखदाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥

कमल केतुकी वेलचमेली सुमनसुमन समसुमन सुभाय ।

सुमनमथमदमंथनके कारण सेवो मनमथमथनजिनाय । वि०

ती. चौ

३२५

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥
नव्य गव्य मनमोदन मोदक खाजे ताजे तुरित उपाय ।

कुधारोग निस्वारन कारन पूजत हों पदमंगल गाय वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥
जगमग जोत होत दीपक की तासों आरति करी सुजाय ।

प्रभुतन माहि तास दुति दशत मानों ध्यानकनी सरसाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥
धूप अनूप उखेवत हों प्रभु तुम द्विग वात होत्र में डाय ।
ध्यान अगनि में करम जैरें हैं धूम धूम यह तास उडाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पूषं निर्वपामि ॥७॥
आम जाम अभिगम सुफल कलवर्जित पक्व मधुर मनलाय ।
तासों अरचत तुम पदपंकज विघनसघन ततखिन नशिजाय । वि०

५.

३२५

ॐ ह्रीं विष्णुमालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥
 जल चंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अरघ वनाय ।
 पूजों चरन करन सुखसंपत तारन तरन जगत वरदाय ॥
 विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवर जग सुखदाय ।
 पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वदत जस पाय ॥
 विष्णुमालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्थं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्य ।

मोतीदाम छंद- -

प्रभाव करें सुरराज्जु आय । प्रभावकदेव नमों शिरनाय ।
 सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्त जजों धरिध्यान ।
 ॐ ह्रीं प्रभावकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥
 नमैं नरदेव उमंग समेत । नमों विनतेन्द्र जिनेंद्र सुचेत । सु०
 ॐ ह्रीं विनतेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

विभावसुभाव विभेदन हार । सुभावकदेव नमो अविकार । सु०

ॐ ह्रीं सुभावकाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दिनिंदसमान प्रकाश शरीर । नमो नित श्रीदिनकार सुधीर । सु०

ॐ ह्रीं दिनकराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

अनंग विकार निवारन देव । सदा जय अंग सुतेज अघेव । सु०

ॐ ह्रीं अनगतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

सुभव्यनिकों धनधान्य करंत । नमो धनदत्त जिनेश महंत । सु०

ॐ ह्रीं धनदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

सुपूरख कर्म विपाक विनीत । जिनेसुर पौरख हैं निरभीत । सु०

ॐ ह्रीं पौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

सदा समदिष्टिय सेवत पाय । सुखाकर श्रीजिनदत्त जिनाय । सु०

ॐ ह्रीं जिनदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

चद्रूं घनघातियकर्म हनंत । त्रिलोकहितू प्रभु पार्श्वमहंत । सु०

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

गनांबुधि श्रीमुनिसिन्धु अगाध। जपे नितचित्त पुनीतम साध सु०

ॐ ह्रीं मुनिसिन्धवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

सु अस्त रु वस्त प्रशस्त वताय । नमो कमलाधर अस्तक भाय । सु०

ॐ ह्रीं अस्तकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

भवोदधि तारनकों समरथ्य । सुरेशनमें भवनीकहि मथ्यं ।

सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्त जजों धरि ध्यान ॥

ॐ ह्रीं भवनीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

छंद सूर ।

नृपनाथ नृपकुल पाल । पूजों सदा गुनमाल ।

पञ्चम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्य ॥

ॐ ह्रीं नृपनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

नारायनाय जिनेय । ध्यावों नारायणध्येय । पञ्चम०

ॐ ही नारायणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

प्रशमोक प्रशम प्रदाय । पूजों सुजश गुनगाय । पञ्चम०

ॐ हीं प्रशमौकसे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

भूपति भजें पदकंज । भुपति भजों भैभंज । पञ्चम०

ॐ ही भूपतयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

केवल सुदिष्ट विकाश । पूजों सुदिष्ट हुलाश । पंचम०

ॐ ही सुदिष्टये अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

भवभांति भीत अतीत । भवभीरु जजि जगमीत । पंचम०

ॐ हीं भवभीरवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

आनंद कंद जिनंद । नंदन जजों सुख कंद । पंचम०

ॐ हीं नंदनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

जै शुद्ध बुद्ध अक्रुद्ध । भार्गव जजों जूत रिद्ध । पंचम०

ॐ हीं भार्गवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

वासव सदा जसु भक्त । पूजों सु वासव व्यक्त ।पंचम०

ॐ ह्रीं वासवेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

वस विश्व जास वसंत । पर वास जिंनहि जजंत ।पंचम०

ॐ ह्रीं परवासवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

वनवसत नाशि उपाध । वनवासि साध अराध ।पंचम०

ॐ ह्रीं वनवासिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

भरतेश कमला करन । पूजों सकल जन सरन ।

पंचम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्य ।

ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

रथोद्धता छंद—

पूर्ण अर्घ्य यह अग्र धारिहो । ध्याय गाय जश पाप टारिहों ।

पुष्करार्घ्य गिर पंचमें सही । भर्त भावि जिन पूजिहों यही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्घ्यद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतभाविजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि

अथ जयमाला ।

पत्ता-जै शिवमगमंडन कलुपविहंडन कृतब्रह्मंडन शर्म अती
दारिद्र्यमखंडन जै भवहंडन हरनप्रचंडन कर्मगती ॥

छंद नमालिनी तामरस चंडी ।

जै प्रभाव शिवराव नमस्ते । विनतेंद्रं जुगपाय नमस्ते ।
जै सुभाविक दयाल नमस्ते । श्री दिनकर गुनमाल नमस्ते ॥२॥
अगतेज जसपुंज नमस्ते । धनदत्त सुखभुज नमस्ते ।
पौरव्य पूरन शर्म नमस्ते । जै जिनदत्त सु परम नमस्ते ॥३॥
पार्श्वनाथ शिवसाथ नमस्ते । मुनिसिंघव मम नाथ नमस्ते ।
अस्तिक जिनगुनवत नमस्ते । श्रीभवनीक महंत नमस्ते ॥४॥
श्री नृपनाथ मुनीश नमस्ते । नारायण जगदीश नमस्ते ।
प्रशमोकश जशराश नमस्ते । भूपत यिमलविलाश नमस्ते ॥५॥
जै सुदिष्ट जग इष्ट नमस्ते । भवभीख गुन मिष्ट नमस्ते ।
नंदन आनंद कंद नमस्ते । भार्गव जिन निरफंद नमस्ते ॥६॥

जै सुवासव पुनीत नमस्ते । परवासक जगमीत नमस्ते ।
 श्री वनवास मुनिंद नमस्ते । जै भरतेश जिनद नमस्ते ॥७॥
 पुष्कर पंचम मेर नमस्ते । भरत भविष्यन हेर नमस्ते ।
 चौबीशों जिनराय नमस्ते । गुन अनंत समुदाय नमस्ते ॥८॥
 पंच कल्याणक राय नमस्ते । शिव मारग दरशाय नमस्ते ।
 गनधर पूजत पाय नमस्ते । "वृंदावन" शिरनाय नमस्ते ॥९॥
 घत्ता-जै जै जशवंतं जिनभगवंतं सुगुन अनंतं शुद्ध मते ।
 नित ध्यावत संतं जेति महंतं लब्धि लशंतं बुद्धपते ॥
 ॐ ह्रीं पुष्कार्धद्वीपवियुन्मालीमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वाद-गीता छंद—

वसु दख सुंदर साज जो जिनराज चरन जजै नरा ।
 पुष्कर सु पंचम मेरु भरत भविष्य श्रीमज्जिनवरा ॥
 सो सकल पुत्र सुमित्र सपत लहत सार समाज कों ।

अनुक्रम वरे शिव परम गमनी भविक जन हितकाजकों ॥
इति श्री भरतपञ्चमाचलसंनधीभाषिचतुर्विंशति पुजा समाप्ता ।

अथ पुष्करार्धद्वीपविष्णुमालीऐरावत
वर्तमान २४ पूजा ।

दोहा-विष्णुमाली मेरुके ऐरावत छित माहि ।

वर्तमान चौबीश जित थापों इत प्रभु आहि ॥

ॐ ह्रीं पचमालैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर सर्वोपद्
आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा

अथाष्टकं ।

छंद चौबोल-

छोरीदधि सम उज्जल जल शुभ कनक कटोरी माहि भरे ।
जनम जरामृत नाश करनकों श्रीजिन सनमुख धार करे ॥

पुष्करार्थ गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।
वरतमान चौबीश जिनसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

केशर चंदन दाह निकंदन कदली नंदन गंध भरे ।
जलसगंधसि लसि मसिसम समकर पूजत भवआताप हरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो गंध निर्वपामि ।

तंदुलसेत निशाकर वारिज छीर छटा हिम हीरहरे ।
कंचनथार विषे तसु पुंज सु युंजत ही दुख दोष टरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ।

कामवली प्रतिकै सबके सब रुद्रनिके सब जेर करे ।
तासु विनासनि जानि तुम्हें प्रभु पूजत फूल सुगंध भरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्य पुष्प निर्वपामि ।

रोग कुधा जंगजलुनिकों नित जेर करें छिन नाहि टरे ।

ती चौ.

३३५

तासु विनाशन जानि तुमें जिन पूजहु नेवज व्याधि हरै । पु०।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

मोह महातम छाये रह्यो जग नाहि हिताहित दिष्ट परे ।

सो तुम नाशि प्रकाश कियो शिव दीप चढ़ावत भर्म हरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

काल अनाद वितीत भयौ संग कर्मनिके दुख भूरि भरे ।

तुम दिग धूप अनूप उखेऊं ज्यों वसु कूर प्रचूर जरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

ज्ञान अतिंद्रिय शर्म अनाकुल आतम परम सुधर्म धरे ।

सो प्रगटो मम हे जिन स्वामिय सेवतु हो फलधार भरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जलचंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अर्घ करे ।

प.

३३५

नाचि राचि शिरनाय समरचत भव भवके सवपापहरे ।

पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।

वरतमान चौवीश जिनेसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥२४॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

चौपाई छंद--

गंग घटासम अंग विशुद्ध । गांगेयक वंदत वर शुद्ध ।

पुष्कर पंचम मेरु लसंत । ऐरावत जिन संत जजंत ॥

ॐ ह्रीं गांगेयकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

मल्लवास जसरास पुनीत । भुक्तमुक्त दानी जगमीत । पु० ।

ॐ ह्रीं मल्लवासवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

भीम जिनंद भीम भैरव । सुखकारी जै जै अरिहन्त । पु० ।

ॐ ह्रीं भीमाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

ती. चौ.

३३७

दयानाथ सेवंत विदग्ध । स्तनरास करि दारिद्र्यदग्ध । पु०।

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीसुभद्र दायक नित भद्र । भद्रभाव जुत सुगुन समुद्र । पु०

ॐ ह्रीं भद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

स्वामीनाम नमों जिनराय । ध्वजा चिन्ह जह बहुत मुहाय । पु०

ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

हनिक नामजिन गुनमनिमाल । द्वादशसभा सहित जगपाला पु०

ॐ ह्रीं हनिकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

नंदघोष जिन जगजन पोष । चतुरानन राजें निरदोष । पु०

ॐ ह्रीं नंदघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

रूपबीज श्रीजिनगुन खान । कोटि भानु दुति देखि लजान पु०।

ॐ ह्रीं रूपबीजाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

वज्रनाभ वज्राधिप सेव । नटसाला नाचै नट देव । पु०

पु०

३३७

ती.चौ.

३३८

ॐ ह्रीं वज्रनाभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीसंतोष तोषणद पोष । मदिर पंक्तिरुचिर चित चोष । पु०

ॐ ह्री संतोषाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

श्रीसुधर्म जिन परम दयाल । सोहत हे देवद्रुम माल । पु०

ॐ ह्री सुधर्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

श्रीफनीस पद फनपति ध्यात । पुष्पवाटि फल फूल सुहात ।

ॐ ह्री फनीश्वराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

वीरसेन जश किन्नर सार । गावतु हैं नानाप्रकार । पु०

ॐ ह्री वीरचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

मेधानीक नमों जिनचंद । स्वच्छ छवी छाजत सुखकंद पु०

ॐ ह्री मेधानीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

स्वच्छनाथ गुन स्वच्छ अनंत । सुर जश गावत ध्यावतसंत
पुष्कर पंचम मेर लसत । ऐरावत जिन संत जतंत ।

प.

३३८

ती.चौ.

३३९

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

दोहा-कोप छय करि कोप छे भापत सवहित बैन ।

नग पंचम ऐरावते वरतमान जजि चैन ॥१७॥

ॐ ह्रीं कोपछयाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जयति अकामक कामकर समवसरन थित लेन । नगंवर ।

ॐ ह्रीं अकामकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

धरमधाम अभिराम नमि गंध कुटी छवि देन । नगंवर ।

ॐ ह्रीं धर्मधामाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

सुक्तसेन वंदत विद्युध वन उपवन जह ऐन । नगंवर ।

ॐ ह्रीं सुक्तसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

क्षेम करन छेमंग जिन साल फूल सुखदाय ॥

गिर पंचम ऐरावते वरतमान पद ध्याय ।

ॐ ह्रीं क्षेमकराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

पृ.

३३६

दयानाथ आनंद घन मृगराजा सनसीन ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत अमलीन ॥

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

कीर्तपाय जिनराय जजि प्रश्नोतर करतार ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखकार ॥

ॐ ह्रीं कीर्तपायजिनाथ अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

शुभकर जिन शुभ करत नित मंगल नित नौदाय ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखदाय ॥२४॥

ॐ ह्रीं शुभकराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

मालिनी छद-जल फल सब साजे बाजते सार बाजे ।

गिर पनम विराजेरावते वर्त ताजे ॥

चदु जुग जिनराजे पंच कल्याण साजे ।

पद जजि महराजे सर्व कल्याण पाजे ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विगतिजिनेभ्यः पूर्णाधिं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

पदा—जै जिनगुणमालं विरद विसालं सुस्तुतभालं सुकुमालं ।

जै कवि कुलभालं अरिपिजालं जैति कृपालं शिवचालं ॥

पद्वडी वंद—

जै गगदेव शिवसंग सार । जै मल्लवास मदमल्ल टार ।

जै भीम भीम भव हरन देव । जै जैति दयाधिक गुण अछेव ॥२॥

जै जैति भद्र भद्रेश कर्ण । स्वामी जिनवर भवभीत हर्ण ॥

जै हनक हरण मनमल समस्त । जै नंदघोष भाषत सुवस्त ॥३॥

जै रूपबीज वीरज उदार । जै वज्रनाभ भवसिंधुतार ॥

संतोष जैति दुख दोष चूर । जै जिन सुधर्म जिनधर्म पूर ॥४॥

जै जिन फनीश फनपति नमत । जै वीर चंद जिनगुण अनंत ।

मेधानिक मेधा नमत पाय । जै स्वच्छनाथ शिव मग पताय ॥५॥

कोष छैकर निज कोष छैन । नै नै अहाप कामद प्रसीन ॥
 प्रसीमनाय जुन प्रसन्न शूद्र । नै सुखित्तमैन जुन रिद्ध मिद्ध ॥३॥
 क्षेत्रांग क्षेत्रदारी मदीय । नै दशानाथ फलना अनीय ॥
 नै कर्मनाथ कोरत उदीय । श्रीशुभ जिनपर भव समुद्र पोत ॥४॥
 प पंचम गिर पेरारतेय । छै प्रसन्नमान शौवीश मेय ॥
 कल्याणक पत विगातमान । शरत्तावन पालन विरदमान ॥५॥
 अथ नृप सो दत्ता पाय आज । तथा जानौ प्रभु समार काज ॥
 भक्तानाथ नै मोहो निकाल । नद अरुत तरो विनयो त्रिकाल ॥६॥
 ७॥ नै दयाशुभर जिनपुर मंदर जजन पुंदर भगत भग ।
 दानय जतमंजन समकृत मंडन कलुष विहंडन कमनि हमा ।
 ८॥ श्री पंचपाश सात रंगाना गुणोपाधिनि न्या मशक विरोधि ।

पञ्चपाश सात रंगाना गुणोपाधिनि न्या मशक विरोधि ।

विभूतमाली मेरु विसज्जत मारजी ।

प्रेमदत्त नद शोभित परम उदारजी ॥

चौविस जिन तह वरतमान जो पूजई ।

सो भवि सव सुख पाय मुकत पद कूजई ॥

इति श्रीपंचमाचलैरायते वर्तमानचतुर्विंशति पुजा समाप्ता ।

अथैरावतातीतचतुर्विंशति जिन पूजा ।

तोटक छंद—

गिर पंचम पुष्कर दीप तनों । अयरावततीत जिनेश भनों ।

चववीस सुथापतु हों इतही प्रभु आय करो भविके हितही ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरायतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्रायतरअयतरसवौपद् आदानन ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरायतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रममसन्निहितो भवभयपदस्वाहा ।

अथाष्टकं ।

लावनी-गही है नाथ शरन तेरी ।

ती चौ.

३४४

भव पाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी । गही०
पुष्कर पंचम मेर विराजत ऐरावत हेरी ।

तीत जिनेसुर पद परिपूजन मिटत जगत फेरी । ग० टेका
छीरोदधि सम नीर सीर भरि कनक भृंगमेरी ।

धार करत तुम चरन कमल तर सकल कलुष छेरी । ग० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

वावन चंदन कदली नंदन जल संघ घसि लेरी ।

पूजत चरन जुगल करुनानिध भवतप चूरी ॥ गही० ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ।

देवजीर सुखदास वास दुतिरास तंदुलेरी ।

पुंज धरत दुख कुंज हरत जिनपद सु पूजतेरी । गही० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

प

३४५

तौ.चौ

३४५

पारजात मंदार सुमन संतान जाति केरी ।

चरचौं चरन हरन मनमथ मद शुद्ध शील देरी । गही०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

कुधा रोग निस्वार निराकुल पद तुमने लेरी ।

नैवज साजि जजौं जगनायक हरो व्याध मेरी । गही० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ।

केवल भान प्रकाश प्रभू तुम सब परगासेरी ।

दीपक सो आरती उतारों निज प्रकाश देरी । गही० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

दुष्ट अष्ट तुम नासि पुष्ट पद माहि थिर भयेरी ।

हम पूजें दशगंध धूपसों कूर अरि जेरेरी ॥ गही० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

विघन सघन वन ध्यान अगनिसों तुम परजालेरी ।

पू.

३४५

ती.चौ.

३४६

हम प्राशुक फलसों पद पुजै वांछितार्थ देरी । गही०

ॐ ह्री पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥

तुम अनंत गुन लेहे अनूपम अमल अचल हेरी ।

हम पूजै पद अरघ्य थार भर मिटो जगत फेरी । गही है नाथ ।

भवपाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी ।

पुष्कर पंचम मेरु विराजत ऐरावत हेरी ।

तीत जिनेसुर पद परिपूजत मिटत जगत फेरी । गही है ।

ॐ ह्री पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घ्यं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ्य ।

हरिणी छंद-

भवातप शांत करंत सदा । नमों उपशांति प्रशांति प्रदा ।

सु पुष्कर पंचममेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥१॥

ॐ ह्री उपशांतिजिनराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

पू

३४६

शरीर अनूपम सोहत है । सो फल्यु जगज्जन मोहन है । सु० ।

ॐ ह्रीं फाल्गुजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नमों पुखास सु आस भरे । जिनेश अशेष कलेश हरे । सु० ।

ॐ ह्रीं पूर्वाशाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

त्रिलोक सुहावन रूप लसै । नमों जिन सुन्दर पाप नसै । सु० ।

ॐ ह्रीं सुदराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धरें गुन गौरव गौरवता । नमों जिन गौरव गौरवता । सु० ।

ॐ ह्रीं गौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

कषाय सवे चक्रचूर किया । त्रिविक्रम आनंद पूरि दिया । सु० ।

ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

जुरोष गयंद मृगिद सम । नमों नरसिंघ कुकर्म दम । सु० ॥

ॐ ह्रीं नरसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

छहों विधि हास रतादि हनें । नमों मृगवासव सार पने ।

सु पुष्कर पंचमेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥

ॐ ह्रीं मृगवासवे ऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद प्रियवदा—

पुरुषवेद निस्वार कीन है । परम शोभ जिन सो प्रवीन हैं ।

त्रितिय दीप गिरि पंचमें सही । जजत तीत अयरावते यही ॥

ॐ ह्रीं शोभाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

सुमल लोभ जिह्व सूक्ष्म नासियो । जिन सुधाव सुबोध भासियो ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं शुद्धावराय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

दुखद पंचविधि नाद नासियो । जिन अपाप सवस्तु भासियो ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं अपापजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

दरशनावरन अंत कीन है । जिन विवाध नमते प्रवीन हे त्रि०

ॐ ह्रीं विवाधाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

मति श्रुतावरन आदि जे कहा । हरन संधिक जिनेशते महा ।

त्रितिय दीप गिर पंचमें सही । जजत तीत अयरावते यही ।

ॐ ह्रीं संधिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

हृद रथोद्धता—

विघ्न पंचजिन निघ्नकीन हैं । मान धात्र जिनसों अछीन हैं ।

पुष्करार्घ्य गिर पंचमें सही । तीत पूजत यरावते मही ॥

ॐ ह्रीं माधवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

शुक्लध्यान दुतिवत शुद्ध हैं । अश्वतेज जिनसों विशुद्ध हैं । पु०

ॐ ह्रीं अश्वतेजाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

पुद्गलीक गुनतें सु जे चुतं । सोय देदवर विद्यया जुतं । पु० ।

ॐ ह्रीं विद्याधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

बंध आधि तन भेद थे जिते । सो सुलोचन हने सहीतिते पु०

ॐ ह्रीं सुलोचनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

सर्व सहननसों वितीत हैं । मौनकं निधि नमों सुमीत हैं पु०

ॐ ह्रीं मौननिधाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

पुंडरीक जिनकों नमों सदा । छः प्रकार परजाप्त सों जुदा पु०

ॐ ह्रीं पुंडरीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

जैति चित्रगण मित्रजीय के । रक्षपाल पटकाय हीय के पु०

ॐ ह्रीं चित्रगणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

छंद दुतपा—

त्रिविध जोग जिननें चक्रचरे । गुन समुद्र मनि इंद्रजु प्रे ।

पुहकरार्ध गिर पंचम नामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं मुनिद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

गुननिधान परघात दला है । सर्व पूजनिज सर्व कला है पु०

ॐ ह्रीं सर्वकलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

सकल भूखत्रिष रोग निवासे । जयाति भूरिश्रवने सुखरासे पु०

ॐ ह्रीं भूरिश्रवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

परमपुन्य जुतकाय अनूपं । जय पुनंग जिनवर जसरूपं ।
 पुहकरार्द्ध गिर पंचमनामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी २४
 ॐ ह्रीं पुणांगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

मुमुषी छद -

पुहकर पंचममेर गनों । तह ऐरावत खेत भनों ।
 जिनवर तीत जजामि सदा । कर धर पूजन अर्घ्य अदा
 ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्भिर्गतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

वत्ता--जै जिनजगवंदित जन आनंदित जैति अमंदित मोनवती
 सम दमजुत राजत सब सुख साजत भवभै भाजत है सुअती

छद नयमालिनी तामरस चढी—

उपशांतिक मति मडित जै जै । फलगू जिन दुख खडित जै जै ।
 श्री पूर्वास अखंडित जै जै । सुन्दर जिन भ्रम दंडित जै जै ॥२॥

गौरिक हरिहर वदित जै जै । त्रीविक्रम सु अमदित जै जै ।
 नरसिंघेस सु छंदित जै जै । मृगवस जगदानंदित जै जै ॥३॥
 सोमेश्वर सुखदायक जै जै । शुद्धावर सब लायक जै जै ।
 श्री अपाप गुन ह्यायक जै जै । जिन विवाध शिवनायक जै जै ।४।
 सधिक भवदधि तारन जै जै । मांधात्रे मद मारन जै जै ।
 अश्वतेज जगटारन जै जै । विद्याधर उद्धारन जै जै ॥५॥
 श्री सुलोचन प्रकाशक जै जै । मौननिधी वृत वासव जै जै ।
 पुंडरीक जसरासक जै जै । चित्रगुनी गुनरासक जै जै ॥६॥
 श्रीसुनिरिंद महंत जै जै । सर्वकला भगवंतं जै जै ।
 भूरिश्रव भवअंतं जै जै । जिन पुण्यांग अनंतं जै जै ॥७॥
 पुष्कर पचम गिरवर जै जै । तीतैरावत जिनवर जै जै ।
 वदत सुरनर सुनिवर जै जै । अमल अचल शिवतिथ वर जै जै ८
 दास सदा यह जाचतु जै जै । होहु भगत नित शांचतु जै जै ।
 सुर सुरेश मनरांचतु जै जै । सुजश गाय हमि नाचतु जै जै ।९।

ती.चौ.

३६३

पग नूपुर छवि छाजतु जै जै । मांदल द्विमि द्विमि बाजत जै जै ।
चंग उपग अवाजत जै जै । श्रुंगत श्रुंगत गत शाजत जै जै ॥१०॥
साग्रदि सारंगी सुर बाजत जै जै । कटकिं किनिनिविराजत जै जै
दुति लखि रवि शशि लाजत जै जै । भगत करत अघ भाजत जै जै ॥११॥
मिथ्यामति मल मजन जै जै । विघनसमूह विगंजन जै जै ।
वृन्दावन" मन रंजन जै जै । जै जिन रवि भविकंजन जै जै ॥१२॥
पत्ता-जै धरमप्रकाशक भूमतमनाशक शिवमगभासक ज्ञानपते
दारिद्र्य द्रुमछेदक जैति अखेदक वेद विवेदक वेदमते ॥१३॥
ॐ ह्रीं पचमाचलरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

चौबोल उद ।

आठों दरव मिलाय गाय गुन जो भविजन जिनराज जैजै ।
पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत में तीत सजै ।
सो लहि पुत्र मित्र सुख संपति भोग मनोग समस्त विजै ।

अनुक्रम करम नासि करि भवि बह मुक्त धाम में राज रजै ।

अथाशीर्वादः—

इति पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

अथ पंचमाचलैरावतभावि २४ पूजा प्रारब्धते ।

तोटक छंद—

गिर पंचम को ऐरावत है । जिन भाविय मो मन भावत है ।

जिहि ध्यावत आनद पावत है तिहि थापत पूज रचावत है ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर सनौपद् ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितो भव भन वपद् ।

अथाष्टकं ।

चालनक्षीश्वराष्टक भाषा दानतरायजी कृतकी तथा होली गर्भाआदि अनेक चालमे

उज्जल जल शीतल लाय हाटक भुंग भरा ।

तुम चरनन देत चढ़ाय मेष्टत जनम जरा ॥

गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजत धरि ध्यानो ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥

शुभ चदन कंदन दंद कदलीनंद लिया ।

जलसों वसि पूजि जिनंद भवतप दूर किया । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गधं निर्वपामि ।

मुक्ताफल हिम हरि हीर दमक गमक धारी ।

धरि तंदुल मंदुल वीर दारिद दुख हारी । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥

शुचि सुमन सुमन सम आन सुमन सुमन नीके ।

करि मदन कंदन पनवान पूजत पदजीके । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

रस रासत नेवज सार कंचन थार भरा ।

तुमकों अरपत अविकार रोग समूह हरा । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥

तम भंजन दीप संवार आरति कीन्ह सही ।

मम तिमर मोह निरदार आरत मेंट यही । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥

कृष्णागर अगर कपूर धूप उखेवत हौं ।

सब जरत करम मम कूर तुम पद सेवत हौं० । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥

रित फल कलवर्जित लाय सुवरन थार भरा ।

तुम पूजत विघन नशाय वांछित लाभ करा । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥

वसु दरव सवार पवित्र अरघ सुहाथ लिया

पद सेवों हे जगमित्र दीजे सुकत प्रिया ॥
गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजों धरि ध्यानों ॥
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभावि चतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घ्यं निर्वपामि ॥
अथ प्रत्येकार्घ्य ।

छंद समुद्रिका मात्रा १४ ।

अमलगुन अदोष में गनो । परम धरम कारने भनों ।
गिर पनमयरावतें जजों । जिन भवतव आनंदें सजों ॥
ॐ ह्रीं अदोषाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥

छंद सुमुखी मात्रा १२

वृषभ जिनेश कलेश हों । जिन वृषको उपदेश करें ॥
पुहकर पंचम मेर जजों । भवतव उत्तर खेत सजों ॥
ॐ ह्रीं वृषभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥

ती चौ.

३५८

छंद सूर मात्रा १२—

जिनदेव विनायानंद । आनंद अंबुधि चंद ।

गिर पंचमैरावत । भावी भजे भौ तर्त ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं त्रिनयानंदाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

छंद लोलतरंग मात्रा १६—

श्रीमुनि भारत आतमज्ञानी । आतम की अनुभूति धरानी ।

पंचमेमेर जजों सिर नाई । भविय देव यरावत राई ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं मुनिभारताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

छंद सारस्वती मात्रा १४—

इंद्रक इंद्र फनिंद्र नमे । आतम आनंद कंद पमें ।

पुष्कर पंचम मेर सजों । भवियरावत देव जजों ॥५॥

ॐ ह्रीं इंद्रकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

छंद इद्रवज्रा मात्रा १८ ।

चंद्राननं चंद्र सुकेत स्वामी । आनंद वाराणिधि वृद्धनामी ।

पू.

३५८

ऐरावते भावित नाथ पूजों । श्रीपुष्करे पश्चिम मेर दूजो ॥६॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

छंद उपेन्द्रवज्रा मात्रा १५

प्रभाकरक्रांति अनन्त धारी । नमों ध्वजादित्य अनेक तारी ।

सु पुष्करार्द्धा परमेर सोहै । भविष्यतेरावत चित्तमोहे ॥७॥

ॐ ह्रीं ध्वजादित्याय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

छंद इंद्रवशा मात्रा १८ ।

जु वस्तुकों एकहि काल जनिहीं । सु वस्तुबोधं जिन धारिध्यानहीं

स पुष्करार्द्धा परमेर सोहै । भविष्यतेरावत चित्त मोहे ॥८॥

ॐ ह्रीं वस्तुबोधकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

छंद हरिनी मात्रा १५ ।

नमों नित मुक्तगती जिनकों । सुरेश नरेश नमै तिनकों ।

सु विद्युतमालिय मेरु जजों । भविष्य यरावत खेत सजों ॥९॥

ती.चौ.

३६०

ॐ ह्रीं मुक्तगतये सर्वं निर्वपामि ॥९॥

छंद वसततिलका वर्ण १४ ।

श्रीधर्मबोधकप्रबोधकभव्यप्रानी आनंदकंदनिजआतमरूप ध्यानी
श्रीपुष्करार्ध मह पश्चिममेरजानों । ऐरावतें जजत भवितधारि ध्यानों

ॐ ह्रीं धर्मप्रबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद आर्या सर्व मात्रा ६० ।

श्रीदेवांग जिनेशं, नमें सदा जाहि सर्व देवेशं ।

पुष्कर पंच नगेशं, ऐरावत भावि संजजेते ॥

ॐ ह्रीं देवाङ्गाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

छंद प्रियवदा वर्ण १२ —

कलुषदारन उदार हैं वली । जिन मरीच अरि मीचकों दली ।

पुष्करार्ध गिर पंचमों रजै । जिन भविष्य अयरावतें जजै ।

ॐ ह्रीं मारीचाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

पू.

३६०

ती.घौ.
३६१

छंद भुजंगप्रयात वर्ण १२-

सबे जीवके नाथ हैं जीवनाथ । दयाधर्म दाता सदा मुक्तसाथ ।
जजो पंचमे भूभूते भावनीकं । कृपासिन्धु ऐरावते भावनीकं ॥

ॐ ह्रीं जीवनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

छंद मोतीदाम वर्ण १२

जसोधर देव महा जसरास । सुरेश नरेश खगेशुर दास ।
जु पुष्कर पंचममेरु लसंत । जजो अयरावत भावित संत ॥

ॐ ह्रीं जसोधराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

छंद लक्ष्मीधरा वर्ण १२

गौतमनाथकों गौतमेशं भजै । जास आराधतें सौख्यसाता सजै ॥
पुष्करार्द्धाचले पंचमैरावते । भावि पूजें सबै शांति को पावते ॥

ॐ ह्रीं गौतमाय अर्घ्यं निर्वपामि १५॥

छंद द्रुतिविलवित तथा सुन्दरी-

विशद बुद्ध धरें मुनि शुद्धजी । सुजनको नितदायक रिद्धजी ॥

पू.

३६१

जजत पुष्कर पंचम मेरके जिन भविष्य यरावत हेर के ॥

ॐ ही मुनिसुद्धाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

छंद द्रुतपा वर्ण १२-

चिद विलास बुधि वंदत जाकों जिन प्रबोधक नमों पद ताको ।

पुहकरार्ध गिर पंचम सेवों । जिन भविष्य अइरावत वेवो ॥

ॐ ह्रीं प्रबोधकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

छंद शिखरनी वर्ण १७-

सदानीकं स्वामी सकल सुख संपत्ति करता ।

सदाज्ञानी ध्यानी जगत जनके क्लेश हरता ॥

जजों विद्युन्माली विशद गिरकेरावत विषें ।

कृपाधारी भावी अमलगुन कारी शिव दिखें ॥

ॐ ही सदानीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

छंद प्रमिताक्षरा वर्ण ११२॥-

जिनराज चारित सुनाथ महा । गहि शुद्ध चारित कलंक दहा ।

गिर पंचमें सु अयरावत है । भवतव्य सेय सुख पावत है ॥

ॐ ह्रीं चारित्रनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

छंद द्वातिमध्यक प्रथम त्रितियचरन प्रस्तार ॥॥॥॥॥॥ अर द्वितिय

चतुर्थपाद ॥॥॥॥॥॥ या भाति मात्रा १६ सर्वत्र यथा-

आनंद अंबुधि चंद समाना । अमल सदानंद श्री भगवाना ।

पंचम मेर ऐरावत ध्यावों । भवतव सेवत ह्रीं सुख पावों ।

ॐ ह्रीं सदानन्दाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

छंद प्रमानिका वर्ण ८

वेदार्थनाथ ध्याइयै सदैव शीस नाइयै ।

गिरिंद पंच भावनों जजोंत्तरे सु पावनों ॥

ॐ ह्रीं वेदार्थकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

छंद नाराच वरन ॥२६॥

निजातमीक लाभ परम धर्म शर्म देत है ।

ती चौ.

३६४

सुधासुनीक देवजी भवाब्धि माहिं सेत हैं ॥

सु पंचमाचले पुनीत उत्तरे सुखेत हैं ।

जजामि भावनीक जो सुबोधको निकेत है ॥

ॐ ह्रीं सुधानीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

छंद चामर वर्ण ॥ १६॥

जोति मूर्त देवकों त्रिलोक धोक देत है ।

शोक थोक नाशके प्रमोदकों जुहेत है ।

पंचमाचलें सु उत्तरे पुनीत जानिये ॥

भावनीक देव पूजिगीत नृत्य ठानिये ॥

ॐ ह्रीं जोतिमूर्तयेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

छंद रथोद्धता-वर्ण ११

श्री सुरार्घ्य सुर सर्व ध्यावहीं । जासके न गुन पार पावहीं ।

पंचमाचल यरावतें महा । भावतव्य पर शर्ण मैं गहा ॥२४॥

ती.चौ.
३६५

ॐ ह्रीं सुरायाय अर्घ्यं निर्वहामि ॥२४॥

छंद पादद्वयी लध्वत मात्रा १६

लखि पुष्करार्घ्यं मह अपर मेर । अयगवत जिन भवतव्य हेर ।
पर पूजों तिनकों अरघ धार । संसारऽसारतें तार तार ॥
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महाघं निर्वहामि ॥

अथ जयमाला ।

पञ्चा छंद मात्रा ६४

जेजै गुनछायक विघन विनायक दास सहायक जगनायक ।
धरि वस्तुधिसायक अग्निन घायक सिवसुखदायक सबलायक ।

छंद नोटक—

सब दोष अदोष जुचुरत हैं । वृषभेश वृषामृत पूरत हैं ।
विनयानंद आनंद सूरत हैं । मुनि भारत भौ भय दूरत हैं ॥१॥
जिन इंद्रक इंद्रनि बंदित हैं । शसिकेत जगत आनदित हैं ।
धुज आदित जोति अमदित हैं । जिन वस्तुबिबोधसुब्रंदिन हैं २

पृ.

३६५

जिन मुक्तगती भवभंजन हैं । जिन परम सुधर्म निरजन हैं ।
 नित देव सुअग अनजन हैं । जिन मारिच मीचहि गंजन हैं ॥३॥
 जिय नाथ अनाथहि रक्षत हैं । सब वस्तु जशोधर वक्षत हैं ।
 जिन गौतम श्यो मग गक्षत हैं । मुनि शुद्ध प्रबुद्ध प्रतक्षत हैं ४
 सुखसार प्रबोध उमडित है । अविकार सदानिक पडित हैं ।
 जिन चारित चारु अखंडित है । जु सदानंद आनंद मडित हैं ५
 सु वेदार्थक वेद विबोधन हैं । जु सुधानिक आतम सोधन हैं ।
 जिन जोति सुमूर्त तपोधन हैं । जु सुरार्थ जगजन बोधन हैं ॥६॥
 पनमों अयरावत भाविय हैं । नमते सब आनंद पाविय हैं ।
 तुम हो भगवंत अनंत गुनी । तुमरो यश मैं निज औन सुनी ७
 शरना चरना रज आय गही । मम वछित सिद्ध करो सबही ।
 तुव भक्ति सदा मन माहि वसौ । उरते दुख दोष कलंक नसो ८
 तुव आगम में चित नित रमों नित संगति साधरमीय पमो ।
 नित ही अनुभो रस पान करों । नित सजम पूजन दान करों ९

ती.चौ.

३६७

रतनत्रय भाव सुभाव मिलौ । मल राग रु दोष कषाय टिलौ ।
भव भौ यह जोग मिलो तबलों । शिव नारि धरो प्रभुजी तबलों ?
नित मगल होहु प्रमोद मई । घर सपति सार मिलो नितई ।
सब विघ्नसमूह विनाश करो । निज दामनिके सब आस भरो ?
जगमें सुखसागर नृरि भरो । निज धर्म उदोत सदैव करो ।
मन वांछित कारज सिद्ध करो । जन "वृंद" तनें घर रिद्ध भरो ?
घत्ता-जे केवल दिनकर तिमिरमोहहर मोखडगर पराकाश करो ।

“वृंदावन” वंदत पापनिकंदत दीजे आनंद कंदवरा ॥

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महावर्चनिर्वपामि ।

दोहा-जो पूजे मनलायपद भावी जिन चौबीश ।

ऐरावत पंचम तनों सो है सुकत शतीश ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीपुष्कार्धद्वीपे ऐरावतक्षेत्रचौबीमीपूजा समाप्ता ।

पृ.

३६७

अथ समुच्चय पूर्णार्घ ।

छंद माधवी सवैया वर्ण २४

जल चंदन तटुल पुष्प लसै चरु दीप सुधूप फलोव गहा ।
सब उत्तमसों अति उत्तम है तिनको सजि अर्घ सुथाल-लहा
गत आगत वरतत जे दशहू थल तरिथनाथ दयाल कहा ।
तिहि पूजत पूरन अर्घ लिये प्रभु देहु हमें शिव धाम महा ॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीपके दशक्षेत्रसंवधी गतागतवर्ततजिनेभ्यो ऽर्घपूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ आशीर्वाद—

कवित्त छंद मात्रा ३१

सातसतक अरु बीस बीस जगदीश जजै जो भवि मनलाय
ताके पुन्यतनी अति महिमा को कवि कहै वचन दरशाय ॥
मुक्त महल को नीव दियो तिन इंद्र सरा है तसु जश गाय ।
शक्र चक्र अहमिंद्र तीर्थपति पदलहि सुखसों शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीतीसचौबीसीपूजा वृंदावन अग्रवाल गोयलगोत्री कृत संपूर्णा ।

प्रथम सूत्रावतारमिदं पुस्तकं लिखित ग्रन्थकारेण निजपरोपकार
भाषा होने का कारण, तथा देश नगर शैली के नामीजन
तथा सहाई तथा कर्ता नाम
कुल वर्णन ।

दोहा छंद-एक समैं काशी विषैं भयौ संसकृत पाठ ।

काशीनाथ कराइयौ वन्यो अनूपम ठाठ ॥१॥

तवसों यह अभिलाष थी भाषा होय मनोग ।

अवै मिल्यो सब जोग तब भयो सुधारस भोग ॥२॥

मनहरन ३१

काशीजी में काशीनाथ मूलचंदनंतराम,

नन्हूजी गुलाबचंद प्रेरक प्रमानिये ।

तहां धर्मचंदनंद शिष्य सुखलालजी को,

बृंदावन अग्रवाल गोयलगोती ठानिये ॥

ताने रचे पाठ निज पर परमारथ को

सज्जन सो इहां यह वीनती वखानिये ॥

हीनाधिकशोधि शुद्ध कीजिये प्रमोद धारि

बालबुद्ध जानिकें दयाल भाव आनिये ॥

दोहा-दख तख गुनकेवलसु सम्मत विक्रमवान ।

माह धवल पांचैं नवल पूरन परम निधान ॥ १ ॥

जो पूजै इस पाठसों श्रीजिन पद लवलाय ।

मंगल मोद अनेक सुख सो भवि बहु विधिपाय ॥ २ ॥

जिन पूजा फलको सकल को विधि कहै बनाय ।

एक दखसों पूजिके बहुजन सुरपुर पाय ॥ ३ ॥

ती.चौ.

३७१

तातें पूजो दख अरु भाव सहित जिनराय ।
जातें हे भवि तुम लहो सुर सुख शिवपुर राय ॥ ४ ॥
जवलों रवि शशि गगनमें उदै अमंद धराय ।
तवलों यह रचना रहौ निरमल जश सुखदाय ॥
जिनवानी रचना रचत जो कछु सुख उपजाय ।
सो सुख जानैं केवली के जानै कविराय ॥
जै वंतौ जिनराज जो पंच कल्याणक पाय ।
सो इत नितमंगल करो मन वांछित पददाय ॥

इति श्री तीसचौवीसी पूजा भाषा होने का कारन करता देश कुल सेली
सहाई फल मंगल संपूर्ण वरनन समाप्तम् ।

शिव भूयात् ।

पू.



George Printing Works, Kalbhairi Benares City.

